

प्रसादनाः । १२ १२ आपणा आर्य रोकोमां सोळ संस्वारों छे तेमां विवाह सैस्कार प्रधान अमै एना उपर आखा संसारनो आधार रह्यो छे. मार्चीन का- 🗴

्रियात्राणोंने छई अईने कर्मकांड करावे छे. आवां कारणोधी बैध्य तथा क्षत्रियोगां विवाह संस्कार ने ममाणे यत्रो जोर्ए ते ममाणे घांटळ्ळ हैं है थरोज नधी अने यत्रामों स्वचित्र प्रमाणे आप छे. ब्राह्मणो विवाहने विषे पणो सपय केवळ झांति रिवान प्रमाणे आप छे. इत्रह्म करवाना संप्रहायोगां जनाळे छे. बाणीया तथा सत्रियोनी आदिमां पणाक आयुनिक नधीन केळवणी रुईने विद्वान थया छे,

हैं हमां दर एक संस्कार में जातिने के समये कशो होय ते समये वे संस्कार करवामां जानतो हतो, परंतु काले करीने ए संस्कारों वंध पढ़ी हैं है गया छे. भात्र उपनयन तथा विवाह ए बेज संस्कारों रहा छे. अने ते पण बाहाण वर्णमां ज अधुना करवामां जावे छे. क्षत्रिय तथा वैदयमां है है गिर्म अनुवस्त संस्कारनो एण छोप थुई गयो छे अने मात्र एक विवाह संस्कारन करवामां जावे छे ते पण यथार्थ विधिपूर्वक करानवामां जाव-हि विक्की हैं छता तेमे एक विश्वह जेशे उत्तम संस्कार शितानी जातियां गये ते तीते थाय ते चालशा दे, ए केशी खेदनी बात छे. में नानी वयमांथी जा है है वेशान्यमन करीने नास प्रिमोनी यासन अध्यापनमां कर्म स्थीनमार्थी छे अने गोरपटुं पण कर्क छुं. तेथी वारंत्रस पने पासा बंधुओनी साथे श १ ॥ हैं दियह संस्कारमां प्रसंग पड़ना छाप्यों, ते उपस्थी विवाह संस्कारने पाटे एक सारो बद्धतियों ग्रंथ होत्री जोड़से, आसी पास मनमां विचाह अख्योः हेम केटलाएक मुहस्थेली पण मेरणा धर्रते उत्तरी में पणी विवाद संस्कारनी मापीन कद्वतिओ जोईने तथा प्रपुत्तक अत्युत्तपताने वाये प्या देतुथी बीना अनेक ग्रंथीतं अवखोकन करी तैयांना घटका ग्राह्मायों मूकीने आविवाद कोंमुदी नामनो विवाद संस्कारनो प्रेथ गुन्सती भाषाण सेति समन पडे ते नमाणे रूपयो छे. आ धंपमा विवाद संस्कारमा ने जे सुख्य तथा गीण कर्षो करपामा आने छे ते सर्व इ यथार्थ रीते छलवामा आज्या छे. गणपति पूजनपी आरंपी ब्रह्मद्र संपूर्ण सुधी ब्रह्मद्रास्त्य नामतुं मध्य मकरण तथा कन्याना छलणपी छेका चतुर्थी कर्म पर्वत क्याह विथि मापर्त बीर्छ मकरण तथा देहतुद्धियी आरंपी देवता विसर्जन खबी उद्यापन विथि मामर्त त्रीतुं मकरण एम हैं सर्वे कर्षों राष्ट्र गूनराती सममण साथ छल्पां छे, ने अनुफ्रमणिका बांचवाथी स्पष्ट मणाणे. संस्कृत भाषाथी अक्षात एवा नैक्यों तथा है हैं पर निर्मा राष्ट्र कीमुदी बांचवाधी विवादना सर्व विश्विन सारी रीते समजी शके, एवी ग्रंपना रचना करवामा आवा पर नार करवाम ग्रंपनो पण आ विवाद कीमुदी बांचवाधी विवादना सर्व विश्विन सारी रीते समजी शके, एवी ग्रंपनो रचना करवामा आवा पर नार करवामा करवामा अवस्था करवामा क सात्रियो पण आ विवाद कीमुदी वांचवायी विवादना सर्व विभिन्ने सारी रीते समजी शके, एवी ग्रंथनी स्थना करवामां आवी छे. माटे मत्येक

## अथ विवाहकौमुचनुक्रमणिका ॥ व्रहवद्गात्मान्ड् नर्ह्यभेक्षणादाव-

यिपय.

ग्रहस्थापनपंदलम्

( मुखपृष्ठेषु )

सर्वतोभद्रमंडलम् (रेखात्मकम् २३)

प्रथमं ब्रह्यज्ञत्रकरणम् ।

चनुःपष्टिपद्वास्तुदेवतः मण्डलम्

पुरुषोत्तमयंत्रम् .... ....

यन्थप्रणेतुर्मगढा चरणम्

ग्रहयहशास्त्रार्थे तत्रेधास्वं

फछश्रुतिब

प्रहयज्ञ: तत्र विधिः .... ....

थौतवस्त्रपसारणपु .... वर्ज्यवस्त्राणि

तिस्क्रधारणम्

पत्न्युपवेशनय कर्मारम्भे नमस्कर्णम्

कर्माही ब्राह्मणाः

ज्ञांतिपाठमंत्राः

निपिद्धाः पदार्थाः ....

निपिद्धवस्त्राणि

पत्र पृष्ठ पंक्ति.

स्यक्तवं च

आचमनं प्राणायामश्र तरकारणं तदावश्यकत्वं च मधानसंकल्पः

विषय.

<u>कं इप</u>विलक्षकरणम्

यजमानस्य कर्माईस्वम्

**मशस्त्रमाद्मणस्क्षणम्** 

साष्ट्रांगनगरकारस्क्रशणम्

कर्मान्ते आचमनम् ....

देव-ब्राह्मणपादाभिवन्दर्न ३

आचपनस्य फर्छ लेशणं आव-

la	_			*D-	S		पंकि.	, विषय,	93	प्रम	वंकि	्रे अनु	٥
বিংকী ে	विषय.	43	वृष्ट	पाक्त,	विषय. पन	Ín.	4ιΨ,	- 2 5		•		<b>∳</b>	
1 1	- संकल्पाकरणे कर्मणो	สือหนึ่			शिखाबन्धन् तदुपदेश विधिश्च ६	ર	Ġ	ं करोदर्तनशासार्थः				2	
ાં સાંફે	वाद्वीपत्र	6		२०	5 Y+ /			140.00	₹ ₹	3	ŧ a	Š	ı
मन्त्र ह	तद्गसंकल्पः	<u>,</u> 1	₹ ₹	. 8	क्वाच) ६	ą	٩				_	ž	ı
_ {	वरमस्यान्त्रापथ	8	<b>.</b> ?	3	कळकुस्थापनम् ( तस्मिन्			विधिः	₹₹	₹	₹≎	ě	ı
- G	अधिकारवाचनम्	8		¥		?	19	) (कुरुवडी तथा भंडप	٠.,	۰	,	Ť	ı
9		2		_	पञ्चमञ्चकरणम्, ७	- 3		मुद्दर्तनो विधि )	3.8	- 5	-	à	
13	कर्माधिकार्सि <del>≉</del> यर्	1	_				۳.	मण्डपमातृकास्थापनम्	१५	₹	₹	Ä	
įė	भाजापत्यसंबल्पः	8	₹ ₹	8	पञ्चगळीककरणे विचारः,			तत्र काखार्थः (तेनो विशि	ì			¢	
9	आसनशुद्धिः	ŧ	1	٩	रादानक्ष्मकता विधिश्र ८	₹	. ?			3	c	i <del>š</del>	ı
j.	<b>गञ्ज</b> स्तर्भगम्	8	١ ١	१२	गणपतिचूजनम् ८	₹	₹ '	भाषामां ) ,   भीषादिमानृस्थापनम्	10	9	,	ò	
*	कर्मानईमासनम्	. €	1	₹₹	सकल मंगलकर्मारंभे गणेश-			तत्र शासार्थसविधिः, मान्		•	•	4	ı
\$	दीपस्थापनम्	ह	١ ٦	3	स्याबस्यकर्त्वं तच्छास्राधेश ८	*	8	मम्राणं च		7	9	<b>\$</b>	ı
*   <b>*</b>	दिग्रक्षणं तस्मिन् क	र्तेव्य∽			अरन्युत्तारणं प्राणप्र-			गौर्यादिदेवमातरः बाह्या			,	🕏 મરા	1
000		· 5	६ २	19	_	٩	, ?	मनुष्यमातस्य	र्		ي	÷ "."	1
- Já					=								

' le

								नार्वक्षात्र				-१डाम ) राज्यकोकादक्र -
1:	e.	Ł	'nF.	मिण्डरभी।इम्	ો કે <u>.</u>	è	6/8	:मांत्रेड़क़ ड्रिगहरू				•
2	1		36	··· bribik	Į			:h1 2	2	è	AA.	tpiófitpipiete
7	1	•		हेरीही बन्द्र अन्त्रीबेरी	١.			ं "" "" होसिम्	3	Έ	\$RE	मिरुपेर मेहियाहार होस्के
\$	la.	. į	28	वस्त्यम् (समसम्म	19	٤	38	•	*	Έ	ŧΑ	भिष्टिनि मिल्पुत्रस
- 6	ſ.		28	( :yipræsii:9	}			क्तियुष्टीक क्तिश्चीयाम	š	£	35	हर महिस्स्याम् सार्वस्थान
<b>*</b>	۴.	•	~~	ांगमस ) मांज्ञांम्ङ्रङ / प्राप्तक्रकांम	}			हित्रिक रिविधि				भावताहुमद्वयाना
0	ł				6	ŧ	<b>≥</b> ₽.	⊧शीश <sup>.</sup>	<u>ا</u>	١.	ŁR	फ्रम्पाउस्थापम्हा
Ň	1.5	ŧ	2X	क्षेत्रसम्बद्धार क्षेत्र । स्वत्र सम्बद्धार क्षेत्र ।	l			नामाकी। में लेगरम्ह	*		3,5	क्रान्यव्यक्तिस्त्र का <i>न्</i> यव्यक्तिस्त्र
4	Š		22.	अज्ञास्त्र हेर्गा होता होता होता है।	10	k	38	···· :Heeltibioù	_	٠.	_	अस्तावदेवपास्तावसम्
ě.	,	-	ፍጸ	:मांज्ञाकुर्वणीम्ज्ञ	à		ንጹ	नेमीतार्वः''' ''''	2	3	83	
5	*	7	ፍጹ	ःमा्रु ोमान्द्रवृष्टीकः	3*	•	200		Æ	ì,	33	अभिदेवतास्थापनस्
3	P.	è	6/16	···· hidhk				∙माप शिक्षकशोक <u>ा</u> क्	3 3	ąţ	66	असदिति सिनिन: ""
\$				-शिश्राध् गिरीक्षा	È	Ġ	75	:गिभितीर र्नम्टर्गग्रह	35	6	74	ग्रीवृद्ध्यानि
Ŷ.	Æ	Ł	ፍጹ	भीक्ट्रेहा३	8	λ	28	( P F51F	8	è	<b>≽</b> ₹(:):	धुनेहिदिनस्यतः (दिनसङ
3	ΒĤ	, Bh	胁	,प्रमि	. <b>D</b> ∮∭	<u> 88</u>	Łb '	,ह्युक्)	.nA	B	Eb	,ppFj

\_\_\_\_

101	77	6 5 5 R & 6 00 10 R 7 10		る い い と ら クラファン	 16959 [F169	ippei ilog löbere garezpilee garezpilesei filosoi inviga jantysoi inviga jantysoi inviga jantysoi inviga jantysoi mitti periole mitti periole mitti periole mitti periole mitti periole mitti periole mitti periole periole inviganta	و ج ع د د د م الله الله الله الله الله الله الله ال	مه زور در مه دیر مه زور دی	ettle   ではませる   できる   できる	253-44 253-47 21 31 31 31 31 31 31 31 31 31 3	भिवस संस्कृत साराता स्थान है स्टब्स् स्थान है स्टब्स् स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान	· 阿克斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯斯	5 4 4 5 5 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9 9	3	* * * * * * * * * * * * * * * * * * *	- <b>y</b> £])	म्मित्रम् स्थापः स्थापः स्थापः सिक्तः मित्रे प्रस्तुत्ते स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः	**************************************		
	0 34⊈0 0 0	.FFIP	ak	Sb		. <b>Р</b> тค์	.æ1	ь aß	Eh		,फ़िल्स	I	.क्री	er.	jih		,प्रमृष्टी	000	ांकि•छि।	

000000000000000000000000000000000000000	35 irútitotik 25 jadikioja 25(1918 álkioja 25 prevé (væře) æfíe 26 pripepadeníe 26 prevenýspog-fálka	\$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$ \$	igliche Divergite Arberd Sinchie Sinchie
2 6	न्त्र माणप्रस्वरणातः स्वास्त्ययम् देवं उपसूच्ययम् प्रम्पे अस्तव्याः साम्यान्त्रस्याः १ इत्यामान्यस्याः इद्द इत्यास्त्रम्याः इत्यास्त्रम्यः इत्यास्त्रम्याः	できる     できる       できる     で	ाक्तुमम्पर क्रमाश्राम संग्रञ्जूषार इनास्त्रहोस इंशिहिस इनास्हेंग्रेस

	दिएम्,	पत्र	વૃષ્ટ વૈ	वेत.	विषय.		पूछ वी	केत.	। ध्विपय.	पत्र	श्रष्ट वं	क्ति.
		Ęą	5	₹	मासेर्विचारः	43	3	2	दीपवर्तिमपाणम्	e ji	5	પ્ર∦
		٩₹	3	ć	भारव्ये विवाहादी जनन	यो-			विवाहादी स्थानानि	ĘIJ	ঽ	- 8∦
1	न्त्रियां संस्काराद्विजस्वम	३२	₹	ŧ	रजोदोषे मासे श्रीकां।	ति:६३	?	ą	विष्टर्-मध्यर्कयोविचारः	90	₹	Ę
l	नान्दीुआहे कृते आहारि	दे-			गौर्यादिकन्याविवाहे				मधुपर्कः	७१	3	<b>Z</b>
	कर्मणां निषेधः	ęą	3	ß	गुम्बलविचारः	६३	3	4	गवारुभनम्	७३	7	3
	विवाहदू ईवीपेंडदाने				मातापित्रोरभावे विचा	हःदे३	Ŕ	ş	गत्रारुंभनविचारः	ড३	3	₹∦
l		Ę₹	2	ঙ	कन्यादानुषशक्तिः	83	÷	૪	कन्यादानम्	ઝ્જ	*	9
ĺ	पुत्रोद्याहु।दृध्वे पुत्रीविषा	4			वेदिनिर्माणम	₹\$		Ę	कम्यादानविचारः	13.5	8	3
		६२	2	6			ì	- 1	कन्यादानसंकल्पः	as	₹	₹
	आवइयके कमीण गुरू-	,,	·	٠,	विवाहे वरकृत्यम्	٩x	3.	2	दानश्कारः	•ફ	₹	9
ļ			_	_	विवाहकर्मारंभः	चे४	₹	6	अक्षतारोपणम्	ಅ೨	₹	٦. <u>[</u>
ĺ		ξş	ર	\$	तत्र शांतिपाठः	देश	₹	3	स्वस्तिवाचनप्रयोगः	હ	<b>ર</b>	Ę
	विवाहभारंभाद्धं स्कृतव	N-			ं वाग्दानम्	5.5	₹	9	अभिपेक मंत्राः	હ્	₹	4
+										·		

2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2. 2	9 7 75	### ##################################
ज़िंध स्थग्री		जिम्म सम्बद्ध सम्बद्ध भीति । इस्तु सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध सम्बद्ध

Š	क्षिय.	पत्र	पुष्ट पी	क्ति.	विषय.	पन	इष्ट पंक्ति.	विषय,	पत्र १	प्रष्ट पं	वित
	आज्येन पंचाहुतयः	९२	₹	3	सांगतासिङवर्ध बाह्य	[·		आचार्यस्कलम्	९८	₹	•
0	स्विष्ठकृष्टोमः नवाद्यतयः	अ९२	. १	19	गेभ्यो दक्षिणादिवानम्	94	*	वैष्णकथाद्वम्	90	₹	Q
¢	कंसारभक्षणम्	९२		۹		_		पात्रापात्रलक्षणम्	१९	?	6
0000000000000	अपुत्रायाः कत्यायाः गुहे				तृतीयमुचापन्ष	<b> </b> •	षम् ।	यथादानं तयाफलम्	66	ţ	\$ 3
\$		९३	₹	Ę	उद्यापनावी	धिः		प्रायश्चित्तसंकल्पः <sup>`</sup>	99	₹	6
0	मयाणपंत्राः (भाषार्थेश )	99	3	Ę	देहशुव्धिययोगः	<b>०</b> ७	२ १	अन्यायोधार्भितद्रव्यस्य ध	र्मकर्मणि		
\$	विवाहोत्साहे वरवन्वोरेकपा				माणायामञास्त्रार्थः तदावः	<b>라</b>			66	3	ť
¢	भेरतनादिनिर्णयः	९३	8	વ	करवं	९७	ર ૧	एकस्मिन्पाञ्चे देपानि			
Ŷ	वरवध्योः प्रतिज्ञामंत्राः				माणायापलक्षणम्	96	? 9	दानानि		ş	
ŝ	' (भाषायाम् )	9.9	2	*	् दुष्पतिग्रहनिषयः दुष्पतिग्रहदोषनिवारणम्	<b>९८</b> ९८	? 6			į	•
ô	स्रीभिर्गगराषरणम्	98	ર	4	ब्राह्मणभाषेना	९८		1 2.		÷	
9	। अभिवाससङ्गीलस्य बाहोः	Ą-			विमानुत्रया मायश्रिष-	10	* *		300	÷	
Ŷ	सेविनश्र फलम् 🛄	९४	₹	٩	करणम्	96	२ ८	केशांदीनां त्रपनम्		•	3
000000	ì				4/	•-	, -		•	٠	7
113	1				1						

3									1				•	Şi
jo (	(बेपप.	43	पुष्ट प्	क्ति.	विषय.		पत्रः	१५ प	वित.	विषय.	पन्न	प्रष्ट पं	क्ति.	0
10 4	विवाहसंस्कारः *		•		अभ्यातानसंज्ञिक	तः अप्	डा-		ſ	व्रह्मस्वारब्धहोमः	ሪሪ	ঽ	₹	ě
u 3	( विवाहहीमः)	40	3	ą	द्दामंत्रा:	4179	63	₹	- ₹	सप्ताचलपूजनम्	ሪሪ	₹	8	ě
l" }	्रतन विचारः	€0	3	4	अग्निसंज्ञकाः		63	?	3 }	सप्तपदाऋमृणम्	ং	₹	9	ò
3	प्रमाणमंत्राः (नंत्रायश्चि)	68	?	3	लाजाहोमः	***	ረኝ	3	₹	तत्र शासायेः	८९	3	٩	ò
è	अष्टाहुतयः आज्येन	63	ą	'n	तत्र आसार्थः	****	ያኔ	3	٠,	वरवःबोरभिपेकः	२०	3	3	ķ
è	राष्ट्रश्रदोमः	48	S.	ě	अमि	प्रदक्षिप	η;	•	۱ ۱	श्चनम्योषकोकने निर्णयः				ě
4	त्र शस्त्रभः	68	9	\$0	तत्र प्रथममंगरूम		৫৩	7	૪		९०	₹	ড	ě
4	1 -	લ્ય		ā	द्वितीयमंगलम्	****	୯୬	\$	3	क्ष्याः शिरासि सिंदूरकापन				ě
0	त्रचाहार्यः त्रच्छासार्यः	CA.	•	20	<b>मृतीपूर्मग</b> लम्	****	୯୬	3	6	<b>અમિવંત્રળં</b> ચ		1	₹	ě
٥	अभ्यातानहोमः	૮૬	٠	, -	चतुर्थमंगरुम्	H11,	୯୬	₹	વ	<b>कुल्रयमा नापत्त्यमाय्</b> श्चित्तं	63	4	?	÷
٥	अभ्यातानहोसन्त्राणां अभ्यातानहोसन्त्राणां	લ્લ	7	•	पाणिग्रहणस्		6.0	٦	55	ममाणपंत्राः ( वेत्राचीःश्र				Ŷ
*	1 1 1				पाणिखहणपंत्राः (	अपध			į		65	*	₹	8
*	निर्णयः तास्त्रार्थेश	८५	*	9	' भाषायां)	****	66	*	3	ंचतुर्धीकर्म	63	₹	ર	٠

	दिपय.	পস্	पृष्ठ व	वित.	विश्व.	यम	वृष्ठ व	ां <del>वित</del> ,	निवय, पत्र	वृष्ठ	पंचित
	र्गतो नित्यस्नान-				भोमधंस्त्रान	818	9	*	दानविधिः ११४	7	23
	धिः	114	₹	8.	र्वचमध्यस्मानं	113	3	3	औपधिस्नानं ११५	?	2
दान	स्य वैधर्म्यवैकल्पे				गोरजस्त्रानं	158	2	¥	हिरण्यस्नानं ११५	9	3
		255	*	4	धान्यस्नानं	158	á	G	गंगोदकस्नानं ११५	9	3
	ध्ययम-दाम-पूजानां				फल्स्नानं 🔭	152	2	Ŗ	भस्मस्नानाभावे वैदणवा-	·	
	ांसा		3	4	मोदपादस्य कर्माण				नां कुशोदकस्नानं ११५	>	
	तं अपाचितं च दार	ने११३	3	Ą	निपेशः	118	7	(g	स्नानांते सत्येदापूजनं ११५	3	
मृत्ति	फास्नानं	138	7	7	भौडपादस्य रूलपम्	888	3	19		1	•
			3	6	जलस्थलयोः कर्पकर्त				कर्तुर्नियमाः ११५	*	6
° यहा(	देकर्मणि क्तु नियमा	118	*	9	शुष्कार्द्रवस्त्रयोसियेथः	888	2		दानपात्रस्य असन्त्रिधाने ११५	. 9	
पविः	तारहितस्य कर्पनि-				वसुधारणनियमः	818	2	9	दानपात्रामाने मतिनिधिः ११५	ş	20
प्प	कत्वम् आश्रपनरहि	ते			दर्भोदकक्षेनानां संध्याद	T-			द्रव्यपावयोरभावे मतिनिधिः ? १५		
े यहा( पविः प्य स्य	र्गाणि वैपर्धम्	811	*	22	नानां निष्फकस्वम्	888	4	10			8

नि॰की० ॥६॥	***	विष्णुपूजनम  ग्रत्येशस्थापनम्  वर्षे शाह्यापे  गित्रहणीरिषः  ग्राह्यिपः  ग्रापश्चित्तां विष्णु  श्राद्धम्  ग्राह्यिपः  ग्राह्यिपः  ग्राह्यस्य  श्राद्धम्  ग्राह्यस्य  ग्राह्य	१०२ १०३ १०५ १०६	****	K 4. 0 0 00 ' W O V O	गुस्तवराग-पुराप शक्षणम् १०७ श्रातिश्वेशकराणि कर्माणि १०८ संकरीकरणानि कर्माणि १०८ अपानीकरणानि कर्माणि१०८ मिलनीकरणानि कर्माणि१०८ स्त्रिपायिक्षतप्रयोगः १०९ साजारस्यसंकरणः ११२	٠. ٥٠ ٩٠ ٩٠ ٩٠ ٦٠ ٦٠ ٦٠ ٦٠ ٦٠	6,000,000	अष्ट दानानि सप्तभान्यानि	११२ ११२ ११२ ११३ ११३ ११३	, e , e , e , e , e , e , e , e , e , e		असु०
				,		गोवप राज्यो सीवनः	; {	•	सक्षभन्यान दशदानानि दशदियस्त्रानानि	११३ ११३ १ <b>१३</b>	१ २ २	A 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4 4	11 % 11

. 0000	विषय.	पत्र पृष्ठ पंतित.	विषय.	पत्र पृष्ठ पंतित.	( विपयः,	93	पृष्ट पंतित	. 8
>***	घण्टापूजनं अंगन्यासः पंचांगन्यासः	१२९ १ ६ १२९ १ १० १२९ २ ४ १२९ २ ६	शुद्धोदकस्मानं अंगपूजा कुंकुपादिसपर्पणकलम् वरणपूजा	128 6 60 124 8 8 124 1 12 124 2 2	मंत्रपुष्पांजालः श्रंकोदकेन मोसणम्	१३९ १३९ १३९ १३९	ेश क २ द	
****	एकाद्शन्यासः करन्यासः देवन्यासः	140 1 10 140 2 4 130 2 4	नेवेद्यशेषे वैष्णवादीनां	1:8 <i>50 3 6</i>		146	२ ८ १ द	*000000
***	पूजनं अभिपेकः वंवावृतस्मानमञ्जम् प्रष्टावादनकान्तः सरफलं च	१६१ १ ४ १६१ १ ९	आरार्तिचयं आरार्तिन्यनशंसा	११७ २ ५ १२७ २ ५ १२८ १ ६ १२८ १ ११	શ્રુતિઃ	(स्थित १४०	₹o ₹	0000000
0000	.[		,	,,,,	,	•	•	0000

দ্বি <b>ং</b> জী	च्यानियमः ११६ २ १ व्यानियमः प्रमादकारमः ११६ १ १ १ व्यानियमः प्रमादकारमः ११६ १ १ व्यानियमः प्रमादकारमः ११६ १ व्यानियमः ११६ व	विषय- पत्र पृष्ठ पंतित,  झस्तायाचाहितदेवता- तां पूजानं १२३ १ १ कळदास्थापनं १२३ १ ६ अगन्युसारणपूर्वेक प्राण प्रतिग्रा १२४ १ ६ चतुन्न्गृह देवता सहित प्रधान देवताचाहनम् १२५ १ ३ मण्डुकादि देवताः १२५ १ ३ फिल्पबादि गिंदादेवताः १२५ १ ६ पुक्रयोत्तममायावाहित देव- तापूजनं १२६ १ ६ सिलक्षपारणविधिः १२६ २ १०	अधुनेति कलेतुपदेण शुन्तित्रम् १२७ २ १० भागवतलक्षणम् १२७ २ १० शांखपूजनं १२८ १ १० तुलसी-कमलाक पुणकूभारिणां
------------------	---	---	--

900	विषय.	पत्र पृष्ठ पंक्ति,	विषय.	पत्र पृष्ट	पंदित,	विषय.	पन	पुछ वंश्ति.	*
÷		१२९ १ इ	द्युद्धोदकस्मानं	118 1	. ₹o		१३९	१ ५	٠
00000	अंगन्यासः	१२५ १ १०	अंगपूजा	११५ १	ૡ		११९	۶ <	Ò,
÷	पंषांगन्यासः	१२६ २ ४	कुंकुपादिसम्प्रणफलम्	१३५ १	१२	मंगलार्थे नीराप्तनमंत्राः	११९	1 6	ģ.
\$	महापातकहरन्यासः	१२९ २ ६	वस्णपूजा	१६५ २	२	स्तुतिपाठः	१३९	3 \$	Ž
****	अंगांगन्यासः		तुक्तरीपत्रसम्प् <b>रणम</b> शंसा		9		<b>१</b> ३०	2 (	ġ.
\$	एकादशस्यासः		दक्षांगचूपूर्वसा	१३६ २	. ૧૦		१३९	₹ ८	Ř,
0	करन्यासः	१३० २ ३	नैवेदासमर्पणे प्राणादिमुहा	:१३७ १	. 6	विकेपार्वः	\$80	? 6	š
Ş		१३० २ ५	नेवैद्यक्षेपे वैष्णवादीनां			चरणतीर्येशासने फल-	,		ķ
Ŷ	9.	6	्भागः	530 S	લ		980	ا ، ،	ě
00000000	अभिपेकः	<i>≰</i>		१३७ २	4	•	•	, ,	ò
3	ं वंषापृतस्मानफलम्	<b>१३६ १ ९</b>		136 8	Ę	आयसादि-विषिद्धभानम			ő
8	<b>पण्ययाद्</b> नकास्रः		आगर्तिरपमधंसा	१६८ १	11	चरणोद्दश्यक्ष्णे निषेधः			싫
*	सरफर्लं च	133 4 11	नीराजनपर्शसा	<b>१३८</b> १		चरणतीर्धव्रहणे दास्तार्थः	130	\$ \$0	;
0000									3
13									1

विश्वी वत्र पृष्ठ पंतित.  विश्वी वत्र पृष्ठ पंतित.  विश्वी वत्र पृष्ठ पंतित.  विश्वी वत्र पृष्ठ पंतित.  विश्वी विश्वी वत्र पृष्ठ पंतित.  विश्वी विश्वी वत्र प्रथ विश्वी व	11 6	ľ
---	------	---

## अथ साहित्यनी यादी-

ग्रह क्यांतिमां - पंक, नाळीयेर, सी-

द्य दहीं गृंडपस्तंभ, नराज, चार पंथवर, वीगरे तैयार करी मांडवा पृहर्व कर्खः

पारी, पान, अवीक, गुलाल,सिंद्रु, भूपसळी, नाडु, कोपरानी वाटी, खारिक, द्रास, एलची,

सर्वीम, कमलकाक ही, गुग्गुल, सरसव सर्वीपधि,

अध कुरवडीनी साहिस्य-वंड, बाळीसर, सोपारी, पान, अवील, गुलाल, सिंध्र, इळन, भूपसळी, भीडळ, पोळ, भाणा, पुर-वंड, बाळी छोट, पुरु, द्वार, द्वारे, याजठ, सफेत करुडो, पुजाने पाटे तरभाणं, आचमनी, वंचरान, दीवाई कोडी हुं, पाठल.

तळजब, केशर, कपूरकाचली, यवंखा, कपूर, साकर, मीरळ, ग्रुखड, सफेतककडो, राती-

हैं है इंडी पापड़नो छोट सिवाय नीचेनी करूडों, रेशमी करूडां, घोतियां, दूध, रेस्को वपासनी छेनी मोगरेख,वानो, आंचाना देहीं, मध, स्बंड, ची, मोळ, चेत्सा, यडं, पाना, तिंदूर, समदीते स्थक्तं, सनो करूडों, त्रिसनी दाळ, कालुंमान, मायनुं मून,

पंखा, आचमती, पबाळा, तरमाणा, सुस्रवा, 🔯

सुवो,

षांयमाटर्छा,

गायमुं छाण, पीळी मटोडी, बेरडी, केळा.

जमरुख, नारंगी, दाडम, बीजोरु, फूलहार. 🕏

दर्धा, सर्वीय, आकडो, सासरी, सेर. 🖔

(ंजॉओटी, पीएको, उपरहो, शामी ) ऍच- 🍪

ह्मपानीमृति स्वीचडी, वेक, पाठका, बाजठ, 🚫

होटी, शंदानी तरभाणी, सोनानी मुर्ति,

कांसानी वाडकी, तांबानी वाडकी, तांबानी

आज्यस्याकी, चरुस्याली, कांसानी थाकी.

वड ) तांवाना कद्भा, तांवाना तरभाणां. 🏻 🥻

पळ्ज ( पीपळो, उभरहो, पीपळी, आंवो.

चाकळीओ,

पारका, सरवाण, सामकल्या, रातो ककडो | बदाम चारोळी परितां जायफळ वार्वत्री सु-खड सफेक्ककडा लालकडा रेगमीककडा फणवांग कोडीयं, सपेन्डी, पवाट, चारणी धर्व. धोतीया द्रध दही मन खांड वी गोळ चोखा बरफी, बींगरे साहित्व तेयार करवी. वरने आववाने-शेवधुं, पीताम्बर, सोनान्द्रपानी वीटि, कानखोवरणी, दांतखोत-वरं तुरोतीदाळ, कांचुभात, गोमप गोमूत्र लग्ननो साहित्य-कंद्ध, कार्चमात, रणी, अर्जकार (कन्यानेपाटे) किहिया-श्ररही केला जमरुख दाइप नारंगी बीनोध नान्धीकेर, सोपारी, पान, अबील, गुलाल, सर, पानेतर, आभूषण ( चुडो, कांक्रण, फल हार दवी जलसी समीध, आजहो सिंदुर, भूगसळी, द्रीं, मध, धी, खांद, तादा, वाली) चीनीवारनं कत्र होय सो खोक केळना स्थंभ क्षेरण, इडीयानीसीकी-कांसानी बादको, कांसानी थाळी, तुलसी, पगछं बीगेरे छाववं ॥ फ्रक, बरोड, रतन दिवडी, पॉकणा, इकदना म्बान्बरो में इस्होंहोटो-पीपरही गांडीया. अंतर्पटनोककडो, विष्टर, नाडु, उमरडो समी पंचपद्धव, पिपळो उमरडो उद्यापनमां-कंत्र, नाळीवरे, सोपारी अर्थपान, जानमनीय पान, पान, अबीक, गुलाछ सिंशून, भूपसळी, नाडु, विपळी आंबी वट वीगेरेना पांतरा माटोडी-कोएरानी वाटी, खारेक, द्राहा,प्रखर्वा, छ्वंग, ( चोडानी, हाथीनी, राफडानी, संगय शरी, मोळ, घाणा, भावनी घाणी, पा-रडी, सुपर्ड, कंसार, ककश, मृत्यय, कंसार क्यलकाकडी, गुण्युक, सरसव,सर्वापधी, तक, ( नदी समुद्र मळचा होय त्यांनी ) तळावनी वान, मुस्रशा, बरवेडीयां, श्रीत्था, पानी, ने वन केयर कपुरकायकी कपुर चर्चला,साकर | सामद्वारनी गीम्रालानी, एटला स्थान एर्पी |

्रे स्टोडी छावदी, धउं, चोखा, पग, चणा, अदद, सोबाना करुवा, तांवानी रोटी तांदाना नत्भाणतांदानी तस्थाणी मध्यकछक्ष त्रांवानो साहित्य-धोतीया रुपानी, अलंकार, गुंबा ( चणोटीनी ) माळा आसन गोमुखी पाळा, दीवीयो, जनोइना जोटा छत्री चोडो फेमश्हें केडीयुं आच-मनी, पवित्रीओ, तस्भाषा, पत्राका, वरफी, नरभाणतांचानी सरबाणी मध्यक्षस्त्र जांचानो चापणी, राषेछु, नुस्र्यं नेनापर तरभाणं कांसानी थाळी, कांसानी वादकी त्रांचानेवाढकी ( पर ) थाळी, वा हळ्य खमापाहेश्यरवार् इको. खेळो, सोनानी मुरति, रुपानी मुरती छानडी, कांसाकी, आस्तो, बांछा, खुटो, सोडी, आस्तो, बांछा, खुटो, सोडी, आस्तो, बांछा, खुटो, सोडी, अस्तो, बीजणं सेयाडीवेर, रुपानुं जानोह, रुपानुं छत्र, पानुका विचय सहस्रनामावळी. चावणी, राषेखु, मुरहवी पदाला चाकळी वेंडा कोपरापाक गोपिचंदन चरणामृत साल कोडीआ भारली सुदकी कालोरंग चाक तीर्थोदक परीयाळीदाणा. गरमांथी-वाजेड उपापाहेश्वरबस्त घोतीयुं घटन अंग-वीगर पादका अध्यक्ती पदाला हरभाणाः पीछोडी पाघडी चोळी, चणीओ, पुजाने माटेजोइए आसन माळा गंगाजळ साडी, आरसो, दीजणी, सुखश्चया, पुरु-जगनाज्ञ रमणरेती विगरे यथावती श्रद्धा-भगाणे लावनो इति साहित्य भक्तरणपु. 0000000000000

## निवेदनाष्टकं ॥

वेक्तं

112011

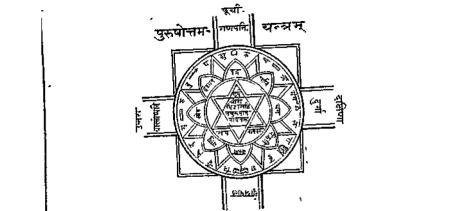
वेदो हि मुखं विखिल्सय वर्षजातस्य सर्वत्र प्रसिद्धमेतत् ॥ तत्भोक्तसंस्कास्यवां प्रशुतिर्धस्या भवत्ययः न वाच्यतास्ति ॥ १ ॥ बलुमेत्रातं मुनिपिविवदं पीराजसंतं नहि वेदिभक्षम् ॥ श्रुवेरिवार्थसम्बर्गन्यज्ञानगद चैवल्तिक काकिद्रासः ॥ २ ॥ कळाविदानीवनवैश्वसंद्या युनानुसारेण हि लुप्तवर्षाः ॥ मा भूवनित्यर्थे प्रहेतदृष्पैः प्रोत्साहितोऽक्कवीपमं प्रवंशम् ॥ ३ ॥ तेषां तु नामानि ददाम्ययो यन्कृतहरा स्यातिगता तु सान्त्री ॥ अदास्यवर्षाः सङ् पौर्वभारा विषक्षिना याज्ञविनामयेषाः ॥ ४ ॥ तेपायिदानी 🙎 किल भोरमध्यागग्रेससोऽसी कृत राजमान्यः ॥ त्रिजूननारुयो भारेदेशनम्या समाध्यं यः मथनं ददी ये ॥ ५॥ पितृव्यको पनपतिः प्रचमून तस्य प्रगारवासो वित्रभूषणस्वतः ॥ तस्यरमञौ द्वौ सुधिस्त्री बदान्यौ मनूनटू नामनी संद्धानौ ॥ ६ ॥ तावाश्रयं मे ददतुश्र सम्यक् रूस्पीस्तरण ्री तत्वरिपालिका च ॥ वेलाल्यदासस्य च या सुवत्नी साध्वी बदात्या पददौ समाध्यम् ॥ ७ ॥ रंगीस्टदासो निगतस्यवस्तथा सुरारजन्मा जवकुष्णदासः ॥ तंद्रकृत्यापारिकवसणोऽन्यो दायारय-जारायणदासजातः ॥ ८ ॥ यतं वदान्याः किछ सूर्यपत्तने वसंति ते मे सददन् समा-

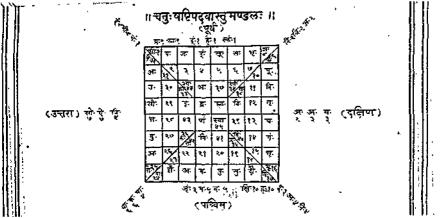
जे केंद्रीय वेदेखानी आ प्रेनमा जाग्रय आवेडो तेवना नाते प्रंय रहे त्या प्रभी अपक्र रेहेमा परास्त्रो करीने सुरीयाजे. शुभ भवतु ॥

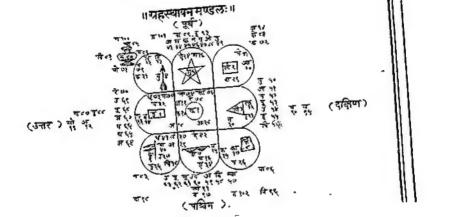
थयम् ॥ सदाथयान्मुद्रिवकौसुदीयं तनोतु कर्पाणि शुमानि छोके ॥ ९ ॥

Hotel

`	to divini		-	-	~ p+	_				7	ST.	À	4						_	_			į	.ee. Ter	Т	Т
١	निस ई	г	1	110	3	3	7	2	Ŧ	16,	#	L	L	19	14	1	2	4	1	1	150			ওন্য হ্র	١	
Į		Г	10	4	华	2	2	1	44	14	Г				190	15	7	13	7	华	1	\$		] }		1
ı		五	1	3	10	19	4	Ų.	Þ		Г					1	4	Σ	ピ	#	*	4	1			i
Į		А	1	15	3	44	114	事	10.		Γ		Г			14	1	4	4	4	17	48	1		-	
ı		A	14	弧	d.	3	14	10	14	~	Г			Г	16)	14	14	身	Tá	4	45	1	l <sub>v</sub>	3		
IJ	. &	4	4	A	*	16	8	h	19	<b>F</b> '	1			B	19	153	U	100	1	4	1	14	h-1		ч	1
ll	AS	A	A	-4	4	当	15	本	Íþ	15	1	41	P	Į.	14	4	F	4	F	F	F	1	1			1
II	44	A	4	垂		当	감	4	4	À	17	1	10	Į,	1	2	F	卡	P	1	F	4	~			1
u	£	亚	12			Ž,	4	4	~	Ť	ग	۲	1	帝	47	+	4	ゼ	Æ			15	45	72	1	1
ł	Za.	बु	-		П		31	4	괄	4	Г	Г		Т	4	45	+	#	1	Г	Г	Г	锯	75.	1	ľ
ı	The state of the s	۴	1				-	4	쇠			1		T	1	45	F		Г	Г	Г	Т	-	Pedrana as	ı	1
11	ादा जन्तर	۳	✝	Н		$\neg$		4	1	_	-	1	Τ	İ٦	Т	48	+	Т	7	1	Г			द्राविण चण्ड	- 3	1
1		34			П		<b>⊴</b> N	4	34	ér.	Т	T		†-	4	42		佢			Н		4	1	1	1
IJ		끖	13			4	31	4			4	+		4	41	1		1	No.		$\overline{}$	F	47	1	3	1
۱		4	4	-1	4	3	34	事	r	_	4	新	क्र	3	7	ŧ	=	15	4	4	4=	-	-		1	1
U	•	14	14	A	4	3	4	4	क	4	A	4	*	'tit		-0	S	ŵ.	13	E	-	-	10		1	
I		14	A	T	.4	긁	2	4	, ti	A	.9	-	-	-	4	.0	æ	3.	4	40	-	1	Ü	i i		1
ll		ন	4	3	4	굯	T.	<u></u>	7	4	-	-	-	1	131	4	Ä	नी	Z	4	4	1	ř.			1
ł		7	3	4	2	4		dr i	÷	CH.	-	-	-	+	1	4	A	6	4	Z	70	19	Lat		1	1
1		3	4	3	बंग	0	117		ŧ,	-	H	۲	-	1	-	4	4	7	ती	4	X	पी	12		1	1
ľ		۳	8	4	3	+	-	-	-	祈	H	H	1	-	4	-	7	+	-	की		1	160		1	
ı	315 3r	Н	1	íf,	7	₹	$\overline{}$			ती		╆	H	7	-	-	÷	+	1		7	2	Н	2	1	1
t	बकु स	ᆫ	_				•	-			-		_	1,77	1.21	-	1	17	1	11	1	_		ने रव		11







सिं'छुगस्रो विद्युपसुरत्ततो योऽर्च्यते कर्मणोऽत्रे । यन्माता शैलपुत्री प्रणमित सततं शास्दाम्बावरो यां साप्यधानी ैं।|यदीया प्रभवति यदि चेद्रामदृतः स चन्द्यः ॥ १ ॥ ं वसन्ति वर्ष्यवातले विद्युधमंडलीनिर्मिताः सहस्रकृतयः परं न किल संक्रकार्यक्षमाः ॥ विलोक्य तदहं मुदा विस्वयामि रम्पामिमां विवाहपदपूर्विकां सुग**म**शैलिकां 🕏 िकोमुदीम् ॥ २ ॥ त्रणम्येष्टं रामदूतं स्वयुरूनं कर्मयन्त्रिजानः । विवाहनीमुदीमेतां करोमि मूलशंकरः ॥ ३ ॥ जियानंदर्य पुत्रोऽहं श्रीमाली गुर्जरो द्विजः । बालबोधार्यमेषो मे प्रतिष्ठार्थं न वे श्रमः ॥ ४ ॥ श्रीसूर्यजा- 🕄 🛂 कुलमतं सुरमं यरएत्तनं सूर्यपुराभिधानं । तत्रेव सामाभिधवेदपाठी वसाम्यहं येन कृता हि सौठी ॥ ५ ॥ जार्थ-सहत्य नेशक जनो अर्पिवासना दरेक श्रंयारंभयों मंगळ करवानी इदी शेयळे.तेवां वण प्रणात्वरा श्रंयारंभयां गणेशनं स्तवन होयळे. प स्पष्ट छे. भंगल करबानुं कारण निविद्यवा साथे मितिकार्यनी समाप्ति धवी जोहपू, एज गुरूव हेतु छे. भंगल करवाथी ते ते देवतानी 🔆 🙎 आर्चार्याद् छर ते ते मुभक्त्यमां महत्त्व धर्वे, ए आपर्यु कर्तच्य होवायी, व्ययकर्ता पर्मभक्त शिरोमाणि शीरमदत्तेन मंगल कार्यमा बंदन

हैं तरे छे. कारण के-सर्व पर्द इस्तिपद्दे निमर्थ-ए न्याये करीने श्रीरमुशानतीनी अंदर सर्व देवतानी मसन्नवानो अंतरसात थर जाय छे. जेपके-श्रीरामर्गद साहात ( विष्णु पोते सुर्यकुलकूषण यर अनतमी छे तथा मारुति थर साहात ( संकर ) पोते अवनर्षी छे, ए कथा मसिद्ध छे. १ साठी नामदे अस्तर वर्ष्य छे.

श्रीगणेशायनमः ॥ अथः मंगलाचरणं ॥ समात्मा विष्णुससीदितिजनविदितं ह्यांजनेयः शियोमुखत्सूतुः

अ्य गृहयर्ज्ञः ॥ तत्रादो यजमानो मंगलस्नानपूर्वकं स्नात्वा परिहितयोत्वस्नुकुंकुमचंदनादिभृतपुण्डूः संच्यादिवेश्वदेवान्तं नित्यकर्मं विभाग । स्वदक्षिणे मंगलद्रव्याण्यादाय शुभवस्त्रालंकृतपत्न्या सह शुभमुहूर्ते शुभदिने ख़स्तिकादावासनविधिना प्राङ्मुख उपविश्य । स्वस्तिमंत्राः श्रवणीयाः ॥ यजमानोऽप उपस्पृश्य प्रणवं स्मरेत् ॥ विश्की? तत्र पातस्याद्री उक्तः द्वितीयो पाइक्स्यपसुत्पादी प्रयोगपारिजाते च ॥ स च त्रेया अयुसलक्षरोदिहोपारपकः नित्यो दैमिषिकःकाम्पथिति भेदात् ॥ कार्यारभेषु संबंधु प्रतिष्ठास्य निष्ठा च । नवोद्यमनेत्रे च गर्भायानादिकमेषु ॥ आरोग्यस्नानसमये संक्रावी रोगसंभवे । अभिनारे च यः कुर्यात् प्रहर्श्या विशानतः॥ सोऽभीष्टकलपामोति निर्मित्रन न संश्रयः ॥ इति प्रयोगपारिकातेच मदनरत्ने ॥ अंगोहृत्यारणोदकेन स्तानंतन्त्रीमलं हमृतम् ॥ इति संग्रहे ॥ इक्षमण पयोम्लं तांगूळं फलमीपथं । अशयस्थापि कर्चच्याः स्नानदानादिकाः क्रियाः ॥ इति मार्कडेयः ॥ कापार्य कुण्यनम् च मिलनं केशद्रुपितं । जीर्ण च संचितं वापि पारस्यं पैशुने मृतं ॥ १ ॥ छिन्नाम्रमुपयसं च कुरिसतं पर्पतो सिदुः ॥ इति-च्याघः ॥ प्रागत्रपुरगत्रं वा धीतमसः मसरयेत् । पश्चिमात्रं दक्षिणात्रं पुनः मधालनाच्छित्तः ॥ इति प्रतहेमद्रौ ॥ कश्चित्र्यं तु यद्भं पुरीषो येन या हतः ॥ मुत्रमेशुनहृद्धं धर्मकार्षे निवर्तपेत् ॥ इति मार्कडेयः ॥ रें हुवे गणपति, संकरमा पुत्र तथा पार्वतीनंदन छे. अने सारस्वतीना पति ब्रह्मा पण शंकाने वंदन हरे छे तो ते शंकरायतार शामरूतने वंदन १-इवे सम्ब्रु भगस्य कार्यनम् आरममा महयदा वस्त्री, ते ट्यारआर, लाल, अने काटी आहुती एपी रीते प्रण प्रभारनी छे. ( प्रहमाल ) प्रतिष्ठा, ूर्व हीं ही द्वीमिति हस्ते जलं गृहीत्वा ।। अद्येत्यादि० प्रास्त्र्ये कर्मणि चित्तद्वत्तिं निरोधाय अमंगलनाशकशांतिपाठ हैं श्रीकापः ज्ञाविकामो वा पर्येद्रविलकं चेत् ॥ इतिकासचिकामणी ॥ मास्त्र्ये ॥ श्रीकामः ज्ञाविकामो वा ग्रहयतं समाचरेत् ॥ शृष्टवाद्युःपुष्टिकामे व विवस्त्राभिचरन्युनः।।ब्रह्शाति त्रवक्ष्याभि पुराण श्रुति चौदिवास् ॥ पुण्येन्द्रि वित्रकायिते कृत्या व्राह्मणवाचन।।ब्रह्मन्युहानि त्रवक्ष्याभि पुराण श्रुपि समाचरेत् ॥ 💸 🎎 ग्रहयकालचा भोत्ताः पुराणश्चविभाषितवित।। शाबिसारे ॥ सर्वेषु घर्षकृत्येषु पत्नी देशिणतः सदा मित्रप्रांसग्रहे ॥ श्राद्धे यत्ने विचाहे च पत्नी दक्षिणतः 💍 सदेति अत्रितंदिवार्या ।। वापनपुराणे ॥ सर्वे मंगळवाक्टपे वरेप्यं वर्षः हुःभं । नारायणं नवस्कृत्य सर्वेकविण कारयेत् ॥ अपरार्वे ययः ॥ विद्याविष्यात्रत है स्नाता त्राताणाः पंक्तिपावनाः॥ मंत्रिणे निषमस्याश्च ये विमाः श्रुतिसंमनाः ॥ माणिहिंसानिहचाश्च ते हिनाः पंक्तिपावनाः ॥ इति कृत्य चितामणी ॥ करवायी पथा देवता मसस यवायी प्रहादियी क्ता विच्नोनो विनास था यंगळक्ष्रोक प्रणावे छे. बीर्जु यहक्रस्यमा विज्ञकर्तो सुख्य राजसी 🖒 होयछे अने पमते नाम राक्षसानीक होनाथी सथा छक्ष्मी अवतार श्रीजानकीमा क्रुपायत्र होवाथी, श्रीरामना दृतते मेगळस्मरण 🖏 🎉 उस्पीयद छे, एम समजी संगठ करी बीजा चार रुप्रेक वडे प्रंथकर्का पोवानं स्थान नाम बतावी प्रंयारंभ करे छे. 🔐 ┷यस, शस्त्रासीमंत. रोगछ्वत थया पठी संकाति,छग्न.यहोपवितादि सस्कार विगेरेगा ग्रहपूत्रन करी कार्यनी आरमं करवाथी साग कर्म यह संपूर्ण फळ मेळवे 📭 🞇 जे तथा बहुबहुना आरंभ यनमाने मेगल्स्नान ( हळदर, आपळा, बाळो, तेल, सर्नोवधि, सर्वे बस्तओ उना पाणीमा नाली ) उप्लोदक बढे बरवं पठी 🎥 भीताम्बर था शुद्ध धोवला पल तथा उपरक्ष बाबी साधे राखी तिलक विधेरे करी नित्यकर्ष करतुं. १—द्वीप दिक्से, शुभ मुहूर्ते बाखणिने योलानी अं नम्म नेपन पूर्वक विनाति करी कहेतु के-मारे अधि प्रस्थिय देवता सहित ग्रह यहा करते हैं ते काम निर्विधे प्रियुर्ण करी आयो. एम नहीं बाखणीनी

करिये ॥ इति जलमुत्सुजेत् ॥ विप्राः शांतिपाठमंत्राः पठेषुः ॥ भृगुर्वसिष्ठः ऋतुरिङ्गराश्च मनुः पुलस्यः पुलह्य गीतमः । रेम्यो मरीचित्रयनमञ्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे तव मंग्ठानि ॥ १ ॥ सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यास्त्रीपिंगलो च । सप्तस्त्राः सप्तरसातलानि क्वन्तु सर्वे तव म्गलानि ॥२ ॥ ांशार्णवाः सप्तक्रुलाचलाञ्च सप्तर्पयो द्रीपवनानि सप्त ॥ मुहादिकृत्वा सुवनानि संप्त कुर्वन्तु सर्वे तत्र मंग-नवक्रवलयदामश्यामवर्णाभिरामः सीतपालिङ्गिताङ्गो सर्वतो समचंदः ॥१॥ अशेपलङ्कापतिसन्यहन्ता ३ ॥ कनकनिकपभासा तापं विह्यून्मण्डितो मेघलण्डः शमयतु मम अप्ता टर पाटकपर राख आसन पापी पोताने जमणे हाथे की सहनतेपान वेपी मनने स्थिर रासी, अद्वापूर्यक शातिपाटना मंत्रो सांमळवा. घणे ठेकाणे यतमान भावे पारती पेरी बेसे हे, पण ( कंतुकोर्ण्णा निवर्तयेत् ) विगेरे शास्त्रना प्रयाणयी प्रायध्यिच हे. तो रूटीने नाघ न आवता शास्त्र विगेरे बांचवी. हर्सी, श्रांति, प्रति, पृष्टि, बादिनी इच्छाबन्छाए प्रह्यत प्रथम करवी.— विद्वान, वर्षिष्ट, दयालु ने होष वगरना बाचणो पासे शांतिपाठ मणावजो, — इ.त. अमणे काने पाणीनी स्पर्धे करी ज्ञान अने शांतिने आवशासको ( प्रणत ) तेनी प्रण वस्त मोदेशी उचार करी हाथमां पाणी छड़ देशकाळर्जु म्मरण वरी आ कर्ममां मारुं वित्त िश्वर रहो तथा निर्वित्न पूर्वरु कर्म थाय एम कही पाणी छोड्युं, पुत्री सर्व मंगळता संगळहूप नारायणादिखे समरण. करता शान्ति पाठना पंत्रो व्यामणीना मोटेपी सांपळरा. यनपाने हापमां नालीएर तथा दशणामां रूपानाणुं राखी उभा धह, हाथ जोडी सांपळर्जु रै उपरच शातिभाउना मनो बाह्मणोना मोदेशी सामळी, नमस्प्रार करी हाथमा राखेला फळ दक्षिणा बाह्मणोना परगोमा मुकी आसनपर मेसर-

शिरामसेवाचरणेककर्ता । अनेकदुःलाहतलोकगोप्ता त्वसौ हनूमान् तव सौरूपकर्ता ॥ ५॥ यः प्रत-नामारणलञ्भकीर्तिः काकोदरो येन विनीतदर्पः । यशोदयालंकृतमृतिस्वात्पतिर्यदूनामथवा रव्रणाम् ॥ ६ ॥ श्रांतिः शांतिः शांति'ः ॥ यजमानभाले तिलकं कृत्वा ॥ यंत्रार्थाः सफलाः सन्द्र पूर्णाः सन्द्र मनोस्थाः ॥ ३ शक्तुणां बुद्धिनाशोऽस्त्र मित्राणासुद्यस्त्व ॥ १ ॥ स्वस्तिर्या चिनाशास्या धर्मकल्याणवृद्धिदा ॥ वि॰को॰ क्षे समीपं गत्वा पादाभिवंदनं कुर्यात ॥ विणाः ॥ वागीशाद्याः सुमन्सः सर्वोर्थानामुपक्रमे । यन्नता कृतस्त्राः स्युः है तन्नमामि गजाननम् ॥ १ ॥ इनुमानन्नतः पाद्य पृष्ठतो देवकीस्तः । स्त्रेतां पार्श्वयोदंवी भ्रातरी समल

्रीधनणाम गुजानगर ॥ १ ॥ वृद्धानगराः सन्त्रिश्वलाः ॥ सर्वोत्तरमस् तस्याहं ग्रह्मादी नमाम्यहं ॥ इ ॥ ह्री शास्त्रा शास्त्रांभोजवदना वदनाम्बुजे ॥ सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सित्रिधिं सित्रिधिं कियात् ॥ ४ ॥ यो रुद्रः सर्वमृ तानामादिशान्तविवार्जितः॥अष्टमूर्तिगिष्ठानं तस्य पादौ नमान्यहं ॥५॥ गणाविर्षं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहं॥

विष्णुं रहं श्रियं देवीं यदे भक्त्या स्रस्वती ॥ ६ ॥ स्थानाधिपं नमस्कृत्य दीननाथं निशाकरं ॥ ध्रणीमभसंम्हतं शिशपुत्रं वृहस्पति ॥७॥ देत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ॥ सहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारंभे विशेपतः ॥८॥ है श्राप्त । ज्यान विश्वास । ज्यान विश्वस । ज शिरसा शप्या मनसा वचसा तथा ॥ पद्रभां करान्यां भातुभ्यां मणामोष्टांग उत्त्यते ॥ इति धर्मसिन्यौ ॥ स्ताने बसे च

निवेदो अध्ये आचपनं स्मृतम् ॥ कालिकापुराणे ॥

विद्याधिकान् सुनीन् सर्वात्राचार्याञ्चतपोधनान् ॥ ११ ॥ तान् सर्वान् प्रणमाम्यद्य रक्षन्तु ते ममाध्वरम् ॥ अन्ये विद्याधिकान् सुनीन् सर्वात्राचार्याञ्चतपोधनान् ॥ १२॥ सर्वे नमस्कृतास्ते मे यज्ञं रक्षन्तु सर्वद्।॥ पूर्वे रक्षतु गोविन्द आमेपा भारुङच्चाः ॥ १३ ॥ याग्ये रखतु वासहो नारसिंहस्तु नेर्फते ॥ केशवो वारुणी रक्षेद्रायव्यां मधुसूदनः ॥ १४ ॥ उत्तरे श्रीधरो रहेदीशाने च गदाधरः ॥ ऊर्चं मोवर्धनोरहेदधस्तातु त्रिविकमः॥ १५॥ एवं दशदिशो रहेदासुदेवो ्रीजनार्दनः ॥ यज्ञात्रे पात्र मां शंखः पृष्ठे पद्मं हु स्त्रतु ॥ १६ ॥ वामपार्श्वे गदा रक्षेद्रक्षिणे च छुदर्शनम् ॥ उपेंद्रः विषा विषासु ब्रह्माणमाचार्यं पातु वामनः ॥ १७ ॥ अच्छतः पातु ऋग्वेदं यज्जवेदमधोक्षजः ॥ कृष्णो स्त्रतु सामाख्यम ्रीयर्ताजन्तु माधवः ॥१८॥ विपा ये चोपदेष्टारस्तांश्च दामोदसेऽचतु ॥ वेदंमंत्रेश्च कर्तन्या रक्षा श्रस्रेश्च सर्पपैः ॥१९३॥ ्री∥यजमानं सपत्नीकं वास्रदेवस्तुरश्चतु।।स्क्षाहीनं तु यरसर्व तस्सर्वं हशिरश्चतु।।२०।। इतिप्रणम्य स्वासने उपविक्य आचम्य | गोंकणीहातेदुस्तेन मुपनानं जलं विवेत् ॥ इति ॥ आस्पनासाक्षिकणौं च नामिक्तकं ध्रुजी स्पन्नेत । प्रमाचननं कृत्या साक्षात्रारायणो 🔯 गोर्नकर्भोद्धातिस्तेन परमानं जलं वित्रत् ॥ द्वात ॥ आस्पनारामस्य । निर्देशं ॥ भनेत् ॥ द्वाति भारते ॥ अगस्पनारामस्य । प्राप्त भारते ॥ अगस्पनारमस्य । प्राप्त भारते ॥ अगस्पनारमस्य । प्राप्त भारते ॥ अगस्पनारमस्य । प्राप्त भारते ॥ अपने प्राप्त भारते ॥ अपने प्राप्त वित्र प्राप्त भारते ॥ अपने प्राप्त वित्र प्राप्त भारते ॥ अपने प्राप्त वित्र प् वया ही करावाय नमः॥ ही नारायणाय नमः॥ ही माचवाय नमः॥ इत्याचम्य॥ ही गोविन्दायनमः इति इस्त-¶प्रक्षालनं ॥ आत्मनः समंतात्मदक्षिणयद्धदकक्षेपणं कुर्यात् ॥ ईी नमो भगवते वासुदेवायेति प्राणायामत्रयं कुर्यात् ॥ |पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीष्ठरूम्यो नमः ॥ श्रीपरात्परग्ररुम्यो नमः ॥ इष्टदेवताये नमः ॥ कुल्द्रेवतावे नमः ॥ ग्रामदेवताये नमः ॥ ल्द्यीनारायणाभ्या नमः ॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः ॥ शचीपुरंदरा-म्यां नमः ॥ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥ सर्वेभ्यो त्राह्मणेभ्यो नमः ॥ सुमुख्येकदन्तश्र कपिलोगजकर्णकः ॥ लंबो-

दुरुष्य विक्रयो विप्तनाशो विनायकः ॥ १ ॥ ५प्रकेलुर्गणान्यक्षो भाळपदो गजाननः ॥ द्रादशैतानि नामानि यः

|पठेच्च्रृणुयादिष ॥२॥ विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ॥ संत्रामे संकटे चेव विप्रस्तस्य न जायते ॥ ३॥ शुक्कांवरयरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नयदनं ध्यायेत्सर्वविद्योपशांतये ॥ ४ ॥ लाभस्तेपां जयस्तेपां कृतस्तेपां गराजयः ॥ वेपामिदिवस्त्यामा हृदयस्थो जनार्दनः॥ ५॥ अभीषिततार्थसिग्र्यर्थं प्रजितो यः सुरासुरैः ॥ सर्वेविमः अतो यत्नेन कर्तृष्यः त्राणायायः द्वाभाषिना ॥ द्वी द्वी मासस्तु पथ्यान्हे जिल्लिःसंस्यासुराचेने । भोजनादी भोजनान्ते पाणायामस्तु पोदत ॥ यथा पर्तवातृनां दोणे दहति पानकः ॥ एत्यन्तर्गतंपापं माणायांभन ददाते ॥ १ ॥

ि॥ ८॥ तदेव लग्ने सदिनं तदेव तारावलं चंद्रवलं तदेव ॥ विद्यावलं देववलं तदेव लक्षीपते तेऽङ्कियुगं स्मरामि ॥ ९॥ यत्र योगीश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयोर्भृतिर्ध्वा नीतिर्मतिर्मम् ॥ १० ै सर्वेष्यारूथकार्येषु त्रयस्त्रिसुवनेश्वराः ॥ देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनः ॥ साक्षतज्ञल मादाय ॥ श्रीसचिदानंदरूपस्य ब्रह्मणोऽनिर्वोच्यमायाशक्तिविज्ञंभिताविद्यायोगातकालकर्म-विष्णुविष्णुविष्णुः अरा स्विभावाविर्भृतमहत्तत्त्वोदिता हिंकारतृतीयोद्भृतवियदादिपंचकेन्द्रियदेवतानिर्मितांडकटाहे चतुर्दशलोकारमके लीलया तन्मन्यवर्तिभगवतःश्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्धतसकललोकपितामहस्य ब्रह्मणःसृष्टि कुर्वतस्तदुद्धरुणाय सितवाराहावतारेण[ध्रेयमाणायामस्यां धरित्र्यां महापुरुपस्य र्भविष्ये ॥ संकल्पेन विना कर्म धर्तिकचित्करूले नरः । फलं चाप्परपकं वस्य धर्मस्यार्थक्षयो भवेत ॥ १ ॥ संकर्रियं मासपक्षादि निमित्तानि तथैन । इदं कर्प-करिप्येक्षमितिसंकल्पमाचरेत ॥

८ -आनमनीमां मछ एइ तेवां चंदन कूछ द्रव्य तथा फछ मूकी त्रण अलत (विष्णुः) उचार करी संकल्प करवी. संकल्प वगर कर्म करे ही फछ

अदर्शं मळे छे, माटे महिनो, तिथि, नार, भराव, योगकरणादिनो उचार करने।

🎉 सर्वकार्येषु सिद्धिद्ध ॥७॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेपाममंगलं ॥ येषां हृदिस्थो भगवान मंगलायतनं हरिः॥८॥

गणाधिपतये नगः ॥ ६॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटिसमप्रम ॥ निर्विप्तं क्ररु मे देव

वि॰ को॰ है सप्तद्रीपमां हिताया अभिनेदाद्विध्याद्विष्टण्दीपवलचीकृत्कृतवोज्नविस्तीर्णे जंखदीपे स्वर्गस्थितामरादिभिः सेवित गंगादिसरिद्धिः पाविते भारते वर्षे निखिलजनपावनशीनकादिम्निन्छतिन्वासके नेमिपारण्ये अमुकनामक्षेत्रे

॥ ५॥ 👸 श्रीभगवतो मार्तण्डस्य कुपापात्रे कालकृत्यन्नगर्गवग्रहाचार्यादिगणितायाँ संस्थायां श्रीत्रहाणों द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवासहनाम्नि प्रथमे कल्वे द्वितीये यामे तृतीये मुहूर्ते स्वायं सुवस्वासे चिणे तमतामसरवतचा सुपेतिपण्मनू नितक्तमिते संपति वैवस्वतमन्यंतरे खुगानां त्रिघूग्याते अष्टाविंशतितमे कल्खिगे प्रथमचरणे श्रीमन्नुपविकमार्कः समयातीतसंवत्सराणां व्यतिकातानां अमुकतंवत्तारे अमुकायनगते श्रीस्पूर्वे अमुकर्ती अमुकमासे अमुकपत्ते अमुकृतियों अमुकृवासरे अमुकृतत्त्रत्रे अमुकृयोगे अमुकृक्रणे अमुकृगशिरियते चंद्रे अमुकृगशिरियते सूर्ये अमुकृ स्सिनियते देवस्तिपथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्स एवंग्रहगणविविष्टेऽस्मिन्शुभक्षणे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽहं असुकप्र- 🖫

वरोऽहं अमुकदासीऽहं श्रुतिसमृतिपुराणोक्तफलप्राप्यर्थं मर्गं सुतस्य वा सुतायाःकरिष्यमाणविवाहकर्मणि सर्वप्रहाणां 🕏

१ शुद्ध दाम. २ संख्लाने छेडे असुक गीववाळो असुक दास हुं पर्न शालमां कहेला फल पानवाने वास्तेमारा लोकसना अथवा छोकराना लग्नमां साळा प्रही | 6 सहाय युवन मह यत कर्रलुं एम कही जल मूकी ऋरीयाँ जल वह उपर व्लेखो आसंकरम करने तथा अधिकार सिद्धीने मारे प्रानापत्यप्रत्यात्रायद्वय-सराय ज्ञान मर कर कर करते. वास करी अपनि कहेर्च के कर्म करवाने अधिकार आपने एती सति अधिकार प्राप्त करी अंगांगी सह (२० तथा ३० सुनोनो) संकल्प करी. बांसणीन ते आपी कहेर्च के कर्म करवाने अधिकार आपो एती रीते अधिकार प्राप्त करी

🕍 तोड्रवंतु एवं त्रिरुवते ॥ विपाः एवं अस्त्विधकारः ॥ कर्मांगतया विहित आसन्द्रास्टिं स्क्रिक्सर्गनंतपूजनं 🕍 🎇 दीपस्थापनं करिष्ये ॥ आसनायो जलादिना त्रिकोणं विलिख्य ॥ ऱ्हीं आधारशनितकमलासनाय नमः ॥ 🐉 👫 सर्वेषचारार्थे मंत्रपुष्पं समर्पपामि इत्याधारशिवतसंप्रज्य।। तद्वपर्यनुद्रिमताकरं क्रशकंवलाद्यन्यतममासनमास्तीर्य।। 📝 🕼 पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुप्रकृषिः स्रुतलं छंदः कूमेंदिवता आसने विनियोगः ॥ ऱ्हीं पृथ्वी त्वया प्रतालेका देवि त्वं 🕍 ि विष्णुनापृता ।। सं च भारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।। आधारशर्वित संप्रार्थ्य ।। हीं पुंढरीकाक्षाय नमः ।।॥३। हिं विच्छानापृता । त्व च धारय मा दाव पावत्र कुरु चासनम् ॥ आवाररतापत संत्राच्य ॥ हा अंडरानगराप नृत्र ॥ वि इस्त्रासनं संत्रोद्ध्य ॥ तदुपरि प्राइमुख उदइसुखो वोपाविस्य ॥ हीं अनन्तासनाय नमः ॥ हीं क्रूमासनाय वै नमः ॥ हीं विमल्जसनाय नमः ॥ हीं पद्मासनाय नमः ॥ हीं योगासनाय नमः ॥ हीं आधारशक्रये नमः ॥ वै क्रीमानाम्त्राचौ तु इक्षिणांगं भवेस्पदा । इनिज्दोनगरिक्षिष्ठे ॥ क्ष्मासने दख्ति स्थात् प्रायाणे व्याधिसंभवः॥

श्री सानुक्रहाधँ ग्रहयज्ञारूपंकर्मकरिष्ये ॥ इति प्रधान संकल्पः॥ अथ अंगसंकल्पः॥ तदंगभूतं दिग्रक्षणं सानुक्रहाधं ग्रहयज्ञारूपंकर्पक्रिया ॥ इति प्रधान संकल्पः॥ अथ अंगसंकल्पः॥ तदंगभूतं दिग्रक्षणं करुशात्त्रधनं पंचगञ्यकरणम् गणपतिपूजनं मातृणां पूजनं वसोधीरामायुष्यमंत्रजपं नादीश्राद्धं पाद्यार्घसंपादनं आचार्यादि अस्मिन्कर्मणि अधिकारमास्य पाजापत्यद्वयं सभ्यभ्योऽहं संप्रदास्ये भोत्राह्मणाःअस्मिन्कर्मणिकर्मकर्त्तुममाधिकारसंपदास्त्वाति भव

हीं दुष्ट्विद्रावृणन्तिंहासनाय नुमः ॥ हीं मुध्येप्रमुखुषासनाय नमः ॥ इति नुखा ॥ शिखावंघनं ॥ हीं

क्रियंकेशि विरूपक्षि मांसशोणितभक्षणे ॥ तिष्ठ देवि शिसायंधे चामुण्डे ह्यपराजिते ॥ अथदीपस्थांपनं ॥ दिवस्य दक्षिणतः भूमी गंधेन त्रिकोणं विलिख्य ॥ दीपाधास्यंत्राय नमः ॥ गंधाक्षतैःसंयुज्य ॥ तत्र घृतपूर्ण थुक्रवर्तियुतं दीपपात्रंसंस्थाप्य ॥ दीपंप्रज्वात्य नाम्ना पंचीपचौरः संपूज्य ॥ तद्वहेवस्य वामे प्राग्वत त्रिकोणे तेलपूर्ण रक्तवार्तेयुतं दीपपात्रं संस्थाप्य दीपंपञ्चाल्य संप्रुच्य प्रार्थपेत् ॥ भो दीप देव रूपस्त्यं

कमेसावी हाविष्ठकृत्।। याचतकमेसमापिः स्थात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव्न ।। एवंस्थापितदीपमासमापिरसेदिति ।। अथ दिग्रक्षणं ॥ वामहस्ते सर्पान् गृहीता ॥ अपसर्पत् ते भृता ये भृता सूमिसंस्थिताः चनुर्विद्यतिगने ।। मध्येनुबुद्रकाः सर्वे निवन्त्रीयुः शिलांतवः॥ स्वस्वाटस्पादिद्रोपेण विशिक्तक्षेत्रसो भवेत् ॥ कौश्रीन्तदा धारयेतविष्णुध्रान्धयुतांशिस्ताम् ॥ वसिष्टः ॥ रीद्रपित्रा सुरान्वरान् तया वैवाभिनास्कान् ॥ व्याहृत्याळभ्यः चात्मानमपरपृष्ट्याऽभ्यत्।चरेत् ॥ कात्यायनः ॥ पितृपर्मनासुद्धवाभे अत्याळंभोषयं क्षणे ॥ अथोवायुससुरसमं बद्दाक्षेऽतृवभाषणे ॥ मानीरमुपक्तस्पर्ते आकृष्टे कोपसंभवे ॥ विभिन्नेद्यपुसर्वेपुकर्यकुवैनगस्यर्शेत् ॥

र आप्तन गींने रहेळा देवताओंने तमस्कार करी उपरता संत्रशी पीटलीमी बाट वाळी दिवानुं स्थापन करचुं. तेमी कमी सपेत वे धींबेट करी कोडीयामां गंपूरि दीनी देवनी नमणी तरफ मुख्यो तथा कोडीयामा तेलग्री लल दीनेट वे राखी देवनी डाभी बाजूए दीनी मुहली स्ट्रीयी घणे ठेकाणे रूना पूगरों करेंनेते योग्य नयो ने शाख्यी निन्द है. दोवा नीचे त्रिकोण यंत्र कारी दीवो मळगायी पूरन करी प्रार्थना करवी. २ यजमाने पेताना दावा

🎼 करोम्पर्ह ॥ २ ॥ यदत्र संस्थितं भृतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः॥स्थानं त्यक्त्वा तु यत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छत् ॥ ३ ॥ 🔀 🎼 मतानि राक्षसावापि येऽत्र तिष्ठंति केचन ॥ ते सर्वेऽप्यपगच्छंख शांतिकर्म करोम्यहम् ॥ ४ ॥ भूतपेतपिशाचाद्या 🕄 अपकापंतु सक्षसाः ॥ ते सर्वे विरुपं यांतु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ॥ ५ ॥ मृत्युरोगभयकोघाः पतन्तु रिप्रमस्तके ॥ 👸 🗓 इति नासच्छदया सर्वस्यां दिशि वा ईशान्याम् सर्पपान् विकीरयेते ॥ च्छोटिकया तालत्रवेणान्तरिक्षगान्मता-🔡 🎇 तुस्सार्य वामपार्ष्णिना भूगो घातत्रयं कुर्यात ॥ उदकस्पर्शः ॥ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ॥ भैरवाय 🕍

िनमस्तुभ्यमनुज्ञां दानुमईसि ॥ स्ववामे *कुरुशस्थापनम् ॥ अक्षतपुञ्जोपरि ॥ तस्मिन्तिर्थान्यावाह्य ॥ गंगे च* १ यमपाने पोताना हाथवा सरस्य हेई जमयो हाथ उपर शकी भूतभेताहिकने हुर करे एवा राखनीत मधी साथ क्या, पछी सरसव चारे तरफ वेरी ढावी पम जण बुसत पृथ्वीपर पत्रही नहनो नमणाकाने स्पर्श करबो. ( उपरत्नवेहा मन्नेमा कहेंसे ठेकाणे अरवित्र पता कानने नहस्पर्श क(बायी पवित्र थाय छे )

विभावतं भेरवने नमस्कार वरी पोतानी ढान्डी तरफ भारानो पच्या तीर्षोदक मरी मुक्ती वे हाथ अबन्धवी तेमा महानदीओ तथा तीर्थोत्त ध्थान करतु तथा 🗳

|विभक्तीरस्ते नत्र्यंत्र शिवाज्ञया ॥ १॥ अपक्रामन्त्र, भूनानि पिशाचाः सर्वतोदिशं ॥ सर्वेपामविरोधेन शांतिकर्म- 🕏

अफ्रस, धेनु, यवन, मत्त्य मुद्रा करी, आठ बखत स्मरण बरदु तथा धवीएवार चुनन, प्रार्थना करी तेमाथी जरु टावा हाथमा छै। छाती माथे छाटय. फरी ्रे अहरा, धनु, यमन, मस्य मुद्रा करी, आह क्षेत्र प्रमाना साहित्यने छाटी शुद्ध करतु. े

विश्कार है विसन् चेव गोदावरि सस्त्ती ॥ नर्मदे सिन्धुकावेरी जलेऽरिमन्संन्निर्धि कर ॥१॥ ब्रह्माण्डोदस्तीर्थानि क्रैः स्पृष्टाः िन ते स्व ॥ तेन सत्वेन मे देव तीर्थ देहि दिवाकर॥ २॥ अंक्टरामुद्रया सर्वाणि तीर्थान्यावाह्य ॥ वं इति घेनुसु n ७ ॥ 🏄 ह्या अस्तिकृत्य ॥ हुं इति कवचेनावराण्या ॥ मत्त्वसुद्रयाच्छाद्य मूळेन अस्वास्मिमंत्र्य ॥ हस्ते अक्षताच

मृहीत्वा ॥ भो वरुण सुप्रतिष्ठितो भव ॥ वरुणाय नमः गंधं समर्पयामि ॥ वरुणाय० पुष्पं०वरुणाय० पूर्पं० |वरुणाय० दीपं०वरुणाय० नैवेद्यं० पाशहस्तं च वरुणमम्भसां पतिमीश्वरम् ॥ आवाहयामि यद्गेरिमन्प्रजेयं प्रतिगृह्यः ताम् ॥ वरुणाय नमः पार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि ॥ तरमाद्वदकादुदकं गृहीत्वा स्वात्मानं संप्रोध्य स्वशिरः संप्रोक्ष्य पुन स्वस्पोदकं गृहीला पूजाइच्याणि संप्रोक्ष्य तां च मूसी संप्रोक्ष्य ॥ अपवित्रःपवित्रो वा सर्वी-

वस्थांगतोपि वा ॥ यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः श्रुचिः ॥ अथापंचगव्यकरणम् ॥ कांस्यपात्रे ॥

? वरुणावनमः ॥ इति ॥ नामोक्षितं स्पृत्रेत् किंचित् देवे गित्र्ये च कर्मणीति वाक्यात् ॥ सर्वेत्रसतूनि संप्रोक्ष्य ॥ श्रीक्षणात्माक् न

पाधमा (गायन छाण, मूतर, दूध, दही, वी एने पचमव्य वहेंहें ) चास्त्र प्रमाणे नासी पाणी रेडी दर्भ फेरवी ब्राफ्तणपासे

प्रोक्षण करावर्षः

अग्रमग्रञ्चरन्तीनामोपर्धानां रसं वने । तासां वृपभपत्नीनां पात्रे तिन्निक्षिपान्यहम्।।२। क्षीरं ॥ पयःप्रण्यतंरं शेक्तं <u>धेनुम्यश्च समुद्रवम् ॥ सर्वेशुद्धिकरं दिव्यं पात्रे तन्निक्षिपाम्यहम् ॥३॥ दिघ ॥ चंद्रकुन्दसमं शीतं स्वच्छं वारिवेव-</u> ्री जितम् ॥ किंचिदाम्लस्सालं च क्षिपत् पान्ने च सुंदरम् ॥ ४ ॥ पृतम् ॥ इदं घृतं महिद्दन्यं पवित्रं पापशोधनम् ॥ 🕺 ्रींसर्वेपुष्टिकरं चैव पात्रे तिन्नक्षिपाम्यहम् ॥५॥ क्रश् ॥ क्रशमूरुे स्थितो न्नह्मा क्रशमध्ये जनार्दनः ॥ क्रशात्रे शंकरो ै 🕺 देवस्तेन प्रतं करोति च ॥६॥ हीं इति मंत्रेण इसोन वा यहकाष्ठेनालोंड्य ॥ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतो- 🧗 पि वा ।। यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यंतरः श्राचेः ।। कर्मभूमिं यद्मसंभारांश्च भोक्षयेत् **।। गणप**ित-

गोमूत्रं ॥ गोर्मुत्रं च महहिब्यं एवित्रं पापशोधनम् ॥ आपदा हस्ते नित्यं पात्रे तिनक्षिपाम्यहं ॥१॥ गोमयम् ॥🖠

्र पनताया ग्रुवते दृषि ॥ कषिजाया पृतं ग्राही सर्व काषिक्रमेव वा॥ मूत्रमेकपलं द्यादंगुष्टार्धं तु गोमधा।श्रीरं सङ्गपळं द्याद्वि जिपलमुख्यते ॥ वृत्तमेकपल द्यात्पळमेकं कुवोदक ॥ इति पारावर्षिये ॥ धरुभवेष गोमधे गोमधे क्यामहनः॥दिष्निवाद्यः समुदिष्टस्तोम शीरे पृते रविः॥१ आदौ विनायकः

स्पुरेत् न द्यादीनि वायुपुराणे ।। १ गोमूत्रं गोमय क्षीरं द्वि सर्पिः कुशोदकम् ।। गोमूत्रं कुष्णवर्णायाः स्वेकावाक्षेत्र गोमयं ।। पयश्च ताजवर्णायाः 🛚

सवभ्यन्वॅतिचुद्रमाणकारहत्ताच्च कार्यमेव ॥ १ ॥ तत्र सकळमंगङ्कपौरभादौ विप्तनदंगन्वंसं विनायकं पुरायेत् ॥ इति तत्त्वसारसंहितायाम् ॥ सर्वकानसमृत्ययेमादी पृत्यो मणाविषः॥ इति भविष्यपुराणे ॥ कर्मारेभेषु सर्वत्र पुलबीयो मणाविषा॥विनायकः कर्मविद्यासिष्यर्थे विनियोजितः॥ गणानामाधिपरंपं च रुद्रेण बहाणस्तयेति यात्रवस्त्रयः ॥ १ सुरुष्ट मंगल कार्यमा आरंभमां वेहेलं विद्योता नाश करनार गणपतितुं पुनन करनुं झंग्रो विष्णु रुद्रादिए पण प्रथम गणपति, पुनन करेत्रुं छै-पूना-

ना क्यमां वेहेश गणपतितं च्यान करि अन्युतारण पुर्वत प्राणपतिचा करि आवाहन करेंबु तथा आसन आपी पेताना शरीरे न्यास करवा.

२-मोताना दाना हाथमां त्रांनातुं वातण वह तेमां मूर्तिओ मूर्की पंत गव्य रेढी तेना पर नलनी भारा मंत्री मणे त्यां सुधी करनी, पंजी ते मूर्तितुं

भाग त्राह्मणने आपी तेनी पासे 'pimorhan मंत्रीची कराववी ॥

पूर्वकं प्राणप्रतिष्ठा क्र्यात् ॥ अद्येत्या० वासरे आसां मूर्तीनां अगप्रत्यमसंधिसमुत्यनं क्रट्टालिकादि टंकाद्यातः पािंगसंयोगजनितदोपपरिहारार्थं अग्न्युत्तारणपूर्वकं ब्राह्मणद्वारा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये ॥ सूर्ते पृतेनाभ्यज्य 👫 🎇 उपरि जलघारां क्वर्यात् ॥ अप्ति र्वेश्वानरो वन्हि वीतिहोत्रो धनंजयः ॥ अम्न्युत्तारणार्थाय 🛮 मूर्तिनां शुद्धिहेतवे ॥ रिक्तांभोधिस्थपोतोछसररुणसरोजाधिरूढाकराञ्जेः पाशं कोदंडमिश्चद्ववमथग्रणमप्यंक्रशं पंचवाणान् ॥ विभ्राणान् 🛭 🎉 मुक्कपालं त्रिनयनविलसत्यीनवत्रो रुहाव्या 🛭 देवी बालार्कवर्णा भवद्य सुलकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥ इति मंत्रेण 🍪 ि अम्ब्यत्तारणम् ॥ ततः प्राणप्रतिष्ठां क्रयीत् ॥ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋपयः ॥ िफ़रपज्ञः सामानि छंदांसि जगत्मष्टिकारिणी प्राणशक्तिदेवता ॥ आंबीजं ॥ हीं शक्तिःकों किलकं ॥

प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ मुर्तिषु हस्तं निधाय ॥ आं हीं क्षें यं रं छं वं शं पं सं हं ळंश्वं हंसः सोहं ॥ आंसां मुर्तीनां प्राणा इह प्राणाः ॥ युनः आं हीं कों ये रं छं वं शं पं सं हंळ श्वं हंसः सोहं ॥ आसां मुर्तीनां अंतिव इह स्थितः ॥ युनः आं हीं कों यं रं छं वं शं पं सं हं ळं श्वं हंसः सोहं ॥ आसां मुर्तीनां सर्वेदियाणि

बाङ्गमनस्त्वक्चखुःश्रोत्रजिह्ना प्राण पाणि पाद पायुपस्तानि इहेनागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु नमः ॥ गर्भा-

मम प्रजां गृहीता च मंडले छस्पिरो भव।।श्रीसिद्धिखद्धिसहितमहागणपते सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।।आसनं।।सुमुखाय नमस्तुम्यं मणाधिवतये नमः ॥ पुष्पासनं मया दत्तं विष्ठपुञ्जं निवास्य ॥ श्रीसिद्धिचुद्धिसहितमहागणपतये 🧍 नमः ॥ आसनं स० ॥ अथ देहन्यासैः सुमुलाय नमः ॥ वामहस्ते ॥ गणाधिषाय नमः दक्षिणहस्ते ॥ उमा 🐇 पुत्राय नमः ॥ वामपादे ॥ गजाननाय नमः ॥ दक्षिणपादे ॥ रुंबोदराय नमः ॥ वामजानौ ॥ हरसूनवे नमः 🦫 ॥ ९ ॥

र---हाथ अडकाडी न्यास करवा, ते पण पहेलां डांबे अंगे पंडी जनले स्वर्ध करवा.

॥ ९॥ है सिद्धिबुद्धिपते त्रयक्ष रुप्तरूभ पितुः प्रभो ॥ १ ॥ नागास्य नागहार त्वं गणराज चतुर्भुज॥भृपितः स्वायुधे दिंउपैः

ेपाशांक्रशपरश्रपेः ॥ २ ॥ आवाहयामि पूजार्थं स्क्षार्थं च मम ऋतो॥इहागत्य गृहाण त्वं पूजां ऋतुं च रक्ष मे ॥३॥ 🟅 श्रीसिद्धिबुद्धिसहित् महाभणपतये नमःगणपति आवाहयामि॥प्रतिष्ठामंत्रः॥आगच्छ देवदेवेश गजवक्त्र गणाधिप॥ 💲

नाभी ॥ एकदंताय नमः इदये ॥ विकटाय नमः वामबाहुमूले ॥ विनायकायनमः दक्षिणवाहुमूले ॥ 

दक्षिणजानी ॥ गजकर्णीय नमः वासकट्यां ।। वक्रतुंडाय नमः दक्षिणकट्यां ॥

कपिलाय नमः चक्त्रे ॥ गजदंताय नमः दंतपंक्त्रे ॥ विध्रराजाय नमः चामनेत्रे ॥ वटवे नमः दक्षिण 🕏

१-पोताना शरीरना न्यास थया पत्री दुर्वा उड् गणपतिन रपरी करी देव न्यास करवा. न्यास करवाथी शरीरकादि तथा अंगना प्रचलित अयेखा दे-

|वामजानी || इस्सुनवे नमः || दक्षिणजानी || गजकर्णाय नमः || वामकटवां || वक्रतुंडाय नमः || नामी || 🗗 पूकदंताय नमः ॥ इदये ॥ विकटाय नमः ॥ वामवाहुमुळे ॥ विनायकाय नमः ॥ दक्षिणवाहुमुळे ॥ कपिळाय 🖁

? देवो भून्वा देवं यमेत् ॥

बताओं स्वधाने रही ते ते कार्य करे छे.

🛮 पाय नमः ॥ दक्षिणहस्ते ॥ उमापुत्राय नमः ॥ वामपादे ॥ गजाननाय नमः ॥ दक्षिणपादे ॥ रुंबोदराय नमः ॥ 🔯

हस्ते दुर्वांक्रसन् मृहीत्वा ॥ देवं स्पृष्ट्वा ॥ देवन्यासं क्रयात् ॥ म्रमुखाय नमः देवस्य वामहस्ते ॥ गणाधिः 🕏

्रैं नमः ॥ वनत्रे ॥ गर्जदंताय नमः ॥ दंतपंक्ते ॥ विष्तराज्ञाय नमः ॥ वामनेत्रे ॥ वटवे नमः ॥ दक्षिणनेत्रे ॥ 🖁 सुराग्रगण्याय नमः ॥ ललाटे ॥ हेरंत्रायनमः ॥ शिरसि ॥ श्रीसिद्धिन्नद्धिसहितमहाग० देवन्यासं स० ॥ उमाधि 🕏 ॥ २०॥ 🕏 त्राय देवाय सिद्धिवंदायते नमः ॥ पाद्यं गृहाण देवेश विष्नव्युहं निवास्य ॥ श्रीसिद्धिग्रद्धिसहित महा- 🗴 ग्रं पादयोः पाद्यं सः ॥ ताम्रपात्रे स्थितं तोयं गंधपुष्पफलान्यितम् ॥ सहिरण्यं ददाम्यर्थं ग्रहाण परमेश्वर् ॥ 🕉 श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग० इस्तयोः अर्ध्यं स० ॥ सर्वतीर्थसमायुक्तं खुगंधि निर्मलं जलं ॥ आचम्यार्थं मया दत्तं 🏃 गृहाण गणनायक ॥ श्रीसिद्धियुद्धिसहित महाग० अर्घ्याते आचमर्न स० ॥ अथ पंचामृतस्नानं ॥ तत्रादी वयःस्तानं ॥ कामभेत्रुससुदृतं सर्वेषां जीवनं परं ॥ पायनं वज्ञहेतुश्च पयःस्तानार्थमर्पितम् ॥ श्रीसिद्धिद्धिद्धस-हित महाग॰ पयःस्तानं स॰ ॥ पयःस्तानांते वरुणस्तानां वरुणस्तानांते आचमनीयं० सकल प्रजायें अक्षतानः॥

१--- पुत्र गणपतितुं मंत्रीभी वाव, अर्च, आचमतीय, पचामृत कर्रा शुद्ध गल्बडे स्तान कराबी क्ल, जनेह, चट्टन, ठकु, चीला चडाकी अस पूजन

सर्वोपचाराचें नमस्कासन् स॰ ॥ दिधस्तानं ॥ पयसस्तु ससुदूतं मधुग्रन्छं शशिप्रमं ॥ दध्या नीतं मया देव 🕏

कर्यु-

कारकं ॥ वृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृहाताम्॥श्रीसिद्धित्रद्विद्धसहितमहाग॰ वृतस्नानं स॰वृतस्नानान्ते 😰 वरुणस्नानं०वरुणस्नानान्ते आचमनीयं०सकलप्रजार्थे अक्षताच०सर्वोपचारार्थे नमस्काराच स० ।।मघु।।तरुपुष्पसम् 🎏 ैदतं छत्साद्र मधुरं मधु ॥ तेजःपुष्टिकरं दिन्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥श्रीतिद्धिद्धद्धितिमहाग्॰मधुस्नानं स॰ ॥ 🎖 मुष्ठस्नानांते वरुणस्नानं० वरुणस्नानांते आचमनीयं स० सकछपुजार्थे अक्षतान्० सर्वोपचारार्थे नमस्कारं स० 🎼 📲।। शर्करा ॥ इञ्चसारसमुद्धता शर्करापुष्टिकारिका ॥ मळापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीसिद्धिपुद्धिः 📳 सहितमहाग॰ शर्करास्नानं स॰ ॥ शर्करास्नानाते वरुणस्नानं॰ वरुणस्नानान्ते आचमनीयं॰ सकलपूजार्थे 🐉 अञ्चतान् सर्वोपचासर्थे नंपस्कारं स०॥ शुद्धोदकं ॥ कावेरी नर्मदा वेणी द्वंगभदा सस्त्वती ॥ गंगा च यमुना तोय 👸 मया स्नानार्थमर्पितम् ।। श्रीसिद्धिचुद्धिसहितमहाग० शुद्धोदकस्नानं स० ॥ शुद्धोदकस्नानांते आचमनीयं

है स॰ ॥ वर्च ॥ पीतांबरं सोत्तरीर्थं खदीवं समनोहरं ॥ देवदेव गृहाणेर्दं छंबोदर नमोस्तु ते ॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितः

स्तानार्थं प्रतिगृह्यतां ।। श्रीसिद्धिञ्जद्धिसहित महाग॰ दिघस्तानं स॰ ।। दिघस्तानांते वरुणस्तानं स॰ वरुण है। स्तानान्ते आचमनीयं स॰सकलप्रजार्थे अक्षतान्॰सर्वे(पचारार्थे नमस्कारान् स॰।।चृता। नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोप- १

| गंर्थ स॰ II <del>डं</del>डुमं ॥ सर्वसोभाग्यजननं सुराणां प्रीतिवर्धनं II पवित्रं मंगलं देव छंडुमं प्रतिगृहाताम् ।। श्रीसिद्धिः

वि॰की॰ हैं महाम्॰ वस्त्रं स॰॥ वस्त्रांते आचमनीयं स॰ ॥ यङ्गोपशीतं ॥ राजतं त्रहासूत्रं च कांचनस्पोत्तरीयते ॥ गृहाण मुससर्वेत भक्तानां फलदायक ॥ श्रीसिलिमुद्धिसहितमहाग॰ यज्ञोपवीतं स॰ ॥ यज्ञोपवीतांते आचमनीयं स॰॥

चोक्षा छइ गणपतिना वार नाम वढे आवरण पूमा करवी ॥

्री बुद्धिसहितमहाग**०** कुंकुमं स० अक्षतान् ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठः कुंकुमानताः मुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या उ

अयांगञ्जा ॥ वामहस्ते गंधपात्रं गृहीत्वा ॥ दक्षिणेन संघुज्य ॥ गणेशाय नमः ॥ पादी पूजयामि ॥ गीरी

१-यनमाने जाना झायमा चदन कुंकुमनु पान लड्ड पान आमकीपडे गणभति पर चदन कुंकुम चडावनां, तेने अंगपूना कहें हैं. पडो दाना झायमा

ौगृहीत्वा तु गंपपुष्पादतिश्चेतम् ॥ धूजये सिद्धिविवेशं त्रत्येकं सर्वनामभिः॥श्रीसिद्धिद्यद्विसहितमहाग॰दूर्वीकुरान्स०॥ 💱

्री गृहाण परमेश्वर ॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग० असतान् स० ॥ पुष्पं ॥ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वे 🗜 भूत्रमा ।। नया हतानि पुष्पाणि पूजार्थे प्रतिगृहाताम् ।। श्रीसिद्धियुद्धिसहितमहाग० पुष्पाणि स० ।।दूर्वा।। दूर्वायुरमं

🏥 ह्यायः मणेशं पुरु ॥ पश्चिमे रक्तवर्णायः गणनायकायः गणनायकं पुरु ॥ उत्तरे नीलवर्णायः गणकीडायः 🔡 🏭 गणकींडं प्र॰ ॥ अथावरणप्रजा ॥ वामहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ सुमुखाय नमः ॥ एकदंताय नमः ॥ कपि- 🧗 है। लाय नमः ।) गजकर्णकाय नमः ॥ संबोदसय नमः ॥ विकटाय नमः ॥ विन्नाशाय नमः ॥ विनायकाय 🖫 नमः ॥ भूमकेतवे नमः ॥ गणाध्यक्षाय नमः ॥ भालचंद्राय नमः ॥ गजाननाय नमः ॥ हस्ते पुष्पं गृहीत्या ॥ 🕄 अभीष्टिसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनं ॥ समस्तावरणार्चन-

सुताय नमः ॥ स्तनो पुजयामि ॥ गणनायकाय नमः ॥ इदयं ५० ॥ स्थूलकंडाय० कंडं पूर्व ॥ स्कंदात्रजाय० 🕏 स्कंषो पु॰ ॥ पाशहस्ताय॰ हस्तान पु॰ ॥ गजाननाय॰ मुखं पु॰ ॥ विघहर्त्रे॰ नेत्रे पु॰ ॥ सर्वेश्वराय॰ शिरः 🖏 बीपुर ।। गणाधिपायर सर्वांगं पुर ।। पूर्वे पीतवर्णायर गणाधिपायर गणाधिपं पूर ।। दक्षिणे गौरवर्णाय गणेर 🖫

देवताभ्यो नगः ॥ सर्वोपचारार्थे गंधं पुष्पं स० ॥ सीदूरं ॥ सिंदूरं कल्पितं देव सिंदूरं नागसंभवम् ॥ सिंदूरेणा-

र्चितो देव गृहाण गणनायक ॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग० सिंदूसभरणं स० ॥ सौभाग्यद्रव्यं ॥ सुगंध्योपधि- 💲

रे उपरना मंजयी सिंहर, अजील, मुख्यल, हळद, पढाववा.

रि॰कौ॰ 🖟 चूर्णं च नानापस्मिळानि च ॥ नानासुगंवतेळानि अतःशांतिं प्रयच्छ मे॥ श्रीसिखिद्युद्धिसहितमहाग॰ सीभाग्य-

हेवानी बस्तु अगर, चंदन, मीण, शिल्हाट, कस्तुरी, ए पांच बीजी समान छड् धूर्प करे, तेने अपून धूर कहेड़े.

्रीहर्ज्याणि स॰ ॥ भूपं ॥ वैनस्पतिरसोद्भृतो गंधाच्यो गंधमुत्तमः ॥ आभ्रेयः सर्वदेवानां भूपोऽयं प्रतिगृह्यतां ॥ 🄊 श्रीसिद्धिशुद्धिसहितमहाग० पूरामात्रापयामि ॥ दीपं ॥ भन्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ॥ ऋहि मां 🕏 िनरकात चेंताहीपोज्योतिर्नमोस्तुते ॥ श्रीसिद्धिङ्किसहितमहाग० दीपं समर्पयामि ॥नैवेद्यं ॥ पृतं सलङ्कुकं चैव |मोदकान् **घृतपाचितान् ॥ नैनेदां मृहातां देव नमस्ते** विन्ननाशन ॥ श्रीसिद्धिद्धिद्धिस्सिहितमहाग॰ नैनेदां स॰ ॥

गिंघोदकेन देवेश सद्य आचमनं कुरु ॥ श्रीसिष्टिबुद्धिसहिमहाग० नैवेद्यान्ते आचमनं स० ॥ प्रवीपोशनं ॥ १ उपरात भेरवी भूग, दाँग, नैदेश मूर्की तेनापर पाणी छाटी घेतुमुद्रा करी डायो रहाय आंदि अंडकाडी नमणा हाध्यती पांच आंदाटी-जीवंडे ग्राप्त मुद्रा करी जागहवा. पटी जणवार अठ सूत्री बंदन चडांगी पामसेपारी तथा दिलेणा मूकी नमस्कार करवा मरनरस्य प्रथमा पूप कर्योदे, तेमा

निवेद्यं जलेन संबोध्य धेन्वा अस्तीकृत्य ब्रासमुद्रां प्रदर्श ॥ यथा ॥ प्राणाय नमः ॥ अयानाय नमः ॥ स्दानाय निमः ॥ ज्यानाय नमः ॥ समानाय नमः ॥ नैवेद्याते आचमनं स० ॥ विनायक नमस्तुरूयं त्रिदशैरभिवंदितं ॥

```
प्रेय पानीयं ।। उत्तरापोशनं ।। सुखप्रक्षालनार्थं जलं सः।। कैरोद्धर्तनार्थं गंधं सः ।१ तांबूलं गृह्यतां देव गृह्याण
क्ष सुरम्रजित ।। अनाथनाथ सर्वन्न मासुद्धर महेश्वर ।। श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहागः फलतांबूलं सः।। दक्षिणा ।। हिरण्य-
ी गर्भगर्भस्यं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ श्रीसिद्धिबुद्धिसहितमहाग् दक्षिणां
हैं स० ॥ आसत्रिकं ॥ चंद्रादित्यों च भरणी विद्युद्धितस्त्रियेव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतिंपी आत्रिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥
🏥 श्रीसिद्धिग्रद्धिसहितमहाग० ओरात्रिकं स०॥ जलेन प्रदक्षिणं ॥ पुष्पेण देववंदनं ॥ स्वात्माभिवंदनं ॥ इस्त- 🎝
🎖 प्रसालनं ।। प्रदक्षिणा ।। हस्ते पुष्पं गृहीत्वा ।। यानि कानि च पापानि इह जन्मकृतानि च ॥ तानि
🎇 सर्वाणि नर्स्यति प्रदक्षिण पदे पदे ॥ अनेन मंत्रेण तिस्रः प्रदक्षिणाः कार्याः॥ श्रीसिद्धिद्वद्धिसहितमहाग् ॰ 'प्रदक्षिणां 🔀
ै स॰॥हस्ते प्रष्पाक्षतान् गृहीत्वा ॥ प्रष्पांजिले ॥ विघेश्वराय वरदाय सर्राप्रयाय लंबोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥
```

? चंदनेन मुखनासिके चान् लिपयतीति गदाधरः ॥ सर्वत्ररीरोहर्वनं कार्यभिति हस्हिरः ॥

२ एका चंडी रवे: सप्त तिस्रो दचादिनायके ॥ चत्तारः केशवे दचात शिवस्यार्थेश्रदक्षिणा ॥

र एका चढा (व: सन्त तिहा द्याद्वायक ।। चत्वारः क्ष्मित द्यात् हित्स्यायेमद्रक्षिणा ।।
१-भार्ति रखी ते सोळ उनवारमा नवी, त्यापि छोको चोखा फूछ छइ करेखे ते सप्ताख नवी, छवा इच्छा होय तो दीवेट अथवा कर्मूची करती ॥।

पठी पुष्प छइ गणपतिनी जण प्रदक्षिणा करकी

11	7
----	---

नागाननाय श्रुतिपद्मविभुषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥१॥ भक्तार्तिनाशनपुराय गणेश्वराय सर्वेश्वाय सुखदाय सुरेश्वाय ॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवरदाय नमोनमस्ते ॥ २ ॥ नपस्ते | े ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ॥ नमस्ते स्द्ररूपाय कस्र्रिणाय ते नमः ॥ ३ ॥ विश्वरूपस्यरूपाय नमस्ते ंब्रह्मचारिणे ॥ भवतिप्रयाय देवाय नमस्तुम्यं विनायक ॥ ४ ॥ त्वां विप्नशञ्जदलनेति च संदरेति भवतिप्रयेति सुसदेति फलप्रदेति ॥ विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवंति तेभ्यो गणेश वस्दो अव नित्यमेव ॥ ५॥ लंबोदर नमस्तुम्यं सततं मोदिकप्रिय ॥ निर्विष्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सिद्धिद् ॥ ६॥ श्रीसिद्धिखुद्धिसहितमहाग० पुष्पांजर्छि स॰ ॥ प्रार्थेना ॥ श्वेतांगं श्वेतवस्रं सितकुलुमगणैः प्रजितं खेतगंधैः क्षीराव्यो स्त्नदीपैः सुरतस्विमलै-स्तिसिद्दासनस्थम् ॥ देाभिः पाशांक्रशेष्टां भयधृतिविशदं चैद्रमीर्लि त्रिनेत्रं प्यायेच्छांत्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री-समेतं प्रसन्नं ॥ श्रीसिद्धिद्वद्धिसिहतमहाग॰ प्रार्थनां स॰ ॥ विशेषार्घः ॥ सर्जेलपुष्पाक्षतिहरण्यसिहतनालिकेरं

अर्थ- । गणप्तिनी प्रार्थना वरी नाल्एर नेमन उन्यु होय तेमन झाल औं आवने. पत्नी यणात्रानित करेली पूनानो संकल्प करी, गणपतिने अर्पण

पूर्य चोर्चमुख दगास्पत्र चापोमुखं तथा ॥ फलं च सम्मुखं दगाद्ययोत्पत्रं समपपत् ॥

करी, ' अभीष्ट आयो ' एम कही नमस्कार करवा.

١,	3	
•	٦.	
	•	

۲.	
•	

🕍 भूपदीपृष्ठतानि च॥ रक्ताच्छादननैवेद्यं तांबुलादिफलानि च॥ सर्वाण्यसृतरूपेण नमःसंपद्यतां तव॥ गणेशप्रजनं 🍪 🖏 कर्म पञ्चनमधिकं कृतं॥ तेने सर्वेण सर्वातमा वस्दोऽस्त सदा ममा।अनया प्रजया श्रीसिद्धिचुद्धिसहितमहागणपातिः 🕺 ैं। सांगः सपरिवारः त्रीयतां ॥ इति श्री जयानंदारमञ मूलशंकस्शर्मणा विश्वितायां विवाहकौमुद्यां गणपतिप्रजनम्॥ 😤 अय कुरुन्द्री तथा मंडपमूर्द्रतंनो विश्वः-स्थाना चार दिवस अथवा पांच दिवस पहेलां मणपति बेसाहवा, जेने ( कुरुवर्डी ) अथवा गणेश कहेले. तेमां ्री जोईते साहित्य देशना पत्रमां उल्याप्रमाणे वैयार करी घरमां परसाळे अथना सारे डेकाणे साफ कर्रा सीमान्यनती. स्री पासे मटोई छाण मिश्रित करी छीपाकी 🗗 ु प्राचीओ प्राचनो, तथा एक पटले प्रध्वमा मुक्तो. तेनीसामुं पूर्वय सन्दर मुक्तो. तेनापर राती कुकडो पायरी होर १। सवा, पद्धतु भवळ काडी 🖓 ्री प्रकार कथ्यतिनी प्रतीमा कर्ता प्रकार भूकी तथा तेनावर सीवारी ने नाडू गांधी गणधति तरिके मुकर्त, पत्री बरणनार छोकरी अथवा छोकरी ने होय तेरे 🐉

ूर्व तरफ मोर्डु करी पाटलापर बेसाडवो तथा राजपतिपुना ८ वानाथा छई समाप्ति लगीनी करावी तेम। संकल्प ( अरोल्यादि मग कारिप्यमाणविवाहकर्माणी

💹 गृहीत्या ॥ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरंक्षक ॥ भक्तानामभयं कर्ताः त्राता भव भवार्णवात् ॥१॥ द्वेमातुरकपा- 📳 🏥 सिंधो पाण्पातुरत्रज प्रभो ॥ वस्द त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थेद ॥ २ ॥ अनेन फलदानेन फलदोऽस्त्र सदा 🔡 मम् ॥ श्रीसिद्धिञ्जद्धिसहितमहाग॰ विशेषार्घं स० ॥ इस्ते जलमादाय ॥ यथाशक्त्युवचरिश्र यन्मया प्रजनं 🔯 🎇 रूतं ।। त्रारुवकर्मेसिच्यर्थं देवाय कल्पयामि तत् ।। सांगाय श्रीगणेशाय परिवासन्त्रिताय च ।। रक्तचंदनपुष्पाणि

मूर्का बडी मुकायर्श तथा पायटनग १४ करी तेनावर कंछनी सध्योओ कारी मूर्कवा, बढी, पायड, मुर्री रह्यापत्री तेनावर कंछ मात वयांकी हाथ घोईने गीळ पाणा सावा ( फेटलीक न्यातोमा वटी, पावडवाला हाप बोता नथी, तथा वडी पायडमी टोट पाणीची भावें जे तथा गणपतिने नैवेद्यमां तेना 🕏। बानहरूर करारना चार दरीआ मरी मूरे के तदन बालब्ध विरुद्ध है. भेनाथी पेाताने तथा ब्राह्मणीने पर्यन्नष्ट धह नर्रे शास थायछे, नेधा करेखा क्योंते कड बोग्य न मळनां अनिष्ट फळ मळेडे. " वतो पर्मन्तो जयः "॥ कार्यान्ये अनृताध्मिस्य स्याग एवं विगेरे प्रमाणीया करवुन चहि ते शास्त्र सम्मत है. ) बाटे सूत्त माणारोए आ बात उपर वकार ज्यान आपी, अपर्म न धाय तेम करतु करोज्य हे. पूटी परणनारे पीस मूक्ती पहिस मूकी गल्यु मोहोडु करी, गुरु युद्धने को लागई, ए प्रमाणे कुरुवहीनो विति यया पत्री, पाटका मृहूर्त करावयु, तेमा पीताना चारणा सामु छडी साथीओ करावी, प्रदूछ ने पूर्वीभिमूले मूर्यो तेना सामुं बानट एक मूर्का तेनापर लाल कराडो पायरी घळ देतर १। एवा लड़ उपर प्रमाणी गणपतितु मंहल काहवुं. प्रती

सप्तन्धिक यनमानने बेसाडी पाना/बीमणपतिस्तन १ अपान सुची करावर्तुः तेमा संकल्पः ( अधेस्याति मम स्तस्य' होता होय तो पेहोकरी होता तो मम

🗽 मृताया करिय्यमाण विशाहकर्माणे मडक्पालुकास्थापन करिय्ये तदरामृत दिवक्षणं, कछशार्चनः,गणपतिपूजन करिय्ये) करवो गणपतिपूजन थया पठी सकाति 🛣 िक्षिणों स्तथ दयनने चुणम, विद्यन,कर्क द्वाय तो आंक्षेडोंणे, सिंह, बन्या, तुला दीव तो ईलान वृश्विक, धन, मरर होय तो बायच्ये,रूभ, मीन,भेष होय तो 🖒 रिकेती, ए प्रमाणे समाति जोहने करत् मंद्रपमातुकाल स्थापन यया पढी माडवी नधावती तेमा स्थम उत्ती १ र हाथनी साख्यप्रमाणे हेवानी छे पण ते नथी यत 🔀 🖟 माटे रिवास प्रमाणे स्तय समहीनो अथवा योग्य बुक्षनो छेडू तेने आवानु पातर भीडळ नाडु वाधनु,नराजने नाडु,पातर बाबनु यनमानयसे पाना १९प्रमाणे 🔀 🙎 भेडपमासकानु पूत्रन वरावी चार पत्यवर बीलावी तेने चालो करी नाडु वाभी नराज पकडावी खाडी खोदाववी. पत्री गोरे यमभान पासे तेमा पाणी, कंकु. 🞖 🔭 भात, फूल, अकर, अनील, गुलाल, दहि, दूध, वैसो, सोवारी लगीनी पुत्रा करावती। पुत्री चार पत्थ दर तथा यज्ञमान बळी, स्तथ उपादी खालामा मुक्ती 💲 पदोहुं नलावरु ॥ पद्मी " मागल्यसंभाय नम '' मजबडे पत्रोपचारपूनन करावी, सपत्नीक धनमानने भगपतिने नमस्कार करावी आकाणपूनन करावव. 🔯 े पत्री यसवाने गन्य बींदु वरी पन्यवरते गोळवाणा तथा नालिक्टर आपवा (नाळांकेरने नदले ने पैसा आपेटे) गोरे परणनारने नेसाओ पपीपतार रे गणपतिपूतन करावी पोस मरावपी. देमा चार सोमानयवती आपी चालो करी हळदमा तेल, पानी वीगेरे नाली पाणी रेडी ते हळद तथा केळ, पग, गुटण 🔯 हाल, बाल, बिमेरे स्थाने अरवादवा 11 पीसमा पान ७ सोपारि ७ पैसा ७ २० १, एक नाळियेर मुका पुष्पने द्वार पेरावी चार बसत चारे विश्लीए 🔯 ि विश्वी छेत ( केंद्रशंक ज्ञातवा कुरवरीमा छीवेला पान सोपारि ह० पैसा तथा नाळिनेर ने पैसमा मूकेला तेन माहवा मूहूर्तनी पेसमा सूकेले ते शास्त्रथी 👸 निरुद्ध है, देवहब्ब, आराण विसेतेना हब्य डेक्श्यी पायश्चिति थवायहे अने ते कुरुवहोनी माग्यत्यपेति वर्णवा नतीवखते वह नवायी तक्क वार्य थाय उ भारे माद्य मुहूर्तमा देवी निरु तथा बुरुवहीनी पोत्त वस्तुक्काने आवारणी देवी पढे तेनु प्रतिनिधि द्वन्य झाल्यणने आपतु ) पठा गणपीत पात्ते पोत्त मूलवी भोक्रमणा आपी गुरुद्धने नपरश्चार कराववा ॥ इति छुर्वेडांगरुपमूर्व्हाविधि समास ॥

चाला सात पहेंद्रा हारणा के तेना उरर पीनी क्षारा करती. मोळ बचना चांछा पर चोडी तेपर रूपानाणु चोडी तेनु पूनन करावनु, ए प्रमाण मानिकारपानन क्यापत्री अयुष्यमी वृद्धि क्याप्ताह आयुष्य मत्रनी पाठ करावया. ते मत्रीना देवताना स्वरूपणी आयुष्यमी वृद्धि वापत्रे. मत्र भणनार बाह्मणने ठाह्मणा आपी ' नादिशास'' करने तेमा वैश्वदेवनी नहर रे पम ते समये नेन नहि माटे सुन बालागने पी रुपीया ने भार, चोलर रोर रे। आपना, हेपे साकरपीक मादि- 🕉

श्राद्धमा अर्थ आबाहन अप्रीक्राण विंद्रज्ञन विकिर अस्पदान लगा प्रश्न प्रश्नाने स्थाम करवो. नेमा पिता पितामह विगेरे पित्रोर्नु नाम तथा तल

श्राद्ध कर्योच्छ। सुतक विगेरे आबे तो बाच कथी तेना पितु वितामह अपितामह सक्तीक तथा माठामह, प्रमातामह पृद्धप्रमातामह, सक्तीक मळी, उना

तथा बाबाहायमा जनेह तिभी बाह करनु वहि, हवे जत, यस उस आद, मृहशातिक, सीमत, नामकरण, मुंदन, जातकर्म, होम विमेरे वार्यभा नाहि-

सवागन ठावी जोहीणाख्येत करी तेनाएर साथीजी बच्छे गोजन मानेजे ते घरमा होष तो करा अडती मुक्त पूजा करावणी ए आचार 🕏 पठी भीत पर कारीना 🕏

सोपारी ने तथा विभेदेशत एक मळी त्रण मुक्तवाना छे केरीक डेकाण गणवतित वण एक सोपारी मूकी नादाश्राद वरेखेतेमा आवमनीने दरीई विटाळी नाडु बाधी 💠 प्रभागापा पाणी भरी तरमाणमा काचा भारती जय उपकी करी उचराभि जय सोवारी गोठनी यंभोतत आदीश्राद करी ब्रास्तगपुत्रन करी स्थापीत देवताओंने 💠 नमस्कार करी गळपु मोर्ड करी बोताना बडीजनेको लागतु, एन्छु बरमाछ कार्य हरी गृहशादिक करना नेसद्र ॥इति गणवितपूननादि ना रीधाद्धान्त कर्व रम् ॥ 💍

पत्र उस्भी दाही बाहु बाह्य, पत्री यमधानने पर्शासरवर्तमान पाटलास आसन पायसे वैसाडबा पत्री करूनो चाले एसे आपपन विवेर करावी गणवति पूनन कराब्यु, पटी मानुस्त स्पापनना भन्नोधी गोर्कांदै चौद मानुका तथा एक ठेना अगनः गणपति मटी पंदरते स्वापन कराव्यु ते उपर पोला कपाववा. दरेक वार्यमा गणपंति सहर्यामान वार्य करम् पत्ने नादिसाद कर्नु वया मातृकारपानन नयी, त्या नादि श्राद्धनी नरुर नयी जे माणप मानुकारपापन पगर नादिश्राद करे हो तेना शिवरो होवायमान यह नायके. पहेंडरपो गणवाति, ने छेल्छे पुळदेशता एवी गौर्यादि मातुषाने देवमातृहा वर्तके तथा बाहस्यादि सात मात्रिकाने मनुस्य-मातुका कहेंद्रे तेनु, मीर्यादिया जवणी तरफ सात प्रातनी बाखी करी सीपारी गोडवी तेनु स्थापन पूछन करानु (केटलीक टेकाणे पीवाना शरमा खारपाटको कडको

🎼 मोरि इहागच्छ इह तिष्ठ गौर्चे॰ गौरिमाबाह्यामि स्था॰ ॥ १ ॥ पद्मां ॥ पह्योहि पद्मे शशित्रख्यम्बन्ते पङ्केरुहाभे 🖾 ूर्यो काष्ट्रमपूर्वीहे रभवनसं नसार्वे तदुवारे पंषद्वासहयुक्तान् कुर्यात् ॥ तेषु पूर्वीफलानि निधाय ॥ तदुवारे गुणेशनायिकाञ्चतुद्देश मानुकाः स्था-🖒 पुनीयाः ॥ तत्रापं क्रयः ॥ गौरी पद्म सुनी मेथा सानित्री विजया जया ॥ देवसेना स्वया स्वारा मातरो छोकपातरः ॥ इ.छ.पुष्टिस्वया तुष्टिरा- 🖒 🎇 सनः क्रव्येक्ता।।गनेक्रनाधिकावेता एदी पुण्याश्चर्यक्ष ॥ यास्री भादेश्वरी चैव कीमारी चैव्यची तथा ॥ वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सम्रामा 🧣 ितरः ॥ केचित् ॥ श्रीलेहमी धृति मेंघा स्वाहा मज्ञा सरस्वते ॥ घृतेन मातरः सह पुरुषाश्र विभिन्नत् क्रमात् ॥ एताः घृतमातृकाः नांगीकृताः 👸

अथ गौर्यादिमातृणां स्थापनं ॥ इस्ते अक्षतान् गृहीत्वाः॥ कोद्यत् गहिः वायन्यां गणपति॥देवं नमामि िंगिरिजात्मजमेकदंतं सिंदूरचर्चितवपुः सुविशालशुंडं ॥ नागेंद्रमण्डिततत्तुर्धेतसिष्द्रबुद्धिसेञ्यं सदा सुरगणेः सक-है। लार्थसिद्धेथे ॥ गणेश इहागच्छ इह तिष्ठ गणेशायनमः गणेशमावाह्यामि स्थापयामि ॥ गीरी ॥ एहोहि नीली 🕏 🎇 एक बुलयनेत्रे श्वेताम्बरे मोज्बलश्चलहस्ते ॥ नागेन्द्रकन्ये भुवनेश्वरि खं प्रजां प्रहीतुं मम देवि गोरि ॥ 🖟

🖒 मनुष्यपानरो ब्राह्माः ॥ इति ब्राइकपराकरे ॥ अत्र चतुर्वेच मानुपदसमाद्यागान् मानरो स्रोकमान्तर इति सर्वासाम् विश्लेषणम् ॥ इति हेमाद्रौ 🖔 विकासित प्राक्षाः ॥ श्रेष्ठ श्रुद्वभावातः ॥ अत्र पतुद्व। सातुप्दस्यमद्वाराम् भावतः श्रेष्ठ क्रिक्टल्युगोवतेश्र यत बद्धिश्राद्ध तत्र मातुष्या यत्र श्राद्धाभावस्तत्र मातुष्यानाभावः इति शातातपः ॥ अर्थ-पौर्यादि मानुकातुं स्थापन वानष्ठ अर्थवः पाटवा विगेरे मुक्ती तेनापर छात्र कक्तद्वो पायति ॥१५॥ उपलो क कल्यहुगोवतेश यत यद्भिशाद्ध तत्र मातृषुका यत्र आद्धाभावस्तत्र मातृषुजनाभावः इति शातातपः ॥ अथ-पौर्वादि मानृकार्त्त स्थापन वामक अथवा पाटण बेगिरे सुकी तेनाचर छछ बक्तदो पादति ॥१६॥। इपछो काना मातनी करी तेनाचर सोपाति मीठणां, ह

🖏 शुद्रकमस्त्रकरादिग्धः ॥ कर्माद्रेषु तु सर्वेषु मातरः स गणायिषाः ॥ कुननियाः मयत्वेन पृत्रिताः वृजयन्ति ताः॥ बाह्युव्देन सम्भेत्रवीयादि च

े लवज्रहस्ते पूजां प्रहीतुं शिच देवि शीघं ॥ शिच इहागच्छ इह तिष्ठ शच्ये नमः शचीमावाहयामि स्था॰ ॥३॥ अंक्रता मातृप्रनान्तु यः शार्द्धं पीरेवपयेत् ॥ तस्य क्रोयसमाविष्टा हिंसामिन्छन्ति पातरः ॥ आदौ घिनापकः पृथ्यो अंते च कुल्ट्येवतेति । दिश्याम्यात् ॥ आदी पिनायरुपूजनं ॥ कुष्यलुखां बसोद्धीरां समुधारां घृतेन तु ॥ कारयेत् पंच घारां वा नातिनीचां न घोल्लितां ॥ कुडयलु-ग्नां पातृसर्पोपभित्तिकमां घृतेन<sup>े</sup> पुत्रीक्ष्यादिमा सप्तपंच वा भारां कारपेत् सप्त II- पंच भवत्यत्र पेरिकको विकल्पः II पसुरविषेसुर्द्रन्यं वसनोष्टांबिति कोउद्रक्षेत्रात् च शतपथक्षुतेः ॥ बसोरप्रदेव ॥ च परं काँद्रीतकीवासणवाज्यात् आग्नः सर्वदेवात्मकः ॥ अशिवें वसवे। देवता रति शुते: n तस्यात् अग्निपनेण वसोद्धीरा कर्तस्या ताः शारक्षिण्येन कुर्पीत् दैवन्त्रात् नोष्ण्यितां नात्युच्यां नोचरतश्रेति कुड्ये कृतशारायां वसुवाराय नमः इत्यावाय नायमंत्रैः मणवादिनयोग्तैः ॥ मतीवियारभ्य माग् पर्यताः वा वक्षिणस्यापारभ्य उदीति पर्यताः प्रस्थकं काण्डानु-

समयेन वा पदार्थानुसम्येन पुनयेत् ॥ ॥ बायन्य नोण गणपवित् स्थापन करी नैर्मेख खूणे गौरि तेनाउपर पद्मा ए प्रमाणे पश्चिमधी पूर्व तथा वसिणधी उत्तर स्थापन करतु. गौर्यादित् स्थापन थयापठी

तेनी जमणी तरफ सात टकनी भातनी बीजी करी तेनापर आख्यादिमातृकातुं स्थापन वरखु

भिषां॥व्होहि मेथे शुभभूत्विस्रे पीतावरे पुस्तकपात्रहस्ते ॥ बुद्धिपदे हंससमाधिरूढे वृज्ञां ग्रहीतुं मसप्तस्मदीयं ॥ भिषे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ मेथाये नमः ॥ मेथामाबाहयामि स्थापयामि ॥ ४॥ सावित्रीं ॥ प्ह्रोहि सावित्रि जग-🖺 दिवात्रि बद्धप्रिये छुट्ध्रवपात्रहस्ते ॥ प्रतप्तजांबुनदञ्जल्यवर्णे पूजां ब्रहीतुं निजयञ्जभूमी ॥ सावित्रि इहागन्छ 🖔 हि तिष्ठ ॥ सावित्र्ये नुमः॥सावित्रीमायाहयामि स्थापयामि ॥५॥विजयां॥एह्योहि शास्त्रास्त्रघरे कुमारि सरासराणां ै विजयप्रदात्रि ॥ त्रैलोक्यवन्दे शुभरतमूपे गृहाण पूजां विजये नमस्ते ॥ विजये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ विजयाँये 🕺 🕍 नमः ॥ विजयामावाहयामि स्थापयर्गम ॥६॥ जयां ॥ एह्योहि पद्मेरुहलोलनेत्रे जयप्रदे प्रोज्वलशक्तिहस्ते ॥ ब्रह्मा-🖹 乳 दिदेवैरभिवंद्यमाने जयेव सिद्धि कुरु सर्वदा मे ॥ जये इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ जयाये नमः ॥ जयामावाहयामि 🕄 स्थापयामि ॥७॥देवसेनां ॥ एह्योहे चापासियरे क्रमारि मयुखाहि कमलायताक्षि ॥ इंद्रादि देवैरपिस्तूयमाने 🕺 🎙 प्रयन्छति त्वं मम देवसेने ॥ देवसेने इह्यागच्छ इह तिष्ठ ॥ देवसेनायै नमः ॥ देवसेनामावाहयामि स्थापया- 🐉 िमि ॥ ८ ॥ स्वयां ॥ एह्योहे वैश्वानस्वस्त्रभे त्व कव्यं पितृभ्यः सततं वहन्ति ॥ स्वर्गाधिवासे श्वभशक्तिहस्ते 🕏 स्विषे तु नः पाहि मलं नमस्ते ॥ स्वेष इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ स्वधाये नमः॥ स्वधामावाहयामि स्थापयामि ॥९॥ है

स्त्राहां ॥ एहेरि वैश्वानरतुत्वदेहे तुडितप्रभे शक्तियरे क्रमारि ॥ हविर्महोत्वा सरत्तिहेतोः स्वाहे च शीर्घ म्स् मस्पदीयं ॥ स्विहे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ स्वाहाये नमः ॥ स्वाहामाबाहयामि स्थापयामि ॥ १०॥ हृष्टि ॥ एह्येहि भनताभयदे कुमारि समस्तलोकप्रियहेतुमुर्ते ।। भोत्फुलवंके रहलोलतेत्रे ऱ्हुष्टे मसं पाहि शिवस्वरूपे।। हुष्टे इहाग-च्छ इह तिष्ठ हृष्ये नमः ॥ हृष्टिमाबाह्यामि स्थापयामिश १९ पुष्टिं।एहोहि पुष्टे शुभस्तमभूषे रचतांवरे स्वतविशालः नेत्रे ॥ भनतिष्रये प्रष्टिकरि त्रिलोके मुहाण पूजां शुभदे नमस्ते ॥ पुष्टे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ पुष्टये नमः ॥ पुष्टि-मानाह्यामि स्थापयामि। १ शतुर्धि एहोहि तुष्टे असिळळोक्वं चे त्रेळोक्यसंतोपविधानदक्षे।।धीतवारे शक्तिगदाञ्जहस्ते

वस्त्रदे पाहि मातं नमस्ते॥ तुष्टे॥ इहागच्छ इह तिष्ठ॥ तुष्टेषे नमः॥ तुष्टि माबाहयामि स्थापयामि॥ १३॥ कुछदेवताम।। एहोहि दुनें दुरितीपनाशिन प्रनंडदैरपीपविनाशकारिण ॥ शिवे महेशार्पशारीण स्थिरा भव त्वं मम यज्ञकः

र्मणा। आत्मनः कुरुदेवताये नमः॥आत्मनः कुरुदेवतामावाहयामि स्थापयामि॥ इति गौर्थादि मातुकास्थापनम्॥ 🖔

अय व हवादि मातुकास्थापनाम् ॥ १ ॥ वाहीं ॥ चल्रभुंसी जगन्दात्रीं हंसारूटां वरपदां ।। सृष्टिरूपां महाभागां

हुने ग्रवपति सह गोर्यादि १४ मातृकातुं स्थापन यथा पढी तेतुं पूनन वक्ता प्रमाणे कर्त्युं, अथना एनी साथे बाह्यपदि अनुस्थमातृकातुं स्मापन करी एक तने मतिग्रा करीं पूजन नरतुं, ए यथावकाश समनतुं; यूनन प्रकार शास्त्राधमां आपेखोंके.

ि कोमार्थे नमः ॥ कोमारीमाचाहवामि स्थापयामि ॥ ३ ॥ वैष्णवी ॥ शंखचकगदापद्मवारिणी कृष्णरूपिणी ॥ 🔀 स्थितिरूपां खगेन्द्रस्थां वेष्णवीं तां नमान्यहृष् ॥ वेष्णावि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ वेष्णवेशनमः वेष्णवीमावाहयामि हैं स्थापयामि ॥ ४॥ बागरी ॥ बासहरूपिणीं देवीं दंशोद्धतवसुन्धराम् ॥ श्रुभदां पीतवसनां वासरीं तां नमाम्यहं ॥ 🕌 ्री बाराहि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ वाराही नमः ॥ वाराहीमावाहयामि स्थापयामि ॥ ४ ॥ इंद्राणीं ॥ इंद्राणीगजकं भर्या सहस्र रयनोज्वलाम् ॥ नमामि वस्दां देशीं सर्वदेवैर्नमरहताम् ॥ इन्द्राणि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ इन्द्राण्ये 🖏 ्रीनमः ॥ इन्द्राणीमावाहवामि स्थापयामि ।१ ६ ॥ चार्सुडां ॥ चार्सुडां संडमयनां संडमाळोपशोभितां ॥ अट्राट्रहास मुदितां नमाम्यात्मविभूतये ॥ चामुण्डे इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ चामुण्डाये नमः ॥ चामुण्डामावाहयामि

ब्रह्माणीं तां नमाम्यहं ॥ त्राह्मि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ ब्राह्मये नमः ॥ ब्राह्मीमाबाह्यामि स्थापयामि धशा माहेश्वरीं ॥ माहेश्वर्रं नमाम्यद्य मृष्टिसंहारकारिणीं ॥ वृपारूढां शुभां शुभ्रां त्रिनेत्रां वस्दां शिवां ॥ माहेश्वरि इहागच्छ इह 👸 तिष्ठ ॥ माहेश्वर्षे नमः ॥ माहेश्वरीमाबाहयामि स्थापयामि ॥ २ ॥ कौमारी ॥ एह्योहि कौमारि विचेहि शांतिं शर्कित 🎉 🏥 द्यानेऽपि सदाश्रमच्ये ॥ स्कंषाधिरुदेशिलिगुंगवान्यां मातः प्रसीद प्रसृतिं प्रयच्छा। कौमारि इहागच्छ इह तिष्ठ ॥ 🕏

भंडले देवते. सह ॥ सगणेशगोर्याचावाहितमातरः त्राहमादि सप्तमात्रश्च सुन्नतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥ सगणेश गीर्याचाहितमातृम्यो नमः ॥ आवाहनं स० ॥ सुगणेशगीर्याद्या० आसनं स० ॥ सुगणेशमीर्याद्या० पाद्यं सुना समुणेशगोर्याद्या॰ अर्व्यं सुन ॥ समुणेशगोर्याद्या॰ आचमनीयं सुन ॥ समुणेशगोर्याद्या॰ स्नानं स॰ ॥ सगणेशमीर्याद्या॰ वर्च स॰ ॥ सगणेशमीर्याद्या॰ उपनीतं ०॥ सगणेशमीर्याद्या॰ गंपं स॰ ॥ सगणेश-गौर्याचा॰ पुष्पं सुन्। सुगणेशगौर्या॰ अलकारार्थं कुंकुमाधताच सुन्। सुगणेशगौर्याद्यु॰ सुशोअनार्थं सीभाग्यद्वः इयं॰स्।।सगणेशगोर्याचा॰ पूर्व स॰ सगणेशगोर्याचा॰ दीवंस्।।सगणेशगोर्याचा॰ नेवेद्यं स०।। सगणेशगोर्याः

द्या॰ तांबुलं स॰ ॥ सुगणेशगीर्याद्या॰ साहुण्यार्थे दक्षिणांस॰ ॥ सगणेशगीर्याद्या॰ प्रदक्षिणां स॰ ॥ देवि प्रसीद 🕏 परिपालयं नोरिभीतेर्नित्यं यथा सुरवभादछनेव सद्यः ॥ पापानि सर्व जगतां प्रशमं नयाशु उत्पातपातजनितांश्च

अर्थ-गोर्थाटि मेटरी मातुराह स्वापन कर्युंगे तेनी मतिछायरी आवाहन आसन विगेरेथी पुरुषागठी लगी पूमा वरी प्रार्थना करी करेछी पना अर्पण

करनी ब्राह्मादित स्थापन थया पडी सात पाठा क्यों होच तेना उपर कीनी मंत्रयो पारा करनी गोळ तथा न्यानाण चोड्यु.

👫 रूपैरनेकैर्नेहभारममूर्ति कृत्वांनिके तत् प्रकरोति कान्या ।। २ ।। विद्यास शास्त्रेषु विनेकदीपेष्वासेषु वारुपेषु च का

∥\$||दस्युवलानि यत्र ॥ दावानलो यत्र तथाव्यिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वय ॥ ४ ॥ विश्वेश्वरि त्वं परिपा∙¶\$| 🏙 सि विश्वं विश्वारिमका धारयसीति विश्वमाविश्वेशवंद्या भवती भवन्ती विश्वाश्रुया ये त्वयि भवितनमाः ॥ ५ ॥ 🎇 देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथा खरवभाद्युनैव सद्यः ॥ पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु जलातपा- 🕸 🎇 कजिनतांश्च महोपसर्गान् ॥६ ॥ हस्ते जलमादाया।अद्येत्पादि० कृतेन आयुःशांतिजपाख्येन भगवान् कर्माधीशः 🕺

भा महोपसर्गान् ॥ समणेशगौर्याद्या॰ पुष्पांजिलं स॰ ॥ अनेन पूजनेन समणेशगौर्याद्यादितमातरः श्रीपंताम् ॥ 🎇 हस्ते जलमादाय ॥ अर्थेत्वादि० अस्मिन् कर्मणि आयुष्याभिष्टद्वर्थं ब्राह्मणद्वारा आयुःशांतिजपं करिष्ये इति 🧗 🕍 संकल्य ।। विप्राः पदेखः।। ते च ।। रोगानशेषानपहासि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकळानभीष्टान् ।। त्वामाश्रितानां न 🕄 👫 विषन्नराणों त्वामाश्रिता बाश्रयतां प्रयांति ॥ १ ॥ एतत् कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्रिणं देवि महास्रराणाम् ॥

🏥 त्वदन्या 🛭 ममत्वगर्तेऽतिमहांषकारे विभ्रामयत्वेतदत्तीय विश्वं ॥ ३ ॥ रक्षांसि यत्रोत्रविपात्रा नागा यत्रारयो 🖟

रूपे-दोपमां जळ एर आयुत्यमुद्धिमाटे सकराकरी ब्राह्मण पासे आयुष्य मेत्रपाठ करायी ते पारकोने दक्षिणा आयी नगरकार करावा ए प्रमाणे मात्रकारण -

पन करी नादीश्राद्धनी आरम काबी.

मुद्दीति जातिसारे ॥ तत्र नादीसुलाः शितसः वितायहाः मवितायहाः सपितकाः मातामहत्रपातामहरुद्धममातामहाः सपत्नीका हति पहुरुषः

विण्डदानिकिसासध्यस्त्रधानाचनमश्रीत्येवतं सप्तकं बच्ये ॥

वितृन्यः पूर्विषद्वत्र स्पष्टं ॥ क्रवस्थात्षु दृश्वेः स्युः भगुलस्थाभिष्टद्ववे ॥ इति आः बलायनोत्रतेः ॥ तत्र साइव्दिनके समैतकात्राहनायीश्नीकरण-

१ हुवे नारी गढ़ करनु तेमा पहेला वैधरेय करनो तेने वण्ले चोचा तथा था श्राह्मणने आपी सकता करी वर्म करनु वृद्धिश्रादमा कर्तानी नाप तथा तेनो बाय तथा मा तथा तेनी बाप जीवती होय तो करवानी जरुर नथी. वृद्धिश्राद्ध सप्तरमा करनु, ते वे प्रकारनु छे विडवाळु ने पिड बगरनु तेमा विड बालु करनु होय तो नधु आद प्रमाणे करी थिंड मूक्ता अने सारुत्पिक श्राद होय तो थिंड मूक्तवानी जहर नमी चेटलेक देकाणे वाझणा संरुत्य श्राद क्सबात कही पिंड सूछावे के तेथी वेउन फल मकतु नथी सकहन आद्भण सागला तरभाणाया त्रग दगन्छे थानती करी सीपारी मोठवी जनगा हायमा र्व पुर्ती रूर तेना उत्तर एंटरे बीट अटमा सत्य अने बहु नामना विश्वदेश हो तेना उत्तर पाणी रेडतु पत्री बाना देवतापर तथा मीना उत्तरएम अनुक्रये पुना करवी।। 🗴

वि॰ को॰ ई श्रीयताम् ॥तेन करिष्यमाणकर्मणि आयुष्याभिवृद्धिरस्तु ॥ आयुष्यमंत्रपाटकेम्यो वथाशक्ति दक्षिणां दद्यात् ॥
इति मात्कारयापनप्रयोगः॥ अथनादीश्राद्धं॥तेत्र प्रवर्ष वेश्वदेवः तदभावे अद्यत्यादि॰ अस्मिन् कर्मणि इ विहित्तवे खेदेवाकरणजनितप्रत्यवायपरिहासर्थं करणजनितपूरुपाप्त्यर्थं इदं तंडुलपात्रं सदक्षिणाकं शास्त्रोक्तपुण्यफ ल्याप्यर्थं गोत्राय त्राह्मणाय संप्रदास्ये॥तेन करिष्यमाणकर्माण अविकारसिद्धिरस्तु॥नादीश्राद्धं सीपण्डकं अपि-

? बुद्धिश्रादं पुरा कार्य कर्षादी स्वस्तिवापनभिते ॥ किलाण्डिसरणात् नत्त्रहपत्रादी नादीश्राद्धिति वान्यम् ॥ कन्यापुत्रशित्राहेषु प्रवे वे नव्यस्मिन् ॥ नामकर्षणि ग्रह्णाना चूहाकर्मादिकं तथा ॥ सीमन्तोन्नयने चेत्र पुत्रादिष्ठसदक्षेत्रे ॥ नादीष्ठसानं विनृनादी तपेयेत् मयतो

नोदीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादपक्षालनं दृद्धिः ॥ गोन्नाः पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः निद्दिशिखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रशालनं इद्धिः ॥ दितीयगोत्राः मातामहप्रमातामहश्रद्धप्रमा-तामहाः सपत्नीकाः नांदीसुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः ॥ अद्यः प्रवीवस्तिश्रुभपुण्यति-थी मण सुतस्य वा सुतायाः विवाहांगत्वेन सांकल्पेन विधिना नांदीश्राद्धं करिण्ये ॥ आसनदानं ॥ सत्यवसुसं-अनुस्ता अतिवैश्वेन नांतीआर्छ च सम्पतः ॥ इति संग्रहे ततपश्चित्वचोहेषु आरुशोर्माचेन अपे ॥ आस्टो मृतकं न स्यात अनुसन्धे त सनकं ॥ इति विष्णुपुराणे ॥ त्रीरंभो वरणं यहे सर्कल्पनतसम्बोः नादीश्राद्ध निजवादी आद्धे पारुपरिजियेति ब्रह्मपुराणे ॥ विभेदेनाः कार्यपरतं ॥ इष्टिश्रादे ऋतुरेक्षः संकीत्वा वैश्वदेविके ॥ नादीमुखे सत्ववम् काम्ये च प्रतिरोचनो ॥ पुम्पत्वार्देवी चैच पार्वणे समुद्राहती ॥ नैभित्तिके कामकालावैव सर्वन कीर्वपेत ॥ इतिश्रादमपूर्व ॥ 

ण्डकं वा फलं समानं ॥ तत्र सांकरुपेन विधिना अपिण्डकप्रयोगः ॥ ताम्रपात्रे त्रीणि बद्दिनि वा अक्षतपुंजानि हैं कुरुग ॥ तस्योपरि प्रगीफलानि निधाय ॥ दक्षिणहस्ते सजलहृदीङ्करान मृहीत्वा ॥ सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः

```
विश्वी क्षकानां विश्वेषां देवानां नांदीमुखाना इदमासनं सुखासनं नांदीश्राद्धे क्षणी कीयेतां तथा प्राप्तुताम् भवन्ती 💆 प्र०१
```

भग्नवाव ॥ गोत्राणां पितृपितामहप्रिपतामहानां सपत्नीकानां नांदीसुखानां इदमासनं सुखासनं नांदीश्रास्त्रे । ॥ २१ ॥ वश्रीयंताम तथा प्रान्तुवन्तु भवंतः प्राप्रवाम ॥ दितीयगोत्राणां मातामह प्रमातामह बुद्धप्रमातामहानां हूं सपत्नीकानां नांदीमुखानां इदमासनं सुखासनं नांदीश्राद्धे क्षणाः कीयंतां तथा प्राप्नुवन्तु भवंतः प्राप्नुवाम ॥ 🖔 गंधादिदानं ॥ सत्यवसुसंबक्तेभ्यो विश्वभ्यो देवेभ्यो नांदीमुखेभ्य इदं गंधाद्यर्वनं नमः संपद्यतां वृद्धिः ॥ गोत्रेभ्यः पितृपितामहभ्यः सपत्निकभ्यो नांदीमुखेभ्योः यथादत्तं गंधाद्यर्वनं नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥ द्वितीयमोत्रेभ्यो मातामह-प्रमातामह-चुद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेम्यः नांदीसुखेभ्यः यथादत्तं नमः संपद्यतां वृद्धिः ॥ भोजनीनष्कयद्रव्यदानं ॥ सत्यवस्रुसंज्ञकेन्यो विश्वेभ्यो युगमुत्राह्मणभोजनपूर्याप्तमन्नं तन्निष्कयीभृतं किंचिद्धिरण्यं असृतरूपेण नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥ गोजेभ्यः नांद्रीशाद्धे अश्वाभाव आपं आपाभावे हिरण्यं हिरण्यासवे गुम्पत्रात्मणभोजनपर्याताश्वनिष्कपर्यासृतयथात्रश्चित्रिद्वव्यदानं ॥ इति धर्मसियो।। करवायी सुतकादिनो बाच छामतो नयी. पत्री आक्षननो संस्वस्य करी स्वापित देवोपर पाणी सुकबुं तथा तेनापर चंदन फुछ चडायवा तथा नाद्मणमात्रन विगेरेभो संक्रल करपो.

हैं सिंक्षीस्प्रदकदानं ।। नांदीमुखाः सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवाः श्रीयंतां ।। गोत्राः पितृपितामह प्रितामहाः 🐉 🎇 सपत्नीकाः नांदीमुखाः प्रीयंतां ।। द्वितीयगोत्राः मातामह प्रमातामह बृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदीमुखाः 📳 🏿 श्रीपंतां ॥आशिषोत्रहणं ॥ गोत्रं नो वर्छतां ॥ वर्छता वे। गोत्रं॥दातासे नोऽभिवर्छतां अभिवर्छतां वे। दातारः॥ 🔊 🕍 संतितेनें। भिवर्द्धतः अभिवर्द्धतां वः संतितिः।। श्रद्धाः च नो मान्यगमत्।। मान्यगमद् वः श्रद्धाः ।। बहुदेयं च 🕍 🎇 नोऽस्तु ॥ अस्तु वो वहदेवं ॥ अन्नं च नो वह भवेत् ॥ भवतु वो वहन्नं ॥ अतिर्थिष्ठ लभामहै ॥ लर्भतां वो 🚰 र्भावंतामित्यत्र यनसीरभ्रज्ञानि दद्यात ॥ इति प्रयोगस्तमगदाभरौ॥यीत्यै सक्षीरदानं ॥ आभ्यूद्विकश्रादं तु आन्वारात् ॥ द्वार्ग वाणी रेडोने नांद्रीमुख देवीने आपवायी ते प्राप्तन वर्ष छर्टुंबविमेरेमा थता बळेरा नारा करी प्रति उत्पन्न करावेछे एवं प्रथकारन् केडेकुंछे

री पारमां जल वह तेमां दुप रेश ते देशताओंने अर्पण करवाभी शंत्रमृद्धि भाषके, मास्रणीने नान्द्रिश्रद्ध भुनं ए प्रश्नो विगेरे पूळवा. सरेक देशना उद्देश-भी क्षियों पा आपवानों संग्रदाय छे—नादीशाइसां जे न्युनाधिक सर्वु होए तेमी परिपूर्ती करी संग्रहप करी देशताने अर्पण करवुं, ए प्रमाणे नादीशाह्म

ियापितामह प्रपितामहेभ्योः सपल्नीकेभ्यो नांदीमुखेभ्योः अग्मश्राह्मणभोजनपर्याप्तमत्रं तात्रिष्कयीभृतं किंचिद्धिरण्यं अग्रुतरूपेण नमः सपद्यंतां वृद्धिः ॥ द्वितीयगोत्रभ्यो मातामह भमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपरनीकेभ्यो नांदी-मिलेभ्यो अग्मश्राह्मणभोजनपर्याग्नमत्रं तित्रिष्कयीभृतं किंचिद्धिरण्यं अग्रुतरूपेण नमः संपद्यंतां वृद्धिः ॥

क्षेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्धयर्थं द्राक्षामरुक्यवमूलनिष्कयीमृतां दक्षिणां दात्तमहम्तस्य जे।।द्वितीय

गोञ्जेन्यो पातामह प्रमातामह युद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नांदीसुलेभ्यः कृतस्य नांदीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासि-द्धचर्यं द्राक्षामलकववम्यलनिष्कयीभृतां दक्षिणां दालुमहमुत्यूजे ॥ ततो नांदीश्राद्धं संपन्नं ॥ सुसंपन्नं ॥ जलं

अतिथयः ॥ याचितास्त्र नः संद्ध ॥ संदु ये। याचितारः॥ एता आशिषः सत्याः संदु ॥ संत्येताः सत्या आशिषः॥ दक्षिणादानं ॥ सत्यवसुसंज्ञकेम्पो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदीसुस्यमःकृतस्य नांदीशाद्धस्य फरूप्रतिष्ठासिद्धयर्थे दासाम-लक्षवमूलनिष्कवीभूतां दक्षिणां दाद्यमहमुत्ताने॥ गोत्रेभ्यः पितृपितामह प्रपितामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यो नांदीमः

मृक्षीत्वा ॥ अनेन नांदीश्राद्धकर्मणा कृतेन श्रीनांदीमुखदेवताः श्रीयंतां ॥ अस्मिन्नांदीशाद्धे न्यूनातिरिक्तो

यो विधिः ॥ स उपविष्ट्रवाह्मणानां वचनात् नांदीसुखप्रसादात् सर्वं परिपूर्णे ॥ अस्तु परिपूर्णम् ॥ 🕺 ॥ अय्य अर्घबंदनं ॥ पाद्यार्घपात्राणां स्थापनं ॥ तत्र ॥ कांस्यसंपुटे ताम्रसंपुटे वा ॥ शरावे ॥ आपः क्षीरं 🕺

२ आचारात् अर्यवंदनश्व।। शाक्षणप्ररणार्थं पाद्यार्पपंदनशिति केचित् ॥ कुष्टं मासी इस्द्रि हे सुराशैलेपचंदनं ॥ स्वचा चंपकमस्ता च

सर्वेक्ष्या दश्च स्पृताः ॥ इति भविष्यपुराणे ॥

थपुं. फेटराक अभ्युरिक श्राद्ध रहेते, वे, आभार है माटे सुरसुं नथी. १ अर्पवंदन परंख तैया पुतनने गारे स्त्रीला अस्त्राति तेयां

परि कलशं निभाय ॥ विश्वाचारासीति मंत्रेण भूमी स्पृष्टा ॥ विश्वाचारासि घरणी रोपनागोपरिस्थिता ॥ घता 🔀 चादिवराहेण सर्वकामफलप्रदा ॥ भूम्यै नमः ॥ हेमरूप्पादिसंभूतं तामुजं सुदृढं नवं ॥ करुशं श्रीतकः स्मापं स्ट्रियणीयवर्जितं ॥ जीवनं सर्वजीवानां पावनं पावनात्मकं ॥ बीजं सर्वेीपधीनां च तज्जरुं प्रस्याम्यहं ॥ सूत्रं कार्पाससंभूतं त्रह्मणा निर्धितं पुरा ॥ येन कदं: जगरसर्व वेष्टनं कलशस्य च ॥ ओपिधः सर्ववृक्षाणां तुण-

क्रशामाणि दविद्वतिक्षतास्तवा ॥ तिल्लः सिद्धार्थकाश्चैव अंद्यमोऽर्घपकीर्तितः ॥ प्रस्तः घान्यसार्थि कृत्वा ॥ तदु-🕍

| ग्रुत्मलतास्तथा ॥ दूर्वासर्पपसंग्रुक्ताः सर्वेोपच्यः पुनातु माम् ॥ विविधं पुष्पसंजातं देवानां प्रीतिवर्धनं ॥ क्षिप्रं यत्कार्यसंभृतं कलशे निक्षिपाम्पहं ॥ अैश्वत्थोद्वंत्ररूरुत्रनृतन्यग्रोधपरूचाः ॥ पंचभंगा इति प्रोन्ताः सर्वकर्षसः पीपछो-उपहो-पीपरही-आयो-दद#घोडो-हाधी-राफडो-संगम-पटले पहानदी समुद्रनो-खाडो-राज्य-गायनी 11 पटली देकाणेथी मरोदी साथी कस्त्रमां साववी.

नल-साउ-सङ-चंदन फ्रल औषधि-सोपारी-सचररत-सचपहार नासवा तपाराशानासादा नव आना छालवानो सप्रदाय छे, पूर्व कारण एटलुंन है 0000000 के करा रूपाने। नोध्ये तेने बरुठे ए सुक्रवानी संप्रदाय है. कलकामां उपर कहा प्रमाणे वे वधुं कुर्ता तेपर सालिकेर मूनी बांकतुः पत्री मरोडीतुं कोडियुं अथवा कांमानी बाहती तेमां-पाणीर-नृष-दर्हा--

सवर्णपात्रं पिधाय रक्तसूत्रं वेष्टियत्वा ॥ पाद्यार्षपात्रे गंधपुष्पाक्षेतरभ्यन्धे ॥ वैजमानहस्ते मांगल्यं कृत्वा । धान्यदूर्वीप्रक्षेपः ॥ यजमानः स्वासनात पश्चिमतः उत्तराभिमुखो भूत्या तिष्ठेत् ॥ आचार्यः पत्नीहस्ते कलशं 🖇 ' दद्यात्।।यजमानहस्ते अर्च्य च॥सुमुहूर्तादि कर्त्तन्यं शोभने मंडपे द्विजः॥ शांतिपाटाऽर्घदानं च प्रच्छापूर्वं समाच दुर्वा-असत-तिल-सरसय-विरोर नांसी तेता पर बीज़ुं पात्र द्वारी तेनापर नाहुं सुकी एक पाद्यनो कलक तथा अर्थने अवील शुलालयी ह्युसोभित यत्त्वा. पारारी करतु एका आचारहे. गैरि सक्लीक यजगानना इध्यमां कुकुन तथा मातलाखी यजमान परनीना इध्यमां कल्या तथा यजमानना हथ्यमां अर्ध आर्धा पहत्वती मीने उत्तरतं मोह बराबी उभाराली मंत्र भणाववाः नहीं तो बाहरणोने मोहबी सांमळी, अर्थ समनी, आ पाद्यपान तथा अर्थ छो एम

दात् ॥ राजदासन गोगोष्टान्यदमानीय निश्चिपत् ॥ कनकं कुलिशं नीलं पद्मसगं च मोक्तिकं ॥ एतानि

शोपरि ॥ अनेन पाचपात्रोपरि ताप्रमयं पूर्णपात्रं निधाय ॥ तद्रपरि नालिकेरं निधाय । तत्र अर्घ्यपात्रोपरि

कहि आपी पोताना आसन पर देसवं.

🐉 द्वराद्वपाम् ॥ सर्वसीभाग्यसंपत्ये निष्पत्ये अस्य कर्मणः ॥ ४॥ आचार्यादिसमस्तानां जापकानां द्विजन्मनामः॥ ्रीपादार्चं प्रकरिष्येऽहं आज्ञां देहि ममाध्येरे ॥ ५ ॥ पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः ॥ अनुमृण्हेनु ्रीमामच ग्रहयज्ञारुयकर्मीणे ॥ ६ ॥ स्वस्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः॥ श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च देवच्या 🕏 🕼 नरताः सदा ॥ ७ ॥ यद्राक्याम्रतसंसिक्ता ऋद्धि यान्ति नरहुमाः ॥ अंगीक्वर्वन्तु कर्मेतत् कल्पद्दगसमाशिषः ॥ 🖹 🔐 ॥ ८ ॥ यथोक्तनियमेर्षुका मंत्रार्थे स्थिखुद्धयः ॥ यस्कृपालोचनात् सर्वो ऋद्धयो युद्धिमान्तुयुः ॥ ९ ॥ स्वागते 🕏 मो दिजश्रेष्ठा मदतुत्रहकारकाः ।) जयभर्वभिदं पार्च भवाद्भिः त्रतिगृह्यतां ।) १० ।) अर्घोऽघोऽर्घः ।) प्रौतिगृह्यतां 🕺

बर्ध -उपरान पत्रीमणी रहे त्रावणी, त्यारपत्री यनमाने बेहेर्चु प्रतिगृह्मताम् पत्री ब्राक्षणीए प्रतिगृह्णामि कहि ते बेउना हाथमध्ये कछरा अर्घ टड्ड

हैं। र ॥ मम क्षेमाञ्चरारोग्यं परमश्रीखलाप्त्ये ॥ सर्वधुसुतभायस्य वांछितार्थस्य सिद्धये ॥ २ ॥ आधिन्यापि-जरास्ट्रस्यभयशोकापन्हृतये ॥ स्तभव्यभाविष्येति त्रिविधात्मातशांतये ॥ ३ ॥ सर्वेन साममध्यस्तोर्निस्तीय

गार्मुखमुपविश्य ॥

्री तीचे मुक्ता यजमाने पोताना पाठवापर बसी बाद्याणसणानो संकट्य करवो.

महा-भंत्रभाष्ये ॥ आवार्षे रूणुयातरार्षे त्रहाणं तद्यंतरं ॥ परश्रुराभेणापि ॥ आवार्षोदिसमस्तानां जापकानां दिनन्यनां ॥ आवार्षे 🖔

चि॰को॰ 🕯 इति यजमानः ॥प्रतिगृण्हामि इति द्विजः ॥ जलं गृहीत्वा ॥ आचार्थादिऋत्विजां वरणमहं करिष्ये ॥ यजमानः 💡 ै हस्ते सववपुष्पपूर्गाफ्लं गृहीत्वा ॥ शकादीनां यथा स्वर्गे आचायों वा वृहस्पतिः ॥ तथा स्वं मम यज्ञेऽस्मिन्ना । वार्यो भव सुबत ॥ मंत्रमूर्तिभवनाय संसारोच्छेदकारकः ॥ पूजाईस्तु वथादेवः छहधमी हुर्तिचन ॥ क्षे क्षंसारमयभीतेने अयं यज्ञः स्रभक्तितः ॥ प्रारूथस्वरयसादेन निर्विष्नं में भनेदिति ॥ भगवनसर्वधर्मज्ञ रि ू प्रविधर्मपरायण ॥ सर्वशास्त्रावितत्त्वज्ञ सर्वशास्त्रविशाख ॥ अनादिजन्मसंतान हाप्रमेय भवार्णवे ॥ अदा मे हात्तमं जन्म अद्य में सफलं धनं ॥ अद्य में जननान्छित्तिस्य में परमं पदं ॥ मोचितोऽहं त्वया 🕺 नाय दुच्छेद्याद्भवत्रंथनात् ॥ संत्रातोऽहं त्वया अस्मादप्रमेषाद्भवार्णनात् ॥ सुक्तोऽहं मर्त्यसंसारात् प्रपन्नोऽहं तवा- 🕏 न्तिकम् ॥ पूर्गीफलं आचार्याय दत्वा ॥ पुष्यं निरास निधाय ॥ यदैः जानु स्पृशेत् अमुकगोत्रोऽअमुकपवरो 🕺 पनेपान उदद्मुलो भूत्वा ॥ सप्पत्रृपीफलपुष्पे मृद्दीत्व अंत्रील क्षता आचार्य प्रार्थपेत् ॥ --वर्ज यनवाने उचराभिमुले मेही हरभग सोवारी असन पुष्प जर आचार्यवरण पेहेलाथी काबु तेमा प्रथम प्राप्ता करी सोवारी आपी आचार्यना गोळणे नर्या अञ्चल्ली मोत्रादि ब्राह्मण्या बोस्यापद्धी यनमाने पोताना गोत्रोचार बोटी अमुरुकर्ममा आनार्यक्रमें करवा हु तमने आनार्य वरुदु, एम कदी

तत्र असर्ग एएप माथा पर सुरुषु, तथा आमार्थना वे पण तरभाणमा सुकता. पादा पात्रनो चळदाउँ तेमाथी पाणी त्रण पखत पराउपर रिटी आनार्थना है।

🔋 ॥ कपिछाय नमस्तम्यं स्क्षाकंकणबंधनम् ॥ इस्तमुद्रा कर्णमुद्रा आसनादिसामग्रीं यज्ञोपवीतं वस्त्रं च दस्ता ॥ 🕏 ्रे स्वनामगोत्रमश्रान्संकीत्यं द्याद्यणस्य च ॥ अस्मि कृति कत्यवन्याम् ॥ तत्र द्राता स्वशास्त्रीयः कर्तव्य ॥ वनामगोतमक्तानांकीत्यं बाह्यणस्य च ॥ अस्पिन्यवेऽमकं देवं त्वापढं ऋषितं ष्ट्रणे ॥ इत्यत्त्वा त फलं दचारकरे कत्रैय प्रमन्य ॥ ूँ। हायेथा पन भोड, पडी अर्प करेकोड़े तेमाथी एक यत्रत राणी आचार्यना बेहायमा आपत्त. पडी द्वादशानगरी एक आचमनी भीरेने जळ पाउ हायमां 🗘 आपनं पढ़ी चदन फुलमाधार मुक्तु. तया कशळे चदन करी कुरुमनी चालो करी नीता चोडी कुणनी हार पेहेतकी नमणे हाथे ताड़ बांचनं. तथा 🛂 🏸 जारन मीमुखं माळा आचमनी तरभाग पानोपपात्र ( अयहा ध्यालो ) तका वस्त्र उपनल ननीह मुदिका निमेरे, लावेली वस्तुओ तथा दक्षिणा आचार्यने 🔯 🛉 आधी कहेंचु के हे आचार्य 1 ज्याली आ मार्ह कार्य संपूर्ण पाय त्यासभी तमारे आचार्यत कर्तव्य कम वज्र तेरलायारे तमने आचार्य कर्या है. एम कहापती 🗘

ैं प्रमुक्तयज्ञमानोऽहं करिष्यमाणकर्मणि आचार्यकर्मकरणार्थं अमुकगोत्रं अमुक्तप्रवरं अमुक्रवेदांतर्गतअमुकशाखाः । वैध्यायिनममुक्तशर्माणं ब्राह्मणं साक्षतचंदनवासोभिः आचार्यत्वेन स्वामहं त्रणे व्रतोऽरिम ॥ व्रताय एतत्ते पाद्यं वैपादावनेजनं पादपक्षालनं इदमत्र चंदनमालिकां च हस्ते कंकणवंधनम् ॥ प्रतिज्ञावरणं चैव स्वस्तिप्रण्याहवाचनम्।

अवार्षे केहेषु तमा उत्तय कार्य कावा तैवार पथाछो, तो सापकर्मकारका आवार्य थांडडुं. पत्री आवार्यना पूननना कम प्रमाणे यसभाननी द्वालानीन हैं बहार करते तेना मंत्रीकिरेवी प्रार्थन। वरी बहारह वरण करतुं तथा मीलागणस्त्यादि तथा द्वारपाल विगेरे कालिनोतं जुदुं पूनन श्रद्धापुर्वेस करतुं,

णं बृष्णुयात् ॥ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदविशास्तः ॥ तथा त्वं मम यह्नेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ॥ आवाह-यामि देवेरां ब्रह्माणं कमळोद्भवं ॥ चतुर्वेदसमाञ्चकं सर्वसिद्धांतवेदिनम् ॥ प्रार्थ्यः ॥ प्रमीफळं हस्ते दत्वा पुष्पं

यावत्कर्भ समाप्यते तावत्त्वं आचार्यो भव ॥ भवामि इत्याचार्यः ॥ पूर्ववत् ॥ यवपुष्पपूर्गीफ्लं गृहीत्वा ॥ ज्ञहा-

💲 रिरोसि निधाय येवैर्जान्त स्पृशेत ॥ असुकगोत्रोऽसुकप्रवरोऽसुकयजमानोऽहं करिष्यमाणकर्मण्यंगभृतकृताकृतावे- 🕏 क्षणार्थं अमुकगोत्रमञ्जकप्रवस्म मुकवेदांतर्गतामुकशाखाऱ्यायिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं साक्षतद्रव्यचंदनवासोभिः बहात्वेन त्वामहं वृणे वृतोऽस्मि इति प्रतिवचनम् ॥ वृताय एतत्ते पादां पादावनेजनं पादप्रक्षालनं इदमत्र चंदन 🕏 म लिकां च इस्ते कंकणवंधनम् ॥ प्रतिज्ञा वरणं चैव॰ ॥ इस्तमुद्रा कर्णमुद्रा॰ ॥ यायत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं वसा भन् ॥ भनामि ॥ साक्षतप्रगीफलं गृहीत्वा गाणपत्यं प्राथेयेत् ॥ ऋत्विनिभः सहितो बह्यनसंयुतेः सुसमाहितेः ॥ आचार्येण च संयुक्तः कुरु कर्म वयोदितं ॥ वांछितार्थफलावास्ये प्रजितोऽसि खुराखुरः ॥ निर्विध्नकार्यसंसिख्ये त्वामहं गणपं वृषे ॥ त्वन्नो ग्रहः पिता माता तं प्रभुक्तं परायणः ॥ आचार्यादिभिः सयुक्तः इह कर्म यथोदितं ॥ फलं दत्या प्रवेवत्स्रजनं ॥ असुकगोत्र० यजमानोऽहं ०॥ असुकगोत्रं० त्राह्मणं गाणपत्यत्वेन त्वामहं वृणे ॥

ुं मम् ॥ कर्मिणं वेदतत्त्वत्तं सदस्यं त्वामहं रूणे ॥ फलं दत्वा पूर्ववरष्ट्रजनं ॥ असुकगोत्र॰ यजमानोऽहं॰॥ असु-🎖 कगोत्रं॰ त्राह्मणं सादस्यत्वेन स्वामहं वृणे। त्रतोऽस्मि पाद्यं॰ यावत्कर्मः समाप्यते तावत्त्वं सादस्यो भव ॥ सर्वोप- 🕏 🕍 दृष्टारं बुख्यात ॥ अस्य यागस्य निष्पतौ अवंतोऽन्यिंता मया ॥ सर्वोपदृष्टकर्तन्यं कोंमंदं विधिपूर्वकं ॥ फलं 👸 िदत्वा प्रवैवत्प्रजनं ॥ असकगोत्र॰ यजमानोऽहं॰ ॥ असकगोत्रं॰ त्राह्मणं सर्वोपद्रष्टारं त्यामहं वृणे ॥ व्रतोऽसिम 🐉 ै पार्च-याक्ष्कर्म समाप्यते तावत्त्वं सर्वोपद्रष्टा भवा।ऋग्वेदिनं वृष्णुयात्।।ऋग्वेदः पद्म पत्राक्षो गायत्रः सोमदेवतः।। 🕯 अत्रिगोत्रस्त विपेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भवा।फलं दत्वा पूर्ववत् पूजनं ।।अमुकगोत्र॰यजमानोऽहं ।। अमुकगोत्रं॰ 💸 🥍 त्राह्मणं ऋग्वेदिनं त्वामहं बुणे वतोऽस्मि पाद्यं० यावत्कर्भ समाप्यते तावत्यं ऋग्वेदसूक्तजापको भव ।। यजुर्वेदिनं 🎇 👸 वृण्ययाता।कातराक्षो यज्जवेंदः खेष्ट भो विष्णुदैकतः।। कारयपेयस्त विषेन्द्र ऋत्विक त्वं मे मुखे भव।।फुलं दत्वा पूर्व- 🕼 बस्जनं ॥ अमुकगोत्र॰ यजमानोऽहं॰ ॥ अमुकगोत्रं त्राह्मणं यज्ञवैदिनं त्वामहं वृणे व्रतोऽस्मि पाद्यं॰ । यावत्कर्म समाप्यते तावस्वं यज्जवैदसक्तजापको भव ॥ सामवेदिनं वृष्णयात् ॥ सामवेदस्तु, पिंगात्तो जाव्रतः

्री वित्रोऽस्मि पाद्यं॰ यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं गाणपत्यो भवा। सदस्यं वृष्णुयात् ।।कर्मणामुपदेष्टारं सर्वकर्मविद्धत्त- विश्की हैं शक्रदेवतः ॥ भारदाजस्तु विभेन्द्र ऋतिक स्व मे मसे भव ॥ फलं दत्ता पूर्ववत्यूजनं ॥ अमुकगोत्र॰ यजमा हैं हो नोऽहं॰ ॥ अमुकगोत्रं॰ मासर्ण सामवेदिनं स्वामहं वृणे ब्रतोऽस्मि पाद्यं॰ यावत्कर्म सुमाप्यते तावत्त्वं सामवे हैं ॥२६॥ 🎖 दस्तकजापको भव ॥ अथर्वविदिनं गृणुयात् ॥ वृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽतुष्टुमो स्द्रदेवतः ॥ वैशंपायनवित्रेन्द्र ऋत्विक 💲

(वं मे मखे भव II फर्ल दत्वा पूर्ववत्युजनं II अमुकगोत्र॰ यजमानोऽहं॰ II अमुकगोत्रं॰ त्राह्मणं अथर्ववेदिनं ै त्वामहं वृणे व्रतोऽस्मि पार्चं० यावित्कर्म समाप्यते तावत्वं अथर्ववेदसक्तजापको भव ॥ ऋत्विक्वरणं ॥ भगव-

न्सर्वधर्मन्न सर्वधर्मभृतांवर ॥ वितते मम यद्भेऽरिमन् ऋत्विक्त्वं भव सुत्रत ॥ फलं दत्या पूर्ववत्यूजनं ॥असुक-गोत्र॰ यजमानोऽहं॰ ॥ अमुकगोत्रं॰ ग्राह्मणं ऋत्विजं वृणे ब्रतोऽस्मि पाद्यं॰यावस्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ऋत्विक् 🕄 भव ॥ अर्थ त्राह्मणप्रायना ॥ क्षमा तपोदयादानं सत्यं शोचं च संयमः ॥ विद्याविनयसंयुक्ता त्राह्मणा लोकः अर्थ-अहाँ माहारायतमां आदेश दिनो तमो विद्यादि सुणोपे करि युक्तको. तथा सत्य शीचादिये करि चालवाता हो तथा देवताओपर श्रद्धा सरवाबात्का को तथा धर्म शास्त्रमा बहेला नांबमो पाळनार को तथा संभ्या स्तानादि बेदने मानवाबात्का हो एम तमोने हुं मासुं हुं. तो है भूमिदेवो !

आ मारा कार्यमां श्रद्धाराजी निर्वित परिपूर्णकार आपनुं. आ प्रमाणे श्राह्मणोनी प्रार्थना अनेक प्रकारे कर्त्वी.

🔋 नात् ॥ अभिशुश्रूपणस्ता धर्ममार्गे इटब्रताः ॥ पस्दास्पस्टव्यपर्गिदाविवर्जिताः ॥ भवतां दर्शनैनैव शुद्धयंति 📳 🖁 मुलिनो जनाः ॥ मृभीदेवास्तु विभा वै त्रिषु लोकेषु विश्वताः ॥ अस्मिन्कर्मणि सर्वे वै सहायाः सन्त्र सर्वेदा ॥ ी बाह्यणाः सन्त मे शस्ताः पापात्पान्तु समाहिताः ॥ वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनां ॥ जपयेड्रास्तथा 🕯 होमेर्दानेश्च विविधेः प्रनः ॥ देवानां यितृणां चैव तृप्यर्थं याजकाः कृताः ॥ येपां देहे रिथता वेदाः पाव-🎉 🕺 यंति जगत्रयं ॥ स्त्रन्तु सततं ते मां जपयेक्षेत्र्यवस्थिताः ॥ ब्राह्मणा जंगमं तीर्थं त्रिपु स्रोकेषु विश्वतं ॥ तेपां 💱

तारकाः ॥ यजनं याजनं चेव भ्ययनाभ्यापनं तथा ॥ दानप्रतिग्रहो होमः पद्कर्मानिस्तः सदा ॥ त्रिकालसंघ्या-है करणे स्वाच्यायाचरणे तथा ॥ नानाशास्त्राभ्यासरताः संसारोच्छेद कारकाः ॥ भवदर्शनमात्रेण मुक्तास्त्र भववंध-

वाक्योदकेनैव शुर्यन्ति मिलना जनाः ॥ पावनाः सर्ववर्णानां त्राह्मणा महारूपिणः ॥ सर्वकर्मस्ता नित्यं वेद-शास्त्रार्थकोनिदाः ॥ श्रोत्रियाः सत्यवादाश्च देवःयानस्ताःसदा ॥ यदाक्याम्वतसंसिकता ऋद्धियांति नरः माः ॥ अंगीक्वर्यन्त्व कर्मेतत्कत्यसुमसमाशिषः ॥ यथोक्तनियमेर्श्वक्ता मंत्रार्थे स्थिरबुद्धयः ॥यरकृपालोचनात्सर्वाः ऋद्धयो वृद्धिमाष्टुशुः ॥ मम यहे जपे प्रच्याः सन्तु मे नियमान्विताः ॥ अक्रोधनाः शोचयसः सततं व्रह्मचारिणः ॥

🕫 🖟 🖟 देवच्यानस्ता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥ अदृष्टभाषिणः संतु मा सन्तु पर्सनेदकाः॥ ममापि नियमा होते भवन्तु भवतामपि ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ त्राह्मणाः ब्रुयुः ॥ वयं नियमसंयुक्तत्र तव कर्त्रुग्यतत्पराः ॥ कार्यं तव करिष्यामो ै विभिन्न न संशयः।। कर्तव्या नो कियाशंका वेदाज्ञा हि गरीयसी ।। वेदिका नहि वेदाज्ञां रुघयंति कदाचन ।। ित्रदर्भीनं त्वया कार्यं निःशंकं श्रद्धयान्वितम् ॥ वयं सर्वं करिष्यामस्तव कार्यं न संशयः ॥

विभागोऽहं कृतकृत्योऽहं सोभाग्योऽहं धरातले ॥ प्रसादाङ्ग्यताविमाः पवित्रोऽहं कृतोऽधुना ॥ मेरुमंदर्खुल्योऽहं भः ्रीविद्रर्भतलेकृतः। यशोविस्तारि तं मेद्य लक्षीवृद्धिश्च मे कृताः। अद्यमे पितरः स्तृप्ताः पवित्रं मे कुलं कृतं ॥ दे-

🖁 सर्वं भविष्यति ॥ इति आचार्यादीन्संप्रार्थ्यं ॥ वैरणश्राद्धंकुर्यात् ॥ स्वपादो करें। प्रश्नाल्याचम्य॥ अक्षतेदिँग्वंघः॥ 🕺 भीनाराद्वरणश्रादम् ॥ वरशुरामोक्तेः ॥ वर्षादिभ्यः समस्तेभ्य ऋत्मिभ्य इदमासनम् ॥ गंपंपुष्यं च पूरं च वरणश्राद्धे मकत्वपेत् 🙎 अर्थ-बाहरणीए नहेर्डु के तमी श्रद्धापूर्वक करोजे तो अभी शास्त्रमां कहेश नियमी पाळी सांग कर्म करामीशुं. बळी वनमाने केहेंडुके हे भूदेवो। तमारा

िधानं च नमस्कारं करोम्यहं ॥ शक्त्या सर्वं करिष्यामि वचनात् भवतां ततः ॥ आशिर्यादाच सिद्धानां पूर्णे

योग्य आपरानी कोई पण रीतनी मारी दाक्ति नथी पण जे माराशी वने तैमां ज संतीप मानी दया राखी आरितीद आपनी. हदे पूरोला माराणोर्नु वरण

🏭 बतानां प्रसादोऽपि जातो में चैव निर्मलः ॥ कार्यं कर्तुं न मे शक्तिनेंव दातुं च दक्षिणा ॥ न च प्रजावि-

देशकालपात्रान्नद्रव्यश्रद्धा संपदस्तु ॥ अद्येतपादि० अमुकवारान्वितायां सांकत्येनविधिना वरणश्राद्धं करिष्ये ॥ जलं गृहीत्वा ॥ आचार्यादिऋत्विजाम् आसनं संपन्नं स्तंपन्नं आचार्यादिऋत्विग्म्यः यथादत्तं गंधाद्यर्चनं संपन्नं स्रसंपन्नं अर्चनविधेः परिवर्णतास्त दीपादीनां प्रदत्तानां इदं वो ज्योतिः सूज्योंतिः शेषोः पचारा विधिवद्भवंतु ॥ आचार्यादिऋतिरम्यो अद्येहि मोजनं संपन्नं सुसंपन्नं आचार्यादिऋतिरम्यो दक्षिणाः संपन्नाः ससंपन्नाः ॥ तिलकमाशिर्वादः ॥ कींतुकवंधनं ॥ येन वद्धो वली राजा दानवेदी महावलः ॥ तेन ओचारात् कंकण कंधनंपरं च भतिष्ये-दुर्का यवाद्वरा श्रीव वासकं तृतपद्धवाः ॥ इतिहादयीसदार्थः शिविषशे स्यत्वचः ॥ कंकणीपथय-वैताः कीतुकारुपानन सम्बाः ।। अथवा ॥ यराङ्करास्तथा हुनीः वार्पान् गंथसंयुतान् ॥ गोमयं दिप्संयुक्तं कारयेत्तान्रथाओने ॥ तन्नाननं 🎏 क्तरप्रदे धृत्वा मंत्रान् पटेश्व मोक्षपेत ॥ श्राद, करनुं, तेमां, पहेलापी यनमाने पोताना बेउहाथ पा धोह आसमनकरी पारदिशाए अस्ततेरी पूजाना साहित्यने प्रोक्षण करी हंकरूप वहरो तथा आसन मंत्र योजन दक्षणा विमेरे आपेळी वस्तुओं तथा आपवामा वस्तुओंनो संकल्प करवो, तथा ब्याखणे यनयानने चांछो हुसे हाथे नाउ वांधी

यन्यानपत्नीने साबाहाथे नार बांधवं.

स्वस्तियाचा॰ ॥ चतुर्षु दिश्च अञ्चतान् विकीर्य ॥ आयांत्र सांकरुपेन विधिना वरणश्राद्धोपहासः पवित्राःसन्त

स्वामपि वध्नामि स्त्रे स्त्र हिमाचल ॥ १ ॥ मांगत्यतन्तुना येन भर्तुर्जीवनहेतुना ॥ हस्ते वध्नामि सुभगे हैं सजीव शरदः शतं ॥ २ ॥ परनीवामकरे सूत्रं वध्वा सोस्यधनागमम् ॥ वहु संपत्ति मारोग्यं स्क्षार्थे कंकणं है ॥ इति कौतुक वंधनम् ॥ अर्थं स्वस्ति पुण्याह वाचनम्।। पूर्व संपादित कलशे वा वि- 🕺

परञ्जातीन ॥ इत्त्वें बरुणं पूर्व बार्च्यं पुण्याहवाचनामिति ॥ अध पंचीपचाराः ॥ गर्धा, पुष्प, द्विप, नैवेद्य, इति पंचकं ॥ पंचीपंचार-बारुवार्त पूजने तत्विकृ सुकै। ॥ इति कमराकरे ॥ गुण्याहवाचनमृद्धी पूनों च ॥ इति कारमायनः ॥ ऋदिश्रव तु संस्काराः विवाहांताः भंकी-

अर्थ-हेने स्वस्थितापन करतुं तेमां पोताना सामी घोलानी दगटी उसी तेनापर कछत्र मुकी तेमां अगाडीना पत्रमां कहेला " विधापारासीति " आरंभी

पूण पात्र स्टर्मना मंत्री भणी करहाना पदार्थ मू धावना तथा वहणतो आवाहनने मंत्रभणी आवाहनकरी प्रतिष्ठाकरी पंचीरपारथी पुमन करीवर्च.

थाभाससीत्यादिप्रवेवितमेत्रैः कलशे प्रणेपात्रान्तं कृत्या ॥ ततः स्वाग्रे भान्यसंशो कलशं संस्थाप्य ॥ तत्र

112411

## गंभदूर्वापंचपछवफळ हेम पंचरत्नादीनि क्षिप्वा तहुपरि धान्यपूरितपूर्ण पात्रं निधाय तहुपरि नाल्किकं निधाय 🕏 वासिस वेष्टियला ॥ कलरां स्पृष्टा ॥ आवाह्यामि कलरां सप्तसागरसंस्थितम् सर्वलक्षणसंप्रणं नदीनां च स-

तिंवाः ॥ प्रविद्योग्यापनादीनी पूर्व कर्म यथोचिवं.

तत्र कळतं तेन उच्यते ॥ रचितं विश्वरूपेण कळतं कामरूपिणम् ॥ ४ ॥ सर्वे समुद्रा सस्तिस्तीर्थानि जळदान-र्थादाः ॥ आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ४ ॥ अर्जुनी गोमती चैव चंद्रभागा सरस्वती ॥ कावेरी कृष्ण-वेणी च गंगाचैव महानदी ॥ ६ ॥ क्षित्रा वेजवती पूर्णाचर्मन्वती च वेदिका ॥ तापी गोदावरी चैव नर्मदा च मही ्रितथा ॥ ७ ॥ पारासरी पयोष्णी च सरपू गरुकी तथा ॥ ज्वालेश्वरं महातीर्थं तीर्थं वाऽमस्कंटकम् ॥ ८ ॥ केदारंच 🎒 प्रयागं च वसुना सुरदीर्घिका ॥ विन्यपादे च तीर्थानि श्रीपादे यानि तानि च ॥ प्रभासं पुष्करं चैव नैमिपं🎇 🕍 च हिमालयं ॥ ९ ॥ शालियामं च गोकर्णं क्रंभेर्रासम् संप्रतिष्ठितम् ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि पाताले सन्ति 📳 🕍 यानि च ॥ १० ॥ तानि तिष्ठंति क्रंभेऽसिम्बरुणं कलायाम्यहम् ॥ गंगे च यमुनेचेव गोदावरी सरस्वती 🌠 ॥ ११॥ नर्भदे सिंधुकावेरी जलेस्मिन्सिजीर्धे छरु ॥ सर्वे ससुद्रा सरित स्तीर्थानि जलदानदाः ॥ १२॥ १ अवायान्त्र पजमानस्य हुरित क्षयकास्काः ॥ वृषारुढा सरे।जाश्चा पद्महस्तां ब्रजेक्षणा ॥ १३॥ आयान्त्र

ैं माइलम् ॥ १ ॥ उत्तरे हिमवन्तस्य क्षीरोदानामसागरः ।। उत्पन्नं कलशं तत्र सर्वतीर्थं समन्वितः ॥ २ ॥ कला- ि कलाहिदेवानां दानवानां तथैव च ॥ कलापि सकला ग्राह्मा सीम्य मांगत्य कर्मणि ॥ ३ ॥ निर्मितोऽयं तदा ि

देवी कूर्म वाहन गासदा ॥ प्राची सरस्वती प्रण्या तथा मंदाकिनी परा ॥ १८ ॥ एतानद्यश्र तीर्थानि ग्रह्मक्षेत्राणि सर्वशः ॥ तानि सर्वाणि क्रेभेस्मिन्वशंतु ब्रह्मशासनात् ॥ १५ ॥ तीर्थान्यावाह्य ॥ अंद्रतान् गृहीत्वा ॥ प्रतिष्ठासर्व० अस्मिन्कलशे वरुणः सुप्रतिष्ठितो वस्दो भव ॥ प्रतिष्ठान्ते पूजनं अस्मिन्कलशे वरणाय नमः गंधंस॰ अस्मिन्कलरो वरुणायनमः पुष्पं स॰ अस्मि॰ वरु॰ धूर्वं स॰ अस्मि॰ वरु॰ दीपं स॰ अस्मि॰ त्ररु॰ नेवेद्यं स॰ अस्पिन्कलशे सुशोभनाथें सौभाग्यद्रव्याणि स॰ अनेन पंचोपचौरेःप्रजनेन वरुणः पीयतां इस्ते पुष्पं गृहीता ॥ प्रार्थयेत ॥ करुशस्य मुखे विष्णुः कण्डे स्द्रः समाश्रितः ॥ मुले तस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा स्सृताः ॥ १ ॥ इस्तो तु सागराः सप्त सप्त दिपा वस्तुंथरा ॥ ऋगवेदोऽय यज्जुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ २ ॥ अंगै-श्रसहिताः सर्वे कल्ल्यं तु समाश्रिताः ॥ शंखरफटिकवर्णाभः श्रेतहासम्बस्यतः ॥ ३ ॥ पाशहस्त महावाहो दयां क्रुरु दयानिधे ।। पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनाय च ॥ पुण्याहवाचनं यावत्तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥ ४ ॥ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय शुश्चेतहाराय स्त्रमंगलाय ॥ सुपाशहस्ताय स्नपासनाय जलाघिनाथाय नमो नमस्ते ॥ वरुणाय नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं समर्पयामि ॥ मातृदेवो भव पितृदेवो भव ॥ आचार्यदेवो 🤌

तत्र वेदस्यासः ॥ संदुच्य गंथपाल्यानित्रीष्रणान् स्वस्ति वाचपेत् ॥ धर्मकर्मणि मांगल्ये संद्यापेऽ ऋतदक्षेते ॥ १ ॥ पुण्याह्वाचनं देवे 🕏 ब्राह्मणस्य तिथीयते ॥ ऑकारपुर्व विमस्य भेपेरपुण्यास्त्रासमं ॥ एतदेव निर्सेकारं कुर्यात् क्षत्रिवैत्रयोः ॥ उपाद्य च तथा वैश्ये स्वस्ति खुद्रे च न्धरयेत् ।। स्यापयेद्रवणं क्वंमं पंचपल्लवसंयुतं ॥ पंचारनसमायुत्ततं युग्मवक्षेण वेष्टितं ॥ संयुत्र पाणिनाचार्यो वाचयेरस्वरित साचनपः ॥ 💸 🌣 त्राचार्यक्रमणं 🔃 तर्माणतः मञ्जमतिवयनसम्योनः तिष्वमे आद्धादिष्वभुवतवन्तोः निषिद्वमतिग्रहनिव्यान्तः कर्णाच्छवि सोचरीया-💸 न्दर्भे परित्रवाणियुग्मस्य ब्राह्मणाः तुदङ्मुखान् आसने उपविश्व ॥ भुषोद्दीनत्याततुक्तञ्चहस्ताभ्यायादाय आक्षिपः प्रार्थपेतु ॥ ३ ॥ एवं सर्वत्र

भव ॥ अतिथिदेवो भव ॥ आशिषः प्रार्थयन्ते ॥ अविनि कृत, जानुमंडलः कमलमुक्कलसदृशमंजलिं शिरस्याधाय 🐉 दक्षिणेन पाणिना सुवर्णपूर्णं कलशं धारियत्वा ॥ दीर्घा नागा नद्यो गिरवस्त्रीणि विष्णुपदानि च तेन आगुः ∜ ्रीप्रमाणेन पुण्याहं दीर्घमायुरस्तिवतिभवेतो ब्रुवन्तु ॥ इति यजमानः ॥ पुँण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तुइति द्विजाः ॥ ुप्वं वारत्रयं कृत्वा ॥ करुशं भूगौ स्वस्थाने संस्थाप्य ॥ बाह्मणानां इस्ते छग्नोक्षितमस्त्र ॥ शिवा आपः संज्ञ ॥

थजपानवचनोत्तरं घादाणाः मतिवचनं दद्यः ॥

्री मुक्ती पाठा स्थरनेसी चार ब्राह्मणना हाथमां चदन फूछ नीता पान सोपारी दक्षिणा आपी फरी पाणी आपने.

अथ-पंचेषभार पूननकरी हापमा फूल्ट्स प्रार्थनाकरि नमस्कारकरने पडी धनपानना हापमां कंक मत दरीह आपी नेगीत्रणपृथ्वीने अहमाडी, उपल्यानिक में हाप एकत्र करी कटराने पोतानामाथे अहकाडी राखने.( पडी ते कटरा मापे तथा ध्यीपस्त्रणयवात अहकाडचे )( एकडीडे.) कटरानीचे मूची पड़ा स्थ्यनेती चार ब्राह्मणना हाथमां चदन फूछ नोखा पान सोपारी दक्षिणा आपी फरी पाणी आपत्तुं.

बिट्को । अस्त शिवा आपः सोमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सोमनस्यं ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ अस्तक्षतंमरिष्टं च ॥ गधाः पांछ सौमंगल्यं चास्तितिभवंतो व्रवन्तु ॥ गंथाः पांतु सीमंगल्यं चास्तु ॥ एवं सर्वत्र ॥ अक्षताः पांतु आखुष्यमस्ति० 🕏 ॥६०॥ 🎖 अक्षताः पांडुआयुष्यमस्तु ॥ पुष्पाणि पांडु सीश्रियमस्तिति॰ पुष्पाणि पांडु सीश्रियमस्तु ॥ तांबुलानि पान्डु 🦹 ैं ऐश्वर्यमस्त्रिति० तांबुलानी पान्छ ऐश्वर्य मस्तु ॥ दिवाणाः पान्तु बहुधनमस्त्विति० दक्षिणाःपांतु बहुधनमस्तु ॥ पुरनत्राः पान्तु स्वर्वितमस्त्वि॰ पुनरत्राः पान्तु स्वर्वितमस्तु ॥ यजमानो आचार्यादीन प्रणम्य श्रीर्थेशो विद्या 🞖 विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्त्वि॰ श्रीर्थशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं चायुष्यं चास्तु ।। अनेन यजमानमू-

र्प्न्यभिषिचेयुः।विकत्वा सर्ववेद यज्ञक्रिया करणकर्मारभाः प्रवर्तते।। तमहमीकार मार्दिकृत्वा ऋग्यज्ञः सामाशिवेचन त्रीतिष्ठासंग्रेहे ॥ अपां मध्ये स्थिता देवाः सर्वे चाप्प्र मतिष्ठिताः ॥ ब्राह्मणानां करे न्यस्ताः विवा आयो भवन्त्र नः ॥ १ ॥ रुस्मीर्वसति

युष्पात्रे स्क्योविसात पुष्करे ॥ सा मे यसतु वै नित्यं सौपनस्यं तथास्तु नः ॥ २ ॥ असतं चास्तु मे पुष्यं दीर्घमायुर्घक्रो वसं ॥ ययच्छेवस्करं 🎗

कोके तत्तवस्त सदा गम ॥ रे ॥ सदो अपरे ॥ अरिष्टमश्रमे तके सुरिकागार आसने शुभे भरणिन-देश्निति मेदिनि ॥

अप्-यंज्ञमाने आवेद्धं वाणी यज्ञमाननः। मायापर डांटबुं, तया अक्षतल्य यज्ञमानपत्नीता तथा यज्ञमाननः। खेळामां मंत्रो भणीनांतनः ।।

110 € 11

्रीदद्यात।तिचाशिरोदयुः।।यजमानः।।माविन्नं माच मे पापं मासन्छ परिपंथिनः।।सौम्या भवन्छ छुलिनः सर्वेळोकाः छु-बावहाः ॥ इति कर्ता वदेत ॥ विप्रास्तथास्त्वित्वस्त्रक्ता ॥ करोजु स्वस्ति ते त्रह्मा स्वस्तिचापि द्विजातयः ॥ सरी-🎇 मृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्य स्ते स्वस्ति सर्वदा ॥ १ ॥ ययातिर्नहुष श्रेव धुन्धुमारे भगीरयः ॥ तुभ्यं राजर्षयःसर्वे 💸 स्वस्ति कुर्वन्तु नित्वशः ॥ २॥ स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्य श्रतुष्पादेभ्य एव च ॥ स्वस्त्यस्तुपावकेभ्यश्च सर्वेभ्यः 🐉 स्वस्ति सर्वदा ॥ ३ ॥ स्वाहा स्वया शचीचैय स्वस्ति कवन्तु ते सदा ॥ रुक्षी रुज्यती चैव करुतां स्वस्ति तिऽनघ ॥ ४ ॥ असितो देवलञ्जैन विश्वामित्रस्तथांगिरः ॥ स्वस्ति तेऽद्यःप्रयच्छन्तु कार्तिकेयश्च पण्मुखः 📳 ।। ५ ॥ विवस्तान् भगवान्स्वस्ति करोछ तव सर्वशः ॥ दिग्गजाश्चेव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः ॥ ६ ॥ अभिस्ताद्धरणी योऽसी नागो भारयते सदा ॥ शेपश्च पत्रमश्रेष्ठःम्बस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु ॥ ७ ॥ इति वदेखुः ॥ ( इत्येता ऋचः पुण्याहे त्रूयात) त्रत जप नियम तप स्वाप्याय ऋतु दया दमदान विशिष्ठानां सर्वेषां त्राह्मणा-भनां मनः समाधीयतां ॥ समाहितमनसःस्म इति ब्रिजाः ॥ प्रसीदंतु भवंतः श्रसन्नाः स्मः ॥ शांतिरस्तु ॥

🎉 बहुन्त्रिपमतं समनुज्ञातं भवद्गिस्नुज्ञातःपुण्यं पुण्याहं वाचयिन्ये॥वाज्यतां ॥ इति तैरुक्ते शवाह्मणानां हस्ते अन्नताच

बि॰ क्री॰ 🍦 अस्तुं शांतिः इति द्विजाः ॥ प्रतिबचनं सर्वत्र दशुः ॥ आस्वित्युके क्रंभाज्ञलं पात्येत्॥ प्रष्टिस्तु ॥ तुष्टिस्तु ॥ वृद्धिरस्तु ॥ अविप्रमस्तु ॥ आखुण्यमस्तु ॥ आरोग्यमस्तु ॥शिवं कर्मास्तु ॥ कर्मसमृद्धिरस्तु ॥ धर्मसम्बद्धिः 🕺 रस्तु ॥ शास्त्रसम्बद्धिरस्तु ॥ धनधान्यसमृद्धिरस्तु ॥ पुत्रपोत्रसमृद्धिरस्तु ॥ इष्टसंपदस्तु ॥ अरिष्टनिरसनमस्तु॥ थुरपापं रोगमश्चभमकर्त्याणं तहूरे प्रतिहत्पस्तु ॥ यच्छ्रेयस्तदस्तु ॥ उत्तरे कर्मण्यविष्नमस्तु ॥ उत्तरेत्तरमहरहर-भिरुद्धिस्खु ॥ उत्तरोत्तरः कियाः शुभाः शोभनाः संपर्धताम् ॥ तिथि करण सुहूर्तनक्षत्र ग्रहरूत्रसंपदस्तु ॥ तिथि-करण मुहूर्तनक्षत्रग्रह लग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् ॥ तिथिकरणे मुमुहूर्ते सनक्षेत्र सप्रहे साधिदेवते प्रीयेताम् ॥ अभिपुरोगा विश्वेदेवाः श्रीयन्ताम् ॥ इन्द्र पुरोगाः मरुद्गणाः श्रीयन्ताम् ॥ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः शीयन्ताम्॥ अरु-धतीपुरोगा एकपत्यः प्रीयन्ताम् ॥ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ॥ ब्रह्म पुरोगाः सर्वे वेदाःप्रीयन्ताम् ॥ यप्रेषि श्रीनकेम प्राविसस्तिस्पादीनि पंचदञ्ज वचनान्युक्तानि ॥ सथापि मयोगस्त्मादी ॥ अधिकान्यपि इत्यते ॥ तद्वतुसारेणात्र लिखिलानि ॥ अस्त्वितसमये पात्रमध्ये जलपोचनं कार्या<sup>प</sup>रकुक्तं प्रयोगचूडायणौ ॥ यात्रे सुंचंति अस्तिशंजुनिस्सनं दिवारं पश्चिमेत्युक्तं ॥ प्रयोगचूडायणौ

शामिरस्त्विव त्रिश्रांताः अन्दाः पंचद्त्रीय हु ॥ संस्कारभास्करे ॥ गीपतां वानयपत्रितेस्दकस्य निपयनम् ॥

अर्थ-वातिस्त्वणी आरम वरीने " अनिधमस्त " अहीं ल्यीना वाक्यो घोलता जहने कल्यान पाणि पश्चिमदिशामा नारखु ॥ वैवरना प्रीयता

वारयो बोउता नई तरमाणामा पाणी नास<u>र्</u> ॥

🎼 श्रीयेताम् ॥ सर्वाः कुरुदेवताः शीयन्ताम् ॥ सर्वाः त्रामदेवताः श्रीयन्ताम् ॥ हेताश्च त्रहादिपः हताश्च परिपंथि-🔯 ्रै नः ॥ हैताश्च विष्ठकर्तारः ॥ शत्रवः पराभवं चान्त ॥ शाम्यन्त बोराणि शाम्यन्तु पापानि शाम्यन्त्वितयः ॥ 🗜 धुमानि वर्छन्ताम् ॥ शिवा आपः सन्तु ॥ शिवा ऋतवः सन्तु ॥ शिवा ओपवयः सन्तु ॥ शिवा नद्यः सन्तु ।। सिवा गिरयः सन्त ।) शिवा अतिथयः सन्त ॥शिवा अमयः सन्त्त॥ शिवाऽक्रूतयः सन्त ॥ अहोरात्रे शिवे स्वाताम् ॥ श्रुकांगास्कञ्जभवृद्दस्वति शनिश्चर राहु केत्र सोमसहित आदित्यप्रसेगाः सर्वे म्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ नारायणः प्रीयताम् ॥ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम् ॥ भगवाच स्वामीमहासेनः 🕺 देतान जन द्विपेत्यादीनां शास्यन्तिवत्यंतानां पूर्वस्थां अरुप्यतेपणोक्तः प्रयोगचुडामणी ॥ हतीय मसदिप अहिंग्रे आएसे शास्यन्तु रुजीना बलगो बोटी आपमनीक्ती पूर्वमा पाणी नासञ्ज ॥ तेमा हताश्र्यथी ते शास्यन्त पाणानि रुजीना

पार्थात रुळ रीने माखा ॥

ैं वसिष्ठप्ररोगा ऋषिगणाः श्रीयन्ताम् ॥ त्रह्य च त्राह्मणात्र्यं श्रीयन्ताम् ॥ श्रीसरस्वरंगे श्रीयेताम् ॥ श्रद्धामेधे श्रीये-ैं ताम् ॥ भगवती कात्यायनी श्रीयताम् ॥ भगवती ग्राहेश्वरी श्रीयताम् ॥ भगवती ऋद्धिकरी श्रीयताम्॥भगवती ११ सिद्धिकरी श्रीयताष् ॥ भगवती प्रष्टिकरी श्रीयताम् ॥ भगवती द्वष्टिकरी श्रीयताम् ॥ भगवन्तो विद्यविनायको

🐉 प्रीयताम् ॥ पुण्याह कालान् वाचियये इति यजमानः ॥ बाच्यतामिति द्विजाः ॥ दीयते यत्र दानानि प्रजान्ते च द्विजातयः ॥ दृश्यते यत्र मांगलयं तरपुण्याहं सदाऽस्तु मे ॥ त्राह्यं पुण्यं महर्यञ्च सृष्टग्रत्पादनकारके ॥ भीवेदवृक्षोद्भवेत्रित्वं तत्प्रण्याहं ब्रवन्तु नः ॥ भो त्राह्मणाः महां सक्रद्धिनने महाजनान् नमस्क्रवीणाय आशीः ॥३२॥ विचनमपेक्षमाणाय ग्रह्मद्वारव्यस्य कर्मणः पुष्पाहं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ अस्तु पुष्पाहं ॥ एवं वचनं प्रतिवचनं 🎒च त्रिवारं सर्वेत्र पठेत् ॥ स्वरुण्डस्टुरायुर्येत् ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुपा तेन संयुक्ता जीवन्तु शरदः

मस्यक्तविषये मैपक्षिवारं स्मस्किरित्यवः ॥ उदाखानदात्तस्यस्तिश्चेति ॥ मंत्रोहीनः स्वरतो वर्णतो वा पिथ्या मयको नवमर्थपाइ ॥

1133/1

स वाग्वन्त्रो यनमार्न हिनस्ति यन्यद्रश्चाःस्वस्तोऽपराधात् ॥ इति शिक्षायाम् ॥

🏿 तथा श्री प्राप्त यात्री एमररेक वानयो यभवानना कह्मापत्री प्राक्तणोए गण वसत हरून दीर्च अने प्कुत उत्थारभी जासणोए अस्तु शब्द पूर्वक कहेवां.

पुण्याहं भवन्तो जुवन्त ए प्रमाणे करवाणं ० प्राद्धि० स्वस्ति० श्रीरस्तु० ए पाचे वसत यानपाने बोछक्षं ॥

सेक्टरनी, अर्शार्वादनी इच्छानाळी तथा महात्माओने नमनावाळी एवी भे ई ते मारे अर्थ हे झादाणो ! तमी पुण्यकारी दिवस कहो, एम यमपाने अर्थ क्सत क्यापी बासगोए त्रण क्सत प्रण्यकारी दिवस थाओ तेम कहेर्नु, ए प्रमाणे मार्ह संस्थाण थाओ, मारे घेर कादि क्यो, मने स्वस्ति पाप्त थाओ, 🕺

ी दोन भागनते॥पुण्पद्यादिभिरभ्यास भेत्रपत्र्योर्थ्यनिस्तनैः ॥ पुण्यं कत्याणद्वद्भियं स्त्रस्ति श्रीयादि पंचकम् ॥पणनार्थं निराचप्टे भवत्रपूर्वं भवस्विति ॥

शतम् ॥ पृथिव्यासुरता यान्तु यत्कयाणं पुराकृतं ॥ ऋषिभिः सिद्धगंर्धें स्तत्कल्याणं बुवन्तु नः ॥ भो त्रा-क्षणाः महां० अस्य कर्मणः कल्याणं भवन्तो बुवन्तु ॥ ३ ॥ कल्याणं एवं पूर्ववत् त्रिः ॥ प्रजापतिलींकपालो 🕍 घाता ब्रह्माऽच देवराद्र।भगवाञ्छाश्वतो नित्यं स नो रक्षत्र सर्वदा।।सागरस्य त या ऋदिर्महारूक्त्यादिभिःकृता।। र्भिसंप्रको प्रर्णवन्त्रेया तामृद्धिं च ब्रुवन्तु नः ॥ भो बाह्मणाः महां० अस्य कर्मणः ऋदिं भवन्तो ब्रुवन्तु ॥ कर्म 🎇 ऋयताम् । एवं त्रिः ॥ ३ ॥ आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुपे ॥ ऋयास्त्राशिपः सन्तु ऋत्विरिमवेंद-🎇 🎇 पारंगेः।।स्वस्ति या चाविनाशारूया पुण्यकल्याणबृद्धिद्या।। विनायकिंपया नित्यं तां च स्वस्ति ब्रुवन्छ नः।।भो बाह्यणा 🖁 महां०असे कर्मणे स्वस्ति भवन्तो ख़बन्तु।।आयुष्मते स्वस्ति।एवं त्रिः।।समुद्रमथनाज्ञाता जगदानंदकास्कि।हरिः 🔯 🅍 प्रिया च गांगत्या श्रियं तां च बुवन्तु नः ॥ भो बाह्मणाः मह्यं अस्य कर्मणः श्रीरस्विति भवन्तो बुवन्तु अस्तुश्रीः 📳 तिलकं ऋता ॥स्वस्ति या चाविनाशाच्या धर्मकल्याणऋदिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं तांच स्वस्ति द्ववन्छ नः॥ औ अस्मिन्युश्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टत्राह्मणानां चचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच सर्वः ।

वरिप्रणॉऽस्त ॥ अरवुपरिप्रणंः ॥ अथाभिषेकः ॥ अभिषेके पत्नी वामतः॥ एकस्मिन्पात्रे वरुणादकं गृहा 👸 ित्या अविधुराश्चत्वारो ब्राह्मणाः दूर्वोऽम्रपछवेर्यजमानमिर्मिपेचेयुः ॥ सुरास्त्वामाभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ 🕏 वासुदेवो जगन्नायस्तथा संकर्पणो विसुः ॥ १ ॥ प्रद्युम्रश्रानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते ॥ आलंडलोऽमिर्भ-117311 || गंवान्यमो ने वरुणस्तथा। २ ॥वरुणः पवनश्चेव धनाष्यक्षस्तथाशिवः ॥ ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिवपालाः पान्छ 🕺 ति सदा॥३॥कीर्तिर्लक्ष्मीर्धेतिमेघा पुष्टिः श्रद्धा किया मतिः॥बुद्धिर्लज्जा चपुःशांति स्तुष्टिः कांतिश्च मातरः॥४॥ 🖇 एतास्त्वामभिष्वंत धर्मपरन्यः समागताः ॥ आदित्यश्चंद्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः॥ ५ ॥गृहास्त्वामभिष्विः **∥**न्द्य राहुकेतुश्च तर्पिताः॥देवदानवगंथर्वा यक्षसञ्चसपन्नगाः॥६॥ऋपयो सनयो गावो देवमातर एव च॥ देवपल्यो 🎖 द्विमा नागा दैत्याश्राप्सरसां गणाः ॥ ७ ॥ अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च ॥ औपधानि च 🕏 ? सब्बे परनी त्रिपुरयाने पितृणां पादपूनने ॥ रयस्यरोहणे चैत्र अभिपेके विसर्भने ॥ ॥३३॥

र स्वस्ति वाचन थया पठी थनमनाने किटफ करी पठी यजमान पत्नीने यनशाननी डाची बाजूए बेसाडी स्वस्ति वाचनना कठाशमांथी पाणी रुई आंचाना

वांवानडे मंत्रो मणी चार शहाणीए दंशतीपर प्रोक्षण करखं ॥ ए प्रमाणे अभिषेत्र थया पढ़ी यत्रमाने पीताने स्थाने मेक्षी बाह्मणीने दक्षिणा आस्त्री ॥

¦\$∥अद्येत्पादि॰ मम संकत्पोक्तास्ये कर्मणि मंडपक्टंडादीनां प्रोक्षणार्थं च रत्तार्थं दिग्रक्षणं पंचगव्यकरणं करिष्ये 🕏 🛮 🛮 🖟 🎚 इतिसंकरूप ॥ पूर्वेवत दिग्रक्षणादि कृत्या मंत्रेः प्रोत्तणं क्वर्यात् ।। अद्येत्यादि > करिष्यमाणकर्मनिमित्तं वर्धनी 🏥 कलशस्थापनपूर्वकं पूजनं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ कलशस्यापनमंत्रेः वर्धिन्योपरि पूर्णपात्रान्तं कृता अजियत ।। वर्षिन्ये नमः ॥ गंधै॰ पुष्पं॰ धूपं॰ दीपं नेवेद्यं॰ एवं पंचोपचारान् कृत्वा ॥ वर्षिनीकुळशं वर्ध-केंड महद क्वीहोयते तेतुं रक्षण तथा प्रीक्षणमारे दिग्रक्षण तथा पंचगच्य करणने संकलकरी पत, ८ प्रमाणे करावतुं, ैप्रोक्षण विगेरेकची पत्ने वर्षिक्षकारू स्थापनमा मत्रो पत्र २६ मा प्रमाणे करी पूना वार्षना करी दृश्यतीय कलग्राहाथमां एड मंडपनी प्रदासिणा 🕏

करी आहाणीए पंत्रमणता आधी पश्चिम द्वारतं ययोक्त पुननळरी ग्रंडरप्रवेश करने तथा इशान दिशामा पोलातं 'ग्लामणुं' करी कछश मुकी नमस्हार पूर्वक प्रार्थना करने.

्रे पूर्वक प्रार्थना करवे. े

स्तानि कालस्यावयवाश्च ये ॥ ८ ॥ सस्तिः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः ॥ एते स्वामीभार्पचंतुः सर्वकामार्थसिद्धये।।९।।सहस्राक्षं शतधारं च ऋपिभिः पावनं कृतं।।तेन त्वामभिपिंचापि पावमानं पुनन्तु ते ।। ९० ।। 🔀 🗱 भगं ते वरुणो सजाः मनं सुद्धें बृहस्पतिः। भगिमंदश्च वायुत्र भगं सप्तर्पयो ददः॥११॥वत्ते केशे च दौभीग्ये सीमंते 🕼 🕺 यज्ञ मूर्धनि ॥ ळळाटेकर्णयोरस्कोरतपस्तु ब्रंसु भेपजम् ॥ १२ ॥ इत्यभिषेकः ॥ तत्र क्रंडमंडपपक्षे आचार्यः ॥ 🕺

मंत्रनिर्घेषसुवासिनीगीतवाद्यनिःस्वनैः ईशानभागे असताष्ट्रहरोपि वर्धिनीं संस्थाप्य प्रार्थयेत ॥ मृन्मिय त्वं महाभागा सदा तीयोंदकान्विता DEAU

बर्द्धनी त्वं जगन्माता भव त्वं इन्टबर्द्धिनी ॥ तव तोयेन कलशान्युजार्थे पूरवाम्यहम् ॥ इति श्रीजयानंदात्मज 🕏 मूलशंकरशर्मणा विश्वितायां विवाहकोमुद्यां पुण्याहवाचनांतप्रयोगः ॥ ॥ अथ मंडपप्रवेदाः ॥ सह मङ्गलवाद्यघोपेश्र सह गोधमग्रडलवणदीपादिभिः सहितः दृशपुत्रपोत्रादिसमेतः सुशक्रनमृचिताभ्युद्यः सपत्नीको यजमानो दुर्वाम्रप्रहवनालिकेरादियुतं जलपूर्णं कल-अर्थ-हेंव पठी भड़करवेज करनो-सुवासिनी नंगलनामित्र शांति पठ भणता मालगो। तथा मंगल इन्यादि लड़ कर्ता खी पुरुष पुत्र पीत्रादिये परिवृक्त यह, नेमा दरोह आबाना पातरा नार्रीकेर प्रकेंद्र हे एवे। नल प्रारत कुंम लह मंदानी प्रदक्षिणा करी मंदपना पश्चिपद्वार अगाडी उमा रहेर्नु, प्रारी संकल्प करा उमरानि टेकाणे कुंख्यनो यन कारी तेना परिवृत नेहेशा देवताओतुं स्थापन तथा पंनीपनारे पूजन करतुं. पत्नी विद्रोने नाहारुरनास भेनी भणी पीतानुं जनमुं अंग मथमधी अंदर सभी करे एवी रीते प्रदेश करनी तथा परनीना हाथमां रहेलो छुंम इशान्य दिशामांअसत मुकी मुक्तवो, एने मंडप प्रवेश नहेंने

अथवा सस्तु करी नवा गृहमां प्रवेदा करवी होय तो एवी रीतेत्र करी गृहमां प्रवेदा करसे 🛭

🕯 क्राय नमः ॥ इति द्वारमभ्युश्य ॥ इस्ते अक्षतान गृहीत्वा ॥ ऊर्ध्व द्वारश्रिये नमः॥द्वारपीटस्य मध्ये देहत्यां वास्तु-🕼 🎇 पुरुषाय नमः ॥ दक्षिणशासायां गंगाये नमः ॥ वामशासाया यमुनाये नमः ॥ दक्षिणे शंसनिधये नमः ॥ 🕍 ्रीवामे पदानिषये नमः ॥ द्वास्त्य चतुष्कोणेषु आग्नेथ्वाद्युष्वोषः क्रमे ॥ आग्नेयां गणपतये नमः ॥ 🐒 नैर्ऋत्यां दुर्गीये नमः ॥ वायन्यां सस्वत्ये नमः ॥ ऐशान्यां क्षेत्रपाळाय नमः ॥ द्वारश्रियाः बावाहितदेवेम्यो नमः॥ सक्षीरज्ञेन स्नानं समर्पयामि ॥ दारिश्रयाद्या०गेषै० ॥ दारिश्रयाद्या०पुर्व० ॥ इतिहित्तदेवेम्यो नमः सर्वोपचा-

्रिं गृहीत्वा ॥ मंडपं प्रदक्षिणीकृत्वा। पश्चिमद्रारे स्थित्वा द्रास्शाखां प्रजयेत ॥ अवेत्यादि० तियो मम सकले । श्री प्रसिद्धवर्थ मंडपप्रवेशांगभूतं द्रारशाखाधिष्ठातृदेवतानां प्रजनमहं करिष्ये ॥ तद्यथा ॥ देहत्यव्रतः छंकुमादिना

त्रिकोणं तदुपरि वृत्तं तदुपरि चतुरस्रं गंडलं कृत्वा ।} तत्र असुरान्तकचकाय नमः।। इति मंत्रेण प्रश्नालितं तामाः है दिपात्रं स्थापयिता कृष्णाय नमः हृदयाय नमः इति जलं प्रस्वेत्।।तत्र गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।।नर्भदे है सिंधुकावेरी जलेऽस्मिन्सान्निर्धि कृत् ।। इति मंत्रेणांकुशमुद्रया तीर्थान्यावाद्य प्रष्पाणि निर्विषेत् ।। असुरान्तकच-

रतिंसीस्यप्रदायिनी ॥ मोहयन्ति सुरान् सर्वान् जगद्धात्रि नमोऽस्तुते ॥ गौरीद्यागच्छ इह ति० गौर्थे० ॥ जीवनं सर्वे जन्तुनां सृगादिस्थानसुत्तमम् ॥ उत्तमाङ्गस्रुचाधारं कण्ठमाबाह्याम्यहम् ॥ कण्ठ इहाग्च्छ

ति॰ कष्डाय॰ ॥ पद्माकाराथवाकुण्डे सदशाकृतिसंयुता ॥ आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यद्दम् ॥ नाभिं 🕺

इहागच्छ ।। इह तिष्ठ ॥ नाग्ये० ॥ नैऋते ॥ अज्ञानातज्ञानतो वापि दोपाः स्युः सन्तनोद्धवाः ॥ नाशप

सारीमां मणजारविद्यमने ॥

सुरायार्वे यहीपरसपूर्णन ॥ सिद्धांतरेसरे ॥ क्षेममाणभाज्यं स्यात् पश्च सीरं च तत्समं ॥ तण्डलानां शुक्तिमानं पायसं प्रस्तिसमं ॥

कर्षमात्राणि ।। मस्याणि व्याजामुष्टिभिया मताः ॥ अस्रं ग्राससमे आवं शाक्तं ग्रासार्पमात्रकं ॥ मुखानान्तु त्रिभागं स्यात्कंदानामप्टामंसकः ॥

इसोः वर्वममार्गः स्पारंगुरुद्वितर्यं कता ॥ मादैसमानाः समियो निर्हणामंत्रके समां ॥ तिलक्षनतुक्तणादीनां मृगिमुद्राप्रमाणतः ॥ पत्रपुष्पकः

ं इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आ० ॥ अघोमेखलायां कृष्णवर्णालंकताया ॥ गंगायर महादेव द्रपारूढ महेश्वर 🕺 आगच्छ भगवन रह कुण्डेस्मिन्संक्रियो भव।।रह इहा गच्छ इह तिष्ठ ।। रह्मय नमः रहमा० ॥३॥योन्यां ॥ सेवंते 💲

-विद्रष्याणि सुवेण समियो पूछाोद्वर्यगुर्छ विहास मध्यमानासिकांगुष्ठै जेहुसात् ।। यहं ग्राससमं पाणिनैव जहुसात् ॥ आङ्गं सुवेणैव ॥

॥₹दश

|आवाहगामि देवेश वास्तुदेवं महावलम् ॥ देवदेव गणान्यक्ष पातालतलवासिनम् ॥ वास्तुपुरुष इहागच्छ इह तिष्ठ||🎉 नमः वास्तुपुरुपमा॰ ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां विष्ण्वाद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिताः भवन्तु ॥ विष्ण्वाद्यावाहितदेवेभ्यो नमः गंधं स० । विष्ण्वाद्यावा॰ पुष्पं स० । विष्ण्वाद्या॰ पूर्पं॰ स० । -श्रीलंडकेडरकर्त्त्। कुकपागरुकर्दमाः ॥ हरिषन्थाः समं प्रोक्ताः गुम्मुकोवद्रीसमाः ॥ आहुतीमाणिद् दिभिः ॥ तिग्राभिर्देशिषरेकाहुतिः ॥ कुळेषु विपनेणैकेति ॥ ( १ ) भास्करे मूछपुतैः ईन्नानीमारभ्य समितैः मतीविमारभ्य माग् संस्थनिः

|अहितान् सर्वान् निश्वकर्मन्नमोऽस्यु ते।।विश्वकर्मनिहागच्छ इह तिष्ठ निश्वकर्मणे॰ विश्वकर्माणमा० कुण्डनैकीते ॥

सारितेः त्रिभिर्देभेः तिः परिसम्रवः ॥ १ ॥ गोमपेनव०वहेसनं मार्गत त्रिरुप्तेरपाकरणं याम्पतः उद्परसंस्थामादेशपरिनिता ॥२॥ बश्चिवितवा 🛚 जूना पूरं कार्य प्रक्षिप ॥२ ॥ न्युन्नवाणिना ॥ सन्धुल मणयेदांभ निर्धूषं कुंडमध्ययः ॥ साशतं पन्डिपाने च सुवासिन्ये समर्पयेत् ॥ ४ ॥ 🕏

👸 उछिल्य ॥ अनामिकांग्रहेन उद्धृत्य ॥ उद्धृत्य ।। उद्धृत्य ॥ उदकेन अभ्युक्ष्य ॥ अभ्युक्ष्य॥ अभ्युक्ष्य॥ कांस्पेन वा 🕏 त्राग्वेण स्वासिन्यत्रिमानवेत् ॥ आनीतमत्रिं स्थंडिलस्यामेथ्यां निघाय ॥ हुं फट् इति मन्त्रेण कृष्यादांशं नै-र्कंत्यां दिशि परित्यन्य ॥ त्रिवारमित्रं स्थंडिकोपिर भ्रामियत्वा ॥ आत्माभिमुखं अप्तिं संस्थाप्य ॥ अग्न्यानीः ( > ) ॥ प्रमिक्तियौ ॥ अप्रस्तु माल्लो नाम गर्भोपाने विपीपते ॥ पायमानः पुंसवने सीमंते मंगलाभिपः ॥ मथलो जातसंस्कारे पार्षिची 🕏 —आडूति आरबी, श्रीलड, केशर, कस्तुरी, छंडम, अगर, कर्दमण्डले बस्तुनी होम नणा भेश्ली लड्ने करवी. तथा, ग्रुगलनी होम करवी ते 🕏

बोरना जेटको हेवी. तथा अग दुर्वाधा एक आदुति भायको तेमन श्रीश्मला छई दर्शनी होन करवी ॥ (१) आहाणे सकल्प करवीके धनमाननी 💸 ॥३५ भाज्ञानी अप्तिस्पापन क्रूडंड दुर्भ वरिसमुख इत्यादि करी यनमानपत्नीने तामाना नेपात्र, वा कासाना वा महोडाना पात्रपा साधीओ काडी नीरता नार्सी

असवा ते पाळी नृतम जोईए मोजन करेंछी पण न जोईए सावानु पार पण नारीशोते. तेले परामा नई एकसात्रमा देवता छड् बीलु पात्र उपरदाकी,

तिपात्रे साक्षतोदकं निर्पिच्य ॥ अत्रिमुखं ऋता ध्यायेत्॥सप्तहस्तश्चनुःश्वंगः सर्राजिह्नो हिर्शिर्पकः ॥ त्रिपात्मसः ॥ त्रवदनः मुखासीनः शुचिस्मितः ॥ १ ॥ स्वाहां त व्यक्ति एक्टें क्टें क्टों क्टों व्यक्ति । ै जियदनः सुसासीनः शुचिस्मितः ॥ १ ॥ स्वाहां छ दक्षिणे पार्थं देवीं वामे स्वधां तथा ॥ विश्वदक्षिणहस्तेस्तु नाम कर्निण ॥ अञ्चासने ठाविः प्रोक्तो सभ्यः स्याबीङकर्मिण ॥ व्रवादेशे समुद्रको गोदानादौ सूर्यः ॥ विवादे योगकः ॥ मायश्रिते विद् ॥ 😭 र्थातिके बरदः पीष्टिके बलक्ष्रीनः ॥ पृतदादे कव्यादः ॥ पूर्णोहृत्यां मृदः ॥ कात्यायनः ॥ न नखेन न काप्टेन नाक्ष्पना मृन्ययेन वा ॥ 🖔 त्रोडिलेडसणं विमसिद्धिकामस्तु यो भवेत् ॥ वसेन कुनसी चैव काग्नेन व्यापितीहति ॥ अभ्यना धननाशः स्यात्फ्रकाश्यः मृन्मये न च ॥ 🕍 फरेन फटमारोति पुष्पेन श्रीयिन्छति ॥ पर्णेन धनकाभः स्पात् दीर्घमायुःकुश्चेन तु ॥ तस्पातफकेन पुष्पेण पर्णेनाथ कुशेन ना ॥ मोङ्घि-

दर्भाः पिदर्भाः वे दर्भाः यहसूतिष्ठः ॥ स्वरणासनविदेषु पटकुशानः परिवर्णवेतः ॥ ब्रह्मवहेषु वे दर्भाः वे दर्भा वितृवर्णये ॥ इता मूत्र-द्वीपाभ्यां नेपां त्यामो विधीयते ॥ इति छंदोगपरिश्चिष्टे ॥

थिति पायते. बांडे तेन न देवां नीचे मूकांकी ते पात्र आहांके वह पोतामा समुन्त करीं अभिस्थंडिलमां (अथवा कुंडमां) मुकवी. पत्नी ते पात्रका हि

क्षिद्धप्तेणे त्रिप्तिद्धिकायस्य कर्मेष्व ॥ दर्भाः कृष्णाजिनं पंत्राः व्यक्षणा इविराध्यः ॥ अयातवायान्येवानि नियोध्यानि प्रवादनः ॥ चितौ 🐉

विंकु चोला तथा द्रव्य माली यमभानपत्नीने आसूर्व.

-को६ अर्शवनने सर्वा न करता कुमानी टेकाणे आबी सीचे पात्र मूकतुं, केटलक ब्राह्मणो ते सममानरत्नीना हाथमाथी आमि पात्र होते. ते प्राप-शिक्

115611

अपि प्रज्यस्तितं वंदे जातवेदं हताशनम् ॥ हिरण्यवर्णमनलं सम्बद्धं विश्वतोम्पलं ॥ प्रार्थनापूर्वेकं नमस्कारं 🕌 समर्पवामि ॥ अथ ग्रहरूथापनम् ॥ तत्र पूर्व कुण्डमंडपे प्रंथोक्तप्रकारेण ग्रहपीठं कृत्वा ॥ अथवा काष्ट्रमय-

पीठे श्वेतवस्त्रं प्रसार्यं तदुपरि पंचवर्णेः वा श्रुष्रास्तिः नवग्रहमंडलानि कृत्वा ॥ तेपां लक्षणादीनि ॥ अयपयोगः ॥ ॥ )१ ) स्कांदे ॥ जन्मपू गोजमित्रवर्णस्यानमुखानिच ॥ यो शालाकुरुते श्वांति वहास्तेनावमानिताः ॥ १ ॥ असर्वरूपादिस्य चतुरुत्तं नि-अकरे ॥ परीपुत्रे विक्रोणंतु नुभेव वाणसंनिभन्न ॥ २ ॥ नुरीतुपहिन्नत्वरंपवकोणं तु भर्मने ॥ पतुपाक्रनिर्मदे च सूर्पाक्रमंत्र राहदे ॥ ३ ॥

अर्थ-(१) अक्ष त्यापन थया पठी अक्षिना मंत्रीभी आवाहन करी- " ज्ञांतिओमा" बरद नामना अभिने पूनन करी प्रार्थना करते (१) हुने वनपहीर्त स्वापनकर्युं तैमांस्यान्यमां नानवनर अथना शास्त्रोक रिकार मफेत करुडो प्रापति सेना उत्तर अवस्त्रोतः महिलोकादवा—सेनास्वरकानो सर

कोणे प्रजयेत असये नमः गंधं० पुष्पं० धूपं० दीपं० नैवेद्यं समर्पयामि ।। अप्तिं शक्तमः संपूज्य ।। प्रार्थयेत ।। 🛂

मेशप्यज ग्राह्मुख मम संमुखो भव ॥ शान्तौ वरदनामाभि प्रतिष्ठाप्य ॥ अभिष्ठरुपय नमः इति मंत्रेण वायव्य- 🗟

शक्तिमनं छुचं मुवम् ॥ २ ॥ त्रोमरं ब्यंजनं वामे पृतपात्रं च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो हुता-शनः ॥ ३ ॥ अमे वैश्वानर शांडिस्वगोत्र शांडिल्यासितदेवलेति त्रिः प्रवगन्वितशूमिर्माता वरुणः पिता

næan

बिल्की ०

🖏 वयभिति ॥ भदनस्त्नसंप्रदे ॥ शहस्य नुक्षिणेभागे स्थापमेद्धिदेवताः ॥ श्रहस्य वामवार्थे त स्थाप्याः मस्यपिदेवताः ॥ 🕏 र्याः च उमा विष्याः 🗐 िस्टिंद विष्णुं तथैनष ॥ ब्रह्माण सिंदं तु यमं कालं नैव तु अष्टमं ॥ विषयुप्तं तु नवपं वितिता अधिदेनताः ॥ अधि श्रीव क्या व्यापः पृथिवी 💸 िविण्यु रेव च ॥ इंट्रवेव तथेद्राणि प्रनापति स्तरीवच ॥ सर्पर्येव तु ब्रह्मा च एताः प्रस्यपि देवताः ॥ राहुमंददिनेत्राना भुत्तरस्यां यथा कमं 🎇 हैं॥ गयेब हुनी वायुष्य राहुकेलोबदक्षिणे ॥ आकाश मित्रनीदेवी स्थापवित्या क्रमेणत ॥वास्तोष्पति क्षेत्रपाछी स्थाप्यी मुर्बोत्तरेषु च ॥एताः ्री सदैव संस्थाप्याः क्रमे साहुष्पदेवताः ॥ इंद्राधि यमनैऋत्य वरुणो वायुरेव च ॥ कुवेरैशानाचित्त्पष्टी नगादि मदिश्वाधिषाः॥ त्रहाणं च तदस्याप्य पूर्वेवात्मा स्तुपन्यमे ॥ वर्वाचि नैकीतमेध्ये अनंतं स्यापयेदिति॥आवाहनं तु मतिमाधतपुंजादि स्यापितं संस्पृत्य कर्तव्यापितिभास्तरे॥ संग्रहे ॥ विकारण चर्गागृहक्यं समित्रां च पंथातवंशाश्रहासीनां च सर्वेषां राविर्द्रक्य मुद्दीरितं ॥ अर्केः प्रधान स्वदिरा वर्गामायाय विष्यकः ॥ औदंबरः शर्मा । दुर्ग कुश्राय समिपादिति ॥ देपादी भविष्य च ॥ —मुकेटोठे ने प्रपाणकानी अधिप्रत्यपि देवता वियेरे सहित ग्रहना सोपारी योटवर्ग ॥—मो शास्त्रिहोयतो दरेन महोनी मुर्तिओ कराक्यो तेनाम आग्रहनकरी

केतने तु ध्वताहारं पंदलानि परुत्पयेतु ॥ मध्येतु भास्तरांदियाच्छक्षिनं पूर्वदक्षिणे ॥ दक्षिणे लोहितं विद्याद् सुपंपूर्वोचरेजपित्र ॥ उचरेतु ॥ गुर्वियात् मार्गर्व पूर्वतो न्यसेत् ॥ प्रनि पश्चिमवःस्पाप्य नैर्यदे राहुमेवच ॥ केतु वायव्यकाणे च प्रहस्थानानि कल्पयेत् ॥ विषया कल्पे ॥ शुकार्का गार्मुखोतेयी गुरुसीस्यी उदङ्मुखी ॥ भत्यङ्मुखी सोमग्रनी चेता दक्षिणतोसुखाः ॥ एतालुदङ्मुखाखेटाः सदस स्रोकेन्विसिनः ॥ यजमानात्माभिमुखाः सर्वे संस्थापपंति च ॥ एउप पुजकायो पेध्ये यत्र त्राची मकल्पवेत् ॥ तत्र संत्मुखसंस्थाप्या इति न्यापो यथा 🕍

• । अधुकवासरे संकल्पोक्तकभणः सागतासिष्यथ आदित्यादिश्रहाणा ३। प्र• १ र् सपस्वित्तगणं स्थापनप्रतिष्ठाष्ट्रजनं करूपे ॥ इस्ते असतान् गृहीत्वा ॥ उक्तमंडले असतपुंजेषु प्रगीफलानि निधाय देवानावाहयेत् ॥ इस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ सूर्यं ॥ कर्छिगदेशेश्वर जपापुष्पोपमांगद्युते ॥ तेजोनिधे 🕺 112411 िन्नलोकप्रकाशक त्रिदेवतामयमूर्ते नमस्ते संनद्धोः माणिक्याभरणभूपितारूण ध्वजपताकोपशोभितेन सप्ताश्वरयः बाह्नेनामच्छ पद्मकर्णिकायां ताष्रमयीं प्रतिमां प्राङ्मुखीं वर्त्तुरुपीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थ त्वामाबाह्यामि ॥ १ ॥ चंद्रं ॥ भगवन् सोमद्रिजाधिपति सुधामयशरीरात्रिगोत्र यसुनादेशेश्वर गोक्षीरथवलांगकान्तेय द्विसुजगदा-

वरदांकितकस्थुक्कांवरमात्यानुलेपन सर्वांगसुक्तमौक्तिकाभरण रमणीय समस्तलोकाऱ्यायिकदेवतास्वाध्यायि

स्वापन करतु. हवे त्रहो केवाठे तेर्त्त वर्णन भ्यानमां छर् सी सीना स्थानपर संज युक्त बेसाडवापजीहाथमांनछलर् संकरपरणवी,तेमां स्थरियार ग्रहोत्तं स्थापन

करीश एमकेवाभी वया अवेग्रे.— तेपकरीखाल चोसाल्स सूर्येत ध्यान करी वनमा तांवाना कल्यापर तरमाणीपरताचानीमूर्तीपर मैत्रो जगरप्रमाणे मणायापणी 💆 ॥३९॥

स्थापन करात्रुं एमसूर्यद्वं वर्त्तृष्ठ पीठे यचनां स्थापन करी बीमाप्रहोत्तुं स्थापन जेतनाठेकाणागर उपर प्रमाणे स्थापन करात्रुं नीवरेष्ठ प्रदोनीप्रतिया ते ते च थायते। 🕏 भृतियो सुर्कोनी कराववी. अथवा रूपानी कराववी, एभवण थायछे, एप्रमाणे प्रहोतुं स्थापन विधीथी वरावर्तुं.

🏭 भूपित सर्वागृहराहोकदिप्ते नगरते ॥ सत्रद्ध**्रकःवजपताकोपशोभितेन**्रक्तमेपस्थवाहनेन।गच्छ पद्मदक्षिणदले 🎼 ैं|चंदनप्रतिमां दक्षिणमुखीं त्रिकोणपीटेऽधितिष्ठ ।१ प्रजार्थं त्वामावाहयामि ।१ ३ ॥ ब्रधं ।१ भगवन् सौम्य सौम्यारुते 🎼 🎖 सर्वज्ञानमयात्रिगोत्र मगधदेशेयर छंछमवर्णांगद्धते चतुर्भुजलङ्गसेटकगदाकित पीताम्बरमास्यानुरुपन नीरु-🛱 ्री हत्नामरणालंकृतः सर्वागः विद्युषपते नमस्ते ॥ सन्नद्धपीतव्यज्ञपताकोपशोभित्तेन चतुःसिंहरथवाहनेनागच्छ ॥ 🔀 💖 पद्मेशानदरुः सुवर्णप्रतिमासदङ्मुसीं वाणाकारपीटेऽभितिष्ठ ॥ ब्रुजार्थं त्वामावाहयामि ॥ ४॥ ग्रुरं ॥ भगवन् 💖 |बृहस्पते समस्तदेवताचार्यांगिरसमोत्र सिधुदेशेश्वर दीर्घसुवर्णसदृशांगद्यते चतुर्भुञदंडकमंडस्रअक्षस्त्रवरदांकित- 🕌 🎖 |पीताप्रस्मान्यानुरुपन पुष्परागमयाभरणस्मणीयसमस्तविद्याधिपते नमस्ते सन्नद्धपीतप्यजपताकोपशीपितेन 🎏 ्रीपीताश्वरथवाहनेनागच्छ ॥ पद्मोत्तरदछमच्ये खवर्णप्रतिमासुदङ्सुर्खा दीर्घचखरस्र पीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वा-

ैं नमस्ते सम्रद्ध श्वेतध्वजरथपताकोपशोभितेन दशश्वेताश्ववाहनेना गन्छात्र पद्माग्नेयदले स्फाटिकप्रतिमां हैं अत्यङ्मुखीं चतुरस्पीठेऽशितिष्ठ ॥ पूजार्थं त्वामाबाहयामि ॥ २॥ भीमं ॥ मगबन् अंगारकाह्माकृते भारद्वाजगो-श्वे व्यवंतिदेशेश्वर ज्वालायुंजोपमांगद्यते चतुर्भेज शक्तिश्वलगदाखद्वांगवारीन् रस्तम्बरमाल्यात्रलेपन प्रवालाभरण- वि॰ कौ॰ हैं मावाहयामि ॥ ५ ॥ शुक्रं ॥ भगवन् भार्गव समस्तदैत्यश्रते भीर्गवगोत्र भोजकटदेशेत्वर रक्तोज्वलांगकति 🥇 प्र०१ 🗜 चतुर्भुज दंडकमंडत्वक्षसूत्रवरदंकित करशुक्लम्बरमाल्यानुरुपन शुक्लाभरणभूपित सर्वीगसमस्तिनितिशास्त्र- 🖔 प्रसणमते नमस्ते ॥ सञ्जद्धशुक्तभ्वजपताकोपशोभितेन श्वकाश्वरथेनागच्छ पूर्वदलमध्ये रजतप्रतिमां प्राद्धमुखीं 🞖 Hokil पंचकाणपीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्यामाबाहयामि ॥ ६ ॥ शनैश्वरं ॥ भगवन् शनैश्वरं भास्करतनय काश्यपगोत्र 🕏 सौराष्ट्रदेशेश्वर कजलाभकांते चलुर्श्वजचापत्रणीरकृपयाऽभयांकित करनीलाग्वरमालानुलेपन नीलरत्नभूपणालं 🖔

कृत समस्त्रभ्वनभिषणाभिमर्पमूर्ते नमस्ते ॥ सन्नद्धनीलप्यजपताकोपशोभितेन नीलगृत्र स्थवाहनेनागच्छ ॥ पद्मपश्चिमद्रे लोहमयी प्रतिमां प्रत्यंगधनुपाकारपीठेऽधितिष्ठ ॥ प्रजार्थं त्वामावाहयामि ॥७॥ राहुं ॥ भगवन् सहो 🖏 रविसोममर्दन सिंहिकानंदन पैठिनसगोत्र वर्वस्देशसर कालमेघसूते न्यात्रवदन चतुर्श्वजसङ्गचर्मश्रूलवरदांकित

कृष्णांवरमालानुलेवन गोमेदकाभरणमृपित सर्वागरोोर्यनिधेनमस्ते ॥ सन्नद्धकृष्णवजपताकोपरोोभिते कृष्णसिंह-स्थवाहनेनागच्छ ॥ पद्मनिर्फतिदले सिसमयिप्रतिमां दक्षिणमुखीं सूर्पोकास्पीटेऽघितिष्ठ ॥ पूजार्थं त्वामावाहयामि

🗜 ॥ ८ ॥ केर्तुं ॥ भगवन् केतो कामरूप जैमिनिगोत्र मध्यदेशेश्वर प्रम्नवर्ण ध्वजाकृते द्विभुजगदावरदानांकितकर- 🌯

∥तामानाहायामि ।। इति ब्रहाणां स्वापनं ।। **अथाधिदेवताः ॥** सूर्यस्य दक्षिणे शं**सं ।। भग**वंतं पंचवनत्रं त्रिलोचनं वृपारूढं कृपालशुलखडूर्गगापिधारिणं चंदमीर्लि आदित्याधिदेवेशं शंभु मावाहयामि ॥१॥ चंद्रस्य दक्षिणे उमां ॥ भगवतीमक्षसूत्रदर्पणकमरुकमंडलुधारिणीं नानाभरणभाषितां त्रिदशपुनितां सोमाधिदैवतासुमा मावाह-👸 यापि ॥२॥ भौगस्य दाक्षणे॥ स्कंदं॥भगवंतं वण्मुखं शिखंडकविभूपणं स्वताम्बरधरं भयूरवाहनं क्रक्कटघंटापताकाश-परसुपेतं चत्रर्भुनं अंगारकाधिदैवं स्कंद मावाहयामि ॥ ३ ॥ ब्रयस्य दाक्षणे विष्णुं ॥ भगवंतं चतुर्भुनं कोस्तु भादिनानाभरणभूपितं पीताम्बरघरं कीमोदकीपद्मशंखचकोपेतं बुधादिदैवं विष्णुमा० ॥ ४ ॥ ग्रहोः विद्याणं ।। भगवंतं व्रह्माणं पद्मासनस्यं जटिलचतुर्भुखपक्षमालारसुवं पुस्तककमंडळुभारिणं कृष्णाजिनवाससं (१) नवेग्रहीयं त्यापन थया पर्ध अधिदेवताओवं स्थापन प्रहोत्तर दक्षिणभागे करतुं. ते दोकता करूना गोठवी तरभाभी मुकी ग्रही प्रमाणी मृति मूकी पयोक्त करवुं.

वञ्चान्तरमाल्यानुरुपन वैद्धर्यम्याभरणभूपित सर्वागचित्रशक्ते नमस्ते ॥ सञ्चद्धचित्रभ्वजपताकोपशोभितेन नित्रकपोतस्थवाहनेनागुच्छ ॥ पद्मवायञ्यदले कांस्यप्रतिमां दक्षिणाभिसुर्सी ध्वजाकारपीठेऽघितिष्ठ ॥ प्रजार्थे

**00000** 

े भुजां सिंहारुढां दुर्गाख्यदेत्यान् संदारिणीं दुर्गामाबाहयामि ॥ २ ॥ सूर्यस्य उत्तरे वाद्यं ॥ स्थामवर्णं हेमदण्डधरं कुळणमृगवाहनं जगत्माणरूपं मोहिनीप्रियं वास मावाहयामि ॥ ३ ॥ राहोदीक्षणे आकाशं ॥ भगवंतं चंद्राकीपेतं ॥४२॥ द्विञ्चनं पण्डमाकाशमाबाहवामि ॥ ४ ॥ केती देखिणे अश्विनौ ॥ नालोत्पलामी नीलांबरघारिणौ प्रत्येकमीपि पुरंतकोपेती दक्षिणपार्थे परस्परवामपार्थे स्ताभांडाकस्शुक्कांवस्थारी नारीञ्जगोपेती देवभिपजावश्चिनावावाह-यामि ॥ इति लोकपालाः ॥"वास्तोष्पतिं" ॥ उत्तरे भगवंतं देवेशं महावलं देवदेवं गणाध्यक्षं पातालतलवासिनं वास्तुदेव गावाहवामि ॥ १ ॥ मंडेलस्योत्तरे ॥ क्षेत्रपालं ॥ भगवंतं देवेशं दिन्यरूपं महाकायं नानाभरणम्भुपितं संहारमृतिं शिरसि धतजठाशेखरं चंद्रविंवं कृतनस्वपुपं करालं पापनाशं क्षेत्रपाल मावाहयामि ॥ अथ दि-क्पालाः ॥ पूर्वे इदं ॥ स्वर्णवर्णसहस्राक्षं वज्रपाणि शिविषिय मिद्रमावाहयामि ॥ १ ॥ आप्रेयां अप्रि ॥ सप्ताः ३६ ( १ ) मंगलोचरे क्षेत्रपाल स्थापन मिति ॥ शांति कमलाकरे इति कत् साहृष्य देवताः ॥ ાાજરા अर्थ-हरे गणवस्यादि साहुण्येदनताओर्नुं स्थापन कार्तुं ते सहु, शनि, अने सुर्यं, तैनी उत्तरिद्शामां कार्तुः, नस्तोप्पति अने क्षेत्रपाठनुं स्थापन मैडखना उत्तरमां करतुं, (१) इन्हानिदश्चदिनपाछतुं स्थापन पूर्वोदि दिशाओमां करतुं तेमां असातुं " पूर्वशानमध्ये <sup>17</sup> तमा अनंततुं पश्चिम निर्कतिमध्ये करतुं.

आवाहन करंड. ते दरेक ब्रहोनी मुर्तीओने सर्फ करी करवं.

्रीद्रितेणे यमं ।। रक्तवर्णं दंडधरं महिपवाहनमभिष्रियं यममावाहयामि ।। नैऋत्यां निऋतिं ।। नीलवर्णं 🐉 🌠 बहु चर्मघरमूर्चकेशं नस्वाहनं कालिकाप्रियं नैर्ऋति मावाहयामि ॥ १ ॥ पश्चिमे वरुणं ॥ रक्तभूपणं 🎼 ँ∥नागपाश्चरं मकरवाहनं पश्चिनीप्रियं वरुण मावाहयामि ॥५॥ वायव्यां वायुं ॥ स्यामवर्णं हेमदण्डयरं∥ँँ र्भृृृृहुष्णसृगवाहनं जगत्परिष्ण्रूष्णं मोहिनीप्रियं वायु मावाहयामि ॥ ६ ॥ उत्तरे सोमं ॥ स्वर्णवर्णानीधीश्वरं 🕍 र्रें‼मदापाणिमश्रवाहनं चित्रिणिपियं सोम माबाहवामि ॥७॥ ईशान्यां ईशानं ॥ श्रुद्धस्फटिकवस्दाभय-∭ ्रीश्रुलासमूत्रघरं रूपभवाइनं गोरीप्रियं ईशान मावाह्यामि ॥८॥ प्रवेशानयोमेघ्ये ब्रह्मणं ॥ भगवंतं पद्मासनस्यं ज-🕍 ्रीटिलं चर्रामुंबं अक्षमालाष्ट्रवपुस्तककमंडलुधारिणं कृष्णाजिनवाससं स्वरापियं त्रह्माणमावाहयामि ॥ ९ ॥ 🕍 ै निर्कति वरुपयोर्मेच्ये ।। असमूत्रधरं कुंडलिकाएन्छयुक्तं सहस्रभोगं शुस्रवर्णमनंत मावाहयामि ॥ १० ॥ 🕄 हिशान्यां ११ विधियुक्तमंत्रेः करुशोपिर रहं ॥ भगवंतं गिरिजिप्तियं नंदीशं डमरु त्रिश्तुरु खट्टांगाभयघारिणं हैं

(१) इति प्रतृसंरक्षक देवताः॥ अयं खद्रक्रस्त्रो यक्षाकस्य स्वानार्थं भित्त कपनार्करः॥ खद्रक्रस्त्रोपिर इस्तं दत्ता सांगं च्हं जपेत् ॥

🎒 र्विवं सप्तहस्तं मुकसुवशाक्ति सूत्रतोमरूव्यंजनष्टतपात्राणि दथानं स्वाहापिवं मेपवाइन मिन मावाहयामि ॥२॥ 👭

२०को॰ ्रै त्रिदशसेवितं स्त्र मावाहपामि ॥ ११ ॥ एवं ग्रहवेद्यां देवान्संस्थाप्य ॥ हर्रेते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ प्रतिष्ठा

॥४३॥ 🕺 नाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवत ॥ प्रतिष्ठांते पूजनं ॥ आदित्याद्यावाहितदेवेभ्योनमः ॥ आ-

सनं समर्पयामि ॥ २ ॥ एवं सर्वत्र ॥ आदित्याद्याचाहितदेवेभ्योनमः ॥ पादयोः पाद्यं समर्पयाभि ॥ ३ ॥ (१) कटक्षस्थापनोक्तमंत्रैः कटक्षस्थापनं ॥ वेपाद्यपरि क्रवान्यचारणपूर्विकां सुर्यादीमां अतिमाः स्थापयेयुः ॥ अग्रदक्षीपचारिः कर्तेच्यं ।। आबाहनासनं पाद्य मर्घ गाचमनीयकं स्नानं बह्मोपवीतं च गंधमाल्यान्यनुक्रमात् ॥ पूरं दीपं च नैदेवं

कार्यो ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता ॥ प्रतिष्ठां वः कसेम्यत्र मंडले देवतेः सह ॥ आदित्याचा

माटे एक निश्चय करी पूना कर्या. केटएक उपचारोमा दूसमा नवी ते त्या मूकती नहि पण पूजनना अन्ते मूकवी. कारणेक दिसेणा सफलार्य छे यध्यसा

तांबूटं च मदक्षिणां ॥ पुष्पांजिंछ रितिमोक्ता उपचारास्त श्रोदश इति ॥ अर्थ-(१) ह्वक्टरानु स्थापन ब्रह्ना इशानमा वरखु तेमा कडशामा वड निगेर यपोक्त भरी ईशानमा मुक्त्रो तेनापर हद्रानुं स्थापन करखु. ब्रह्मानी

साथे पुना करी तेना पर हाथ अङकाडी एक बाहरणपासे रह नए करावते. उपर छहरराप्रधाणे प्रहोत स्थापन थया पूछी जीखालड् प्रतिष्ठानो मूनभणी 🕺

दरेकना उनर बधारवा तपा पूजा करनी तेमा एक पूजाकण नियमित उपचार बढे थती तथी तेथी योगयफळ मछत्र नथी माटे पींडद्रोपचार अथवा अष्टादशोक्चार, पट्निंद्रशेषचार, पतुषद्भिंद्रशोषचार, रागोपचार वीगेरे यणाउपचारो छे. तेमाथी वने ते उपचार ग्रहण करीने पूना करवी ए योग्य छे.

यक्षणयी विधि नय यागले

ાકશા

ै सुरो।भनार्थे सीभाग्यह्रव्याणि स॰ ॥ आदित्या॰ घूपं स॰ ॥ ११ ॥ आदित्या॰ दीपं स॰ ॥ १२ ॥ आदित्या॰ 🎇 नेवेद्यं स० ॥ १३ ॥ आदित्याद्या॰ तांबुलं स० ॥ १४ ॥ आदित्या॰ अंतुलेपनं स० ॥ १५ ॥ आदित्या॰ नम-🎇 🐕 स्कारं स० ॥ १६ ॥ आदित्याद्या० साहुण्यार्थे दिवणां समर्पयामि ॥ प्रार्थनापुर्वकनमस्कारं क्रयीत ॥ जपा 🕏 कुँगुमसंकाशं कास्योपं महद्द्युर्ति ॥ तमोरि सर्वपापमं प्रणतोऽस्मि दिवाकरं ॥ १॥ दिवशंखद्यशासभं क्षीरो-(१) वंदनेन मुखनासिके लिंपैतीति गदापरः ॥ सर्वमसिद्धर्तनं कार्य मिति इरिदरः॥ (१) अन्नापानं ॥ प्रयोगस्ते प्रणातिद्यास स्मार्तिकास स्मार्वकारिकः जक्तः ॥ मनुस्तरिक्षणुचार प्राप्तस्वानायपुच्यते ॥ क्षकं ग्रहीत्वा अस्मिन्द्रहयक्षस्ये कर्माण

देववापरिजरणार्थपन्यापानं करियो ॥ अस्मिन्नन्याहिते ऽत्री पूर्वेण ब्रह्मणोतमनं ॥ उत्तरतः पात्रासादनं ॥ द्वै पवित्रे कांस्यपयी हैं हारम्रमपी व आज्यस्याची ॥ साम्रपयी चरूस्थाली पालाश्यः समिवः ॥ त्रास्यां वा वारी समिद्धतमे जाज्यभागी पूर्णपात्रं ॥ दक्षिणा

||१| || आदित्या॰ अर्व्यंत्त॰ || ४ || आदित्या॰ आचमनीयं स॰ || आदित्या॰ स्नानंतः ।| ६ || आदित्या॰ वस्त्रं || स॰ || १ || आदित्या॰ यहोपवीतं स॰ || ८ || आदित्या॰ आभूवणानि स॰ || ९ || आदित्या॰ गंधं स॰ || || १ || १० || आदित्याद्याबाहितदेवेभ्यो॰ अर्छकारायेंअक्षतानुस॰ || आदित्या॰ पुष्पाणि स॰ || ११ || आदित्या॰ || क्कि॰ हैं दार्णवसंभवं ॥ नमापि शरिानं सोमं शंभोर्सेकुट्रभूपणं ॥ २॥ घरणीगर्भसंभृतं विद्युत्कृतिसम्प्रभम् ॥ हुँ कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमान्यहं ॥ ३ ॥ प्रियंगुकलिकास्यामं रूपेणाप्रतिमं युवं ॥ सीम्यं सीम्यगुणी वेतं तं युवं प्रणमान्यहं ॥ ४ ॥ देवानां च ऋपीणां च ग्रुठकांचनसन्निभम् ॥ युद्धिभृतं जिलोकेशं तं नमामि 👸 बृहस्पति ॥ ५ ॥ हेमईद मणालाभं देत्यानां परमं ग्रहम् ॥ सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भागेव प्रणमान्यहं ॥ ६ ॥ नीलां-जनसमाभार्सं रविषुत्रं यमात्रजं ॥ छायामार्तंडसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥ अर्धकायं महादीर्यं चंद्रादित्यः ै विमर्दनम् ॥ सिंहिकागर्भसेमृतं तं सहुं प्रणमाम्यहं ॥ ८ ॥ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ॥ रीदं 🖔 -वा II पतान्तैकलिका न्यदार्घानई कृरिय्ये II अथ देवकाभिध्यानं II तत्र मृजापति निन्द्रमार्गि सोम्मेताः आश्येन मत्येक पेकैकया हुत्वा II अथ प्रधानं ॥ आदित्यादि नव्यद्य नकीदि ययाखाम सांगियखतिकाज्यद्रव्यैः पत्येकं प्रतिद्रत्येण अष्टाप्टसंख्याकाभिरादुतिभिः ॥ अधिदेवता

मत्यधिदेवताथ तैरेव द्रव्यीः मत्येकं मतिद्रव्येण चतु श्रतुः संख्याकाभिराहुतिभिः धिनायकादि पंचदेवताः वास्तोप्पति क्षेत्रपालं इंद्रादिदश्वदि-

कपालांश्र तैरेव द्रव्यैः शरोकं मतिद्रन्येण द्वाश्यां द्वाश्या पाहतिभ्यां यह्ये ॥ न्यूचातिरिकार्यं प्रताक्ततिल्द्रव्येण समस्त व्याहतिभि रष्टाविद्यति

મજજાા

संख्याकाभि राष्ट्रविभि र्यस्ये ॥ क्षेपेण स्विष्टकृत् ॥ अपि वार्यु सूर्प मिन्नकर्णी अपि वरुणं सविवारं विष्णुं विश्वान्वेषान्यरुतः स्वकी न्वरुणमादित्य मदिति मजापतिनेता अंगमधानार्थि देनता आज्येन अस्मिन ग्रह्यशाल्ये कर्मण्याहं यस्य ।। इति अन्वाधानं ।।

🗓 त्रद्धोपवेशनं यावत्कर्म समाप्यते ॥ तावत्त्वं त्रद्धा भव ॥ त्रह्मानुद्धातः उत्तरे प्रणीता प्रणयनं ॥ वामकरेण प्रणीतां ही संगृह्य ॥ दक्षिणकरेण जलं प्रपूर्व ॥ समें निधाय ॥ आलभ्य उत्तरतोऽग्नेः स्थापनम् ॥ वर्हिपदक्षिणमभेः परि-र्भस्तरणं ॥ वा त्रिभि स्निभि देभैंः परिस्तरणं ॥ तच प्राख्दगंत्रेः ॥ दक्षिणतो प्ररगर्थेः ॥ प्रत्यखदगंत्रेः ॥ उत्तरतः (१) बाह्यणाभावे कर्तेंब छद मुत्तरीय जळपात्र दर्भच्द्रत् प्रकासने निधाय ॥ इति श्रांतिर्धितापणौ ॥ (२) मणिवा उत्तरेस्थाप्या वितस्यन्तरतोनितः ॥ इति ग्रह्महरूवस्याम् ॥ आसादनन्तु पात्राणां गादेशान्तरके बुधः ॥ इति कारिकाकारः ॥ मादेशमात्रं विवेयं पवित्रं पत्रकृतित ॥ अनंतर्गार्भणं सार्व्र कीरी दिदलमेव च ॥ आज्यस्थाकी कांस्यमयी यदा ताम्रायमी तथा ॥ मादेस माद्रा दीर्घा सा ग्रहीतन्याङ विष्याशुमा ॥ ददा मादेश मार्क्युध्यमियं नाति वृहन्मुखी ॥ पृन्मस्यीदेवरीवापी घरत्याखी मशस्यते ॥ स्वादिरादेः एवः कार्यो इस्त मात्र-🖟 विमाणतः ॥ अंगुप्त पर्वस्तांत तन् त्रिभागं दीर्घ पुण्करम् ॥ अवहोक्त पुरुपाहार परिमितालादिना पूर्ण पूर्णपात्रमिति छत्यचितामणी ॥

तिमां ब्रह्मसन्त्री आरंपी पानस्सादन उमी परीपूर्ण करवं ॥

रौदात्मकं घेरं तं केतुं अमाणम्यहं ॥ ९ ॥ आदित्या॰ प्रार्थनापूर्वक नमस्कारं स॰ ॥ अनया प्रजया आ दित्यादि ग्रहमंडलदेवाः प्रीयंता ॥ अथ कुँष्कंडिका ॥ दत्तिणतो ब्रह्मासनं ॥ उत्तरतः प्रणीतासनं ॥ तत्र

र्या-( १ ) आदियादि नवप्रहोतु तथा अधिप्रत्यिदेवता विगेरेतुं पूनन थया प्रश्न संकल्प करी, कोछं पूलन अर्पण करी, कुशांडीनी आरंप करों इं बहास्तम्यी आरंपी पामस्तादन लगी परीपूर्ण करतुं ॥

िक्ति॰ हैं प्रागाँगैः अर्थवत् पात्रात्सादनं ॥ पवित्रलेदने दर्भोख्ययः ॥ पवित्रे दे ॥ प्रोक्षणीपात्रं ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्याली हैं प्राण्डे हैं संमार्गेक्शाः पंच ॥ उपयमनक्रशाः सप्त ॥ समिथस्तिसः ॥ सुवः ॥ सुची ॥ आज्यं ॥ तण्डुलाः ॥ पूर्णपात्री। है बरोवा॥ पवित्रछेदनैः॥ पवित्रीकरणं ॥ द्रयोः पवित्रयोरुपरिपवित्रत्रयं निधाय॥ द्रयोर्मूलेन द्रौ छरोौ पद्विणीकृत्य ॥ 🕺 त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य ॥ अनामिकांग्रहेन द्रयोरत्रं छेदयेत् ॥ द्रिग्राह्य ॥ ज्ञिणि उत्तरतः क्षिपेत् ॥ प्रोक्षणीपात्रे 🏅 प्रणितोदक मार्पिच्य ॥ पात्रांतरेण चलुर्वारं ॥ जलं प्रघूर्य वामकरे पवित्रात्रं दक्षिणेपवित्रयोर्भूलं ५त्वा मध्यतः ै

त्याः प्रोक्षणं॥ संमार्गक्कशानां प्रोक्षणं उपयमनकुराानां प्रोक्षणं॥समिषां प्रोक्षणं॥स्वस्य प्रोक्षणं॥सुचः प्रोक्षणं॥ आज्य- हे स्य प्रोक्षणं॥ समार्गकुशानां प्रोक्षणं॥ प्रणिपात्रस्य प्रोक्षणं॥ प्रक्षणं॥ प्रक्षणं॥ प्रक्षणं॥ प्रक्षणं॥ प्रक्षणं॥ स्वप्यक्षणं॥ प्रक्षणं॥ प

पिनत्राभ्या मुत्पवनं प्रोक्षणीपात्रजलस्य प्रोक्षणीनां सन्यहस्तेकरणं ॥ दक्षिणहस्तमुत्तानं कृत्वा ॥ मध्यमाना- है मिकांग्रस्योः मध्यपर्वाभ्या मपां जिहमनं ॥ प्रणितोदकेन प्रोक्षणीनां प्रोक्षणं ॥ आज्यस्थात्याः प्रोक्षणं ॥ चरुस्था- है 👫 संयार्जनं !! अग्रेरग्रं ॥ मूलेर्म्लं !! प्रणीतोदकेनान्युक्षणं ॥ प्रनःप्रतपनं ॥ देशे निधानं ॥ आज्योदासनं ॥ 🕍 🔐 चरोरुद्धासनं ॥ वामकरे पवित्राग्रं दक्षिणे पवित्रयो भूँलंश्त्य ॥ मध्यतः पवित्रास्यां ॥ आज्योत्पवनं ॥ आज्या-🕼 👸 विदाणं ॥ अपदव्यनिरसनं ॥ प्रोद्षिण्याः प्रत्युत्पवनं ॥ उपयमनक्रशानादायः ॥ तिष्टतः समिधोभ्याधायः ॥ प्रोद्धे- 🧗 (२) दैवेतिःसाछिताहेपा पितरि तण्डलाः सकृत् ॥ इति कलपवल्याम् ॥ अनितिक्षिषिष्ठं अफ्डिनं अदर्थं कौत्राल्पेन सप्पेत् ॥ इति 🕍 🎇 कृत्पांचवामणी ॥ (१) होत्र सुत्रे ॥ भूगादि नवसस्विष्ट कृते चायचतुरुषे ॥ अन्वारंभोभवे चेषु सोम्बारंभः क्रुरोनवे ॥ अप्रेप्नुतार्थनाशाय 🔯 🏄 मध्ये चैनपुतपनाः ॥ पुछे च छियते होता सुवस्थानं कथे संदेत् ॥ अग्र मध्याचयन्यध्यंमूटमध्याच मध्यतः ॥ सुवं धारयते विद्वान् ग्रासव्यंच 🙌

|| | || आज्यनिर्वापः वरुस्थात्यां तण्डुलप्रक्षेपः।।तंस्य त्रिःपक्षालनं।। चरुपात्रे प्रणीतोदक मापिंच्यः। दक्षिणतः आज्याधिश्र-|| । 🐉 वर्ण II मध्ये चरोरिधश्रयणं।। ज्वलितोल्सुकेन पर्यक्षिकरणं।। अर्धश्रिते चरोः सुवस्य प्रतपनं।। संमार्गक्ररोः सुवस्य 🔀

🛂 पाणीहोमे त्यागो न 🛭 अयोमुखउर्श्वरः माडमुखोहव्यवाहनः ॥ तिष्ठत्वेत्रस्वभावेन आहुतिः क्वन दीवते ॥ सपवित्राम्बुहस्तेन वन्हैः

्री क्वर्या रमदक्षिणाम् ॥ हव्यबाद् सिछलं दृष्टा विभेति संमुखोभवेत् ॥ इति कारिकायां ॥

अर्थ~(१) धृत तथा वर भवे। जोहदे उतारवा पत्रे खुवाने तपाणी श्रीसणकरी उपयमन कुसाव्य समियो आपवी, तथा पर्युसण करी जमणो पा ।

ें उथे पात्री नदायी आर्रभ्य दुवावती होम करवे ॥ छुनी मृगी मृत्राये प्राष्ट्री चीनो होम करवे।

🙎 सदाउपैः ।। तर्रमी च बंदिः इत्सा कनिष्टां च बंदिरतथा ।। पञ्चमा जापिकांत्रपुः खुवं घोरवते द्वितः।। सुबद्दोने सदात्यायः प्रोहाणी पाजपध्यतः 🕏

ु ज्युदकरोपेण सपवित्रहस्तेन अमेः ईशानकोणादारभ्य ॥ प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणं ॥ पवित्रयोः प्रणीतास्रु निघानं ॥ है दक्षिणं जान्वान्य स्रहोति ॥ तत्राघासवास्य भागीच् ॥ ब्रह्मान्वार्ठघ् ॥ स्रवेण सरुयात् ॥ स्रीगसुद्रया पृतः स्रुवेण माज्यमादाय ॥ प्रजापति मनसा ध्यात्वा ॥ हीं प्रजापत्तये नमः ॥ इदं प्रजापतयेनम् ॥ इत्यमे रुत्तरभागे हीं इन्द्राय नमः॥ इदमिन्द्राय नमम ॥ दक्षिण मागे॥ ही अप्तये नमः ॥ इदमप्तये नमम ॥ मध्ये ॥ हीं सौमाय नमः॥

इदं सोपापनम् इस्ते अक्षतान् ब्रहीत्वा।शान्तीके वरदनामानमित्र माबाहयामि॥अर्वि प्रज्वलितं बंदे जातवेदं हुताः 👸 शनं ॥ सुवर्णवर्णं गमलं समिजं विश्वतासुसं ॥ वरदनामामये नमः गंधं पुष्पं भूपं दीपं नेवेद्यं समर्पयामि ॥ अनुया पूज्या अभिः प्रीयतां ॥ यजमानेन द्रव्यत्यागः कार्यः ॥ यथाकालं प्रत्याहृति त्यागस्य कर्त्तुमशक्यत्वात्सर्वमेव

( ? कुर्ण्यदिका भाष्यकारादयः ॥ अधि पुना पहिः मोत्तिति पचनाद्वहिरेव सर्वपृशन मितिकाचिदातुः ॥ तत्रविष्णुपमीन्तरे ॥ मध्येपि

कंश्युप्पादीन् इद्यादाने नैसंत्रया ॥ यस्निवेध याक्नतु दानच्यं मिविनिश्रयः ॥ इति ग्रांति मपूखे ॥ แชสม अर्थ- (१.) होममां पहेंद्य प्रजापति आदिनी चारे आहुती आपनी, वर्ज वरदाक्षितुं स्थापन करी पूनन करी अमितुं च्यान करतुं तथा कोटी पूना

हविर्जातं देवताश्च मनसा ध्यात्वा ॥ इदं संपादितं । समिनरुतिलाज्यादिहविर्द्रव्यं या या यक्षमाणदेवता तस्ये

🏸 यासमित्सा शस्याधिक्वतायाः मत्यधिकेवतायात्र योज्या ॥ विनायकादि दिक्ष्पालान्ताकत साह्रश्यं क्रतसंरक्षण देवताः प्रकाशे द्वरान्यतुव 🕏 🎇 सिम वह तिल्लाच द्रव्येण दि दि संस्वया जुहोति ॥ समिसारका सत्वचा कनिष्ठिकाग्रकत स्थूका द्वादकांतुकदीर्घा ग्राह्म ॥ अत्र विद्वामि देवी- 🛚 🕻 ि भिरेखाद्वीतः ॥ सभैव त्रिपत्रकृषे रेकाइतिः ॥ द्रबद्धव्य ख़बेणैव पाणिना कदिनं इतिः ॥ प्रधानं पायसं श्रीकं सप्रतं च सक्तर्तरं ॥ अष्टीत्तरं ्री वर्त चेव जुड़वा चिल्रसीपंपा ॥ समिदार्थ्य चर्व चेव तिल्रहोप स्ततः परं ॥ क्रमेण श्रुष्ट्रया देव पंत्रे रेभिःपृथक पृथक् ॥ समिदर्कपंथी सूर्य पाला-🖏 व राशिनस्तवा ॥ खादीरि भूमिपवाय अपामानी सुवस्य च ॥ सुरोरश्यथ्यत्रा मोक्ता शकस्यीद्वरी शक्ता ॥ शमी अनैवरे राहो दुर्वा केवी- 🔯 🔐 ४ दर्भना ॥ अद्योत्तरन्तु सारतं रातपहांभितंतवा ॥ अप्रादिष्ठति रष्टी या यजेतु पंचापूर्त च्छताः ॥ इति भास्करादी ॥ आचारातः हालेश्च पुग- 🕏 😰 नारिंग जीरि धीनपुरकं ॥ उचित नाळिकेरन्तु दादिमं सर्येतः फळे॥ गुग्गुळस्य तत्तोहोमं सर्पेपं तदनंतरं ॥ होमान्ते यनमानेन कर्चेन्यं प्रदृष्टनने ै अर्थ-( १ ) अप्री पुनन थया पढ़ी क्वी आहती पखते त्यान न घड शके तेटला माटे हाथमां लळ तथा फळ छइ चपरनो त्यान संकर्द करवा. तथा औ ्रंपन प्रभावन १ एक आहुता आधान स्थापित देखेने आहुति आपी तुम करवा, तथा स्थापित देखेने समीदोनो होम करवा तेमां सूर्वने आंकडानी विदेश सामारी, मंगळने लेतती, तुपने जीवोदानी, गुरुने पीएळानी, शुन्ने उमयदानी, शर्नाने समर्थती, राहुने दुर्वा, केतुने दर्वा, रामाणे नवेमहोत्ती समीधो

तस्य देवताये नमम ॥ यथा देवतमस्त ॥ ततोहोमं कुर्यात् ॥ ही मणपत्येनमः इदं मणपत्ये नमम॥१॥ इस्याय नमः इदं सूर्याय नमम ॥ ८ ॥ १ ॥ सर्वत्र त्याममंत्रेणेव होमः कार्यः ॥ चन्द्रमसे नमः ॥ ८ ॥ २ ॥ (१) गणाणित्रते देवाः मयमा ह बराहतिः ॥ अन्यथा विकडं विम भवतीद न संत्रयः ॥ इति कमळाकरे ॥ तिष्ठात्य चरपनं च इति धुंक्षं प्रकीर्तित भिति ॥ ततो आदित्यादि नव्यहाः क्रमेण पूर्वोक्त ग्रह्मोमहुन्येम अभिमत्यविदेवतान्त्रभतुः संस्थ्या हत्वा ॥ यस्य ग्रहस्य विश्वभा

÷

नमः ४ ॥ १ ॥ उमिषे नमः ४ ॥ २ ॥ स्कंदाय नमः ॥ ४ ॥ ३ ॥ विष्णवे नमः ॥ ४ ॥ ४ ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ४ ॥ ४ ॥ इन्द्राय नमः ॥ ४ ॥ ६ ॥ यमाय नमः ॥ ४ ॥ ७ ॥ कालाय नमः ॥ ४ ॥ ८ ॥ वित्रष्ठ. शाय नमः ॥ ४ ॥ ९ ॥ अथप्रत्यधिदेवताः ॥ अग्रवे नमः ॥ ४ ॥ १ ॥ अद्वयो नमः ॥ ४ ॥ २ ॥ घराँय नमः ॥ ४ ॥ ३ ॥ नासयणाय नमः ॥ ४ ॥ ४ ॥ इन्द्राय नमः ॥ ४ ॥ ५ ॥ इन्द्राप्ये नमः ॥ ४ ॥६॥ अजाप-

तथे तमः ॥ १ ॥ ७ ॥ सर्पेम्यो नमः ॥ ४ ॥ ८ ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ४ ॥ ९ ॥ अथगणपत्यादिदेवताः ॥ ्होपबी, तेमन ने देवना अविदेक्ता भत्यिघ देवता नेत्रे, तेनी क्ण तेन सभीधनाणकी, महोर्नासपीद आफ्यानी ८ नो अम छीवोहोयतो तेना आंभे देवता प्रत्यि

देवताओंने ४ समीच आपनी तेन ऋतु सादुण्य देवताओंने समीदी २ आपनी, मेटलुं द्रस्थित तेटलानो जुनाथी होम धरूपो तथा कठिण हिविनेके तेनी 🕉

हाथेथ्र होम करने. होन सफ्टो समप्त याय पत्री सुमळनी होम करी सरसरनी श्रोम करी खानीमा भायपर श्रण बखत ठोकी काने पाणी अरकार्डा.

रुस्मीहोम करवी, तेमा रुस्मीतुं पूजन करी पंत्री श्रवण करवा रुस्मी होम संपूर्ण करवी, पत्री संकरकारी ओहुं वपारे पर्यु होय तेने माटे

મજના

र प्रायश्रीस होमध्ययो, ते आद्वति २८ अथवा १०८ आपी करपो ॥

💹 ॥ अथलोकपालाः ॥ इन्द्राय नमः ॥ २ ॥ १ ॥ अवये नमः ॥ २ ॥ २ ॥ यमाय नमः ॥ २ ॥ ३ ॥ 💸 िनिर्द्धतये नमः ॥ २॥ ४॥ वरुणाय नमः ॥ २॥ ५॥ वायवे नमः ॥ २॥ ६॥ सोमाय नमः ॥ २॥ ७॥ 🕌 ्रिडिशानाय नमः ११२११ ८ १) ब्रह्मणे नमः ॥ २ ॥ ९ ॥ अनंताय नमः ॥ २ ॥ १०॥ महास्द्राय नमः ॥२॥११॥ |्री 🐉 एतादेवान्समिदाज्यं चरुतिलादिद्रव्यैः पृथक् पृथक् होमकार्यः ॥ विशेषहोमः ॥ द्वाक्षाः मूर्याय नमः ॥ १ ॥ 🐉 | इस चन्द्रमसे नमः ॥ २ ॥ पूर्गीफर्लं भोमाय नमः ॥ ३ ॥ नारिंगं बुधाय नमः ॥ ४ ॥ जम्बीरं बृहस्पतये नमः 📳 [ 🖟 ।। ५ ॥ बीजपुरकं शुकाय नमः ।। ६ ।। उत्तर्ति शनिश्चराय नमः ॥ ७ ॥ नास्त्रिकरं सहवे नमः ॥ ८ ॥ वास्त्रिमं 🗒

केतचे नमः ॥ ९ ॥ उग्छलं स्द्राय नमः ॥ अथ सर्पपहोमः ॥ सर्वांबाषा अशमनं "त्रेलोक्यस्यापिकेश्वरा ॥ एव 🖺

गणपतये नमः॥ ४१११ ॥ दुर्गाये नमः ॥ २ ॥ २ ॥ वायवेनमः ॥ २ ॥ ३ ॥ आकाशाय नमः ॥ २ ॥ ४ ॥ अभिन्यां नमः ॥ २ ॥ ५ ॥ इति पंच देवताः ॥ वास्तोष्यतये नमः ॥ २ ॥१॥ क्षेत्राधिपतये नमः ॥ २ ॥ २ ॥

भेव त्ययाकार्य मसम्बेरि विनाशनं ॥ इति सर्पपहोमः ॥ नामपादभूमो त्रिस्ताङनं ॥ उदकं स्पृशेत ॥ सुश्चेमी-भेषात्रात् अस्पोरोमः ॥ स्थ्यास्तुदर्वनं पुन्यं दर्यनादाभवेदनं ॥ नंदनात सर्वनं थेष्ठं स्पर्वना दिष्पृणनं ॥ पूजनात् रोगशेष्ठः ॥

औप्पारात् अस्मीरोपः ॥ उक्ष्यास्तुदर्वनं पुष्पं दर्घनादिभवंदनं ॥ नंदनात स्पर्वनं येष्ठं स्पर्वना दिषपूर्णनं ॥ पूजनात् होगयेष्ठः ॥

अरुवार्स कर्य करते ए तदन अवोगतीने आपनारं छे माटे आपी सपजण आप्या छतां कोण करते अर्थात् न करते ।।

होमः ॥ पय शर्कस प्रत कदली फलाक्षतान् एकस्मिन्यात्रे एकीरुत्य ॥ लक्ष्मयाःभन्त्रेः लक्ष्मीहोमं कुर्पात् ॥ 🐉 प्र०१ हरते जलं गृहीत्वा ॥ अद्येत्पादि०-॥ असुकवासरे मम गृहे अलक्ष्मीविष्यस्तये दशाविधलक्ष्मीमाप्तये लक्ष्मीहोमं

पूर्वाभिगुले उत्पारही हापमानी पोसना क्वार्थ महना मंडपपासे मुकी देवा तथा माताना नमणा हाथतरफ पाटछा पर मेही स्पापित देवताओं नुं उत्तरपूनन थाय तेमां माग छेवो. केटलीक न्यातोमां परणनारने खीपुरुन्ना वचमां नेसाढेळे ए अधिहितळे अने शाखना प्रमाणोधी प्रायध्विक्त परायधे तो तेम बेस-बानी नरूर नपी जुवेके रूढी छे छवां प्रायश्चित न थां होय त्यां रूढी ग्रहण करीये तो अडचण नधी पण पर्म कार्यमां शासने वेगार्धुं सूकी अनिष्ट फळ 🕹

करिचे ॥ विद्यानसंपत्खलां सनातनां विचित्रवाग् भृतिकरीं मनोहराम् ॥ अनंतसंमोदखलप्रदायिनीं नमाम्यहंभृतिकरीं महाश्रियम् ॥ १ ॥ समस्तभृतान्तरसंस्थिता त्वं समस्तभोक्तेश्वरि विश्वरूपे ॥ तन्नास्तियेत्व-तिरिक्तवस्तु लत्पादपद्मं मणमाम्यहंश्रीः ॥ २ ॥ दारिद्रयदुःखौघ तमोपहंत्री त्वत्पादपद्मं मयि सन्निघत्स्व ॥ दीनात्तिविच्छेदनहेतुभूतेः कपाकदात्ते सभिपिच मां श्रीः ॥ ३ ॥ अम्बप्रसीद करुणासुदयार्द्रहष्ट्या मां त्वत्रुपा

होंने समाप्त पंचा पंची गोरे चार क्रियोने तथा परणन्त्ररने उद्द वरमा अर्चु. त्यां गढ़ गोधन सामे बेसार्ट्ड पोस भराववी. तेमां वरंडु करी पान ७ सोपारी ७ वैसा ७ रु. ? शुकारनो. तथा चार स्थायो पासे चार भार यसार भार वसारा प्रता परमाधी परणनारने वेटीने बहार श्रहयक्तनी नगापर आवी

अष्टाविंशति संस्थाया तिलद्रव्येण व्याहृतिहोमं करिव्ये ॥ अत्रिवायुमूर्येभ्यो नमः ॥ इति होमं ॥ अथ उत्तरपूजनं ॥ अवेत्यादि॰कृतस्य कर्मणः सांगतासिष्यर्थं स्थापितदेवतानां मृडामे श्रोतरपूजनं करिब्ये ॥ मूडाम्नवेनमः ॥ गंपं समर्पयामि॥ मृडायये नमः॥ पुष्पं स०॥ मृडायये नमः भूपं स०॥ मृडायये नमः दीपं -अनुयोः खर्याधेव दंपस्योः गुरुक्षित्वयोः ॥ नंदीत्रंकरयो मैध्ये इन्ति पुष्पं दिवाकृतं ॥ पूजास्तिष्ठं नवाहृत्यो वितः पूर्णाहृति स्तथा ॥ संस्वादि निर्मकोतं होण्योपसमापनं ॥ श्रेयः सपान्नदानं च अभिषेको विसर्वन मिति ॥ पूर्वपन्नक्तियापि ईर्व्हिय्यंबुभूसितः ॥ तुस्रो निर्मूम ै निर्गास्त्रो मुडायिः परिकोतितः ॥ इति ब्रह्स्लबस्यां ॥ —एवा प्रमाणी क्यान से मार्ट झाताप्टरना क्वार बेसाबवानु करने निद्दे तेम सारा सगन् द्विनो करावरी निद्दे तेमने उपकार मानीश ।। उत्तर तैत्राम पहेशा अनुकर्म

—उत्तर पूगन करी सीप्टकृत नवाहुती नज़ंदान करी पूर्णोहुती फरफी, उत्तरपूनन वसते अग्निन प्रपप पूनन करखु, ते मुद्दाग्नि नामधी पचोडचारे करखु, ते यहा पछी गणाती नश्यहादित पण पूनन करी हानित होय सो प्रहोना दान करचा. ते न बने तो तेनो निष्कय मृक्तो. पठी नवे प्रदोने तेना मनोधी है

द्विवण गेह मिर्म कुरुष्य ॥ आलोकयत प्रणत रुद्धतयेन हंत्री त्वत्पादपद्म युग्नलं प्रणमाम्यहं श्रीः ॥ ४ ॥ इति ल । क्ष्मीहोमः अद्यत्यादि० ॥ अमुकवासरे अस्मिनकर्मणि न्धुनातिरिक्नदोषपरिहासर्थं अष्टोत्तस्थत । संख्यया वा

स्वामृडात्रये नमः ॥ नेवेद्यं स्वाअनया पूज्या मृडाग्निः प्रीयतां॥विष्नहर्त्रे गणेशाय सांगायसपरिवासय नमः गंधं स॰ विग्नहर्त्रे॰ पुष्पं स॰ विन्नहर्त्रे॰ पूर्व स॰ विन्नहर्त्रे॰ दीपं॰ विन्नहर्त्रे॰ नैवेदां स॰ साहुण्यार्थं दक्षिणां स॰ अनया प्रजया विघहर्ता गणेशः प्रीयतां ॥ सगणेशगोर्याचाहितमातृभ्योनमःगंचं समर्पयामि।सगणेशगोर्याचा० HSSII पुष्पं स॰ सगणेशगोर्याचा॰ पूर्वं स॰॥सगणेशगोर्याचा॰ दीवं स॰॥ सगणेशगोर्याचा॰ नैवेदां स॰ अनया पूजया सगणेशगोर्याद्यावाहितमातरः श्रीयंतां ।। आदित्याद्यावाहितदेवेभ्योनमः गंधं समपर्यापि॰आदित्याद्या॰ पुष्पं स॰ आदित्याद्या॰ भूपं स॰आदित्याद्या॰ दीपं स॰ ॥ आदित्याद्या॰नैवेद्यं स॰ अनेन आदित्यादिदेवाः श्रीयंताम् ॥ शक्त्यात्रहृदानानि॥ प्रजान्ते सुपात्रे जलपुष्पाक्षत फलादीनि निधाय ॥ तत्पात्रं हस्ताभ्यामादाय॥आदित्याद्या-स्यापितदेवेभ्यो प्रत्येकं पुरुपाहार परिभिवाति नैवेद्यानि सर्वति ॥ आदित्यं कपिलां पेमुं इस्तं सोमाप दापपेत् ॥ भौमे रक्तमनादुहहं सोमपुत्राप

अर्थ-(१) स्यापित देवीत उत्तर पुनन थया पडी शक्त प्रमाणे नवे ब्रहोना बाने। करवा ते न ननी शक्ते तैप होयतो तेनो करी मुहनो पढ़ी सारा पात्रमा नळ व्ह तेमा र्गम, पुण, फल, अस्तत द्रव्य, मुकीने हापे झाठी व्होला मनवडे सर्पमी आरभी स्थापित देवाने अर्थ आववा.

कांचनं ॥ गरोधपीतवासौंसि शकायात्रसित स्तथा ॥ कृष्णागी भंदवारस्य राहोच्छाग स्तरीवच ॥ कृष्णायसं तथाकेती सर्वेषा मेवकांचनं ॥ แช रति झातिचितावणी

🛂 विंग तारापतिरनन्दितः।।मासे मासे क्षयो ग्रुद्धिःससोमःश्रीयतां मम ॥२॥ वालःकुमारको यस्त्र रक्तवर्णःस्रशोभनः ॥ 🔯 🏮 अव्ययः पृथिवीपुत्रः स. भीमः - प्रीयतां - मम ।। ३ ।। सीम्पपुत्रो बुधो सीम्पो - बुधोनाम महाम्रहः - ।। आदित्यः 🎼 🕺 पथगोयस्तु सञ्चरः श्रीयतां मम् ॥ ४ ॥ वृहस्पति वृहत्तेजो ृहन्दुद्धि वृहद्यशः ॥ स्रतणां च रहर्यस्तु स रहः 🎼 ्रीपीयतां मम रा ५ ॥ अस्रताणां ग्ररुर्यस्त प्रहाणां परमां गतिः ॥ श्रक्तवर्णः श्रक्रदीप्तिः सश्रुकः प्रीयतां मम् ॥ ६ ॥॥ 🎇 शिनश्ररः शनैश्वारी उत्ररूपो खेः सुतः ॥ ऋष्णवर्णः ऋरदृष्टिः सशिनः प्रीयतां मम ॥ ७ ॥ आसुरः सिंहिकापुत्रो 🎇 🏅 राहश्रंद्रार्कमर्दनः ॥ स्थापितस्त्र निमित्तार्थे स राहःश्रीयतां मम ॥८॥ अपां तु देव सगणः केतुः कपोतवाहनः ॥ 🕏

साजुनारः समेथात्र्य सकेतः प्रीयतां मम ९ ॥ शम्भुः प्रभृतयो देवाः पीठे वेऽत्रमयार्चिताः ॥ ते सर्वेश्द्रभदाः संसु है साजुपाः साजुगाः सदा ॥ १० ॥ इति प्रार्थयेत ॥ ततो हुतशेप हविर्द्रव्यं सुचिप्नस्तिं मृहीत्वा ॥ ब्रह्मान्वारव्यः है

्र्वं | ब्रह्मः सर्वे पीठेपेऽत्र व्यवस्थिताः ॥ ते गृह्णन्द्धः मयादत्तं मिममर्थ्यनमोनमः इति मन्त्रेण अर्घदत्वानमस्कारं स्व दे स्वमंत्रेःकुर्युः॥नमोरयमादित्यायदिप्यमानस्वतेजसे॥ज्योतिरथःसर्वभृतेभ्यःसस्त्र्यःश्रीयतां मम ॥१॥ द्विजराज महा किकी॰ 🖟 स्विष्टकृद्रीमं क्रयात ॥ अमये स्विष्टकृते नमः ॥ इदममये स्विष्टकृते नमम ॥ ततो नवाहृतयः ॥ अमये नमः 🧣 प्रवर इदपन्नये नमम ॥ वायवे नमः ॥ इदंवा० ॥ २ ॥ सूर्याय इदं सूर्याय० ॥ ३ ॥ अमिवरुणाभ्यां० इद मनिवरुणा ×वां०॥ ४॥ पुनः ॥ अमिवरुणाभ्यां० इदममिवरुणाभ्यां ॥ ५॥ अमये अयसे नमःइदममये अयसे० वरुणाय सर्वि-त्रे विष्णवे विश्वेन्योदेवेन्यो मरुद्रयः स्वर्केभ्यो० इदंवरुणा्य सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेन्यो मरुद्रयः स्वर्केभ्यश्च ॥७॥ ngon 🙎 वरुणायादित्यायादितये नमःइदं वरुणायादित्यायादितये ।।।।। प्रजायतये नमः इदं प्रजापतयेनसम् ॥९॥ अथ वै-िद्दानं ॥तचैवं॥ अम्न्यायतनस्य दिश्च विदिश्च च दशदिश्पास्त्राच् मापभक्तवलयो देयाः ॥अद्यत्यादि०॥ कतस्य 🖇 कर्मणः सांगतासिष्यर्थं दिक्पालप्रवेकस्थापितदेवतानां विलदानं करिष्ये ।।षाच्यां दिशि।। इन्द्रं सांगं सपरिवारं सायुधं (१) स्विष्टकृद्धोमः सर्वेद्रव्यैः कार्यः ॥ इति शाति कमलाकरे ॥ (१) अलिहीने तु दुर्भिसंगंधहीनत्वपोग्यता ॥ भूगतीने तपोद्वेगो वहाहीने जर्ष ( १ )होमता रेहेलु द्रस्य तेमापी शुषी भराय एटलुं लड् आंग्रमा आलुति आपभी, तेनेस्विष्टकृत केहेजे. तेमजी नव आहुती मीनी मुनायो आपयी મુજ્રા धनस्यः ॥ इति भविष्यपुराणवास्यातं ॥ (२) कुडनी अपना स्विडिजनी दशनाजुपे ह्यादिदेनोने मोटे मुळी दान ( वडा-वृती दुध पाक दीनी ) गोटनी तेना प्रस्पेकत पूजन करी संकल्पकरको .

पक्षी प्रार्थना दरीनी थया बाद गणपतीनवेपहोने पड़ी मुकतु-तथा क्षेत्र पालतु बली करतु.

¦ई∥िथपेदेव स्तस्मे यागात्मने नमः ॥ शर्थनां समर्पयामि ॥ अनेन वलिदानेन इन्द्रः प्रीयतां नमम ॥ एवं सर्वजोहः 🕼 🎒कार्यः ॥ आग्नेवां ॥ अग्निं सांगं सपरिवारं सशक्तिकं एभिर्मंत्वा० अग्नये सांगाय सपरिवाराय० इमं सदीप मापर 🧗 🕼 भक्तवर्लि स॰ भोअमे दिशंस्त वृलिभक्ष मम सङ्घंबस्याग्यदयं इक इक ॥ आयुः कर्ता शांतिक॰ प्रष्टिक॰ चिष्टि-🔀 🗐 क० निर्विष्ठक० वरदो भव ॥ सर्वदेवमयो देवो रँक्तोवन्हिर्महावरुः ॥ सप्तजिह्वो महावीयों नमो वैश्वानसयते ॥ 🖇 िश्चीप्रार्थनां स॰ ॥ अनेन प्रजनेन अग्निः प्रीयतां नमम ॥ दक्षिणस्यां ॥ यमं सामं सपरिवारं सायुर्थं सशक्तिकं 🕍 🏿 एमिर्गेषाद्यु॰ यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुषाय सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तवर्खि स॰ भी यम दिशंस्व 🕍 ्रीवर्लिभस मम सक्रुडंबस्पाभ्युदयं कुरु कुरु ॥ आयुः कर्ता शांन्तिक० प्रष्टिक० त्रुष्टिक० निर्विप्तक० वस्दोभव ॥ 🕺 ्रीदंडहस्तमयोदेवो धर्माध्यक्ष महावरुः ॥ आबाहये महादेवं तस्मै काळात्मनेनमः ॥ प्रार्थना स० अनेन पूजनेन 🖇

सशक्तिकं एभिर्गधाष्टुपचारे स्त्वामहं प्रज्ञधामि ॥ इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय साख्रधाय सशक्तिकाय इमं हैं सदीपमापभक्तवर्लि समर्पपामि भो इन्द्र दिशंख वर्लिभक्ष मम सक्क्दंबस्य।श्युदयं क्रुरु क्रुरु ॥ खायुःकर्ता क्षेमकर्ती है शिक्षान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तृष्टिकर्ता निर्विप्रकर्ता वस्दो भव ॥ इन्द्रःसुरपतिर्जिष्णुः स्वलेंकेशो महावलः॥ सतयागा- विक्को॰ है यमःश्री॰ ॥ नेकेत्यां ॥ निकेतिं सौगं सपरिवारं सशक्तिकं एभि मैथा॰ निकेतये सौगाय सपरिवाराय इमं- र्रे प्र॰ र दे सदीपं मापभक्तविलें स॰ भो निकेते दिशंस्त्र वर्लिभक्ष मम सकुडंबस्याश्युद्यं क्रुरु क्रुरु ॥ आयुः कर्ता शान्तिक॰ है ्ट्रै पुष्टिक॰ द्वष्टिक॰ निर्वि॰नक॰ वस्दो भव ॥ सक्षसेभ्यो 👅 स्वार्थं भवन्नेत्रप्रतिष्ठितं ॥ निर्विन्नयज्ञभूमिं च कुरु तं 🕃 ्र सुत्तसाथिया। प्रार्थनां सःगाअनेन पूजनेन निर्फातिःभी ।। प्रतीच्यां वरुणं सांगं सपरिवारं सायुपं सशक्तिकं एभि 💲 ँगैधा० वरुणाय सांगाय सपरिवाराय साखुवाय सशक्तिकाय इमें सदीपंमापभक्तवर्छि स० भो वरुणदिशंरक्ष बर्लि भक्ष 🕏

ममस् कुडुंनस्याभ्युद्यं कुरुक्त ॥ आयुःकर्ता पुष्टिक० तुष्टिक०निर्विष्ठक० वस्दो भव॥पाराहस्तात्मकोदेवो जलसजा- 🕃 ि थिपो महान्।।निम्नगामीतिविख्यातो वरुणाय नमोनमः।। प्रार्थनां स० अनेन पूजनेन वरुणःपी०।।वायव्यां वाखं सांगं 🦩 संपरिवारं साञ्चर्यं संशक्तिकं एभिर्गंघा॰वायवे सांगाय संपरिवासय संशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तविलं स०भी वायो 🧖 दिशंरत बर्लिभन्न ममसक्रडंनस्याभ्युद्यं कुरुकुरु।। आयुःकर्ता प्रष्टिक॰ द्वष्टिक॰ निर्विप्तक॰ वरदोभव वायुस्तुवलः 👸 माकृत्य वायुराजः सुप्रजितः ॥ अहोवायो मृगारूढ दशास्त्रनमोनमः प्रार्थनां स० अनेन पूजनेन वा० प्री० ॥ है ॥ उदीच्यां ॥ सोमं सांगं सपरिवारं साञ्चपं सशक्तिकं एमि गैघा॰ ॥ सोमाय सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय

ईश्वराय सांगाय सपरिवाराय सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्तविंस० भी ईश्वर दिशंरत विलंभन्न मम सऊदेवस्या म्युदयं कुरु कुरु ॥ आयुःकर्ता पुष्टिक॰ तुष्टिक॰ निर्विप्तक॰ वरदोभव ॥ विद्याधरायभृतेश ज्ञानभुवदयास्मः॥ सुदेशोदेवपुज्यश्च मुपालश्च बलिपियः ॥ प्रार्थनां स० ॥ अनेन पुजनेन ईश्वरःश्रीयतां नमम ॥ पूर्वेशानयोर्मन्ये उर्घायां ब्रह्माणं सांगं सपरिवारं सायुर्ध सशक्तिकं एभि गैं॰ ॥ ब्रह्मणे सागाय सपरिवासय सशक्तिकाय ॥ इसे 🐉 मदीपमापभक्तवर्लि स॰ ॥ भो बहान दिशंस्त्र चिलंभत्र ममसकुर्द्वनस्पाभ्यदयं करु करु ॥ आयुःकर्ता पुष्टि-कर्चा त्रष्टिकर्चा निर्विष्ठक० वरदोभव।। त्रह्मानुबलमाकम्य त्रह्मात्रकः सुप्रजितः।। अहोबुद्धः स्थितो त्रह्मा उर्घ्वस्याम रसं सर्वदा ॥ प्रार्थनां स॰ ॥ अनेन पूजनेन ब्रह्मा शि॰ ॥ निर्ऋति पश्चिमयो मध्ये ॥ अथस्थायां ॥ अनंतं सांगं

सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं एभि ग्रें॰ ॥ अनंताय सांगाय सपारिवासय सशक्तिकाय इमं सदीपमापभक्त विलि

इमं सदीपमापभक्तवर्लि स॰ भोसोम दिशंख वर्लिभन्न मम सङ्दंबस्याग्युद्यं क्रुरु कर ॥ आयुःकर्ता प्रष्टिक॰ विधिक विधिक विधिक विधिक निर्धिक विदेश स्वाप्त स्व

निश्की 👸 स॰ भो अनंत दिशंरत वर्लिभस्र ॥ मम सङ्खंबस्याभ्युद्यं कुरु इरु ॥आयुःकतो पुष्टिक॰ त्राष्टक॰ निवन्नक॰ 🏋 म॰१ वादोभव ॥ यो सावनंतरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचां ॥ पुष्पवस्थायते मार्ध्न तस्मे नित्यंनमीनमः ॥ प्रार्थनां स० ॥ े अनेन पूजनेन अनंतः प्री० ॥ ततो गणपतिसमीपे विह्नं निधाय ॥ गणपितं सांगं सपरिवारं सशक्तिकं एभि ै गुँधा॰ ॥ गणपतये सांगाय सपरिवासय संशक्तिकाय इमं सदीप मापभक्तविंठं स॰ ॥ भोगणपते दिशंस्स विलिभन्न मम सक्रदंबस्याभ्युदयं कुरु कुरु ॥आयुःकर्ता प्रिष्टक॰ तुष्टिकर्ता निर्विष्नकर्ता वस्दोभव॥ वक्रतुण्डम- 🖏 हाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ॥ अविष्नं कुरु मेदेव वर्लिभक्ष नमोनमः ॥ प्रार्थनां स॰ ॥ अनेन पूजनेन गणपातिः िप्री० ॥ सगणेश गौर्याद्यावाहितमातृः सांगाः सपस्विताः सायुषाः सशक्तिकाः ॥एभि गैषा० सगणेशागौर्याद्याः २ ાલસા

बाहित मातृभ्यो सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सराक्तिकाभ्यः इमं सदीप मापभक्तवर्लि स० भोभो सगणे-िशागीर्याद्याबाहिमातरः दिशंरक्षत वर्लिभक्षत मम ग्रहे सकलक्रडंबस्यान्युदयं कुरुत आयुः कर्र्यः पुष्टिकर्र्यः

वुष्टिकर्र्यः निर्विष्नकर्श्यः वस्दाःभवत ॥ अम्य त्वद्रत्सवानयानि वलिप्रजादियतक्तते ॥ तानि स्वीक्ररु सर्वज्ञे

द्यालुत्वेन सादरं ॥ प्रार्थनां स॰॥ अनेन पूजनेन सगणेशगोर्याचाहित मातरः प्रीयंतां॥ ग्रह्विट्रदानं॥आदि- 🤻

भ्यः साञ्चयेभ्यः सश्चितकेभ्यः इमं सदीपमापभक्तवार्लि स॰ ॥ भो भो आदित्यादि श्रहाः दिशंरसत वर्लिभक्षत ममान्युदयेकुरुत आयुः कर्तारः प्रष्टिकर्तारः त्रष्टिकर्तारः निर्विय्नकर्तारः वरदाः भवतः।। ग्रहाराज्यं प्रयच्छन्ति ग्रहा-गुज्यं हसन्त च ॥ ग्रहेस्त व्यापितं सर्वे त्रेलोक्यं सचगुचरं ॥ प्रार्थनां स० ॥ अनेन प्रजनेन आदित्याद्यावाहित प्रीयंतां नमम् ॥ क्षेत्रपार्लं बर्लि ॥ अद्यप्तबींबस्ति॰ सकलारिष्टशान्त्यर्थं क्षेत्रपालपूजन वलिदानं च करिच्ये ॥ क्षेत्रपालविलद्रिज्याय नमः इति ययाशक्ति गंधादिभिः प्रजयेत ॥ क्षेत्रपालाय सांगाय भूतप्रेतपिशाच ङाकिनी शाकिनी वैतालादि परिवारयताय सायुश्यय संशक्तिकाय सवाहनाय इमं सदीपमापभक्तवर्सि स० भो भो क्षेत्रपाल सर्वतो दिशं रक्ष बर्लि भक्ष ममस्कुटुंबस्याभ्युद्यंकुरु कुरु ।। आयुः कर्तो क्षेमकर्ता शान्तिकृतो प्रक्रिकर्ता त्रष्टिकर्ता निर्विध्नकर्ता वरदो भग।।प्रार्थनां।।द्वीनमः क्षेत्रपालस्त्वं भृतपेत गणैः सह।।पूजां वलि गृहाणेमं अर्थ- ( १ ) रेपमालशं बरी वापदीमा अपना सुपदामा मुक्तु-तेमा पुष्तल मात भएता. तथा पुरी दुध बाक वहा ने कर्यु होय ते मुकी चोखडी

दीवडी करी नार दिवेट मुझे तेन भेन प्रभाणे पुगन करी बड़ीनो संकल्प करवी तथा ते बड़ी चढ़ड़े मुकाबदु—ते बड़ी डेनार आक्षणनुं पुनन करी दारी-

्री मा अभी तेनी पासे मुहाब्लो-ते न होय तो जाते चक्छ जर यजपाने मुक्त्वो.

त्यादिदेवाच सांगान सपरिवारान सायुधान संशन्तिकान एभि गैंधा॰ आदित्यादि देवेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारे-

HEAH

समस्त न्यापकाय चतुःपष्टिरूपाय नगरग्रामक्षेत्रवनन्यापिने सकळजगरप्रजिताय ॥हां हीं -हुंक्षेत्रपाल बर्लि गृहाण भैसवरूपेण क्रम क्रम क्रूंकूँफाँफाँहींहींडमर डमर क्रम्ते यमदंडहरते हुंहुंहुं रूपादि किलि किलितं पातुनः ेक्षेत्रपालः ॥ यंयंपंपक्षरूपंदशदिशिवदनं भूमिकंपायमानं संसंसंहारमृतिशिरसिष्टतजटाशेखरं चन्द्रवित्रं ॥ दंदंदं- ﴿ दीर्घकेशं कृतनस्वपुपं उर्घ्वस्ताकरालं पंपपंपापनाशं प्रणतपशुपति भैखं क्षेत्रपालं ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ॥ अने नपूजनपूर्वक विरुदानेन क्षेत्रपालः शीयतां ॥ विरुप्ताहि ब्राह्मणं प्रजयेत् ॥ विर्लं विसृज्य तत्तस्थानं जलेन संप्रो-क्ष्य ॥ ग्रह्मणाः शौन्तिस्कं पठेयुः ॥ आदौ नमामि =चतुराननवंद्यमान मिञ्छातुकूल मिललं च वरं ददानं ॥ 🕺 तंतुंदिलं द्विस्सनाप्रिययज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचलुरं शिवयो शिवाय ॥ १ ॥ आदोनमामि भजता मभिलापदात्री धात्री समस्तज्ञगतां दुस्ति।पहंत्री ॥ संसारवंधनविमोचनहेतुभृतां मार्या पर्रा समधिगम्यपरस्यविष्णोः ॥ २ ॥

आदीस्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्ये नारायणंगरुडवाहन मध्जनाभं ॥ प्राहाविमृतवस्वारणपुक्तिहेतुं चक्रायुर्थ

थर्य-(१) वर्रीटान मुक्या पत्री बाह्मणीए शांति पाटना मंत्री भणवा-

वि॰को॰ 🕉 सींग्यो भवतु सर्वदा॥१॥आरोग्यमायु भेंदोहि निर्विच्नं कुरुसर्वदा।झी नमःक्षेत्रपालाय महावल पराकामाय वर्वरेकेशाय 🗵

होमं कुर्यात ॥ अद्यप्तवींचरित कृतस्य कमेणः सांगतासिष्यर्थ होमं करिन्ये ॥ अथ पूर्णाहतिः ॥ चतुर्गृहीत तद्वपरि स्कतवस्त्रणाच्छादितं. आज्यमादाय नालिकेरं निधाय, ततो स्थानात उत्थाय प्रणीइति मंत्रान पठेत ११ तत्र मंत्राः दिमुर्था नासिका ढ्यंः ॥ पण्नेत्र श्र चतुःश्रोत्र त्रिपादः सप्तहस्तकः ॥ १ ॥ याग्यभागे चतुर्हस्तः सन्यभागे त्रिहस्तकः ॥ सुर्वं सुर्वं तथा शक्ति मक्षमालां च दक्षिणे ॥ २ ॥ तोमरं व्यंजनं चैव घतपात्रं वर्ष-( १ ) पूर्णहर्ता वसते सुनीमां नार सरका थी छेडं तथा तेनाचर नारियल मुक्तं, तेने ठाल ककडो बीटाळी अवील गलाल सिंट्रपी सुराोभित करनुं. बजी ते एई उम्म बबुं. तथा वनमाने आवारिन अडकी रेहेवुं. तथा वनमान बन्नीये बोताना स्वामीने अवकनुं तथा कुँदुव तथा पुत्रीये क्या स्वा

उपर रहेर्नु. गोरे ओक्टर महस्थोने मांस्टरकरी भाव मोड्युं. स्थारवाद गारीयल होगाया पत्री वसीर्वार होग थयर पत्री अधिक महस्याद वोताको नागवे वेसीरपद्वे–आ टेकाने केशाना शिवाद अगानाजावे वोत्सववाना संबदाय के तथा ने आच्या होग तेने भोटेकरी मात चोडी नाइं मधि के, पत्री कि

वर्षाहरितं काम थया पारी केटलीक न्यातीमां गीळ चाणा पण आपेते. ए संवदायते.

गरायणस्य नस्कार्णवतारणस्य पारायणं प्रवणं वित्र प्रयाणस्य ॥ ४ ॥ यजमानः पाणि पादं प्रश्लाल्याचम

वत्सल ॥ काण्डद्रयोपचाताय त्रह्मकर्मस्वरूपिणे ॥ ९॥ स्वर्गीय स्वर्गदात्रे च यहेशाय नमोनमः ॥ नमोऽभिहोत्र 💸 रूपाय नमः परमेष्ठिरूपिणे ॥ १० ॥ चातुर्मास्यस्वरूपाय नमः पश्चिष्ठिरूपिणे ॥ सौत्राम्णिने नमस्तुम्य मिन 🙎 छोमाय वे नमः ॥ ११ ॥ अत्यग्निष्ठोमरूपाय तथा चोक्य स्वरूपिणे ॥ नमः शोडशरूपाय वाजपेयाय वे नमः 🛜 🐉 ॥ १२ ॥ अतिसूत्र नमस्तुभ्य माप्तोर्याम नमोनमः ॥ नमोस्तु सर्व भताना माधाराय महात्मने ॥ १३ ॥ ए॰ 🖇

कात्र पंचिमर्वक्ती दींप्यमानपडात्मने ॥ नमःसमस्तदेवानां वृत्तिदाय सुवर्चसे ॥ १८ ॥ शकरूपाय जगता म ेशियानां स्तुतिप्रदः ॥ त्वंसुर्तं मर्वदेवानां त्वयात्तं भगवान् हविः ॥ १५ ॥ रुद्रतेजसमुद्धतो वस्दोहज्यवाहनः ॥ 👯 प्रणतिनम्नित्रोशरोशां वाग्भिः प्रहर्षपुळकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततिमदं जगदात्मशक्त्या निःशेपदेर हैं वगणशाक्तिसमृहमृत्या ॥ तामिक्कामिसळदेवमहर्षिपूज्यां भक्त्या नताः स्म विद्धान्त श्वभानि सा नः॥ ३ ॥ ३ वत्याः प्रभावममुळभगवाननन्तो ब्रह्माहरू न हि वक्तुमळं बळं च॥सा विष्कृताऽसिळजगत्परिपाळनाय नाशाय ३ व्याप्ताः प्रभावममुळभगयस्य मति करोतु॥शाया श्रीःस्वयं सुक्रतिनां भवनेष्वळकीः पापात्मनां कृतिषयां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धाः सत्यां कृत्वित्रा स्वयं सुक्रतिनां भवनेष्वळकीः पापात्मनां कृतिषयां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धाः सत्यां कृतिषयां हृदयेषु बुद्धिः ॥ श्रद्धाः सत्यां कृत्यां स्वयं स्

त्रिगुणार्अप दोपेने ज्ञायसे हरिहरादिभिरण्यपारा ।। सवीश्रयार्ऽखिलमिदं जगदंशभूतमच्याभृताहि परमा प्रभृति-अप्रमाणे पूर्णकृति थयाप्या वसीर्थरानी होन पद्मोनोहरे पण तेम करता नथी पूर्णाङ्कृतिमां केवल नाल्किर तद संघोत्रणा खुवना सुकी वाताये होनई अने वसीर्यारामा पीनाधारा अव्वरित धवी जोहर जेनाथी कर्मकरंपायसनारतं जोईखंखित वर्तु नथी प्रयानार्वी श्रद्धा तथा उद्यारतार्था करवाना है ॥

्रीअप्रिवेंश्वानरः सात्रात् तस्मे नित्यं नमोनमः ॥ १६ ॥ इद्मम्नवे वेंश्वानसय वसुरुद्धदित्वेभ्यः शतकतवे सत्पते हैं अग्नवे अञ्च्यक्ष नमम् ॥ नौलिकेरं होमयेत् इति पूर्णाहृतिः ॥ ततो वसोर्वारां सुहुयात् ॥ तत्र मंत्राः ॥ १ ॥ ऋषिरुवान् ॥ १ ॥ शक्तादयः सुरुगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दसत्मिन सुरास्विले च देव्या ॥ तां सुष्टुदः ।

स्त्वमाद्या ॥ ७॥ यस्याः सूमस्तस्रता ससुदीरणेन नृप्तिं प्रयाति सकल्छे मखेषु देवि ॥ स्वाहाऽसि वै 💸 म०१ <sup>९</sup> पितृगणस्य च तृप्तिदेतुरुवार्यसे त्वगत एव जनैः स्वधा च ॥८॥ या सुक्तिदेतुरविचिन्त्यमहार्त्रता त्व मभ्यस्यसे ै धुनियतेन्द्रियतस्वसारेः॥मोञ्जार्थिभर्मुनिभिरस्तसयस्तदोपेर्विद्यार्थसः सा भगवती परमा हि देवि॥९॥ शब्दारिमका ै सुविमुरुम्पेञ्जपं निधानसुद्रीथरम्यपदपाउवतां च साम्राम्।।देवि त्रयी भगवती भवभावनाय वार्ताच सर्वजगतां परमा- 🕃 िर्तिहन्त्री ॥१०॥ मेषार्शसे देवि विदिवाखिलशास्त्रसारा दुर्गार्शसे दुर्गभवसागरनोस्संगा ॥ श्रीःकेटभारिहद्वेवककृता-

े भिवासा गोरीत्वमेव शिरामोळिकृतप्रतिष्ठा।११॥ईपत्सहासममलंपरिष्र्णचन्द्रविष्यानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्त-्रमा।अत्यद्भतं प्रहृतमात्तरुपा तथाऽपि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिपासुरेण।।१२।। दृष्ट्रा सु देवि स्त्रपितं भ्रुकुटीकरालः ्रमुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यत्र सद्यः ॥ प्राणानमुमोच महिपस्तदतीव चित्रं केर्जीव्यते हि कृषितान्तकदरीनेन 🕃

॥ १३ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती छळानि ॥ विज्ञातमेसदछुनेव यदस्तमेत 🞖

त्रीतं वर्रुं छविपुरुं महिपास्तरस्य ॥ १४ ॥ ते संमता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदिति धर्म- 🦠 वर्मः ॥ धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा वेषां सदाऽन्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्पाणि देवि सक- 🐇

🗱 🛮 १८ 🛮 दृष्ट्रैव किं न भवती प्रकरीति अस्म सर्वाञ्चसनरिष्ट्र यस्त्रहिणोपि शस्त्रम् 🛭 छोकान्त्रवान्तु रिपवीऽपि 🏋 🐉 हि शस्त्रप्रता इत्थं मतिभर्वति तेष्वहितेषु सान्वी ॥ १९ ॥ सङ्गप्रमानिकस्विस्फ्ररणेस्तथोष्ठैः श्रूलाश्रकान्तिनिवहेन 🎼 हशोऽस्रराणाम् ।। यत्रागता विरुयमेश्चमदिन्दुखण्डयोग्याननं तव विरोक्यतां तदेतत् ।। २० ॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं 🕍 तिव देवि शीलं रूपं तथेतदविचिन्त्यमन्तरूपमन्यैः ॥ वीर्यं च इन्तृहत्तदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितेव दया 🕄 🎼 त्वयेत्यम् ॥ २१ ॥ केनोपमा भवतः तेऽस्य पराक्रमस्य रूपं चराञ्जभयकार्यतिहारि कुत्र ॥ चित्ते कृपा समरीनष्ट्रस्ता 🕍 🖫 च ह्या स्वयंत्र देवि वरदे भुवनञ्चयेऽपि ॥ जैलोक्यमेतद्विलं रिप्रनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्थनि तेऽपि इत्या ॥ नीता दिवं रिप्रगणा भयमध्यपास्तमस्माकमुन्मदछत्तरिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ श्रुल्ट्रेन पाहि नो देवि पाहि सङ्गेन

हानि संदेव कर्माण्यत्याद्दतः भतिदिनं स्रकृती करोति ॥ स्वर्गं भयाति च ततो भवतीप्रसादाछोकत्रयेऽपि फल-दा नसु देवि तेन ॥ १६ ॥ दुर्गे स्प्तता हरिस भीतिमशेषजंतोः स्वस्थेः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ॥ दारियदुःसभयदारिणी का त्वदन्या सर्वोषकारकरणाय सदार्दिचित्ता ॥ १७ ॥ एभिईतैर्जगदुपैति सुसं तथेते हैं । कुर्वन्तु नाम नस्काय चिराय पापम् ॥ संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नृतमिहतान्विनिर्हसि देवि विम्कि ॥ वण्यस्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४ ॥ प्राच्यां स्थ पतीच्यांच चण्डिके रक्ष दक्षिणे ॥ 🐉 प्र०१ श्रामणेनात्मश्रुलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५ ॥ सीम्यानि यानि रूपाणि त्रेलोक्ये विचर्सन्त ते ॥ यानि र ्ट्रे चात्पर्थचेताणि ते स्थास्मांस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ खड्गश्रूलगदादीनि यानि चान्नाणि तेन्त्रिके ॥ करपछवसंगीनि ँतैसमान स्त्र सर्वतः॥ २७॥ ऋपिस्त्राच ॥ २८॥ एवं स्तुता सुरैर्विद्यः क्रसुमेर्नन्दनोद्ववेः ॥ अचिता जगतां थात्री तथा गन्पानुरुपनेः ॥ २९ ॥ भक्तवा समस्तैश्चिद्शैर्दिज्येभूषेः सुभूपिता ॥ प्राह प्रसादसुसुद्धी समस्तान्धः णतान् सुरान् ॥ ३० ॥ देव्युवाच ॥ ३१ ॥ व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ददाम्यहमतिपीत्या हैं स्तवेरोभिः सुप्रजिता ॥ ३२ ॥ देवाऊचुः ॥ ३३ ॥ भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ यद्यं निहतः ्री शत्रुरस्माकं महिपासुरः ॥ ३४ ॥ यदि चापि वसे देयत्स्वयाऽस्माकं महेश्वरि ॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेयाः वस्मापदः ॥ ३५ ॥ यश्च मर्त्यःस्तवेरोभिस्त्वां स्तोष्यत्यमङानने ॥ तस्य वित्तर्घिविभवेधनदारादिसंवदाम् ॥३६॥ મધ્યમ ्री वृद्धपेऽस्मत्मसत्रा तं भवेषाः सर्वदाग्विके ॥ ३७ ॥ ऋषिस्वाच ॥ ३८ ॥ इति प्रसादिता देवेर्जगतोऽर्थे तथा-ं ऽऽसनः ॥ तथेत्युक्ता भद्रकाली वभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुस ॥ देवी 🚦

🐉 ।। अद्धां मेशां पराः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं वरुं ।। तेजमायुष्य मारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ।। १ ।। यथा 🔀 ्री राख प्रहाराणां कवचं भव सर्वदा ॥ एवं दैवोपधातानां शांतिर्भवति वारुणं ॥ २ ॥ इति मंत्रेण ललाटे ग्रीवा यां दक्षिणांशे हृदि एततस्थाने भस्म धारणं कुर्यात ॥ ॥ हृस्ते जलं गृहीत्वा ॥ आचारादि पूर्णाष्ट्रति पर्यंतं य-

दिवशरीरेश्यो जगत्रयहितेषिणी।।४०।। पुनश्च गौरीदेहात्सा ससुद्वा यथाऽभवत्।। वृथाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भः 🕺 तिशुम्भयोः ॥ ४१ ॥ स्टकाण च लोकामां नेवानां स्टब्स्याः ्रीतिशस्त्रायोः ॥ ४१ ॥ रक्षणाय च लोकानां देवानांमुपकारिणी ॥ तन्त्रणुष्य मयाऽऽस्यातं यथावत्कथयामि ते 🕏 🏥 ॥ ४२ ॥ इति राकादयस्वतिभिः वसोर्घारां जहयात वा प्रधान देवसकेर्ज्जह्रयात ॥ इदं गृडाग्नये नमम हाति।। 🎇 हुनोपरि प्रगीफलं निधाय ॥ भोभोवन्हे महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधक ॥ कर्मांतरेपिसंप्राप्त सांनिध्यं क्रठ 🔀 🌠 सादरं ॥ नमः ॥ इति मंत्रेण होमयेत स्त्रकलश समिपे छशे त्यागःस्थंडिलस्य ईशानकोणात ख़ुवेण भस्मे गृहीत्वा 🎖

•को॰ हैं प्राशनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥ अग्नै। पवित्र प्रतिपत्तिः ब्रह्मणे पूँणेंपात्र दानं ॥ कृतस्य कमेणः सागताासप्य- 🔉

(U)

वृहस्पतिः ॥ भर्गमिद्र श्र वासुश्र भगं सप्तर्पयो दद्दुः ॥ अमृताभिषेकोऽस्तु ॥ ततः श्रेयः संपादनम्॥ यजमान-हस्ते जर्ल गृहीत्वा ॥ अचेत्यादि० कृतस्य कर्मणः सांगतासि पर्य त्राह्मणेभ्यः श्रेयोंगीकरण महं करिण्ये ॥ 🕻 त्राह्मणः उदह्स्सोपविश्य ।। जलं गृहीत्वा ॥ अद्यत्यादि०कृतस्य कर्मणः सांगतासिष्यर्थं यज्ञमानाय श्रेयोदानं 🖔

मसाथी जारभी जेटहा राजिनोये अप होम पाठ विमेरे कथी है तेर्नु फल आनल तथासीपारी उंडे तमनेसोर्धेष्ट, एमक्हीपाणीसोपारीयनमाननाहायमा आपवी, 💝 ।।५७॥ प्राजानार्योदिमाहरणोने दस्त्याभाषी तेमावदानेएकमोचो आपनोतया आचार्यने गाय आपनानोइये ते नहोयतो तेनीनिष्करयेनेटलीदस्यणाभाषी. रुनिनोने वयाशाकि दक्षिणा आस्त्री दक्षणाजपायान्त्रीर।सानारात्रमा थी भरी तेमा सुवर्णमुनी पोतानुमोडुं नोइ तेमाधी पी जणवस्तत बहारकारी झाराणीने तेमात्र आपत्र-

र्थं त्रह्मन् इदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं तुभ्धमहं संपददे ।। प्रतिमृह्मतां इति यजमानः ।। प्रतिह्नामि इति ब्राह्मणः 🖯 ॥ वंणीता विपोकः ॥ विदोकोदकेन यजमान मूर्थान मभिषिचेत ॥ मंत्रेण ॥ भगन्ते वरुणोराजा भगं स्त्यों 🕏

अर्थ-परीकुशाही पूर्णररी बब्बने पूर्णपाननी दशणाआपी प्रणीतीनुं पाणीबोठी तेनाथी यजवानने माथे छाटबु पत्री यजवानने अभिरोक वर्षोत परीक्षेप-महणकरी माद्याणीने दक्षणाआपदी,रक्षिमे होळतु-श्रेयलेदाया बेहेला त्राह्मणपुत्रनकरी माह्यणेपीताना हापपापाणीतगासीपारी लड्डेहेर्डु के आजे तमारा कर्मपा

करिन्ये ॥ शिवा आपःसंतु ॥ संतु शिवाआपः ॥ सोमनस्यमस्तु ॥ अस्तु सोमनस्यं ॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥

आचार्धदीनां प्रजनप्रवंक दक्षिणाप्रदानं करिष्ये ॥ ऋतस्यक० इमां दक्षिणां तुभ्यमहं० अथ दानानि ॥ स्वर्णां गो म् तिलान्दयात् सर्वे दोपापनुत्तये ॥ सबस्रं सहिरण्यं च प्रजयेत् ब्रह्मणःसतः ॥ आचार्याय गां त्रक्षणे अमङ्गाहं उक्तोक्तरानानि दत्वा ॥ ततोस्थयापात्र दानं ॥ कांस्यपात्रे सहिरण्यं वृतं प्ररापित्वा ॥ सपत्नीकः छायां निरीक्षेत् ॥ आज्यंतेजःसमुद्दिष्ट माज्यं पापहरं परं ॥ आज्यं सुराणा माहार माज्ये ळोकाः प्रतिष्ठिताः ॥ इदं छायापात्रं चृतप्रसितं सूर्यदेवतं कृतस्य कर्मणः सांगतासिष्यर्थं सदक्षिणाकं कस्मेचितभक्षणाय दास्ये ॥ अथ पीठदानं ॥ इतस्य॰ इमानि गणपत्यादिदेवानां पीठानि दास्यमानो-||९| परकरसाहितानि गंपपुष्पाद्याचितानि आनार्याय दास्ये ध्दानसां।।दञ्जणांतु०।।ततः स्थापितदेवताकलशोदकं एकस्मि

अस्त्वस्त गरिष्टं ॥ गंधाःपांतु ॥ अक्षताःपांतु ॥ पुष्पाणि पांतु ॥ यत्पापं रोगमश्चम मकत्पाणं तहरे 🕌 प्रतिहतमस्तु ॥ यच्ह्रेय स्तदस्तु ॥ भवन्नियोगेन अस्मिन्नभीण यत्कृतं आचार्यत्वं यत्कृतं नद्मात्वं तथा च एार्भेः त्राह्मणे:सह यःकृतो होमः ।। यःकृतो जपः ।) आचार्यादयत्वात् होमाजपा चदुत्पत्रःश्रेयः तत्असुना साक्षतेन 🕏 सजलेन प्रगिष्ठलेन तुम्यमहं संप्रदरे ॥ तेन श्रेयसा तं श्रेयोवाच भव ॥ भवामि इति यजमानः ॥ ततः

के की हैं न्यांत्रे प्कीकृत्य॥ दुर्वा पंचपल्लैः उदङ्मुल आचार्यादयः सपत्नीकं यजमानं प्राङ्मुलमुपविष्टं अभिपियेखुः ॥ है पर्वे विक्र मेत्राः ॥ अभिपेके पत्नी वामतः ॥ शकादिदशदिक्याला ग्रह्मेशाः केशवादयः॥आपत्ते व्लंख दीर्भाग्यं शांति है विक्र मंत्राः ॥ अभिपेके पत्नी वामतः ॥ शकादिदशदिक्याला ग्रह्मेशाः केशवादयः॥आपत्ते व्लंख दिवा ॥ शा है दद्व सर्वेदा ॥ शा समुद्रा गिरयो नद्यो मुनयश्च पतित्रताः ॥ दीर्भाग्यं व्लंख ते सर्वे शांति यच्छंत् सर्वेदा ॥ शा है विक्रुल्कोरुजंघास्य नितंबोदर मालिके ॥ सनोरो बाइहस्तात्र श्रीवायां सर्वसंथिष्ठ ॥ ३ ॥ नासा ल्लाटकर्णभ्र है

केशांति श्रुचयिस्थतं ॥ तदापो व्ह्नेतु दोर्भावयं शांति यन्छंतु सर्वदा ॥१ ॥ एतद्भै पावनं स्नानं सहस्राक्ष सृषि है स्मृतं ॥ ते नत्वा शत धारेण पावमान्यः पुनं त्विमां ॥ ५ ॥ एभिमैत्रेः अभिषेकं छुपीत ॥ अभिषेकानंतरं १ स्मानं वा पादप्रसालनं कृत्वा उभयोः स्नानवस्नत्वागः ॥ वस्त्राणि आचार्याय दृश्यात् ॥ सपत्नीकः यजमानः श्रुक्तमाल्यांवरधर वृतमंगलितिलकः स्वासने उपविश्य आचम्य ॥ कृतस्य० यथासंख्याकान् बाह्यणान् खुवासिः (१) मदाधरः ॥ गर्भाषानादि संस्कारे वाक्रणान् भोजपे इत्र ॥ व्यविव्यादसंस्कारे वचावनेवला विषो ॥ आवसक्ये वचित्रमत

यावद्रागिवराग राग रमणं रामावणं श्रूचतो तावन्तं सल्लुपुत्रपोत्रविवरं विष्णोःपद माप्तवान् ॥ ३ ॥ येनाक्षरं समान्तरं मिरान्तरं समान्तरं मिरान्तरं मिर

विष्णोः सपर्पितं सर्व सास्थिकं फर्क्टं भवेत ॥

्रीनीः बड़कान् कुमारिकाः यथान्नेन अद्याहं वा यथाकाले भोजयिष्ये ॥ कृतस्य क॰न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थं हैं नानागोन्नेम्यः ब्राह्मणेम्यः यथाशिक भूयसी दास्ये ॥ आशिर्वादः स्वस्तियाचा॰ झुवंतु नः ॥ १ ॥ स्वस्यः है इस्तुते कुशलमस्तु चिरायु स्स्तु गोवाजिहस्ति घनघान्य सम्रक्षि रस्तु॥ऐश्वर्यमस्तु वलमस्तु रिप्तःश्वयोस्तु वंशे सदे-इस्तुते कुशलमस्तु चिरायु स्स्तु गोवाजिहस्ति घनघान्य सार्वाद्य सम्रक्ष यावज्ञारु सुक्तारु चारु चम्से चामीकरं चामरं॥

े मनसा चिंतितंकार्यं तस्तर्वं सफूर्लं भवेत ॥ आसध्यदेवाः प्रसन्नाः सन्तुः ॥ तथास्त्विति यजमानः ॥ विसर्जनं ॥ 🐉 🗝 🤇 ्रे यांत्रमहगणाःसर्वे स्वशक्त्यापुजिता मया ॥ इष्टकामप्रसिष्यर्थे पुनुशाममनायच ॥ स्वस्थाने गच्छ ॥ अप्तिं विसः 🔄 र्जन ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने एरमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयोदेवा स्तत्रगच्छ हुताशन ॥ गच्छत्वं भगवत्रमे 🦠 स्वस्थाने परमेश्वराहिन्यमादाय देवेन्यःशीवं देव प्रसीद मेशअद्यत्पादि०मया अद्यान्हि यथाशक्ति द्रव्यादिकेन यत् 🕻 कृतं कर्म तत् कारुद्दीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीनं त्राह्मणानांवचनात् स्थापितदेवतात्रसादात् सर्वे परिपूर्णमस्तु।। भो ै त्राह्मणाः सर्वपरिपूर्णमस्त्विति भवंतो द्ववन्तु ॥ २ ॥ अस्तु परिपूर्ण मिति द्विजाः ग्रूयुः ॥ इति त्रिः ॥ यस्य स्पृ- 🖔

त्या च नामोक्ता तपोयज्ञ कियादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति सद्योवंदे तमन्युतं ॥ प्रमादात्कुर्वतांकमे प्रन्यवेता 🕏 ष्यरेषु यत् ॥ सम्भा देवतिद्वष्णोः संपूर्णस्यादिति श्रुतिः॥विष्णवेनमो विष्णवे नमे। विष्णवे नमः॥इतिश्राजयानं दात्मज मूलरांकर शर्मणा विरचितायां विवाहकीमुद्यां ग्रहयत्रभयोगः समाप्तः ॥ મધ્યા

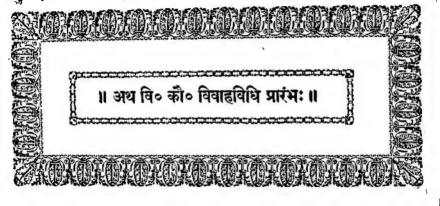
अर्थ~(१) अधि विसर्नन कतावतुं तेमां एक पाद वह तेमां आखं सोपारी एकनी ठंबेंग मुक्तिमंत्र भणी होमनुं तथा नमस्कार कर्यो. अहीया

परणनारने जसमे हाचे किरल बांधी गरुषु मोढुं करानी परमांतवानी रुपा आपनी 🛪 पत्नी पुण अक्षत छह देवीनी पासे रूमा मांगी "तेमते विमर्नन कर्षु तथा मोरेपी तथा नसत विष्णुमुं समर्थ करी नमस्कार करवा-पर्श मोरे मोरेपी केर्यु-चांछो करवा वाछी-ते व्यवहार करायी यजपानीने गोल

मराबा तेवा केन्द्रमात सोबारी पेसी व्यर्का तेना उपर नारियल सुकी तेना पर ककडो रेसमी सुकी नाडु बांधी तेने केन्द्र करी त्यांथी घरमां व्यर् जह गोज- 🕏 🗘 त्र पासे मुकाबर्वो ए पत्र एक रही है. आश्रमाणे प्रहरत्त्वो प्रयोग कह्यो-हवे पत्री विवाह संबंधी कार्यमा त्रे छप्त सम्यचा पूर्वमां कर्यच्यकर्म तथा रिवास तो केळच्यक होय छे ते रीवान प्रमाणे अपना छरूमा प्रमाणे अनुकुछ बखते करी छेना ते कहुं छुं अर्थ-बहुद्वाति थ्या पूरी नेने पर माता खावदानी श्वान होयूछे, तेले माता खावदा. तेपां पाते बाह्यबन्धं पर होय त्यां वैपराभाए मर्शननन्तुं, पूर्जी. त्यां रोफ्टीमो रेपेल्य नवांकुरी होय. तेने पुजामां वह गयला कुंकु भात चहारवा, तथा वह गयला वर्ड गालीयर तेना घरनाने आपी मंगल भीत माता 💠 े कि भाववं, पत्री मारणा अगाद्यो उत्पार्ता परवाला गांधी कोड़ स्त्री देना पायर दूधोंटी तेना पा थोड़ तेने छंकु अस्कादी चांछीकरी चार असत वसावे. 🕯 पर्दा ने मातामा मात्र छह गोत्रन अवाहि सुक्रवा, पठी तेनी पुचाकरी ते काम सवार कर्त्यु-माताने माटे थाल करवानी तेमां व्यवसी-सेटली-मग- 🔯 नग!–दुभगक-सेप–पाद इतथा दीवडा–पिगेरे करीने ने थारु पिरही राखवी–पछी परणीने आवे वर कन्या पत्नी मातानी पूना करी थालं∸धराववी-ए 💆 ैरिशन वरवाळाचे स्याहां होय के तेम कोइने ज्याहा माता व्यववानी हो तो पण नथी प्रदर्शाति थया पठी ओकरानुं घर होय तो ते. दीवले मोसाव्ट-ार्ट्स विभाग नेता जाते हैं। जार करते में क्षेत्र करते के ते छान केनारी में उजाति नेने चेर छद अबुटे तेना बरमांथी कीई पण की आवे ते आर्थ चांके। बरी ने बंबद मात तेना उपर प्यावे— पत्री अवधी मेते हर भाग असे गंडपमा मुक्ते, पत्री करणा अथना में परणनार होया, तेने बाग्य्यर नेसामी, हैं भोसारियामांभी चांडी करे पर्दा केम भरे तेमां नारियल सोपास पान मुक्ते तथा रुपियों मुक्ते पर्दा, छोकरों होय तो नोहा अनीश्रंयुं आंभी, अने हाधीनों हैं हैं

आरी गर्ल्यु मोर्डु करानी उठाउना, भरी दे यजपानना घरनी पूज्य जेने मानता होय तेने ( महियारी केहे छे ) तेने पाउठापर रेज्ञामी करूडो पाधरीने बे साईं प्रमान बली पासे तेना प्रमाध भीनदानी पारे तथा होचे केन्त करानी बांछो करानबो, पाजे तेना हाथमा पान ( ५ ) तथा सोपारी (५) दे तथा दस आरा-सुकारी हार पेहेरानबो तथा तेने बार दखत भातप्र क्यांनी उठाइनी-पाठी एक मटोडीनो पडो खानी तेमा ते महिपारी पासे पाणीपी कि िक्तीर 💸 ते होय ते तेना ह प्रमा मुझे- पड़ी नार जणी बधावे. पड़ी मोरे चाही करवाने आवनी. एम केहेनार्थी फेटा मोसाहित्या तरफना आवेटा छोड़ीमांभी 🚫 प्रच रे ्रेबारतो बांहो करने होय ते क्रॉ. नाय. ए प्रमाणे बीता पश्चाला पासे पण करावयो. पत्री मोसालातुं दाय ने होय ते आपी ए काम संपूर्ण करवं – 🔊 🕏 तेपन कन्यावालानं पर होच तो तेने पेर लमने दहांडे प्रदशांति पर रहा। पड़ी मोसालं आवे तेमां पेहेलां करा। प्रमाणे रीत करी कत्याने आपवापां चुड़ी-कांक्षण— वारी— तीश्र— अने पानेतर तथा दायीना ने मछे ते ठाळ्या होय हे आवी उपर प्रमाणे रीतभात करी ए काम संपूर्ण करवुं— पत्री कन्यावाळाडे त्था मावर्त संवादा पर्छ ने तेमा-अथेवालो पदाववो. ( मायरानो रीवान सुरत वीगेर केटलाठ गाममा ने उ) एने अंतरमंडप केहें हे तेमा एक निशा े स्थंडिलपर मुर्शन पूर्वपश्चिम पाटला गीठनी एक स्ती पुरुपतुं जीडुं पूर्वपश्चिमने भोडे नेसाटतु तेमने बरमाछ बालवी तथा केंकुना नांखा करवा पत्नी जिला बचवा है तेना पर भात करनु मुकी एक नारियल तैना पर मुकर्त ने दे नणने केंद्रेड के तभी गणपती तुं समरण करी बाटो ते बाटता नेनामा शक्ति होय 🧓 ते नारियल रह माय. पढी बरमास्य काही छह उंची मुक्के छांडवी एने अधेवाको यहेंजे. ए ध्यापडी करूना मुकडी विगेरेनो रिवान ने होय ते कन्यापाला 🕏 तथा वस्त्राहा करे पत्री कन्यातं पूर होय तो ते थया पत्री कन्यादे सारा मगछ द्वस्त्रप्ती करू दहीं, भात-आपटा तेल हलद विगरेणी नुवाडीने बैसाडपी गीनन पासे तेने बूडो विषेर सीमाम्बना इच्य पेराबी स्थापांतर्देवांतु पुनन करावर्त्तु तथा पानी वाडको ठाइ तेमा रूपा नाणु मुखी मोर्डु नोबाडी इट समरण करता वेतारहुँ नेमनवरना परतुं होयतो तेने का स्वान करावी गीजनका पूजा करावी थींगां मोडु नोवाडी चार ख्रीयो मही गेत परी तैयार कर्यापजी समानहाला मित्रमंडल मह एकता थर वार्मित्र साथे इपने समरण करता घोडापर नेशी संदेशन करता कन्यांने भंदणे नतुं पत्नी त्यां भर घोडा पराथे उत्तरी मेडपना सरणा अगाडी मुकेटो बानट तेनापर पूर्वीभि अथवा उत्तराभि सुसे उमा रहेतुं. आदास्य तथा स्टाप्रमाणे प्रयोग कको, पण एमां रुदीने वसारे 💸 आश्यम आपना शाल प्रमाणे करते जेनाथी पोतातुं तथा बीनातुं कर्म करवाथी करूयाण करी जयादि मेळवी अंते सारी मती सत् कर्यांथी मेळवें हिती 🕏

श्रीमयानद्वासम् मुख्यस्तर् वर्षणा विरनितायां विवादकीमुवां प्रथमप्रद्वाद्वाययोगः॥ १ ॥



ाप नमः ॥ श्रीसरस्वत्ये नमः ॥ अय विवाहकर्म प्रयोगः ॥ धर्मार्थकाममोक्षादि े वान्तरं गत्ना समावर्तनोन्तरं ब्रह्मचारिणा कन्यापाणिग्रहणं कर्तव्यं लक्षणसंपन्नां यत्नतः कन्यां परीक्षेत् ॥ तत्र कन्यादोपाः ॥निर्छणा श्रुक्तसंभापी कोधश्रका सरोगिग्णी॥विपयोगा

प्रथम विद्यान्यास थया पड़ी ज्योतिहारक्षेत्र। निवयो प्रभागे सासुद्रादिक चिन्हो ओई सारा सीमाग्यादि पुत्र प्रमृतादिक योगो पाठी कन्या नोर्व। तेथा केटलाक विज्ञाना प्राप्ताचा प्रसायी प्राप्त थयला दोचो पर विवास करको. तेमा जोवालायक ठोवो—सुद्धिवगरनी, बोवडी,नोपबाली,कंपरच खोगवाली, कुलनाया-

ं प्रतिप्रहेत् ॥ २॥ अथ कन्पाग्रणाः ॥ अन्यंगां दोपरहितां सुरूपां वयपूर्विकां ॥ सुवर्णां सुकुलोत्पन्नां शुभलक्षण संखुतां ॥ १ ॥ प्रतिमृण्हीत तां कन्यां कुलसंतानवर्षिनीम् ॥ इति कात्यायनः ॥ अथ वस्दोपाः ॥ मुकांषो प्पण रमञानेन्यो पुलिकां गृहित्वार्पिडाएकं कर्तथ्यं ॥ तमानुक्रमेण शयमेपिडेस्एटे घान्यवती भवति ॥ द्वितीपे पशुपती ॥ तृतीपेपिक्षोप्रसा चतुर्वे विभेक्कनी चतुरा सर्वजनार्जन पराभवति ॥ पंचवे शोमिणी ॥ पहेर्वस्था ॥ सप्तमे व्यभिषारिणी ॥ अष्टमेविथवा भवेदिति ॥

ज्याभ्यंतराणि स्तरीविंडान्करनेत्याथळावनोक्त विधिना वेदितव्यानि ॥ यथा ॥ पूर्वस्था रात्री गोप्तवेदिकाकित

ાલરા

<sup>'</sup>वं'ययोमा क्रलविष्वंसयोगका ॥ १ ॥ दिद्रजारयोगा च हीना चरण संयुता ॥ एतद्दोप दरीर्खेका तां कन्यां न

प्रकीर्तिताः ॥ तहोपप्रयक्ता ये तेष्र कन्या न दीयते ॥३॥ अथ वस्युणाः ॥ चमः ॥ कुलं च शीलं च वयश्च रूपं विद्या च निर्च च सनायतां च ॥ एतान् राणासुष्टुपरीक्ष्य देया कन्या सुधैः शेपमर्चितनीयम् ॥१॥ शाकटायनः ॥ चर्डियासदहेतकन्यां चतुर्थः एंचमो वरः ॥ पराशरमते पष्टी पंचमो न द्व पंचमीम ॥ २॥ एकजन्ये तु कन्ये द्वे प्रत्रयोर्नेकजन्ययोः ॥ न पुत्री द्रयमेकस्मै प्रद्यातु कदाचन ॥३ ॥ एकोदयोः कातलप्रहणं यदिस्या देकोद्रस्थ्∥ः बरवोः छलनाशनं च ॥ एकाव्दिके हि विचवा भवतीह कन्यां नदांतरेऽऽपि श्वभदं पृथुशैलरोघे ॥ २ ॥ नदान्तरेण हैं शिलान्तरं देशो रुक्ष्यते॥तथा च वसिष्ठ स्प्रतिः॥व्यवधानं महानद्या गिरिर्वा व्यवधायकः ॥ वाचो यत्र विभिद्यति∦ तदेशान्तरमुच्यते ॥ ५॥ एकमातृत्रसूतानां एकस्मिन्वस्तरे यदि ॥ विवाहं नेव क्ववीत बदन्ति मुनयो यथा ॥६॥ं हुँ कानारी, रादि, नार, तथा देख भाषाडी,वाने कारीने रारीर नेतं स्थमारतं छे ते दोनो किरोरी नोई देनी, गुणवादी कन्याना दक्षण-मारा कुलवादी, रूप तथा मुखी थिरेर व्हाववाली तथा प्रसमवाना चिन्हवाली तेने शुभ बहेक्के एवं। कन्या होती, ए प्रमाणे वर्ता होती नेरे, (मुगी)पागली,नवसक, रूपबी,कृष्टि

विगेरे रेमवाळे,मूर्ण,आधारवगरनो,क्षेत्र कर्म करनारो,पालंबी, सुगारी, विगेरे ) जोवाना छे,तेम सामान्य गुणो कुल्दवभाव, वेथे,रूव, विचा, धन,समावहाला

विषरः क्रजः स्तन्यः पंउर्नपुंसकः ॥ कृष्ठी रोगी ह्यपस्मार दशदोपाः प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥ च परं ॥ आचारहीनो मुर्खत्र कुरूपश्चीरजारकः ॥ पार्खर्डी च तथीन्मचो मूहकः कुरुदोपकः ॥ २ ॥ वृतकर्म स्तश्चेष दशदोपाः॥

विवाहस्त्वेकजन्याना मेकस्मिन्नुद्वे कुले ॥ नाशंकसेत्येकवर्षे स्यादकावभवा यतः ॥ ७ ॥ इति साहतासासवल्या 🔊 क्षीणां ग्रहवर्रुः श्रेष्ठं प्रहपाणां खेर्वरूम् ॥ तयोश्चंदवर्रः श्रेष्ठ मितिगर्गेण भाषितं ॥ ९ ॥ मनुना ॥ वैवाहिको । विधिःश्लीणा मीपनायनिक स्प्रतः॥पतिसेवा छरी वासो गृहस्थामि परिक्रियेति ॥ स्त्रीणां विवाहएवोपनयनं द्वि-जन्मन्यापादानपरं ॥ न मुण्डनं मण्डनतोऽपिकुर्या दिति निषेधात् ॥ गार्म्यः॥नांदीश्राद्धे कृते पश्चा द्यावन्मातृविन |सर्जनम् ॥ दर्श श्राद्धं क्ष्यश्राद्धं स्नानं शीतोदकेन च ॥१ ॥ अपसन्यं स्वपाकारं नित्यश्राद्धं तथैव च ॥ त्रह्म<sup>ू</sup> |यद्गाचाध्ययनं नदीसीम्रोश्रलंघनम् ॥ २ ॥ उपवासन्ततं चैव श्राद्धभोजनमेव च ॥ नैव कुर्युः सपिण्डाश्र्य 🕏 मंडपोद्रासनावधीति ॥३॥ विवाहत्रतचूडासु वर्षमर्थतदर्थकम् ॥ पिण्डान् सीपण्डा नो दशुःभेतर्पिडविनानेरेति 🕏 ै॥ ४ ॥ स्मृत्यंतरे ॥ पुत्रोद्याहाँन्नेवपुत्रीविवाहोऽपि ऋतुत्रये ॥ अद्यान्तरान्मुण्डनं च नेकदा मुण्डनदयं ॥ तत्र 🕺 |सायणीये ॥ एकस्मिन् शोभने वृत्ते विशुभं नैव कारयेत् ॥ यदि कुर्यात् प्रमादेन तत्र नस्याच्छुभं ध्रुवम् ॥ इह-किगेर नोई कन्या आपनी. हने घोणी पेटी साथे पांचमी पेटीनो वर जोईपे, तेम पांचमी साथे घोषो जोईपे पण चोथे चीथो, पांचमे पांचमी संबंध होय ती

नहिं परणावतो. वे बेहेनो एकन यरमां एक मानुनन्योनी साथे आपनाथी विश्वनादि दीयो पामै छे.तेमन वे छोकरीनां उटा एके दिवसे करां नहि. छोकरीने 💀

ि महरमबीत् ॥ अलाभे समुहूर्तस्य रजोदोषे सुपस्थिते ॥ श्रीयं संयुज्य तत्क्वर्यादृत्रहत्याभयंकरिय् ॥ स्वितिकोद- वि वययोःशुद्धचे गां दद्याद्धोमपूर्वकम् ॥ प्राप्तेकर्माणशुद्धिःस्वादित्तरिमन्नशुद्धन्वति ॥ एकविंशत्यहर्येहे विवाहेदशवाः वि सत्ताः ॥ त्रियद्वोत्रापनयने नांदीशाद्धं विधीयते ॥ विवाहविहिते तंत्रहोमकालसुपस्थिते ॥ कन्यामृतुमतीः हृष्ट्वा कयं क्वीति याहिकाः॥स्तरपित्वा तु तां कन्यामर्चियता यथाविधि ॥ शुंजानाज्याहृतिंहृत्वा ततः कर्माणि योज । वेष्त्रीयत् ॥ वप्रवस्पानुरजपाती नांदीशाद्धोत्तरं सहूर्तान्तरालामे संकटे श्रीशातिं कृत्वा कर्म मारभेत् ॥ स्वस्वलिवारः॥ । रजस्वलायाः कन्याया स्वस्त्राद्धं न वितयेत् ॥ अध्येऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रीयणार्वनात् ॥ अर्क स्वोविंहर्जार्या

पुरुष कर तथा छोकराने राक्ति कर मेह विवाह करके, तेमन रूप्त धया पत्री मुडन करके कोंह तेमन नांदीश्राद्ध थया पत्री मातार्त विप्तर्गन धाय स्वांसुधी करायत सीमोहोनन उपकास, मत, श्राद्ध, भोजन, विगेरे स्थाप करवा, विवाह तथा गुंडन अथवा अनोह यथा पत्री सिंपेडियोए प्रेतीर्थक शिदाय १ महिना

\*\*\*

स्पतिः ॥थस्याःक्रियायाः संप्राप्तः कालोमासैर्दिनैरपि ॥ न तत्र मोव्यदोपोस्ति अस्तो वा ग्रह्युक्रयो सिति॥वतयञ्च विवाहेषु श्रास्त्र होमार्चने जपे ॥ प्रारंभे सृतकं न स्यादनारंभे तु सृतकं ॥ प्रारंभोवरणं यत्ने संकल्प व्रतसत्रयोः ॥ नांदीसुखं विवाहादी श्रास्त्रे पाक्रपरिकिया ॥ वधूवरान्यतस्योर्जननी चेद्रजस्वला ॥ तस्याध्युद्धेः परकार्य मांगल्यं कौ॰ 👸 रोहिण्यके वलास्मृत् ॥ कन्याचंद्रवलं शोक्ता उपली लगतोवला ॥ अप्टवर्षभवेद्रीरी नुववर्षा चु रोहिणी ॥ दशवर्षा 👸 घ॰ २ है भवेत्कन्या अतुक्रवे स्जस्वला। कमलाकरेशब्रह्मार्पदेव, प्राज्यपत्य गंधर्वासुर सक्षस पैशाचाष्टी विवाहः ॥ माध-९२॥ है बीये नास्दः ॥ पितादद्याद स्वयं कन्यां भ्राता चातुमते पिद्धः ॥ मातामहो मातुलश्च सङ्ख्यो जननी तथा ॥ है ं मातात्वभावे सर्वेषां प्रकृतो यदिवर्तते ॥ तस्यामपकृतिस्थायां कन्यां दद्युःस्वजातयः ॥ संवर्तः ॥ अलंकृत्य तु यः 🗟 कन्यां भूगणाच्छादनादिभिः ॥ दत्वा स्वर्गमवाप्रोति प्रज्यते वासवादिभिः ॥ सर्वत्र प्राङ्मुखो दाता प्रतिप्राही 👸 े उदर्मुखः ॥ एपएव विधिर्यत्र कन्यादाने विपर्वयः ॥ इति ऋष्यशृंगः॥हस्तोन्छाया वेदहस्तैः समंतात जुल्याः 🟅

वेदी सद्भातो वामभागे ॥ विवोहे कन्या हस्तेनैव वेदिनिर्माण मिति सहूर्तविंतामणी ॥ कन्याहस्तैः पंचिमि 😤 सप्तमिनी वेदि क्रयीत मंदिरे वाममागे ।। तां श्रुद्रोनोपलिपेत नवंश्याविषयास्त्रियां इति गृह्यसंग्रहे ॥ उदगयन

आपूर्यमाणपक्षे प्रण्याहे क्रमायीः पाणि गृण्हीयात् ॥ विवाहर्शीद्धं प्रवदंति सन्तो वात्स्यादयस्त्री जिनजन्ममासा 🎘

हैं। सुधी आहादिनो त्यान करते। होव नेनो काल प्राप्त पर्योजे तेने मोट गुरु ह्युकास्तादिनो दोष न जोता ते करपामा प्रापक्षित नधी. अतहोम यद्यदिवाह— अहद पुमकादिनो आरम थया पठी सुस्कादिनो दोष लागतो. नथी आरमना पूर्वमा प्राप्त थाय तो वरत नहीं,पारंमना नियमो यद्यमा वरण थया पठी मत अने

र् अभस्तत्य तेस्त्रमोदितो यथाविभवमश्वादियान मारुद्य धृतशितच्छन्नः स्विनित्तर्गातियांप्रवेः ॥ स्वस्तिर्यानिति हैं संगठ स्वस्ताप्रवेद परेग्रीह्मणे:प्रश्मीभिःप्रणैकठशोदकपान्नं कन्यापुष्पाक्षत दीपमालाध्वज ठाजेर्मगठत्र्यग्रीपे- दे समानित्र स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वा

है। सबस संख्य थया पत्री विवाहमा नादी तथा श्राद्धमा स्तेह थया पढ़ी विन्त आंके तो तेने दोष गणको नहीं तथा करवानी माने उजीदर्शन थाय तो तेनी हैं। है। ब्राइट पत्री रूप वार्य करवु—पत्री मुद्दूर्व न पछे एम होय तो योजा शाखोना प्रमाण जोवादी करवे नाडीध्याद्ध नेरण दिवस पेहेला वरवु. यज्ञमा दिवस

दिति ॥ अत्रनष्टुक्स्योर्घटिकादिविचासेग्रहम्हादिकं पृण्याहादिविनिर्णयो लमशुद्धिश्चेत्यादि ज्योतिःशास्त्रे होयं।। विस्तरभया न्नात्र लिखितं ॥ इति शास्त्रार्थः ॥ अथ विवाहः ॥ वरःकृतनित्यिकयो विधिवत् कृतस्वस्ति वाचनो । जाद्यणैः सह सात्विकाहारं भ्रक्ता इसद्धौतं नवं स्वेतं सदशं परेणाभ्रतं वस्त्रयुखलं परिभाय स्वेष्टदेवता पित्रादीः ॥ • ौ ॰ 🐉 प्राणानांपम्य ॥ शांतिपाठं पदेयुः ॥ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहो। विष्णुं रुदं शिवालवर्मी वंदे भक्तया 🗳 🗝 🤻 ्रै सरस्वती ॥ १ ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दीननाथं निशाकरं ॥ घरणीगर्भसंभूतं शशिषुत्रं बृहस्पति ॥ २ ॥ ें देत्याचार्यं नमस्कृत्यछायाषुत्रं तथेव च ॥ सहुं केल्लं नमस्कृत्य पूजारंभे विशेषतः ॥ ३ ॥ शकादिदेवताः सर्वा े नमस्रुप सुर्नि ततः ॥ मर्गसुर्नि नमस्रुत्य नारदं सुनिसत्तमं ॥४ ॥ वसिष्टं सुनिशार्द्रुलं विश्वामित्रं च गोभिलं॥ 💸 431 ेव्यासं कर्ण्व हृष्किरां देवलं गीतमं कृषं ॥ ५ ॥ अगस्त्यं च युलस्त्यं च दक्षपुत्रं पराशरं ॥ विद्याधिकान् सुनीन् 🖇 सर्वात्राचार्याश्च तपोधनान् ॥ ६ ॥ तान्सर्वान्त्रणमामच स्तंत्र मे ममाध्वरं ॥ अन्ये विद्यास्तपोष्ठक्ता वेदशास्त्र े विचक्षणाः ॥ इति शांतिपाटः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीग्रुरुभ्योनमः ॥ परमग्रुरुभ्यो नमः ॥ परात्परग्रुरु भ्योनमः ॥ इष्टदेवतायैनमः॥कुरुदेवतायै नमः ॥ ग्रामदेवतायै नमः॥ शचिषुरंदाराभ्यां नमः ॥ सर्वेभ्योदेवेभ्यो ं नगः ॥ सर्वेभ्योत्राह्मणेभ्योनमः ॥ सुसुखञ्चेकदंतश्च कपिछो गजकर्णकः ॥ छंत्रोदरश्च विकटो विप्ननाशो विना-114,811 (२१) विज्ञहमा दिवस (१०) धुंडन तथा जनोर्गा दिवस (१) अधवा (६) दिवस धेदेश करा. मीरी कन्याने सूर्य गुरुतुं वल जोटुं. रोहि-वीने मूर्युतुं वल तेम कन्याने वंदर्शु वल जोर्नुं का स्थारप्रजिनीने वेलल लग्न ज्ञाद्वि जोर्हने ज लग्न करी नालवा. विवास आठ प्रकारको के तेमा एकेकभी .

पतपेनमः ॥ ६ ॥ वन्नतुंड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ॥ निर्विध्नं कुरु मे देवसूर्वकार्येषु सिद्धिद् ॥ ७ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्तितेपाममंगलम् ॥ येषां हृदिस्यो भगवान्मंगलायतनं हृतिः॥ ८॥ तदेवलमं सुद्धिनंतः चंद्रबलं तदेव ।। विद्यावलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपतेतिप्रियुगं स्मरामि ।। ९ ।। यूत्रयोगीश्वरः यत्रपार्थोधनुर्धरः ॥ तत्रश्री विजयो भृति र्घुवा नीतिर्मतिर्मम् ॥ १० ॥ सर्वेष्वारंभकार्येष क्केक उत्तरतो छे.मञ्जूआरं,देव, गावर्व, प्रामायत, आमुर,सराम,नैशाच एवा आड प्रकारना विवाहमांपी पूर्वना चार विवाह सारा कहेवाय डे. तेवी रीते रुन्यातानना आपनारा १९१ अनुरुपे उतरता होय है. ते निवा ते ना होय तो चह, (पेताना पिता,अने माना नाष,मामा अथवा माता अथवा कुरुपार्था कोई 💸

ते व होय तो अपदा क्षत्री न्यातनात्रा कोई एव मनुष्ये कन्याने सौभाग्यनी वस्तुओ आधी अलंहत करी कन्यादान कोठे तेने स्वर्ग प्राप्त धर दरेक प्रका-

यकः ॥ १ ॥ ५म्रकेतुर्गणाभ्यक्षे भालवंद्रो गञाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रण्यादपि ॥ २ ॥ वि-🖁 द्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।।संग्रामे संकटे चैव विघस्तस्य न जायते ।। २ ।। शुक्रांत्ररघरं देवं शशिवणै चुद्धर्भुजं ॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविष्नोपशांतये ॥ ४ ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कृतस्तेषां पराजयः ॥ येषामि- 🕏 दिवरस्यामो हृदियस्थो जनार्दनः ॥५॥ अभीप्तितार्थसिथ्यर्थं प्रजितो यः प्रसन्तरेः ॥ सर्वविध्नहरस्तरमे गणाधि-।

त्रयाश्चिभुवनेश्वराः ॥ देवा दिशन्तु नः सिर्छि ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥ साक्षत जलमादाय ॥ विष्णु 🖟 विष्णु विष्णुः श्रीमञ्जगवतो महा पुरुषस्य विष्णोसञ्जया प्रवर्तमानस्य अद्यग्रहाणो श्वेत वाराहकत्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टार्विशतितमे प्रथमचरणे भूलोंके भरतसंडे जंबूद्वीपे दंडकारण्ये 6411 नर्मदातपत्योः दत्तिणतरे बोद्धावतारे शालिबाहनशके संवत आपाहादि अमुकामुकाधिकेऽदे संवत्सरे अमुकायने अमुकऋती मासोत्तमेमासे अमुकमासे अमुक पते अमुक तिथी अमुक वासरे चंद्रे सूर्ये त्य्रे ग्रुरो च रोपेष्ठमहेषु यथायथा सशिस्थानस्थितेषु सत्स्र एवं महगणविशेषण विशिष्टायां

पुण्यतिथी करिष्यमाणविवाहांगभूतं वाग्दान महं करिष्ये ॥ इति कन्यापितुः ॥ वरिपता ॥ करिष्यमाण विवार हांगभृतं कन्या निरीक्षणं करिष्ये ॥ तदंगभृतं दिग्रक्षणं कलशार्चनं गणपतिप्रजनं वरुणप्रजनं च करिष्ये ॥

रनां ते सुखो मोगडे छे.दरेक कर्ममां दान आपनारो पूर्वने मोडे वेसे अने छेनारो उत्तरेन मोडे बेसे १ण कम्यादान एक्ते हाताचे उत्तरने मेडे तथा छेनारे पूर्वन मेंद्रे बेती हेर्नु, विवाहमां कन्याना हाथना प्रमाणयी बेदी करवी ते यही नथी तेनी ठेकाणे ( मायर ) करेंग्रे,एने अंतरमंडप व्हेंग्रे, ए पांच हाथ अध्यक्ष सात हार्थनी ठंनारूपी करनुं तथा चार हाथ बोलारूपी करनुं तथा धर्मा अभी नामु तरफ करनुं, रहीथी घरना वरणानी सामृं करेने, उत्तरायणामां उचोति- 🧏

भेत ॥२॥ यदत्र संस्थितं मृतं स्थानमाश्रित्य सर्वेदा॥स्थानं त्यक्त्वा छ यत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥३॥ मृतानि 🛭 🕻 सत्ततावापि येऽत्र तिष्ठति केचना। ते सर्वे व्यपगच्छन्तु देवप्रजां करोम्यहम्॥शासर्वस्यांदिशि सर्पपान्विकीरयेत् ॥ वामपादपार्वणना भूमी घातत्रयं कृत्वा ॥ उदकस्पर्शः ॥ स्ववामे अक्षतपुंज्ञोपरि कलक्षं संस्थाप्य ॥ तत्र तिर्धान्यानाद्य ॥ सर्वे समद्रा सरितस्तीर्यानि जलदानदाः ॥ आयान्त्र ममशांत्यर्थे द्वस्तिक्षयकारकाः ॥ १ ॥ गंगे च युमुनेचैव गोदावरी सरस्वती॥नर्मदे सिंधुकावेरी जलेऽस्मिन् सिन्निधिकुरु ॥२॥ बह्माण्डोदस्तीर्थानि करेःस्प 🕌 ष्टानि तेस्वे ॥तेन सत्येन मेदेव तीर्थं देहि दिवाकर॥३॥इति मंत्रेण तीर्थान्यावाहा॥इस्ते अक्षतान गृहीत्वा॥ अस्मि-🔯 -कलरी सांगंसपरिवारसाञ्चर्यं सरक्तिकं प्रजार्थेवरूणमावाह्यामि॥प्रजयामि॥वरुणायनमः॥गंधेसमर्पयामि॥वरुणा- 🕏

बाद्यादियं प्रमाण बतेरा दिश्मो कुमार्गनुं पाणीधहण करावतुं तेपन कप्रसमये परिज्ञादिनुं स्थापन करी झुद्ध छत्र नोह राखतुं, यनपानीना गीव शास्त्रादितुं है हुन समयाद्वसर निर्कित न होवाधी तेपन परासर तथा शतक्य श्रुतिन प्रपाणी सरकी प्रमाकाश्याय ने माटे कारयगोत्र परमानीनुं हे. हेपादि मंगतुं

इत्युभी कृत्वा ॥ वामहस्ते सर्पपान मृहीत्वा ॥ अपसर्पन्तु ते भूता ये भृता भृमिसंस्थिताः॥ये भूता विप्रकर्तार-स्त नश्यन्तु शिवाञ्चया ॥ १ ॥ अपकामन्तु भृतानि पिशाचाः सर्वतोदिशं ॥ सर्वेषामविरोधेन प्रजाकर्म समार- कि को हैं। ये पुष्पं व्यरुणाय व्यूपं स्व्यरुणाय व्दीपं व्यरुणाय व्नैवेद्यं व पुष्पं गृहीत्वा ।। एहेरिह यादोगणवारिधीनां गणेनपर्ज्ये 🐉 न्यसहात्परोभिः॥विद्यार्थरेन्द्रामरगीयमानः पाहि त्वमस्मान् भगवज्ञमस्ते॥वरुणायनमः ॥ प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं ॥६६॥ 🥇 समर्पयामि ॥ अनेन प्रजनेन सांगःसपस्विारः वरुणः त्रीयतां ॥ गणपतिप्रजनं ॥ हस्ते अक्तान गृहीत्वा ॥ े आवाहयामि विद्नेशं सुसाजार्चितेश्वरं ।) अनाथनाथसर्वज्ञं प्रजार्थं गणनायकं ।। विद्नहर्तारं गणेशं सांगं 🖔 सपरिवारं साखुर्वं सशक्तिकं आवाह्यामि॥ प्रतिष्ठासर्वदेवानां मित्रावरुणीनर्मिता प्रतिष्ठांतांकरोम्यत्र मंडले 🤻 🕺 दैवतेःसह ॥ गणेशःस्रप्रतिष्ठितो वस्दोभव ॥ प्रतिष्ठांते पूजनं ॥ सपीरवासय गणेशाय नमः आसनं॰सपरिवास-य गणेशाय नवः॥पादयोःपाद्यं स॰सपरि०गणेशाय०अर्ध्यं स॰सपीरवा०गणे०अर्घ्यान्तेआचमनीयं स० शसपरि॰ गणेशाय स्नानं सः।।सपरिञ्गणेशायञ्चलं सञ्सपरिञ्गणेशायञ्यज्ञोपवीतं सः।।सपरिञ्गणेशायञ्चेदनं सञ् ्रसपरि॰गणेशाय॰अलंकारार्थे अक्षताच् स॰सपरि॰गणेशाय॰पुष्पं स॰सपरि॰गणेशाय॰स्रशोभनार्थे सीभाग्यदर्व्यं 🕏 गद्देश वण एसन कहेतु के. गीत्रनो नाद्य पताधी कारपव गीत ग्रहण करतुं. माटे नीना गीवनो उचार न करतां कारपवाणि सपमाण ग्रहण करतुं वर्ला कम्यान ना देहना प्रमाण करीने मना भावं तथा तेनी सत्ताबीम तारनी विवेट करनी अने ते कोडियामां मुकी तेल पूरी दीवो करने एम छे, पण अनास्पी

स्त्रा। सपरि॰ गणेशाय॰ प्रसन्नाथें दुर्बीकुरान्स॰ ॥ सपरि॰गणेशाय॰धूपंस०॥ सपरि॰गणेशाय॰दीपंस०॥सपरि॰ गणेशाय॰ नैवेदांस।।सपरि॰ गणेशाय॰ तांबुरुंस।। साहुण्यार्थे दक्षिणांस॰ सपरि॰ गणेशाय॰ प्रदक्षिणांस॰ ॥ 🗒 अंजली प्रव्याण्यादाय ॥ विदेश्याय वादाय सुरिषाय रंत्रोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥ नागाननाय श्रुति-करपादेदममाणेन समार्वेशतिवेहाभिः ॥ कृतवर्तिकयादीएं मञ्चात्य वैलगृरित ॥ इति भास्करे ॥ लेटनें। दीवडो वरी तेवा थी पूरी सल्यांवे है तेने रतन्त्रीवडो नहेंहे तेमम कन्याना देहना प्रमाणधी ळाळ सुतर भरखु तेना बोबीस तार तेना टेहना प्रमाणे भरीने तेनी बरपाला करवी अने ते बरमाला बरनी कोटमा नालवी. कन्यादान आफ्नार तथा ग्रहण करनार बेउ गणा उत्प्रहर्त मोह आपन पाथरा पाटलपर बेसे पठा ते बेउना बचाले कुकुमनो तिउक करी मान चोंडी आच्यन प्राणायाम करार्था कातिराटना मैत्री मणबा, पर्ज गणपति सुरुनु समरण करी गणपति पूत्र्य मणबी, हवे मडपने द्वारे आवी उभेन्त्रे बर तेने वास्त्र तथा आचारपुर्वक अंतरमद्भवा हेवो. तेमा वहेलाया पाताना वरमा गोत्रन अमाजी चेठेली कृत्या तेना शाथ कुंकुवाला करी तथा एकहार शरमा है। आश उम्याना मामार् पण पीतावर पहेरी फम्याने पोताना हायेथे उचकी महपमा जबुं ते बलते गोरे हाथमा झारी छड़ तेनावर नारियछ डाहके तेनी अगाडी भावना अर्यु, ते समये योड् वण विक्ता अथवा अध्येगल वस्तु सामु छावनी नहीं पत्री मदयना भारणा अगाडी तथा रहीने कस्थापासे चार प्रदक्षिणा 🕄 ें वरापनी रूपा बाह्वी करावी हार पेहेरावी कन्याने वाडी मीकरबी ए शास्त्रसमत छे—रूप ए डेकाले कन्याने बागों ते कन्याने छेड़ने चार प्रदर्शकाणा करें छे तथा 🖔

युद्धविभूपिताय मोरीसुताय गणनाथ नमोनमस्ते ॥ १ ॥ भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय सुखदाय ्री सुरेश्वराय ॥ विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्तप्रसन्नवस्दाय नमीनमस्ते ॥ नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते । नमः॥ नमस्ते हदस्याय करिस्याय ते नमः ॥ ३ ॥ विश्वस्यस्यस्याय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ॥ भक्तप्रियाय देवाय विवाहे परिणयने चूडाकरणे सीरकर्मिण उपनयने मेसलावफने केवाति गोदान कमीण सीपतोस्त्रयने गर्भसंस्कोर एवानि च विवाहादीनि 116911 कर्पाणि शास्त्रमां वंडपे एव कार्पाणि ॥ न विद्वः क्वयीत् इति काल्यापनः ॥ गोर तेना अगाडी प्रदक्षिण करेंडे अने मीडे फ्रेंच्या नायंडे मगल भगवान् विष्णोर्मगळ गरुडप्यन ॥ मगल पुण्डरीकाश मगलायतर्ग हरिः ॥ ए मैंत्र मणी चार प्रदक्षिण प्या पत्री कन्यानी मापो ते होकरीने छड़ने प्राप्त उपी रहेके. पत्री ते होकरीने हाथे चाहो करूनो करावा पत्री हाथमानी हार पेट्रेसवी देने. वजी भोडामा चिन्छं पान तेनी विचकारी वरना उपर मारेजे. तेवबते अंतरएटनी करुडो झाली रामेली होपजे. तेना उपर पडे एवीरीते राखेजे पठी ते 🖇 े करपति घरमा तेती मानो पास्रे वह जापने. पत्नी गेरि ने पॉकनारी होय तेने साथे हद तेना हाथमा एक पात आपी तेमां (गॅक्सणा ) तथा कुंकुनो दुईापरे ं तथा मातने दहींचो इंडो पीडी ( घडना छोटना चार मुटीया ) तथा पाणिनी रुटी ( तथा संपट) एउछे कोडियुं एक रह तेमां कुंक मात मुक्ती तेना उपर र्वाञ्च कोडियुं बाक्ष तेना उपर नाडुं पाधीने मुक्तुं तेने संपट कहेंज्ञे ते मुक्ती तथा (सराह्या ) एटले जुनारना डीडवाना मूछ एटली यहतूं टर् पोकनारीने ।हिल्हा टर अभी, ए पण बचो आधारते.पत्नी परणनारने कपाले पेहेलाया चाहो करवो.-पत्नी भात चोडी हायमां रुमाछ टर तेनी साथे पोरणायांची जुसरी सह तेना नाक साथे एक वस्त तथा पोताना नाह साथे एक बखत एम नार यखत अरकाडी कर्त्तु. ए प्रमाणे प्रया पत्नी (सुसन्त) लड्-प्रास-संस्त ए अनुकर्म 🕏

करां तेमां संपट उतारी जमणा पग अगार्थ सकतं. पत्री इंडोमोडी तेना उपरंथी उतारी काली देवी तथा पाणीनी छोटी उतारी रेडी देवी तेम सराया पण उतारी मार्गाले फेंकी देखे. पश्च बरना हायमंत्री पोक्ष पोक्रनारिक खोल्लमा अपार्का, करा हाये हाय अरकाहवो तथा वरे पर अगाडी मुकेल संपट वोताने। अपनो पर मुक्त फोडा नाखंद, पत्र भागरामा पूर्वीभ मोडे जह आहन पर बेसबू, पत्री पोकनारीये वर तरफन। ओवलां क्यराओने मारीमांधी 🔯 पाणा आपर्त एने आचमन कहेडे-पड़ी कत्या पशरावदानो विधि करवो-तेमा ज्योतिहरूखमा नियम प्रमाणे चटिकार्त स्थापन करी होय तो तेना नवत प्रमान 💢 ण प्रमचे आरंभ करपो नहि तो नेटल वलतनुं मुहुर्त होय ते प्रमाणे नेहिने मंगट्यचरणचा नदीको साठीनामना पुस्तकमायी भणवा तथा कन्या घरमां होय 🔯 तिने तेने। मायो फरी उंचकीने छावे ने बरना सामु पश्चिमत मेह करी नेसाडे, पत्री बाह्मणीये अरमाला बेउनी पासे माद्य सांसर्वा तथा अंतरपटनं बला 🔀 बेउनी सध्यमां माही रखबुं तथा रतन दीवडो लाकी मुक्त्यो, तथा कासानी पाली तथा बेलण मोशीना | हाथमां आपवुं ए प्रमाण थया पत्नी चटिकानी समय 🕍 प्रांने। पनाधी परना हापमां कन्यानो हाथ आपने तथा ते समये जोसीये थान्री नगरी मनावर्तु के हस्तेमक्शपक थया पत्र गोर मधुपत्रीदि पूशननो साहित्य 🎏

( कुंडमत सोपारी फुल माहु विषट सकर पान पुजापो दाँई मच थी, कासानी पाडकी कंग २ पाटलान म २ दडीयानम ७ तरभाण आवसनी पवाटा, तांबानो 🚫 इंटरम विमेरे प्टरे बेसर्ड तथा वरने। यह तथा कम्यानी बाप तेने बेसाडवा. तेमां वरनम वाक्ते पूर्वने मोडे तथा कम्याना वापने उत्तरने मोडे बेसाडी बेउ जणने 🕏

निमस्तुम्यं विनायक् ॥४॥ त्वां विघराञ्चदलमेति च संदर्गतिभक्तप्रियोति स्रखदेति फलप्रदेति ॥ विद्यापदेत्यघहरे ति च ये स्तुवांति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव ॥ ५ ॥ सपरि॰गणेशाय॰मंत्रपुष्पांजलिं स॰ ॥ विश्लेषार्घः ॥ रक्षरक्षगणाध्यस स्कृत्रैलोक्यस्कक ॥ भक्तानामभयं कर्ता ज्ञाताभव भवाणेवातः ॥ १ ॥ द्वेमाद्धरकृपासियो ्र पाण्मातुरग्रजभभो ॥ वृद्ध त्वं वरंदेहि वांछितं वाछितार्थद् ॥ २ ॥ अनेन फलदानेन फलदोऽस्तु सदा मम ॥ १ १ सुपरि० गुणेशाय० विशेषार्थ्यस० ॥ इस्ते जर्लं गृहीत्वा ॥ यथाशक्त्युपचौरैश्च यन्मया पूजनं कृतं ॥ प्रारूथकर्म्- ३

संगाय श्रीगणशाय परिवासन्विताय च त्ररुपम् ५५१म परपत्ताम अप् । अस्य । अस्य । अस्य । वर्षम्यकः ।। वरस्यसङ्ख्यनिमिति केचित् ॥ गदायरेण गोत्राशुकारं सर्वजनं संमृतीकारणभिति इरिहरगदायरी ॥ वरस्यस्मात्रविश्लेष इति भर्नयकः ॥ वरस्यसङ्ख्यनिमिति केचित् ॥ गदायरेण गोत्राशुकारं कपाछे चाहो करी मात चोटी राणपति पूजन करावतुं. ते करावी वर कन्याना हाथ छोटायो मधुपर्क करावे छे-पर्छा सात मारहणने चाहा करावी कन्या-दानमें संकरप करावी सरित वाचन कराबीचे सामाप्तामी वरकम्पाना निताना गाठ फिल्ली ग्रह्य मोर्चु करावी आशीर्याद दूर रचा आपेठे. एने 🖰 छप्तविधि 🔀 महेंहें अने त्यारपत्री पोतानी न्यातना रिवानो एटले वरकन्याने आपर्त्त लेवु, बिगेरे करी आदोषी लेठे एवा उसी काले करीने यवाणी वरकन्याना में परस्य-

रना कर्तत्र्य, तथा प्रीति तया तेनी अन्नति अथया धर्म अर्थ काम अने पोक्ष्मुं साधन थयु, ते न धता तथा वित्राह दिने भहर्षियोधे कहेला बास्यो प्रमाणे

न बता छत्र पत्री वणा दुसी नोनामां आदेरे तेण दुसी होयाँ तेर्त्त कारण फगत तेन छे के चार बस्तुने आपनार्र ने साभन दिवाह ते विभिवत् न थाय तो क्युं न निष्फल होष एमां नवाह शी-भेना पर आ जन्मने तथा परजन्मनो आधार छे तथा जेनाथी देव पितृ मनुष्यो तूम थायेले एवो जे विदाह तेमां सर्ह व्यतियान करतां रुद्रीन वकडी गमे तेवां व्यतस्यों वधनेन खोदे विद्वान तथा शिनास्वंत पुरुषों करें छे (यर आवे छे ते वारे कन्यापासे पाननो रिषकारी सरावे के, कन्यानी साथे गोर प्रदक्षिणा करेंके तथा मारा मुहूर्तमां कन्यानी दान पोताना पिता विगरेए संकल्प करी आपन्ने नोड्ये तेचे बदले गोर अपना

संपद्मतां तव ॥ इति जलसुत्सुजेत् ॥ गणेशपूजनं कर्म यन्यूनमधिकं कृतं ॥ तेन सर्वेण सर्वात्मा वस्दो स्तु सदा मम ॥ लंबोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय ॥ विज्ञानां नाशकर्ता च हरात्मज नमोस्तुते ॥ अनया प्रजया सांगःसपितारः गणेशः त्रीयतां ॥ वरदोऽस्तु मे ॥ स्वात्रेभान्यसर्शि कृत्वा ॥ तदुपरि महाराज पासे हाथ आकाटावे हे पत्री वैश्वव्यादि दोषोने नाशकावाताकुं वरम्पपुनन तथा श्वीपूनन करता नथी एनो स्थाम करी मणपति पुननादिक करें ती (बर) एटले क्षेत्र पुरुष आंदे तेने मान आदी नेसाटबा तेने बदले तेना उत्तर पानदी विषक्तरी मारीने अवमान करेले. बाह्यणने उत्तम मिलवे केंद्र, तो माहाणवासे प्रदक्षिणा कराववाची पोताला पूर्वनो नर्कमां पढेते. पोतानी कन्यातं क्षन पोताला ७ १ एकोतेर पेढीला चित्रओने तारवाले करवातंते. ते शास्त्रव्याणे 🔭 मुहर्त ओरने पोताने हाथे संरक्ष्य करी आपपातुंके. तेने बदले आसण पासे करानेके जेतुं फल विधिवत् न थवाधी वेदने मलतुं नथी. पाणि महण संस्कार

नेवेद्यं तांबूलादिफलानि च ।। सर्वाण्यसृतरूपेण

ें जुने हैं त्यां परता हादमां करवाने इस्त्र आक्षेर एम विशे हैं, रूप आहे तेन करवानुं नहीं तथा नेनायी डोकरीने सौमाय को एवं विधि ते सूची है दुनि केक्ट उतावटनेन मोटे सरक्रयाने जन्महं दुन्त करेड़े. मोटे पारी प्रार्थनाने हैं ए प्रयोग न करता आ क्रियाइविधिमां केहेस्स पुननादि शास्त्र माने करता तेन करवादी हेंबेरू तथा वारमाधिक सुख मेटे हैं ए पर्वज्ञावदां कहेन्द्रीत माटे ९४ प्रमां उत्तरेख आदिविद्या मेनेविध कारी सीन ते हम तिथा अवस्त्रो संस्त्री करविदेश ए आरणा भरीस्त्रक मानण कर्या वैद्यादित्र कारने-हदे प्राप्त स्वर्ध करण पुनन करतुं तेमां नेनायी भातनी बगली समाधितः ॥ मुलेतस्यस्थितोत्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्छताः ॥ १॥ कुत्तौतुसागराःसप्त सप्तद्वीपावसुंघरा ॥ ऋग्वे. हे प्रवेश विद्यानिक्षां ।। २॥ अगिश्च सहिताः सर्वे कलशं त समाधिताः ॥ देवदानवसंवादे मध्य- हे माने महोदयो ॥ २॥ उत्पन्नोऽसि तढाकंग्रो विधनो विक्याना स्यां ॥

रियताः ॥४॥ त्वयि तिष्ठंति भृतानि त्वाये प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ शिवःस्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः॥५॥ 🐒 आदित्यायसवोद्धावियदेवाः स पेतृकाः ॥ त्विय तिष्ठंतु सर्वेऽपि यतः काम फलपदा ॥ ६ ॥ त्वत्मसादादिमं 🕏 वहं कर्तुंमिह जुलादेव ॥ सानिच्यं क्रुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ७ ॥ वरुणायनमः ॥ प्रार्थनापूर्वकं नम-येत् ॥ वर्रापेतापि दातारं प्रजयेत ॥ उभी उभयोः कपोले मांगत्यं कुर्याताम् ॥ ततो दाता सदक्षिणा हिद्धार्खंड॰

हैं इंडरना मादियां, सोपारी, तथा देता, हेवा (तेन प्रमाणे वस्तो (पेता पण है के एवें) संप्रदायकें ) ते हुई पूकी कर्यानी दिता उपरप्रमाणीनो स्टोक के बेहा को के मारी दोष नगरनी छोकरी तमारी छोकरीने माटे आपी एम कही बरना नापना हाथा। पोताना हाथमाना राखेला कुछ पैसा आहे. के पारी दोष नगरनी छोकरी तमारी छोकरीने माटे आपी एम कही वस्ता नापना हाथमाना राखेला कुछ पैसा आहे. प्रमाणी का प्रमाण के के आ फलद्रन्य हरिवार है तमारी छोकरीने माटे छोकरीने परित वसने जुनो. पत्री वन्यानी क्षाप कहें के आ फलद्रन्य हरिवार है तमारी छोकरीने परित हैं है

स्कारं समर्पयामि ॥ अनेन पूजनेन वरुणः शीयतां ॥ दाता मत्यङ्मुखः उपविश्य वरिपतरं गंपादिभिः पूज-

अत्र प्रगप्तदानेन लमे वसे भविष्यति ॥ ४ ॥ कृत्यापिता ॥ विश्वंभरः सर्वभृतः साक्षिण्यो मम देवताः ॥ इमां हैं कृत्या प्रदास्यामि देवानिग्रहसिन्नभी ॥ ५ ॥ देवाप्रे निवद्य ॥ अनेन प्रजनेन कृमीपीशः प्रीयतां ॥ इति वा- वृद्धां ॥ अथ श्वीपूजनं ॥ अथ मधुप्कः ॥ दाता आचम्यप्राणानायम्य ॥ अधेत्यादि०कृत्याविवाहांगत्वेन । वाता अधिक्षा वात्रक्षा 
ुतसम्र प्रमीक्तानि गृहीला पदेत् ॥ आचासम् वर्गपता च ॥ अव्यंगेऽपतितेक्कीवे दशदोप विवर्जितें ॥ इमं कन्यां प्रदास्यामि देवामि दिजर्सिवधे ॥ इति वर्गपेत्रेदचात् ॥ च पदेत् ॥ वाचादत्तामयाकन्या पुत्रार्थे स्वी-कृता तया ॥ कन्यावरोकनविधो निश्चित स्तवं सुसीभव ॥ १ ॥ ततोवर्गपता ॥ वाचादत्तात्वयाकन्या पुत्रार्थे स्वीकृता मया ॥ वसवरोकनविधो निश्चितस्वं सुसीभव ॥ २ ॥ कन्यापिता ॥ सुष्मद्वराच योग्याय मंडपाय यतने मम ॥ अन्न प्रमत्रदानेन रुत्रे कन्या भविष्यति ॥ ३॥ वर्रपता ॥ अस्मद्वराय योग्याय मंडपायतने तव ॥

्रें आ गतवरं मैधुपर्केणार्चयिष्ये ॥ अर्चयेतियरः ॥ तत्र सकलविद्योघध्वंसं विनायकं स्मरेत् ॥ ततो दाता वरस्यात्रे क्ष क्रतांजलिश्वरस्तिष्ठम् पेक्षत् ॥ साधुभवानास्तामर्चियम्यामो भवंतं अर्चयेति वरः ॥ दाता विष्टरं गृहीत्वा तिष्ठति अन्यकश्चित ब्राह्मण ह्यः प्राह् ॥ विष्ठसे विष्टसे विष्टसः॥ प्रतिमृह्मता मितियजमानशाप्रतिगृण्हामीति वरः॥श्रेष्ठीस्मि il Ser वसमानानामुद्यतामियभास्करः॥तिष्ठामि त्वामचः कृत्वा य इदं मेऽभिदीयते॥ अनेन मंत्रेण विष्टस्य दगत्र मासने निधाय तस्योपरि उपविशति ॥ पादार्थमुदकं पादार्थमुदकं पादार्थमुदकं ॥ प्रतिगृह्यतां प्रतिगृष्हामीति वरो

मृहीत्वा ॥ स्वयमेयवामं पादं प्रथमं पक्षालयति ॥ विराजोदोहोभयसि विराजोदोहमस्नवे ॥ विराजोदोहः पान्याय मिय तं भव भोजल ॥ वामं प्रश्नात्य ॥ दक्षिणपादस्यापि प्रतालनं मंत्रेणैव ॥ दितीयविष्टरमादाय विष्टरो विष्टरो . वस्वास्त्र फहें के मारी सात देशिय कत्या लीवी. पक्ष ते मणपतिना मोटा आगरु मुझ को खोगेंक, ए कर्म देखताने पाणी टर्ड अंबेण करनें, एने बाग दान

बहुँ हैं, हुते वैचच्य दोपने माश करनारं तथा सीमाग्य प्रश्नीत्रादिने आपवाबार्खुं श्रचीपूतन करतुं ते थतुं नपी पण तेतुं चोखाना मैंडरुपर आवाहन करी માહશા

क्यात्राक्ति पूजा वरी प्रार्थना करवी, अप्रवार्थ रुलिक् राजा प्रिय अतिथि वीगरेआववाणी पेहेला मधुपकं पूजन करतुं, तेमां पेहेलां मधुपकंतो संकल्प करवो.

इस बबत संकरपर्त केहेबाई के तमी धन्यादान देवा आवेखा को माटे तमार्थ मधुर्क पूजन कर्र हुं. एम बन्याना विनाना केमाथी परे केंचुंके करी परना

पद्धि दूर्वान्वितं पात्रस्थमर्घ प्राग्वोदम्भूमो निक्षिपेत् ॥ आचमनीय सुद्कमाचमनीयसुद्कं ॥ प्रियं जना-प्रतिगृह्यतां प्रतिगृष्ह्यमीति वरः॥ आचमनीयपात्रवामहस्ते कृत्या॥ किंचिदुद्कं दक्षिणचुन्नुके कृत्वा॥ प्रियं जना-ह्यासुं उमा रही विष्टा च्हा आ विष्टा महम करे एव केहेतुं ( वर्षा सहसे व्य तेने नाई विश्वक्ष राते के तेने विष्टा केहे हे ते विष्टा तेन हामपां आप-भो ते से व्य नीताना और सुक्ता, प्रभी पारा पान आपन्ने प्रभी तरामण्य त्या पोताना होपेशी नीताना हामा पनपर पाणी रेखे-अहिया कन्यानी मा

रामें बेटने कराले भान्य करी पात भी दे कन्यानी मा त्याभी जाय छे. बीजो बिटर सह यममाने बरना हाथमा आको पणि ते बिटरनो मैत्र भणी है विताना आरन रह मुझी नेतर्नु तथा एक तावाना आर्थमा कंड भात छूल इतिस्त्र कल निवार हुई ते यममाने बरना हाथमा आगनु तेने वरे मत्र भणी पूर्व

विष्टरः ॥ प्रतिगृह्यतो ॥ प्रतिगृण्हामीतिवरः ॥ श्रेष्ठोऽस्मि वै समानाना सुद्यतामिव भास्करः ॥ तिष्ठामित्वामधः है इत्वा य इदं मेऽभिदीयते ॥ इति मंत्रेण पादयोरयः निद्धाति ॥ अर्थोऽघोऽघैः ॥ प्रतिगृह्यता प्रतिण्हामीति वरः ॥ वयं वरुणयुष्माभिः सर्वान्कामानशेपतः ॥ अतोर्थं त्वं गृह्यणेमं भो ह्यापस्थममान्त्रपुयात् ॥ १ ॥ गमयामि ससुद्र-के स्यास योनिमाणप्रयांतु वे ॥ वीसअरिष्टाश्चास्माकं मापससेचि मत्ययः ॥ अनेन मंत्रेण गंथाक्षतकुशाप्रतिरुसर्पः ॥ मञ्जपकी मञ्जपकी ।। प्रतिगृह्यता प्रतिगृण्हामीति वराच्छादितं मञ्जपकपात्रं किचिदुद्घाटय समीक्षेत् ।।समीक्षामि ्र गुडार्य गुडार्य । जाप हुल्ला । तथाई मधुपके च प्रतिक्षामि लुद्ध प्रभो ॥ समीस्य सन्ये पाणी कृत्वा ॥ मंत्रेण ॥ अ यथासर्वे ज्यहंसुतानि चश्चपा ॥ तथाई मधुपके च प्रतिक्षामि लुद्ध प्रभो ॥ समीस्य सन्ये पाणी कृत्वा ॥ मंत्रेण ॥ पुष्णो देवस्य सविद्यर्हस्ताभ्यामाददे किल ॥ मधुपर्कं भर्गरूपं माश्विनं सूर्यदेवतं ॥ इति ततो दक्षिणस्यानाः मिकया मचुपर्कमालोडयेत ॥ मंत्रेण ॥ प्रयोमि मचुपर्क च नाशने नादनीयकं ॥ निष्कंतामि च यत्त्रदेश्या े यास्याय नमोनमः ॥ दक्षिणस्यानामिकया त्रिः प्रदक्षिणमालोडयति ॥ ततः अनामिकांगुष्टेन त्रि निरुक्षपति ॥ ततः प्राशनं ॥ परमेण मधन्येन रूपेणान्नायकेचन ॥ मधन्यं परमं तेन ह्यहनामि मधुनोशनं ॥ इति मंत्रेण प्रथमं <sup>।</sup> कनिष्टिकांग्रहाभ्यां द्वितीयअनामिकांग्रुष्ठाभ्यां तृतीय मध्यमोग्रुष्ठाभ्यां प्रास्य चतुर्थे तर्जन्यंग्रुष्ठाभ्यां तृष्णि तरफ़ रेडी देवें एने अर्थ्य केंद्रे हे पदार्ख वह तेमा-पाणी नासी ते वरना हाथमा आपतुं. पत्री ते वह तेनाथी आचमन अण मंत्र भणी करवा-( एने आव-मनीय पान रहे है ).ए प्रमाणे पाय अर्च्य आचपनीयपान अपाया पड़ी संपुर्यक्रपात्र छेत्री तेमा लामानी बाढको तेमा पीई १पछ, दहीं ३ एन, मध १पछ 🏅 एम दु-करतु तेने मधुपर केहेंके. तेमा रूपा नाणुं मूकी उपर कासानी बाउकी ढाकी ते हाथमा लड़ मन भणी आपर्तु पन्नी चरे तेने जाना हाथमा लड़ तेने

हैं नां यशसा पश्चनां स्वामिनं कुरु ॥ शरीरिणामरिष्टानि वरुणाचमयाम्यहं ॥ सकृदाचम्य ॥ द्वि स्तूर्रिण मधुपकों

प्रश्

त्रात्य ॥ शेषं शिष्याय प्रत्राय वा दवात्॥वा सर्वं प्राक्तीयात् ॥ ततो आचम्य॥ प्रियंजनानां चशसां पशूनां स्वामिनं 🐉 | कुरु।।शरीरिणामरिष्ठानि वरुणाचमयाम्यहम्।। आचम्य।। द्विस्तुब्जिय प्राणान् संमुपति जलेन मम वाक् आस्पेऽस्तु इति 🔯 | धुलंकरात्रेण संस्पृशति नासिकयोः प्राणवाखुरस्तु तर्जन्यंग्रष्ठाभ्यां दक्षिणादिनासारंत्रं संस्पृशति।।मम नेत्रगोलकयोः 🎇 वञ्जरस्तु।। अनामिकांग्रग्रम्यां सुगपत् संस्पुशति ।।कर्णयोः श्रोत्रमस्तु ।। मध्यमांग्रग्राम्यां सुगपत्संस्पृशति।। कनिष्ठिः 📳 कांग्रहाम्यां मम बाह्रोः शक्तिस्तु ।। इस्तेन दक्षिणायुरु संस्पृशति ।। मम उचेंसिजोऽस्तु ।। मम देहस्यांगानि 🐉 अरिष्टानि सुगपत् संतु इति शिरःप्रधृति पादांतानि सर्वाणि अंगानि सभाभ्यां हस्ताभ्यां संस्पृशति ॥ तत श्रंद- 🕺

भावे छे तथा घरने वेड वॉर्ग सर्ज धाहुडी अले छे. तेमाथी बॉटीयनी सार वसत मधुपरने टैकाणे दहाँ टहने तेने हटावे के तथा 📀 तिनाधी त्रण अन्तर जोड़े आरकाट छे. एम न करता मधुपर्क विभिन्त, करी ते व्याची, नैनाधी बुद्धि वृद्धि पामी लक्ष्मी मछे हे-) ए

उगडी जोर्नु पत्रे तेमा भेताना जमणा हापनी अनामिका आगरी तथा बसत फेरक्षी पत्री पोतानी छेटी आयस्त्री तथा अंगुठा बडे सासु ए धमाणे 🗳 —पडी अनापिरा—पडी मध्यमा पडी तर्रेनी बडे मठी चार बसत खाडु—पडी हाथ धोड् आचमन करतु— ( ए डेकाणे—कन्यांनी मा हाथ घोबाडवाने 🎺

प्रशासी गैन छे. भारी रहेंगे मधुरकेनी भाग ते श्रेतांगा शिष्यने अथवा डोकराने आपनी अथवा प्रोतेत्र समन्ते त्याहर नवी. अथवा

इत्तर तरफ पात्र मुकी देर्नु, पत्री आजमनी पात्रमार्था प्रण बख्त मंत्र भर्गीः आजमन करीः पोताना शरीरे हाथ पाणीमां बोर्छा अरकाडवाः तेने। अर्थ ( मारे भोडे बार्णाना देवता श्विर रहो. ) एम कही पोताना आंगल्रभोना अमधी पाणी मोडे अरकादबुं, मारे नाके वायुदेवता स्थिर रहो, एम कही

नितानुं परात्रम वर्षे छे. पत्री रोताना आखा शरीरे पाणी छाटंडु ने कहेंडुंके मारा शरीरपर आवता अरिष्टोनो नाश करोः एम कही बेउ हापपती आखा 🗳 इसिर माथाणी पग छर्गा सर्श्व करी जवो. एवी तिते आचमन करवाणी पोताना झरीरचा देवता स्थिर रही समयानुसार उपयोगी फल आपेंग्रे. माटे विविवत् आचमन करतुं नेन्प्रथा वित्र थवाय जे. हवे गेवालंगन करतुं जोर्ये। पण कवियुगने ठांचे विषेध करेले। जे. तेथी वरना सासु उत्तराम दर्भ मूकी शण नत्त गायनो उच्चर करी हाथपो गोलिन्तय छः संरत्न करनो तथा ते झ्व्य पहेंछा पाणेला दर्पेस मूकी देतुं. पडी नायनी प्रार्थना करी कहे दुं के हुं अगुक

तमारी यशमान अमुक दास तेने पार्क्या मुक्त करो एम कहा एक दर्भ दूर नांलयो. ए निधि थया पत्नी धनमाने वरतुं पूमन कुंकुमधी करी प्राकि होय

ं पाणा अरकाइनुं, मारा कानना देवता स्थिर रहो तथा मारा काने श्रदणराकि क्यो, एम कही क्नली आंगली अने अंगुटावडे काने पाणी अरकाडवुं, पठी े देही आंगडी अने अंगुरावदे पाणी दे बाहुए अरकाइयुं, तेना देवताने कहेर्यु के पारी शक्ति बची. नपणा हायेथी उरुने पाणी आकाइयुं, तेनाथी

हैं। तर्जनी अंग्रुष्ट पढ़े केंद्र नानना जिहने पाणी अपलादकुं. मारी आले नेत्र देवता स्पिर रही ने आंसीतं तेत्र सुद्धि पामी एम कही अनामिक्ता अंग्रुष्ट वडे आले हैं।

तेन मधुपर्कार्चनेन श्री परमेश्वरः श्रीयतां ॥ इति मधुपर्कः ॥ अथ कन्यादैानं ॥ तत्र प्राक् संस्कारलोपश्रापश्चित्तं कन्यापिता जलमादाय ॥ अद्योत्यादि० मम द्यतायाः स्व स्व काले उक्तसंस्कारलोपजन्य पत्यवाय परिहास्र्यं १ (१)वतःकन्यापानुलो कन्या गृतीस्व पंदपे वेदि शदशीणीकृत्व वतात्रे पत्रिमाभिगुस्तीनुषवित्र तत्रवस्वरानताले अविद्यराहुद्धसद्दृत्तवः पुरुषा । इत्कार्यं अतःपर्वे आपितः प्रदेश प्रतिकार्यं विद्यापानस्य विद

े तो अलंबसादि आभी तेने प्रसन्न करते. ए प्रमाणे मधुपर्क करते. पत्नी मधुपर्क को लाने सेकरण करी पन्यानने अरपण करी कन्यादान करतुं. आईया के सात महरणने पाठा करवानो चाल के तेंग्रे पुनन करतुं तथा दक्षिणा आपवी. (१)कन्यादानमां कन्यानो मामे ते कन्या लढ मायरानी प्रसरिणा करी

उदगब्रदर्भानास्तीर्यं ॥ दाता वरहस्ते निष्कयद्वयं दत्वा ॥ गीर्गोर्गोरं ॥ इति त्रिः प्राह ॥ वस्त्नां दुहिता माता ग्द्राणां भास्करस्वसा ॥ त्रविमि गां मावधिष्ठ जनाय चेतनावृते ॥ मम अमुकदासयजमानस्य च उभयोः पाप्मा हतः ॥ इत्युपांशुः ॥ तृणान्युत्सुजेत ॥ इत्यनेन वरःक्षशोपिर द्रव्यमुत्सुजेत् ॥ अमांसोर्घश्चभवित पडर्च्यानिधि इत्य वे ॥ गोरुदेशेन तान्तस्याः निष्कपं श्चुत्सृजाम्यहं ॥ ततः दाता यथाशक्त्यळंकरणादिभिः वरं तोपयेत्॥ इन् ॥

ilseli

बहुतिना अस्तर सूधी धंगलाचरमत। जोरीनो उचार करे तथा तेनी पूर्णनी समय आवे स्यारे अंतरपट खेंची छे तथा नरमाला नेहना कडमा नांसीरे. हुँ ए बज्यादानना पूर्वमा वरहत्याना सकाने संस्कार न भवा होय तेने मारे प्राथश्चित्तसहरून करनो. (१) कत्याना बारे हाथमा पाणा एद कहेचु मारी कत्यांना सरकार नकी बया माटे शास्त्र प्रमाणे अमुकद्भवे परी प्रायशित्त संकल्प शरुष्ठ तेनाथी सरकारलोपर्ते पाप दूर पह इष्ट कत्र प्राप धनी तथा

सा इत्या वाससे नमः॥ ततः हत्यापिता॥ उरं प्रति ॥ र प्रसिक्षस्य इति पैश्वं दशुःवरोयपृगीक्षेत् तत्तो आचारमासं मांगल्यवनुक्ते वंशनाहरूतचतुः 🕏 एयमुमीमति किली समारोज्य चनुर्विश्वतिवारं वेष्टमं सा वर्षपाळा॥मांगल्यतंतुनामेन सम तीवनहेतुमा॥र्रेड प्रनामि सुभगे ह्वं भीव शरहां त्रते ॥ 🧏

वस्त्री सागु पश्चिमामिनुने कन्याने वैपाडेके, वरकन्याना अगाडी सारा परकेला पुरुषे अंतरपट तथा बरमाला छड्ने छपा रहे तेमज अयोतिपि पीताना

मानसमि ॥ तेन स्व स्वकाले संस्कारलेपजन्य प्रायाश्चित्त निवृत्तिरस्तु ॥ अय कन्यादानसंकलाः ॥ ततो | ंदाता उदरमुखोपविष्टहस्ते जलमादाय ॥ अद्येत्पादि० तिथो अस्मिन्प्रण्याहे अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण ध- 🐉 र्मप्रजा उभयोर्वशबृद्धवर्षे च मम समस्तीपनृणां निसीतशयानंदग्रह्मलोकानाम्यादि कन्यादानकल्पोक्तफलप्राः ्रप्राह्मणाःस्रमितिष्टितपस्तु।। देपत्यो रतिस्टिस्याभीतिरस्तु॥ ततो वसे कवै परिधानार्थे कुमार्यो ससःपरिधानं । आयुप्पतीदं वासःपरिधस्त्र वासः॥

ै च ॥ अद्यत्यादि० मम स्रुतस्य स्वस्वकाले उक्तसंस्कारलोपजन्यप्रत्यवायपरिहारार्थं तत्तदुपकल्पित द्रव्यमहः

## ेतत्तरुपकाल्पतदञ्यमहमाचसमि ॥ तेन स्यस्पकालोक्तसंस्कारलेपजन्यप्रायश्चित्तनिवृत्तिरस्त

।जापत्यविवाहविधिना श्रीलक्ष्मीनारायणपीतये गोत्रोचारपूर्वकं कन्यादानमहं करिष्ये इति संकल्प्य II कन्या ग्याशक्तयऽलंकृत्य हस्ते गंघपुष्पक्रश जल यवान्यादाय।। विष्णु विष्णुर्विष्णुः अद्य श्रीह कस्यचित्सचिदानंदरूपस्य ह्मणोऽनिर्वाच्यमाया शक्तिविजेभिता विद्यायोगात्कारुकमैखभावाविभृत महत्तस्वोदिता हिंकास्त्रतीयोद्भत वि-यदाहिपंचकेंद्वियदेवता निर्मितांडकटाहे चर्तार्दशलोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्तिभगवतः श्रीनारायणस्य नाभिः कमलोवृत सकललोकपितामहस्य ब्रह्मणःसृष्टिं कुर्वत स्तदुद्धरणाय चं प्रजापितप्रार्थितस्य महाप्ररूपस्य सितवाराहा-वतारेण त्रियमाणाया मरयां धरित्र्यां भूळोंकसंज्ञितायां समद्रीपमंडितायां श्रीरोदाब्यि द्रिरणद्रीपवलयीकृत लक्ष-( ? ) काश्यवगोत्रस्य अमुकदासस्य अदौदियाय काश्यवगोत्रस्य अमुकदासस्य दौडिनाय ॥ काश्यवगोत्रायअमुकदासाय वराय ॥

धये अनेन वरेण अस्याम् कन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्या दशपूर्वान् दशपरान् मां च एकविंशतिष्ठरुपाद्यद्धर्द्ध

विवास पण एसम सकल्य बर्बो, नेनायी बेड जजाना पायो दूर थह परस्पर दंपनीयां मेम तथा मकि उत्पन्न थह

उत्तर तरकतं मोदं करी मेठेले कन्यानी बाव तेले आजमनीमा पाणी छड तेयां गंघ पुष्प पत्न दक्षिणा दर्भ त्रव मुक्की वण यसत विष्णुती उत्तर

करी देश कालने। उचार करने।

कादिमुनिकृतनिवसतिकं निमिपारण्ये अमुकनामसेत्रे श्रीभगवतोमार्तण्डस्य कृपापात्रे कालकृतयत्र गर्भवराहाचा-र्यादि गणितायां संख्यायां श्री बहाणो द्वितीयपरार्धे श्री श्वेतनासहनाम्नि प्रथमे कल्पे द्वितीये पामे ततीये महतें स्वार्यभुवस्वारोवियोत्तम् तामस् रैवतः वाश्चपेति पण्मनुनतिऋग्यमरणे संप्रति वैवस्वतमन्वंतरे अष्टार्विशतितम कारवपारे अपनदासस्य प्रदोहित्री ॥ कारवपगो० अमुकदासस्य दीहिन ॥ कारवपगोर्य अमुकवाली कन्या इत्यंत पाउत्ता सर्वः रनद्विणस्यभाषेया पूर्वकविशतज्ञायामविष्यमा वरहस्तांपरि चयूरस्तेस्वहस्तन्यस्य कन्यांमन्युपरिस्थवरांजली दक्षिणरस्तेन सतत्त्रपारा शिपन पर्वत् ॥ सक्रदेति गदापरः ॥ पातुलगोत्रीघारणमानारात् ॥ २७ ॥

योजनविस्तीणें जंबदीपे स्वर्गस्थितामसदिभिः सेवितगंगादिससिद्धिःयाविते भारते वर्षे निखिलजनपावनशौन-

अर्थ-बरना गोतनी उचार करी अमुकनो प्रश्नेव अनुकनो पीत्र अमुकनो पुत्र अमुकनानी वर लेतु अनुक नाम्नि कन्यासाथे तेपन कन्यासु पण गोत्र-पूरेक वहेर्नु अहिंया केटली कन्नावीमा मोतालन गोत्र तथा तेना माना बार तेना बापनो उचार करेते. ते शासमा नयी पण श्वाम चाले हे. एम उत्पार 🕉

करी कम्याने शु शुं बस्तु आरी समावारकी ते तथा करने शु शुं वस्तुओ आरबी मोहये ते हंकरन पोली सकरन पया छेडे अलंकत करेली असुक जामनी 🖇 1199411 मारी कन्याने अनुक्रनायना तमने अर्थण कर्हर एम हाही आजमनीमार्च वाणी परना हाथमा आपन्त तथा कन्यानी हो। पण बरना हाथमा आपने वहे 🕻

म्बहित अहेव

किल्खिगे प्रथमचरणे श्रीमत्रृपविकर्मार्कसमयातीत संवत्सराणां संवतः आपादादि अमुकाधिकाधिकेऽन्दे अमुक-नाम्नि संवत्सरे अमुकायनगते श्रीसूर्ये अमुकऋती महामांगल्यत्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे०तियी शतराणीकृत 🕺 ज्योतिष्टीमातिरात्रजन्य फळसमफळप्राप्तिकामोऽहं काश्यपगोत्रस्य असुकदासस्य प्रपौत्राय ॥ काश्यपगोत्रस्य 🕄 अमुकदासस्य पौत्राय ॥ कारवपगोत्रस्य अमुकदासस्य पुत्राय॥ कारवपगोत्राय अमुकदासाय वसय॥ कर्या- 🛜 ्रीगोत्रोचारः ॥ काश्यपमोत्रस्य अमुकदासस्य प्रगीत्री ॥काश्यपगोत्रस्य अमुकदासस्य पीत्री ॥ काश्यपगोन् 🕺 ्रीत्रस्य अमुकदासस्य पुत्रीं अमुकनाम्नीं कन्यां ॥ अथ मंडपाधस्तात्क्रलशीलसीभाग्य सामुद्रिकलक्षण लावण्यां। सावयवारोग्यां कांचनकुंडल कंकणनुपुरकदिसूत्र भुजचूडकेयुरांगदभूपितां यवनालिकेरहस्तां भ्रमरप्वनिस्तर्गाधि-

🎇 मालालंकृतां कर्प्रसगरुश्चपितां गंथ यक्ष कर्दम द्रव्यादि सहितां मुक्टमालादि विविधालंकृतशंगास । मासनछत्रो- 📳 ्रीपानहवासासिशय्यां कमंडल कांस्यपात्र सुवर्णगप्यमुदिकोऽपेतां दुह्यमानसवत्साधेतु गजदंत कंकणकृजितां गृह-र्रि

🎎 वित्तानुसारेण स्वहस्तोपार्जित वस्तुमात्राणां अस्यभोज्यपयपानादि किंचिन्मात्र द्रव्यसहितां स्मार्तकर्मसाहाय्य-🖫

दक्षां त्रियंवदां छंडमकञ्जल सक्ताफलमालालंकृतां त्रीहांजलिप्रस्ति। मादर्शहस्तां मदनफलवद्धां त्रिमाद्यलश्चद्धां

» कौ॰ 👸 दशप्ररुपविस्यातां शास्त्रप्रसणागमवित्तां दृर्वोक्करंशसास्ति प्रयागवटशाखाविस्तीर्णेकोत्तस्शतकोटि कुलोद्धारणश्रेय- 🦠 ूँ से ॥ कात्यपगोत्रोत्पन्नः अमुकदासोऽहं प्राजापत्यविवाहविधिना श्रीलक्ष्मीनासयणप्रीतये कात्र्यपगोत्राय अमुकनाग्ने वसय ।। गोत्रा ममुकनामीं कन्यां यथाशक्त्यलैकृतां उपकल्पितोपस्करसाहितां प्रजापितिदेवत्यां

ं प्रजोत्पादनार्थं सहधर्मचरणार्थं च भार्यत्वेन तुम्यमहं संप्रददे ॥ इत्युक्त्वा सक्रशजलं कृत्यादक्षिणहरतं वरदित णहस्ते दद्यात ॥ स्वस्तीति वरो बृयात् ॥ कृतेतत्कन्यादानसांगतासिद्धचर्थं इमां स्वर्णमर्यी दक्षिणां तुभ्यमहं संप्रददे ॥ शक्तिश्चेत् सुवर्णादि दानानि देयानि ॥ कन्यापिता ॥ घर्मार्थे कामभिनीमैयौँ नैरः साध्यते परः ॥ घर्मे दान प्रकार ॥ कनकाश विद्यानाया दासी रथ मही ग्रहं ॥ कन्यायकपिद्यापेत्राप्तानानि वै दञ्ज ॥ अवे-(१) ए कन्याद्दानना अंगी दश दान आश्वां जोरंथे ते शक्ति होय तो ( सोर्जु चोडो तील हायी गाउँ पृथ्वी गृह कम्या गाय दासी ) आसवा निह तो तेनी निष्त्रय आपनी अथवा ए डेकाणे शिंत रु० (१) ने दे पैसा आपनानी जे ते आपी पणे छाणपुँ, करपानी माये पण जेकरीना सभे 11POII

अडकी उपनो मंत्र भणी अर्थण करी एम कहेबुं-अहिंया कन्यादानने संकल्प जुदी काली पत्री मोत्रोचार करेछे तेम बेउ पस तरफरी (७) सात

हैं सात पैसा तथा सात सात सीपारी छड़ गोत्रोचार करी। मुझ्येनेंडे पण तेम न करवुं, गोत्रोचार पण विभा कन्यादान घाय नहीं. गोत्रोधार सॉमांटे 🕹

कर्तुं प्रत्य भारे के एक गोपनो ते। नधी पत्री करवानी कर्ता भार नधी मारे वस्यादानना संकरपमां गोपीचार करी कस्यादान आवतुं उत्तम है.

स्तु अनयासार्थ मानर्यस्य स वै निरं॥ धर्मे नार्थे च कामे च त्वयेय मतिनास्तः ॥ नत्याच्याऽज्याद्वातिस्व भूती संसारभृतिदाम् ॥ कन्यामाताऽपि तां स्पर्शन् पठेत् ॥ गौरीं कन्यामिमां भो त्वं यथाशक्ति विमृषितां ॥ गोत्राय चैव दासाय तुःयं दत्तां समाश्रया। कन्ये ममाप्रतो भूयाः कन्ये मे देविपार्श्वयोः ॥ कन्ये मे पृष्ठतोभूयाः त्वतदाः 🐉 नात स्वर्गमान्त्रयाम्।। मम वंशे कुळे जाता याबदर्शीण पोषिता ॥ तुभ्यं दास मया दत्ता पुत्रयोत्रप्रवर्धिनी ॥ इति 🎼 सिमार्थ्य ॥ वरः ॥ अहं नातिचरिष्यामि यदुक्तं भवतां ततः ॥ धर्मार्थं कामकैः कार्यं देहच्छायेव सर्वदा ॥ नातिच- 🕏

द्विजाः ॥ वस्वप्वोःशिरसि अक्षतान्निक्षिपेत ॥ अद्यत्यादि० उभयोःवस्वप्वोः अखंडप्रीतिकामः आयुष्याभिगृद्धपर्थं 🕏

अक्षतारोपणं करिष्वे।।इति संकल्प ॥ तदंगं त्राहाणपूजनं ऋता ॥ करोतु स्वस्तिते त्रह्मा स्वस्तिचापि द्विजातयः।। 🖔

अनुसर मनायुष्यंतिः स्तरं व्याधिपीदितं ॥ असता शहरूपेण वर्ज पतिव मसके ॥ १ ॥ पाणिनीयविकायां ॥

अर्थ-हरे असतारोचन करने ते यहां नदी जैतायी धर्णा पांकियाणीही आकृत्य करी प्रीती केशेने तैयां चार ब्राह्मचीना हापमी मात आणी संस्टर करी 🔝

मंत्र भणावना तथा मंत्रान्ते अक्षत बेडनणाना माणा पर क्लावना ए प्रमाणे अक्षतारोषण थया पडी स्वस्तिकाचन करते.

|रिष्यामीति वरे वदेत ॥ अनेन कन्यादानास्बेन कर्मणा श्रीलक्ष्मीनारायणी प्रीयेतां श अथ अक्षतारीपणं ।। 🗗

सारिष्ठपाश्च ये श्रेष्टा स्तेभ्यस्ते स्वस्तिसर्वदा ॥ १ ॥ ययातिर्नद्वपश्चैव धुन्धमारो भगीरथः ॥ तुभ्वं राजर्पयः सर्वे 💲 स्वास्ति कुर्वन्तु नित्यशः ॥ स्वस्तितेऽस्तु द्विपादेभ्यश्रतुष्पादेभ्य एव च ॥ स्वस्त्यस्वपादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति 🕴 सर्वदा ॥ खाहा स्वधा शर्चाचेव स्वस्ति इबंद ते सदा ॥ छन्मी रुज्यती चेव करतां स्वस्ति तेऽन्य ॥ असितो 🏅

देवलश्चेष विश्वामित्रस्तथांगिराः ॥ स्यस्तितेद्य प्रयच्छंतः कार्तिकेयश्च पण्मुखः ॥ विवस्तानः भगवान् स्यस्ति 🐉 क्रोड तन सर्वशः॥ दिग्गजाश्चेव चलारः क्षितिश्रममनं ग्रहाः ॥ अधस्ताव्हरणीं योऽसी नागो धारयते सद्।॥ शेषञ्च पन्नगः श्रेष्ठाः स्वस्ति तुभ्यं प्रयञ्जन्त ॥इत्यत्नतारोपणं॥अथ स्वातिवाचनम्॥तदंगभूतं त्राह्मणपूजनं 🎉

करिष्ये ॥ विश्वाधारासि धरणीत्यास्थ्य ॥ अक्षत पुंजोपरि पूर्णपात्रान्तं विधिना कलशं संस्थाप्य ॥ तदुपरि ना-अर्थ-( † ) तेन अयमृत ब्राह्मणपूत्रन करी विधायासीति मजीवडे कळशासापनपूर्ण पात्रात करी प्रतिष्ठा करी करणन प्रतान प्रचीपचार्या करत. तैया रु ( ग्रान्ता ) मासवानी संप्रदायके पढ़ी प्रार्थित करी नवस्कार वरी बेड ययना गोठण भाँवपर गोठनी बेड हाधने कपलना नेवर करी हाधमा कलका 🖠

त्र मत्र सामज्या पत्रे वण बदत ते कल्या माथे अस्कादको एत्रे बराबर बेक्ती कछत्र। जगापर मुक्ती देवे। तथा आलागोना दायमा पाणी आणी चदन पुल चीवा सीवारी वान उसला आपी वार्च वाणी आपतु ए प्रमाण यथा पत्री नासलोए ते पाणी यमधानने माथे उद्धी मत्र बेस्टिया. पर्छी पुल्याहेबाचन

neen

ल्लिकेरं निधाय ॥ तुरिमन्वरुणंप्रतिष्ठाप्य पूज्येत ॥ वरुणायनमः ॥ गंधं समर्पयामि ॥ वरुणाय॰ पुष्पं॰पूर्पं॰ द्वीपं॰ नेनेशं॰ त्रार्थयेत् ॥ नमोनमस्ते स्फटिकप्रभाय स्रुश्वेतहासय समंगलाय ॥ सुपाशहस्ताय अपासनाय जलाधिनाथाय नमोनमस्ते ॥ पारापाणे नभस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक॥पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं संस्थिते। भव ॥ वरुणाय॰ प्रार्थना पूर्वकनमस्कारं स॰ अनेन पूजनेन वरुणः प्रीयतां ॥ मातदेवो भव ॥ पितृदेवो भव ॥ आचार्यदेवो भव ॥ अतिथिदेवो भव ॥ आशिषः प्रार्थयन्ते ॥ एताः सत्याआशिषः संतु ॥ अवनिकृतजानुमं-🕺 **इ**स्तः कम<del>ुत्रमुङ्गुस्तरामंजर्कि शिरस्याथाय दक्षिणेन</del> पाणिना सुवर्णपूर्णकरुशं धारयित्वा ॥ दीर्घानागानद्योगिर- 🕏 🎚 यस्त्रीणि विष्णुपदानि च ॥ तेनायुःप्रमाणेन प्रण्याहं दीर्घमायुरस्त ॥ शिवाआपःसंत सोमनस्यमस्त्विति भवं- 🕺 तो ब्रबंत ॥ अस्त्र सोमनस्यं ॥ एवं सर्वत्र ॥ अक्षतंचारिष्टंचास्त्वि॰गंधाः पांत्रमांगर्त्यंचास्त्वि॰ अक्षताःपांत्र आ- 🖇 युष्यमस्ति । प्रणाणि पांतु सौश्रियमस्ति । तांयुलानि पांतु ऐश्वर्यमस्ति । दक्षिणाःपांतुबहुभेयं चास्ति । यंकृत्वा सर्ववेद यहा किया करणकर्मारंभाः श्रुमाः शोभनाः प्रवर्तते ॥ तमहं नत्वा भवद्रिस्तुह्नातः पुण्यं पुण्याहं वाच-इत्युक्ते कुंभाज्यलं पातयम्बदेत ॥

कर्मसमृद्धिरस्तु प्रत्रसमृद्धिरस्तु धनथान्यसमृद्धिरस्तु इष्टसंपदस्तु अरिष्टनिरसनमस्तु यत्पापं तत् प्रतिहतमस्तु यच्च्रेयस्तदस्तु उत्तरेकर्मण्यविष्ठमस्तु उत्तरोत्तरमहाहाभिष्टद्धिरस्तु उत्तरोत्तराः कियाः शुमाः शोभनाः संपर्धतां ॥

ितिथिकरणसहर्तनवात्रसंपदस्तु तिथिकरण सहर्त नक्षत्र ग्रहलगादि देवताः शीपंतां दुर्गापांचाल्पी पीपेतां अप्ति-

भगवती ऋदिकरी त्री॰ भगवंती विष्नविनायकी शीयेतां भगवान स्वामिमहासेनः सपितकः

यनी श्रीयतां भगवतीत्माहेश्वरी श्रीयतां भगवती पुष्टिकरी० भगवती पुष्टिकरी श्री० भगवती वृद्धिकरी श्री० 🖗

सपार्षदः सर्वस्थानगतः श्रीयतां हरिहर हिरण्यगर्भाः श्री॰ सर्वाग्रामदेवताः श्री॰ सर्वाःकुलदेवताः श्री॰ सर्वोद्दष्टदेवताः श्री॰ हता त्रहाद्रिपः हताः परिपंथिनः हता अस्यकर्मणो विज्ञकर्तारः शत्रवः पराभवं

यिज्ये बाज्यतामिति ॥ ततः कर्ता ॥ त्राह्मणाः मनःसमाधीयतां समाहित मनसःस्म ॥ इति ते प्रसिदंतुः भवंतः 🐉 प्रसंजाः स्म ॥ शांतिरस्तु प्रश्निस्तु वृष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु अविष्ठमस्तु आयुण्यमस्त्र आरोग्यमस्त्र शिवंकमीस्त्

🎖 प्रोगाविश्वदेवाः श्रीयंतां इंद्रप्रोगामरुद्रणाः श्रीयंतां ऋद्यप्रोगाःसर्वे वेदाः श्रीयंतां वसिष्ठप्ररोगाऋपिगणाः श्री० 🕺 <sup>'</sup> अरुन्धतिपुरोगाएकपरूयः श्री॰ ब्रह्मच ब्राह्मणाश्च श्री॰ श्रीसरवस्वर्यो श्रीयेतां श्रद्धामेधे श्रीयेतां भगवतीकात्याः 🕏

शिवा कतवः संतु शिवा अत्रयः संतु शिवा ओषधयः संतु शिवा वनस्पतयः संतु शिवा अतिथयः संतु अहोरात्रे शिवेस्यातां शुकांगारक ग्रुभदृहस्पति शंनेश्वर सहुकेतु सोमसहिता आदित्यपुरोगाः सर्वे ब्रहाः श्रीयंतां भगवाञ्चारायणः श्रीयतां भगवानपर्जन्यः श्रीयतां भगवानस्वामिमहासेनः श्रीयतां प्रण्याहकालान वाचियिष्ये |बाज्यतां त्राह्यं पुण्यं महर्यश्च सृष्ट्युत्पादनकारकं ॥ वेदबृक्षोद्धवं नित्यं तत्पुण्याहं हुवंद्ध नः ॥ भो त्राह्मणाः महां सकुटुंबिने महाजनान नमस्कुर्वाणाय आशीर्वचन मपेक्षमाणाय अस्य कत्या दानारूयस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो |ब्रुवन्तु पुण्याहं इति त्रिः ॥ ३ ॥ पूथिन्यासृष्ट्रता यांतु यक्कल्याणं पुसकृतं ॥ ऋपिभिः सिद्धगंधर्वे स्ततक्रत्याणं 🗱 ब्रुवन्तु नः ॥ भो त्राह्मणाः महां० अस्प० कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु कल्याणं ॥ ३ ॥ सागरस्य तु या ऋ-र्द्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता संपूर्णा सुप्रभावाच ऋदिं तां च तुवन्तु नः ॥ भो त्राह्मणाः महां० अस्य० कर्मणः।

अर्थ-पनमाने पुण्याह करूपण माहि स्वित्त वधाना उचार पोताने मोडे करवा तथा तेनी मृद्धि थाओ एम्प्राह्मणोये कहेवुं, एपवा पत्नी यनगतने

पह्लोकरी भारबोटी प्रध्याहवाचनने सक्रस्य भगवान प्रजापतिचे अरुपम करवो.

दिल्की 🏄 ऋद्धि भवन्तो हुवन्तु ऋष्यता ॥ ३ ॥ स्वति याचा विनाशास्त्र्या धर्मकल्याण ग्रद्धिदा ॥ विनायकप्रिया नित्यं 🧯 प्र॰ २ तां व स्वस्ति व्ववंद्ध नः ॥ भो त्राह्मणाः मह्यं अस्मे कर्मणे स्वस्ति भवन्तो व्ववंद्ध आयुष्मते स्वस्ति ॥ ३ ॥ 🍨 मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः ॥ सन्तु मनोस्थाः शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ॥कृतेन पुण्याह्याः वनेन भगवान् प्रजापतिः प्रीयतां ॥ दानलंडोक्ता मंत्रा आशिषः संतु ॥ अभिषेकः ॥ अभिषेके पत्नी वामतः सहस्रक्षं शत्थारं ऋषिभः पावनं ऋतं ॥ तेन त्वामभिषिचामि पावमानं पुनन्तु ते ॥ भगंते वरुणो राजा भगं स्यों वृहस्पतिः॥ भगमिंदश्च बाखुश्च भगं सप्तर्पपो दहुः॥ यत्ते केशे च दीर्भाग्ये सीमंते यच मूर्थनि॥ ललाटे ै कर्णयो रूणो सपस्त्विमंतु ते सदा ॥ नारदाद्याऋपिगणा ये चान्ये च तपोधनाः ॥ भवन्तु यजमानस्य आ-ै शिर्वादपरायणः ॥ असृताभिपकोऽस्तु ॥ स्वस्थाने उपविशेत् ॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासिद्धचर्थं त्राह्मणेभ्यो वयोत्साहं दक्षिणां दास्ये ॥ कृतस्य० यथासंख्याकान् त्राह्मणान् सुवासिनीः वट्ठकान् कन्यकाः यथाकाले भोज-यिष्ये ॥ कृतस्य॰ गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसी दास्ये ॥ अद्येत्यादि॰अद्यान्हि यथा मिलितोपचास्ट्रव्येः कृतं कर्म तत भवतां त्राह्मणानां वचनात श्रीगणपतिप्रसादातः सर्वं परिपूर्णमस्त्रिति भवंतो ख़नंखः अस्तः परिपूर्णं इति 🦠

सुमुस्श्रेकदंत्श्र्य क्पिलो गजकर्णकः ॥ ठंनोदरश्र्य विकटो विश्वनाशी विनायकः ॥ ध्म्मकेतुर्गणाध्यक्षी भारु-ए वर्त च गणेपास्य मणण्य च परस्पस् ॥ परस्परं सुस्तोव्छिन्नं कर्तव्यं मीतिहत्त्वे ॥ आन्नप्रस्तरीकोव्य गीरी प्रजनपूर्वकं ॥ क्रुंक्यम्यपं-केन्द्र्याणा गीतपुरस्पस् ॥ इतिहास्यस्त्रान्तानस्याम् ॥ वर्त्तणः मण्यकोः समाग्नित्वव्याहारण्योजनक्षेष्ठ्यसितित्रेयः ॥ इति हात्तप्रधुतिः ॥

अभ्-क्षे अभ्येक करते तेया वन्तानप्रस्तिने दान्तं तर्त्तः नेसाडी प्रण्याह्यान्त्रना कल्यानं पाणा त्यन्तं मायाद्य छाद्य तथा परक्रन्याना माथापरछाद्य,

तथा अभिषक वरताले वस्त्रणा नावण्योजनाने सक्त्य तथा और्षुं वर्षते यहे स्वयं वेते यदे मूर्यांनो सक्त्य करते ते दक्षिणा माद्याने व्यवस्त्र पत्री । पत्री

वद्य प्रज एव राग्यांतिणे प्रार्थना वर्ता नमक्त्रर करते, वे बाहानमा विभि वसी गया क्रैय विवि अहिया करेले, तेमा सामासाची वराने पत्रा करवानो

दिजाः ॥ इति श्रीजपानंदात्मज मूलशंकरशर्भणाविरचितायां विवाहकौमुद्यां दितीयप्रयोगे वाग्दानादिपुण्याः है हवाचनांत प्रयोगः ॥ श्रीगणेज्ञाय नमः ॥ श्रीष्ठरुग्या नमः ॥ अथ विवाहसंस्कारः ॥आचम्य प्राणानायम्य ॥

प्राची कर दे करामा करना करना कर कराम, च बाझाना वाब पहा गया छय व विशेष आहेंया तरहा. तमा सामासामा वर्सा पिता तथा करणाना विशेष करिया में सिता मेरी वत्ता किया वर्षा करें हैं तथा के उपना मारे केंद्र चार विशेष तथा करिया एक देना है हैं अपित है 
ncell

निर्विष्ठतासद्धवर्थं गणपतिपूजनं वा स्मरणपूर्वकं अभिस्थापनं करिन्ये गणपति संपूज्य ॥ प्रार्थयेत ॥ अनेन पूजनेन महागणपतिः प्रीयतां॥आचार्षःभूसंस्कारपूर्वक योजकनामानमिनं प्रतिष्ठाप्य ॥ दर्भैःपरिसमुद्य ॥३॥ गोम-येन उपलिप्या।३॥ क्रशमृहेन उछिरूय ॥३॥ अनामिकांग्रेष्टेन उखृत्य ॥३॥ उदकेनाम्युक्ष्य ॥३॥ अत्रिमुपसमा-भाय ॥ आत्माभिम्रुखमर्त्रि संस्थाप्य ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं दत्वा तमुपवेश्य ॥ उत्तरतःप्रणीतासनं ॥ तत्र पात्रा-सादनं ॥ त्रिणि पवित्रे दे ॥ प्रोक्षणीपात्रं ॥ आज्यस्थाली ॥ संगार्जक्रशाःपंच ॥ उपयमनक्रशाः सप्त ॥ स-ततो विवाहवेशां वहनरी मादमुखी तेजनीवीरणकटे एकासने अग्नेः पथादुपविश्य ॥ उत्तरे वा पेशाने धेनलकुर्म स्कंधे गृहीत्या ॥ काश्चीचि-हेत् ॥ आसप्तपंपरं याकळकं मूमी वेकाने निधाया/उत्तरतो हपदुपलेचालंहते निधाय ततावधूपिता परस्परं समीक्षितव्यं मंत्रेणा। व्यसिद्धसुरपतिही

त्रिवाच सुमना स्तथा ॥ सुनर्चीः पुत्रसु देंन कामाच सुलदा थव ॥ इतिवरः ॥ सोमनंपर्वाप्रिपृष्ययोज्याः ॥

२० को । 🖁 चंद्रो गजाननः ॥ साक्षतहस्ते जलमादाय अद्यत्यादि० तिथौ मम देव पितृ मनुष्यऋणापाकरण धर्मप्रजोत्पादन-सिद्धिद्वास श्रीप्रमेश्वरमित्यर्थं च प्रतिगृहीतायां अस्याम् वन्वां भार्यत्वसिद्धये विवाहहोमं करिन्ये ॥ तदंगभूतं

ऑह्ममवेदने नायमदो नामासि समानया मु-्युसते अभवत् गरमजनन्माग्ने तपसो निर्मितोऽसि स्वाहा ॥ १ ॥ ओं र्मवत्यपस्य मधुनासं सुन्नामि 💸 प्रजापते मुस्तमेतद् द्विर्वयम् ॥ तेनपुरसोभिभवासि सर्वीन्नशान्तशीन्यसिरादि स्वाहा ॥ २ ॥ ओं अदिकथ्या दमकृष्यन् ग्रहानाः स्तीणा 🕏 मुपस्य मृपयः पुराणाः तैनाज्यमकुण्यन स्त्रैगृतं त्यापूरविषतस्थातुस्त्राहा ॥ ३ ॥ सामवेद्रमं ब्रा० प्रपा० १ मं० २-३ ओंजरांगच्छ परिकत्ववासो भगक्ष्णिनायभित्रस्तियाचा ॥ अर्थवनीव श्ररदःगुक्ची र्सयच पुत्रानुसंख्यय स्त्यायुष्मतीदं परिधत्स्य वासः॥ सौतर्मव ग्रंथे-( ? ) प्रयानेअधिकाससिद्धो स्थमतिष्ठिचदंगेवि श्रवणोषदेसादिना क्रानसंभवाद्धोधपादः ।। (१) ( कापबेद् ) हे कामदेव! तातनाम आखु नगत जाणेजे. तुं मश्कर नामफी प्रसिद्धित तुं अनेभा तारा अपने माटेडराज वयक्षी कन्या पण झरा-समान (मदकारेणी) हे ते कम्यानीयाता मने कराव. हे कम्याते! तारु मूलकारकीमातिमान हे तूं पुरुषोर्गनी सिदिकरावनारहे.( इमना ॰) हे कम्यके ! आ ता-री आनंदेंद्वियोने मधुरमञ्जदे मार्गसाये योजानु कुंत्रेप्रजापतिना अन्तामुखसमानने तेनात प्रभाववंद्वे नदामानहींआवनारा पुरुषो मण वदा यायने दे कान्तिमाती तुं सर्वेक्षपनाओंनी त्नाविकोऊआमकोवडेसुर्गभित शुद्धनल्यो। पूर्णकल्याने व्ह वसू तथा वरे स्नानकरी पश्चात् उत्तमकलाकंकारभारणकरी। उत्तमआसनव्यर पूर्वािम्सुसे बेततु. ( जानच्य ) १ हे गुणवान रचु । हभरफ्रमये तुं पूर्ण आयुपी था, आवक्यरियान कर प्रीतिवती जने पतिनता थमे, सीदर्वतेम 🕏 तथा सन्तर्ति अने संपत्ति सनं तने प्राप्तथात ( याअकृतक ) है बीर्णायुर्ध ! बयुसाध्वीरतीयोव निर्मेखा आ बसने पेदेर अने तेओना आदिर्णाद्ध वृद्धकारवर्षत आर्खु आगुप्य सुलयी ऋगण कर.

114111

हवे अहिया उपरायको न करता ने रही चालेंके, ते पूर्णपालकीके वस्त्रस्थाना क्ति भस्तुंधोडु करवानस्थामाय पढी गोर भेगाना अधवा बानट लांब तेने स्वंदिन्त पश्चिममानुरेदे. एवं कम्को पदोरोन्स्वा वेउपसम्पानेसाथे वेसाडेत्रे. तथा चार विकराना करूरा तेनाज्यस्वारमासाये चारमायसाना स्तंपनी पासे. 🕻

अर्थ (१) हो ए स्त्र क्रियाभिषेत्रन् शास्त्रव्याणे करवा ए बाजबोचारी स्पर्वाले तोते उत्त्याक्ष्मणे करवाधा उत्तमकल मेलेक्सने ते हो धाया है, हो स्वरण है 🕏 ए नहीं माणवाना अबे मारे गुजरातिभाषाचां देर शास्त्रोत। प्रमाण मुक्त छन्युं छे,पियियत् विवाहसंस्कारकरवी ते महणकरेली कन्याने भार्यत्वसिद्ध पवः होम करती. तया तेथा पेकायी वरकस्थान उठाडी साची ने पूर्वभिक्छतेगोदवबी-पछी कन्याने पटीली पेहेराची अने नेउनणाने साथे पूर्वभिसरी नेसाडमा तथा है

गणवात पुत्रनती संग्रस्य करी गणवात पुत्रन वयाहारिक कर्त्य पत्री स्थंबिटनागर अमि स्थापनकरी कुझांडी विगेरेकरीने तेया योभकनामनाअपिनं स्थापन कराउँ ।

गोहकी नाहुंबायेदे,तेवयापकी निसाने गपेरया उंत्राहुक छ पुत्रागोर एक नानीमायदी, ब्हर, तैमां, काची खेट बाखेत्रे,पुत्री थोडुंनाहुल्ड तेने घीमांचेदी रतनदीर-बद्धामां सल्लावी तेचेरीवर मुक्केंद्रपत्रपेक्षमादक्ष रहने तेना उपर घरेजे.अने मोटेवी गोरकहेंत्र के कंसाररंपायी-पात्र तैने एकपासूचे सुकेंद्रे-पात्र गोरमातनी 💲 सातदगढ़ाकरेहे.ने तेनाउपर बर्नाअंगुठो अर काडेडे.तेनस्त यन्याना माइनेबोलानी तेनी नासे वरनी अंगुठो पकडानी तेनीतिना अपाता रूपिया अपायेते पार्च वरकन्याने चारवसत चोरीची आगाटी पारांडी फेर्बेडे, तथा संगर्वभगवानविष्णो सैंगरूं गरुदध्यन | संगर्व पुंडरीकाश्च धेंगरुपदानं होरे: | | १ ॥ है सर्व कंगल भागस्ये क्षित्रे सर्वार्थ साधिके।। दारण्येश्वेत्रकेगीरा नारायणी नमोन्नुते।। राते यता नीपार्कगर्यकरावस्तते पाटडी वरवाला तरफधी आपेके.ते कल्याने 🖔 उपरना मागपा ओड़ोरेंक्रे मंगरुकेरावलते केटळीकन्यातोगां मात कन्याना हाथमां आपी चेरीमां चलावेठे.एप्रमाणेपयापदा कंसारनारीत तेमां कन्याना माता 😩 अबी पाठीमां देवो होट कारोंके तथा तेमां सांड तथा चाँड लासी हलावेके.पांत सन्यासरने मोडे चारकवत देवो होट अरकाडे परनोत्तमणो कान पकडीने 🕏 पत्रीवरकन्यानेबोडे चारक्यत आरबोडे कन्यांनी कानपहरीने-एने बंहारकहें 3 पता पोतानी रीती आपेत्रे, तेमां परनेकन्यातरकशी में हिप्याधायाहरूव े

तेपांतमेहं बरनाला कन्याबाळाने आपेठे, एठेकाणे दागीनापण आपेठे.९ठी चन्यानी माता बेटनणना हाए घोषडाणी नासेठे केटलीकन्यातीमां सासनी छेडो वकडवानी चार होयड़े-हवे मेहेतानीआवीर बेडने सब्बेका भगावेडे.पडीवक्ट्याने चांहोकरी बेडनगतरक्षी मेतामीने खोलागगवानी रु. ( १ ) एक एक अवाय है. तथा वरकम्याने पण सरक्षेत्रानी रीतना रुपीया अवाय है, तथा अहींचा-पोर्स्टोकोना दायान्यातिचा रिवरण प्रमाणे अवायहे. तेने व्यवासन-इंदासन कहें है. तथा बाजामंदीरी विगरेनी अथवा न्यातना धारानी रीतो अवायके. पढी मीनीशु करेब्रे.तेमां पेछाधी बरवाहा तरफरी केटलीक-मातीमां करेब्रे. तथा केटलीकन्यातीमां वन्याबारतरक्यी करेंके. तेचा बांको वसने करी भातबोही रुपीयाआपता तेने मोजीशुं कहेंछे करी वेबारप्रसाम जे आपहाँहोयते अपायके. 🔯 पडी केरकीकरणाती चारवस्त कोरीनी प्रदक्षणा फरीधी फेरके ए आठसंगळवालाने करवासुंछे. पडी चारखीयी भावी वरस्त्रयाने चांहीकरी सात बबावी होते. तथा कन्याना नवणाकानमा गोर केवाठे क्रे.त्रहासावित्रांत्र एवातण-रूक्सपार्वतीत् सौपारय-एथयापक्री कन्यानी माता वरना कोटपांधी वरमाल्य काढी चोत्रडी

मिपरितसः ॥ सुदः ॥ आज्यं ॥ पूर्णपात्रं ॥ वरोवा ॥ उपकल्पनीयानि ॥ शमीपखाशामिश्रा लाजाः ॥ शूर्पं ॥

करीक्न्यानी कोरमां लाखेंहे. पर्छ गोरवरक्रनाने उंचे जुनो एसक्टी वरमां योजकपास लक्ष्यन गोजन प्रनावरायी त्यां १४ सोपारी-तथा १४ वेसा छड तेने चाराणीमां नांली एकीवरी रमाडेठे.तथा अंतरपटना ककाडानी कोरडोकरी मायबाटकाने चारबस्त अरकाडीकन्याने वासे अरहाडेठे.तथा बरपण एमकोरेछे ု 🌣 भंगी इंस्तुनना हाथ करी। मायमाटटाने तथा करेअरकांबी। गर्सा मोहंकरी उटेटे. पत्नी वेताना माताविताने वेगेटामी वस यर बदावेकरे सो मादीमा वेती।

पेताने घेर नायहे. आ बाहुरीबाननो विभि पेहुसेशं समाती सुभीनो बस्रोहे जेनेशास्त्रप्रमाणे नकरतुं होय तेणे संस्थमां कहेरो विधि करिसमान करतुं ॥ 🔖

हवे शासप्रमाणे अनुक्रमे विधिकहेबाय 🦫 ॥

मो०॥ आर्ज्य मो०॥ पूर्णपात्रं मो०॥ उपकल्पनीयानि मो०॥ असचरे मोक्षणीपात्रं निघाय ॥ आज्यस्या-त्या माज्यनिर्वापः ॥ दक्षिणतोआज्याधिश्रयणं ॥ गृहीतोत्सुकेन पर्यमिकरणं ॥ सुवप्रतपनं ॥ संमार्गक्ररीःस्रव- 🎘 स्य संगार्जनं प्रोक्षणीजलैः ॥ अप्रेस्त्रं मूलेर्मूलं ॥ प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणं ॥ युनः प्रतपनं ॥ देशे निधानं ॥ आ- 🞖 ( ? ) बराहालेणतःकत्या होताबायव्य गीचरे ॥ अभा च उत्तरिस्थाप्य ईशान्यां श्रुक्शुनी तथा ॥ इशान्या मुदक्वमं च आप्रेयामित्रसंभवाः

बरने जमणे हाथे कन्याने बेसाटकी तथा गोरेवायन्य कोलभा बेसवुं तथा उत्तर दीवामा नीशा तथा उपरवादवानी नीशातरी मुकशो. केटलीक हेकाणे बर्न प्रमण हाथ कन्यान बसादका तथा वारवायक्य कायका नात्व तथा उपर समाचा नाता तथा उपराक्तिका नात्वात हुए मा उपराक् नीहा एकडी मुक्ते के नेताथी दोप प्राप्त करें। दंपतीमा नन्मछंगी खुडापणु रहेंके एने झाटककोरे शीवशक्ति मानेटा छे, पडी एक पाणी मरी तावानी हु

क्या महस्यो तथा समर्हता पात्रा तथा पासेर मातनी घाणी सुपद्यमां मुकती विगेर पात्रो गोठपी ने विपितत् होम करवी.

ज्योदासनं ॥ उत्पवनं ॥ अवेक्षणं ॥ अपद्रव्यनीरसनं ॥ प्रोक्षिण्याः प्रत्युत्पननं ॥ उपयमनकुशग्रहणं ॥ तिष्ठन |सिमियोन्याथाय ।। प्रोस्तर्णाशेषोदकेन वन्हेः पर्युक्षणं ।। पवित्रयोः प्रणीतासु निथानं ।। वरेण अन्वारव्यः आचार्यो दक्षिणं जान्याच्य ॥ ब्रह्मणा दक्षिणहस्तेन अन्वारव्यः सुवेण जुड्रयात्।। प्रजापतिम् मनसा ध्यात्वा ।। प्रजापतयेनमः ॥ इदं प्रजापतये नमम ॥ १ ॥ इंद्राय० इदमिद्राय० ॥ १ ॥ वरः सर्वत्रत्यागं क्रयीत ॥ अ॰ ्रीभये॰ इदमन्रये॰ ॥ सोमाय॰ इदं सोमाय॰ ॥ ४ ॥ अक्षताच गृहीत्वा ॥ विवाहे योजकनाम्ने वैश्वानराय (१) ऑसम्ब्रुन्त विश्वदेवाः समापो हृदयानि त्री ॥ संपातिस्था संपाता समुदेशी दशतु त्री ॥ सा० म० आ० प० १ खं० २ मं० ९ ओं भृष्टिवास्तः अधोरचञ्चरपातिप्रेधिनिया पशुभ्यः सुमनाः सुवर्धाः ॥ बीरस् देंत्रकामास्योना बालोभव द्विषदे सं चतुष्पदे ॥ सा० गं० (१) ( समझन्तु ०) दे ( विधेदेव ) व्ह्वाशासाम बेडेटा व्ह्वानी आप अपने क्लेंबे ( समझन्तु ) अमारी।प्रसन्नता पूर्वक गृहस्याश्रममां एकत्र रहेवाने माटेएकशैजानो स्वीकार करनाराठीये एम निध्यपर्वक नाजो अने असे (नीहदयानि) अमाराहदूव (आप ) जटनीपेंडे समान (सम ) महेखांछे असे जनवने चारण करेंद्रे तेम अमेनने एकवीनाने बारण करीमु नेम (सर्वरेष्ट्री ) उपदेशक श्रोताओ उपरयीति रवेतेद्र, तेम ( नी ) जमारायतेनो आत्मा एक्कीशासांव दर्जम (दभात ) भारणकरी (अग्रेर॰) हेक्सानेत (आतिश्रि ) पतिश्री साथेविरोध न करनारी (ओम्) रशणकरी (ग्रूः) माण-इत्या (ग्रुव ) सर्वेद्व सोने दूरकरनार (ल ) मुख स्वरूप अग्रे सर्वेने मुखना दाता आदि नेना नामछे ते परमाणेनी छूपा अने वीतानाउत्तमपुरसार्थ ते हैं नमः॥आजाहयामि व्रजयामि योजकनाम्ने वैश्वानसयनमः गैधं समर्पयामि ॥ योजकनाम्ने वै० पुष्पं- योजकन्त्रे वि० १ व नाम्ने वे० ध्रपंत०॥ योजकनाम्ने वे० दीर्घ स० ॥ योजकनाम्नेवे० नेवेद्यं स० ॥ अभिर्वेश्वानसेविन्हि है ॥ 🖟 वीतिहोत्रो धनंजयः ॥ ऋपीरयोतिरुर्वेलनो जातवेदास्तनूनपात् ॥ इति संप्रार्थ्यः ॥ अनेन प्रजनेन ट्रै

(२) ओं प्रूर्मुवास्तः त्वर्वस्याभवति सकतिनां नापस्वभाषन्युदं विभिष् । अञ्चिनिषिनं सुधितंनयोभिषदंपति समनसर्कृणोषि स्वाहा ।। इत्यानये विभाव । विभा

अमार्ट आर्दफाँड पोपण करीपरस्पर एकजीनाना अंत करण शहर अने समान करो

शीयतां ॥ अथाष्ट्राहुतयः आज्ये**न** ॥ अग्नयेनमः ॥ इदमत्रये

बायबे॰इदं वायवे॰ ॥ २ ॥ सूर्याय॰ इदं सूर्याय॰ ॥३॥ अभिवरुणाम्यांनमः ॥ इदमभिवरुणाम्यां॰॥४॥ पुनः ॥ 🕄 अमिवरुणान्यांनमः॥ इदमिवरुणान्यां० ॥५ ॥ अयसे० इदं अयसे० ॥ ६ ॥ वरुण सवितः विष्णुविश्वदेव मरुत्स्वकेंम्यो॰ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वदेव मरुत्स्वकेंम्यश्च॰ ॥ वरुणायादित्यायादित्येचनमः ॥ इदं 🐉 वरुणाय आदित्याय अदितये च नममा। अथराष्ट्रऋद्योमः ॥ आज्येन॥ऋतापाहे ऋतथाम्रे अग्रये गंघर्वाय नमः ॥इदं ऋतापाहे ऋतथाम्रे अग्रये गंधर्वाय नमम ॥१॥ औपधिभ्योप्सरोभ्योद्मरोनमः॥इदं औपधिभ्योप्सरोन्यो उचोनमम् ॥२॥ संहिताय विश्वसाम्ने सुर्यायगंभर्वायनमः॥इदं संहिताय विश्वसाम्ने सुर्यायगंभर्वाय नमम् ॥ ३ ॥ मरिचिन्योऽपरोभ्य आयुभ्यो नमः॥ इदं मरिचिभ्योपरोभ्यो आयुभ्योनमम् ॥ ४ ॥ सुशुम्णाय सूर्यररमये चंद्रमसे गंवर्वाय तमः ॥ इदं सुशुम्णाय सर्वरहमये चंद्रमसे गंधर्वाय नमम ॥ ५ ॥ नक्षत्रेग्योपसरीभ्यो भेक्की-( १ ) रुतापादिति द्वादशाहुतयो राष्ट्रभ्तसंद्राः ॥ एताम् सीपुस्त्वादि ऐक्पस्वहेतुः इति महिभरभाष्ये ॥

भ्यो तमः ॥ इदं नक्षत्रेभ्योप्सरोम्यो भेकृरिभ्यो नमम ॥ ६ ॥ ईशिराय विश्ववचसे वाताय गंधर्वाय नमः अपि- (१) पत्र राष्ट्रस्कोम करने तेनी आहुती बारआपनानीठे ते तेनामत्येक देवताने आपनी जेनावी पुरसमा कोइश्म नरायाथी नयुसकादि दोग व ते कथा प्रमान प्रावकीके होप ते दूरपर पुरपत्व प्राप्तकरेंछे

ुईशिराय विश्ववचसे वाताय गंधवीय नमम ॥ १ ॥ अङ्गोऽन्सरोभ्यञ्जनम्यों नमः ॥ इदमद्रयोः उपसोभ्य अग्न्यों नमग ॥ ८ ॥ भुज्यवे सुपूर्णीय यज्ञाय गंधर्यीय नमः ॥ इदं भुज्यवे सुपूर्णीय यज्ञाय र्गंभवीय नमम ॥ ९ ॥ दक्षिणाऱ्योऽप्सरोभ्य स्तानाभ्यो नमः ॥ इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्य स्ता-ब्युम्यो नमम ॥ १०॥ त्रजापतये विश्वकर्मणे मनसेगंघर्वाय नमः ॥ इदं त्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गंघः (1881) हैं वीच नमम ॥ ११ ॥ ऋस्सामभ्योऽप्ससेभ्यऽष्टिभ्यो नमः ॥ इदं ऋस्सामभ्योऽप्सरोभ्यऽष्टिभ्यो नमम ॥ १२ ॥ अथ जयाहोमः ॥ वित्ताय नमः ॥ इदं वित्ताय नमगारा। चित्येन०इदं चित्येनममा।शा आकृताय नमणा इदमाङ्गतायः ॥ ३ ॥ आङ्ग्ये॰ इदं आङ्ग्ये॰ ॥ ४ ॥ विद्यातायः इदं विद्यातायः ॥ ५ ॥ विज्ञात्ये॰ इदं विज्ञात्ये ।। ६ ॥ मनसे इदं मनसे ॥ ७ ॥ शकरीम्यो इदं शकरीम्यो ॥ ८ ॥ दर्शाय० इदं दर्शाय० ॥ ९ ॥ गीर्णमासाय० इदंगीर्णमासाय० ॥ १० ॥ वृहते० इदंगृहते० ॥ ११ ॥ स्थतराय० इदं स्थतराय० ॥१२॥ 🕺 ( चित्तं चेत्यादिमयापंत्राणां विचायस्वाहेति चंतुर्व्यक्षेत्र होमहतिभर्तृत्वाः ॥ नेति ककोहयः ॥ नचेपानि देवतानामानि किताहिपंत्राधितेच पयास्नातं मयोक्तच्या इति गदायसदयः ॥ अर्थ-( १ ) मया है।पनी १२ आदुति आपनी जेनाभी पोताई तेन पराक्रमनो उदय पद पोताना कार्योमां यशस्त्रीपणुं प्राप्त करेछे.

्री ॥ २ ॥ दक्षिणस्यामन्यपात्रे त्यागः॥ प्रणीतोदकस्परीःयमाय पृथिव्याअधिपतये० इदं यमाय पृथिव्याअधि०॥३॥ वा-र्वन्तरितस्याधिपतये॰ इदं वायवेन्तरिताधिपतयेशाशा सूर्याय दिवोऽधिपतये॰ इदं सूर्याय दिवोधिपतये॰ ॥५॥ 🕏 त्रं चंद्रमसे नतत्राणामधिपतये॰ इदं चंद्रमसे नतत्राणामधिपनये॰ ॥६॥ चृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये॰ इदं वृहस्पतये त्रहाणोऽधिपतये० ॥ ७ ॥ मित्राय सत्यानामधिपतये० हदं मित्राय सत्यानामधिपतये० ॥ ८ ॥ वरुणायापाम-अन्तिमेताना मित्यादयः विवरः विवामह इत्यंता अष्टादश यंत्रा अन्यातानसंत्रा ।। इति हरिहरमदारशी ।। अनिनर्भुवाना मित्यादि सुमन्न र्पण मिलंता हारणविंग्रीत रूपातान संश हति कर्कतारिककारी ॥(१) दक्षिणस्यां अन्यपात्रं निवाय तन्मच्ये त्यागः ॥ त्रणितोदकं स्पृधेत्॥ पूर्वे त्यागः परंमुत्यो पमरवार्गं तु दक्षिणे ॥ पश्चिमे पितृस्वार्गं च च्छत्यार्गं व ग्रेक्ते ॥ वदक स्पर्धः ॥ इठि कास्क्रिकाराः ॥ प्रक्रवासनान्ते 🔯

र्भ प्रजापतये जयाय निन्द्राय॰इदं प्रजापतये जयाय निन्द्राय॰॥१२॥अंथः अभ्यातानहोमः॥ आज्येन॥ अमये १ मृतानामिषपतये॰ इदं अमये भृतानामिषपतये॰॥१४॥ इंद्राय ज्येष्ठानामिषपतये॰ इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामिषपतये॰

एके आचार्याः ॥ संसव मारुनान्ते एतापाहुति विष्ण्यति ॥ तत्र एते परं मृत्योसिति होमति पुनस्य तस्य संसवनायन विति गदापरः ॥ अर्थ-(१) अम्यातान संतिक १८ अबहुती आपकानी है नेती स्थाग एक-ग्राम दशिण दिशामा चीतुं भूकी तेमा करवानी है, ए आहुतीयो अत्वराणी, वैकामा, वियोग पनो नवी तेष सारी प्रमा, उत्पन कर है.

त्तवष्टे रूपाणायभिषतपेञ्डदं त्वष्टे रूपाणामधिषतपेञाशभाविष्णवे पर्वतानामधिषतपेञ्डदं विष्णवे पर्वतानामधिष-तये॰॥ १६॥ मरुद्वयो गणानामधिपतिभ्यो॰ इदं मरुद्वभ्यो गणानामधिपतिभ्यो॰ ॥९७॥ पितुभ्यः पितामहेभ्यः 🕺 परेभ्यो बरेभ्य स्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्र॰ इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यश्र० ॥ १८ ॥ दक्षि 🕏 णानयोर्भेष्ये अन्यपात्रं निधाय ॥ तन्मध्ये स्यायः ॥ उदकस्परीः ॥ एते अष्टादशमंत्राः ॥ अभ्यौतान- 🖇

विष्ठति विष्ठवापत्या गुरीवांजिल्सेव सः ॥ अंजलिस्यांखिया सर्वी न्याद्युखी मतिमंत्रतः ॥ मानापत्येन वीर्येन देवे नेवेतिबह्बचः इति कारिकायां ॥ इव्यस्थाये तु वरस्य कर्म्यनं स्वामिष्ठल पोगादि गदाभरादयः ॥ भ्रष्टास्तु त्रीह्पोलाना इति क्रस्यवितृतमणी ॥ त्यानाः पुं भूनिन

Cill 1

मायोपधीनामधिपत्तपे॰ ॥ १२ ॥ सवित्रे भसवानामधिपतये॰ इदं सवित्रे भसवानामधिपतये॰ ॥ १३ ॥ स्ट्रायं ै पर्यनाम्थिपतये॰ इदं रहाय पशुनाम्धिपतये॰॥१४॥ ऐशान्या मन्यपात्रं निधाय तन्मध्येत्यामः॥ उदकस्पर्शः॥ 🕏

चान्नसः ॥ इत्यमरे ॥

🕴 ॥ ३ ॥ वैवस्वताय॰ इदं वैवस्वताय॰ ॥ ४ ॥ दक्षिणस्यां अन्यपात्रे त्यागः ॥ वश्ववणोर्वस्त्रपटं प्रक्षिप्य तूर्िण ॥ मूत्यवे॰इदं मृत्यवे नमम ॥१॥ अत्री वा भूमी त्यागः ॥ उदकं स्पृशेत ॥ अस्य लाजाही मः अः॥ कुमायो आता शमीपलाशमिश्रान् आसादितशूर्पस्थान् लाजानैजलिनांजलावायपति ॥ तान् घृतेन अभिवार्य ॥ वन्नः दक्षिः ( ? ) तबस्ती वश्वसी सहैव इतिप्रतः तवो रूपापुष्ठवो गत्सा वहसिणत चदद्मस्यःस्वेनांजलिना वर्धकर्कि गृहीस्ता अवविद्यते ॥ ततः स्त्रमोः वृषेस्मां दिशि स्थिता वृष्याता भाता वा अन्तेः पश्चिमतः आसादिनं लानास्त्रमं वामहस्तेनादाय दक्षिणहत्तेम वयुद्तिणपादेन इसद्भाकामपेत् ॥ अर्थ-( १ ) अति, सहित, आहती आएकानी छे नेनापी पोताना, समावहाला, सर्वतीनी, प्रेम क्वे हे. ए शांच आहती अवाया ब्रिंग वहार एक अतरफर साला एक आहती, अनिया अपनी नेनापी अकाल मृत्युनी भय, रहेती सपी. 🕫 हवे, छात्रा होन करवी, तेमा अन्यानो पाइ, तेने बोळावी, चाटोकरी, तेना हायमा, मातनी घाणीत सुंपद्व आपी, पूर्व दिशामा, परिधमने मोढे, उमी रासवी. पूर्व कन्याने हाथ खेला लेको कराको तथा, पम जपणो, निमाने अरकादी कन्याने उभी राखकी, पत्री धरे पोताना दे हाथे, कन्याना हाय एकर्रा उत्तरन मोर्ड करी, देउ जले उमा रहेर्चु-पठी तेमन साथमा, कन्याना, मार्च्य सुपदामाधी घाणी जापनी तथा तेमा उपर में रेडी आरतु. वरे पंत्र मणी ते आहुती आप्रिमा आरवी. करी वर कन्यापे अभिनी प्रदक्षिणा करवी. मीरे मण भणी पेहेर्स मण्ड धर्यु एम केहेर्सु. पाठा वर

र्सिज्ञिकाः ॥ अभिसंज्ञिकाः पंच ॥ अभये० इदममये० ॥ १ ॥ अभये० इदममये० ॥ २ ॥ अभये० इदममये० 💲

वि॰की॰ । जपादेन दशद मान्नामयेत्॥ वस्तु मंत्रं पठेत् ॥ इति पठित्वा ॥ अस्मारोहणतोत्सेव स्थिरो भूयतु कन्यका ॥ दि-पूर्ता नाशकर्त्रीस्या च्छंदोगश्चतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममझमानमारोहा मंत्रोक्त फलमागियं ॥ भवत्वस्मन् पूसादाते ५ शिवसक्तियतोऽसियत् ॥ इति पश्चिमा ॥ अर्थम्णेनमः ॥ इत्यप्ती जहोति वधः ॥ अथ वध्युरःसरः प्रदक्षिणमि

े परिकामयेत् ॥ प्रथमे मंगरुं चेव ब्रह्मणःसमरणं क्रुरु॥ पितामहप्रसादाच युवां सीस्यं भविष्यति ॥ आयुष्यं कीर्ति-おと続け (१) टाजाहोमं समिद्धोमं मूर्जिक्षोमं तथैरच ॥ पूर्वाहुति वसोधीरां तिष्टतैत हि कारपेत् इति भास्करे ॥ कन्यपि की बोतादी मगापर आवी प्रयम प्रमाणे उमा रही, सबले विधि प्रथम प्रमाणे करी.बीलु मैंगल-तथा घीलु मैंगल करवुँ, पत्री चाेपा मेगल बसते प्रथम प्रमाणेकी करवानाहायमां सुपर्डेट्ट सुपटावते त्र होमकरवो.पठी बोर्स मंगठफरबुं.एन मंगठफेरा कहेंग्रे.एवा ब्रह्मासाविधीन्दंद इंट्राणी-टर्क्स मगवान महादे-व-पारवती-देवताफे ( इमपरमानमारोहा० सां० वंझा० प्र०१ खड २ ) हेकन्या आ निसापर उमीरेहें अने एनानेवी स्थिर था तथा तने शञ्चपी पीडा न

थाओं तथा तुं ताराशानुने पीडने आवायकारना अर्थ शीखने अष्टकवानो वेदनोछे देमन-मैगल्फेरामां ( सा० में ब्रा० प्र०१खंड २ इयलार्जुपर्वृते०) वरक-न्याये जमार्थे कन्याये क्षत्र बोल्दो. तपाहापमारहेडीबाणी होनक्ष. तेने अप-हापगांवाणील्ड उमीरहेली कन्यायंत्रभणी अप्तिमाहामनसीमागेले. हे अर्घमन् कू 112411

समे मारा पतिने दिवीयु करो. ते केवी के सी वर्षतु आवरदा आपो. तेमम मारा न्यातिना मद्यायोगी बृद्धीयाओ, आवी उत्तमविधिने पण वेदाविहेत ते पतो नथी. महे करवो. एप्रवाणे टामाहेक्या मंत्रीभणी पत्री उपरना यंत्र भणी अपित्री प्रविधणाकरवी-नेनार्थी प्रोतार्त्त आयुष्य कीर्ति एक्सी सीभाग्य विगेरेनी युद्धि-यायाँ. करीची पाउर पश्चिममां उभारही-शीलाने पगअस्त्राही प्रथमप्रमाणे घाणीलइ संजनगी-अप्रयेनम, एसरही होम करवी, पति उपर प्रमाणे संजयणी

मत्यंतां लक्ष्मीं सौभाग्यमेव च ॥ मदक्षिण्यानया सर्वं मददान्त इविर्श्वज ॥२ ॥ प्रथम् मंगलम् ॥ एवमनेः श्रदक्षिण्येन परिणयनं कृत्वा ॥ अमेःपश्रात्प्र्ववत् अवस्थाय ॥ उदङ्मुखस्वांजलिना गृहीतवश्वंजलिवत् तिष्ठे-🛂 त् ॥ क्रमार्या माता यथोक्तलाजानंजली सिपति ॥ वप्रःदशदमाकामयेत् ॥ अस्मारोहणतोस्मेव स्थिरीभूयत् कन्यका ॥ दिपतां नाशकर्त्रीं स्या च्छंदोगश्चतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममश्मानमारोह मंत्रोक्त फलमागियं ॥ भव 🎎 त्वरमन् प्रसादात्ते शिवशाक्तिखतोऽसि यत् ॥ २ ॥ अप्रये नमः ॥ इदमप्रये नमम ॥ इत्यमें छहोति वभूवरे। 🐉 अत्रिं प्रदक्षिणीकृत्य ॥ श्रद्धां शांतिं यशःप्रज्ञां रुक्षीं बुद्धिं वर्लं प्रजां ॥ अवैधव्यं च आरोग्यं देहि मे हत्यवाः 💱 हुन ॥ १ ॥ दितीये पंगलेयेवं प्रत्रपोत्रपदोभव ॥ जातवेदःगसादाचे युवां सीख्यं भविष्यति ॥ २ 🕍 द्विती यमंगुरुम् ॥ एवमभेःश्रादक्षिण्येन परिणयनं कृत्वा ॥ अभेःपञ्चादवस्थाय ॥ वदङ्मुखस्त्रांजितना गृही- 🔯 क्षिण बस्त आरिये प्रवस्ति कर्ती, पर्ता भीनीतस्त पात्र पोताना स्थानस्र अन्ते। उभारही शिलाने पण अरकाडी अन्याए पोताना भारूना हाथमांथी संबद्धं हुद्र तेना अगदती मंत्रमणी वर्धी म पाणी भगायनमः एभकही होमकर्षी, तथा उपरनी मंत्रभणी नीतं मंगल एल्डे नीवी प्रदक्षिणा करती. ए बलते वस्त्रान्तराक्षयी धाटही ओराहवानो संबदायठे, ते वस्त्रान्त तरफर्या की? सीयायवती ओराहे पत्री वरकन्याये पीवाना जासनपर बेसाउं.

फलभागियं ॥ भवत्वसम् प्रसादात्ते शिवशक्तियुतोऽसि यत् ॥ २ ॥ अप्रयेनमः ॥ इदमप्रये नमम् ॥ प्रवेवत् प्रदक्षिणा∕ ॥ आमेयः प्ररुपोरक्तः सर्वदेवमयो ब्ययः ॥ धूमकेतुरनाधृष्य तस्मे नित्यं नमोनमः ॥ तृतीये मंगले हैं

ष्येवं कृष्णभीष्मक कन्यका ॥ प्रद्यात सहदःप्रीतिं समिपस्यां स्वधर्मिणीं ॥ तृतीय मंगलम् ॥ पुनः पूर्ववत् ॥ गृहीतांजालिः नरोऽत्रतिष्ठेत ॥ इमायीत्राता शूर्पकोणप्रदेशेन सर्वान् लाजान् इमायाँजलावानपति ॥ दशदमा-

कामयेत् ॥ अस्मारोहणतोस्मेव स्थिरीभृयतु कन्यका ॥ दिपतां नाशकत्रीस्या च्छंदोगश्चतिचोदनात् ॥ १ ॥ इममञ्मानमारोह मंत्रोक्त फलभागियं ॥ भवत्वश्मन् प्रसादात्ते शिवशक्तियुतोऽसि यत् ॥१॥ भगायनमः ॥

इदं भगाय नसम् ॥ समाचास सूर्ष्णि चतुर्थपरिक्रमणं ॥ मंगलं भगवान्विष्णोर्मगलं गरुडध्वज ॥ मंगलं पु-

ण्डरीकृष्य मंगलायतनं इरिः ॥ सपन्नीकेभ्यो बहाविष्णुरुद्रहेदेभ्योः प्रजापतिभ्यश्च नमः ॥ इति नमस्कृत्य इति 🥇 ॥८०॥ चतुर्थमंगरुम्॥अथ पाणिग्रहणं॥ स्वासने आगत्य ॥ ततो वरो वष्का दक्षिणहस्तं सांएष्ठ मुत्तानेन हस्तेन

1

(१)ओं गुभ्णाविते सीमगत्त्राय इस्त्रं ययापत्य जरदृष्टिपेश सः ११ भगोभवेगा साबिता पुर्गन्यमेतं स्वादुर्गार्हपत्याप देवाः ॥१।। ओं 🐉 |भगस्ते इस्तपद्मभीत् । सन्तिमा इस्तपद्ममीत् । पन्नीत्वमसिः धर्मणार्हगृहपतिस्तव ।। २।१ मयेषमस्तु पोण्यामतं त्वादात् बृहस्पतिः । मयापत्या भजावति समीव शरदः शतम् ॥ (१) हे बरानने-सुमुखि जेम हु सीनगत्वाव ( ऐक्पर्य अने सुद्धजादि सीनाग्यनी पृद्धिमाटे ) ते ( तारो ) हस्तम् ( हाथ ) गुभ्णामि प्रहण कर्त हुं. त ( यया ) है के ने ( पत्या ) पिन्हें तेनीसांधे ( जरहांद्रः) बुद्धावायाने मुखपूर्वक प्रात ( आस ) था. तथा हे बीर! हू सीपाय्यनी वृद्धिगाटे तमारी 餐 हाय महण करें हुं. तये सारीताथे (कारणकेंद्वेतमारीपन्तीतुः.) शुद्धावस्य पर्यत प्रपतः अने अनुकुल रही जानयी हु तथारा परनी मायने प्राप्त धहुनुं अने तमे मारा पति पत्रने प्राप्तप्रवाहो. (भरा ) सकल एक्वियुक्त ( अर्थमा ) न्यायकारी ( सनिता ) सर्वनगतनो उत्पत्तिकर्ती ्रिया तम भारत पात करते व्याप्त करता परपारमा अने ( देवा ) आसमये समामहरमां उपस्थितपयला विद्यानमाणता र व्याप्त करता परपारमा अने ( देवा ) आसमये समामहरमां उपस्थितपयला विद्यानमाणता र व्याप्त करते विद्या है कर्मां अवस्था अवस् प्रहणकर्त हुं तथा ( सबिता ) धर्मयुक्तमानेने प्रेरणा करनार हुतारी ( हत्तम् ) हाथ ( अप्रधीत ) प्रहणकरी चुन्यो हु (त्वम् ) हुं ( धर्मणा ) धर्मवेडे मारी (पत्नी) भार्या ( जासे ) हे अने ( अह ) हैं, पर्मवंडे ( तव ) तारी ( मृहचतिः ) पतिकु अवणे की प्रेम पूर्वक मलीने मृहना सर्वकारी सिद्धकरीशु अने प्रतीनात अधियापरण-व्यमिवास्परि कुस्सितकर्यों करी नशंकरीष्ठी, त्रेवडे मृहता सर्वतार्थी सिद्ध भाय-डचेमी तम संतान पाय तथा नेनावेड वैसर्वे ्री भंगे पुलर्गा अध्यापाण-व्यापास्तर कुस्सितक्या करो नर्शकराष्ट्री, जेवडे मुहना सर्वकार्यो क्षिद्र पाय-उत्तेमो तम संतान पाय तथा जेनाउँड ऐसर्ये भंगे पुलर्ग प्राप्ती भाग तेंद्र आवारण करीषुं है अनंव-प्रापाहित ( बृहस्पति ) सर्वनगतना पालक परमेश्वरे ( खा ) तने (पद्मम्) पाराभति (अरात् )

्रीमिबितातुसदा गता ॥ १ ॥ इति पाणिग्रहणं ॥ वश्रवसे स्वस्थाने त्राग्वेद्धपविश्व त्रह्मन्वारूभः खहुः

यात् ॥ प्रजापतये नमः ॥ इदं प्रजापतये नमम् ॥ इति प्रेशिक्षण्यां त्यागः ॥ ततो अमेरुत्तस्तः उदकसंस्थान्

दरवास प्रतिहा करे के, हेमदे ! मुनन सकछ आगदुरगदक परमेश्वरनी कृषाधी तमे मने प्राप्त धवाछे. मारेपाटे आ जगतमा तमास बगर बीनी कोइ

सविताचे देनी क्रपबंडे हुँ वर्णा वन्तान तथा सीम्यबृत्तिवाली तथा बैद छोकराओंने प्रसमवावाली तथा रक्षणकरवाली था. अने मारा कुल्यां ेत्ही माराश्रंत इरणनी बुत्ती साधद कुटमा मोद्यापणने पान. ए प्रमाणे पाणी महण कत्यांनी अर्थने, ते देवताओनी कुभावडे प्राप्त यायके. पड़ी मरकन्याने पोतानी नगागरेन्सी अधिमा होग करो प्रोक्षणीया ध्याग करतो. पड़ी अधिना उत्तरमा वत्तरतरफना सातगातना दयस्य करवा. तेना 💸

सप्ततण्डुलपुंजाच कृत्वा ॥ वरः ॥ अद्यत्पादि० तियो प्रतिगृहीतस्वदारसिद्धपर्यं सप्ताचलपूजनं करिष्ये ॥ इस्ते अर्थकर्ता (इयम् ) एत्तन नगतमा मारी (पोप्या ) पेरण चोग्यपनी (अस्तु ) था. हे (प्रनावती ) उत्तमप्रमा उत्पन्न धरनारी तृ ( मयापत्या ) हंजेतारोपति छुंन्तेत्रीसाथ ( शतम् ) सो ( शरद ) शरद-अतु अथवा सोवर्षपर्यत ( सजीव ) युष्पपूर्वक प्राणधारणस्य निवनव्यतीत कर आ प्रमाणे वधूपण

पण पति अपान् पाटनकरनार सेल्यतथा इष्टदेव नधी हु तमारुन बर्धी करीस तेम तमेभारा चगरनीनी कोई पण खाँसाथे अयुक्त प्रीती मादर्तुं वर्तन नहीं रास्त्रीस-तामे मारी साथ प्रीती अने आनदपूर्वक सो वर्ष जीवो. प्राणधारण करो. हवे पाणी प्रहणसंस्कार करवो. तेमा वरे पेताना जमणाहायेथी कन्याना जमणो हाय अंगुटासाये चत्तो मणिक्य अगाडीयी पक्रडी उपरनोपंत्र बोछ्यो, एना देवता मग-यम-अने 🕹

अक्षतान् गृहीतां ॥ हिमवते नमः ॥ १ ॥ निषधाय नमः ॥ २ ॥ विंध्याय नमः ॥ ३ ॥ माल्यवते नमः ॥ ३ ॥ ्रणारियात्रिकाय नमः ॥ ५ ॥ गंधमादनाय नमः ॥ ६ ॥ हेमकूटाय नमः ॥ ७ ॥ प्रतिष्ठांकृत्वा ॥ प्रतिष्ठासर्वदे-्री इपर सोचरी रीता गोटवी संकरन करते तेवां वें प्रतिग्रह करेखें कन्याने दासन सिद्धिनेगाटे समापछेखं पूजन कर्रखं-एम कही हाथभाँ नीलालड र सातार अनुक्रमे नोसा प्रभावमा. ते बनावी आवाहन करी प्रतिधाकरी पूमनकरते. तथा प्रर्थना करी पूमननो संकल्पकरी अर्पण नराई. ए प्राचीन अनल र देश्यांनी है. तेना पुननकी खाँद्रएको मन रिवा रहेडे जेम औरवीभिगोधी वर्षती केवा शोभेंडे,नेम वरकत्या पण अनेक प्रकारना आनंद छह सुसंपोगिवेडे.

है सर्वपुर्दामां एक्टा मुक्तानो विवि एवोने के कपू प्रथम पेतांकी जपणोपम हशानिद्शाना कोणतएक मुके पड़ी मीजोडामी पग उपाडी जनणास्पनी पाटली ्रें गुभी मुठे एटेडे अववास्तानी पजनारे डाव्हे भा मुद्रे. आने एक पमुंडे कहेंडु एवाबीआ ए पमझंओ मरवां ते समयना मंत्रोबोरी—नेटखाल आहाजोमातनी ट्रमही वहानी चनाततेच उत्तर मुकानी यसहावेठे, ते स्याननी नभी स्यां सहावस्त्रंत पुननपर्युठे, सातपुर मुकवानी हेतु रुख्योठे फेरे वगरे 🕻 ( अन-मोग) २ (तेनस्त) १ ( पन-ऐवर्ष) ४ ( मननी प्रसन्नका ) ५ ( उत्तमधना ) १ ( सर्वफतुओसरखी ) ७ ( परसर्नाधीत ) अने मसञ्चतावृद्धि इत्यादि 🗳 पशुभाषाते ब्रम्यार एरेक पर्व पर्व परव प्राच स्थते वसते वसते वसतिए प्रतिहाओ करवारीठे ते संस्कृतमूल्ये. ते एक संत्रमणी तेनेठेवे नयस्कर्यकरी भीगी 💍 मा प्राकीरण साते प्रतिहाना मंत्री यहरहेपत्री वरकचारी पोताना स्थानपर बेसवं एयकस्वाधी दंपति संसारना अनेक्यकरना सुलोमोगरी मोक्षेमळवेठे.अही-वा धानी भाष्टीर करेंश्री विक्रेक्स्प्री विक्रिक्ताओं मुकेशीचे ते वरक्रन्यं पणेतो सारंके वर्सतिख्या बुरानां छे.

वामि ॥ भो सप्ताचलाः सप्तिक्षिताः वरदाः भवत ॥ प्रतिष्ठांते प्रज्ञनं ॥ सप्ताचलेभ्यो नमः ॥ गंघं समर्पयामि ॥ 🕏 सप्ताचलेभ्यो॰पुष्पं स॰ ॥ सप्ताचलेभ्यो॰भूपं स॰ ॥ सप्ताचलेभ्यो दीपं स॰ ॥ सप्ताचलेभ्यो॰ नैवेदां स॰ ॥ पूजा 🕺 साहुण्यार्थे दक्षिणांस० ॥ त्रार्थयेत् ॥ हिमवात्रिपद्मे विन्ध्यो माल्यवान्पारियात्रकः ॥ गंधमादन मन्येच हेम-क्यादयो नगाः ॥ प्रार्थना पूर्वक नमस्कासन् स॰ ॥ अनया प्रजया सप्ताचलाः प्रीयंतां ॥ वरस्तेषु वर्षप्रतिज्ञा 🗐 पाउनपुरःसरमंत्रं पढित्वा ॥ वश्वा दक्षिणपादं स्पर्शयति ॥ याम्यमारभ्य उदकसंस्य मुत्तस्तउत्तरं वश्रपदं आ कामयति ॥ वर्ष ॥ अथ सप्तपदाक्रमणं ॥ छलदुःखानि सर्वाणि त्वया सह विभज्यते ॥ यत्र त्वं तदहं 👸

बि॰की॰ 🐉 वानां मित्रावरुणनिर्मिता ॥ प्रतिष्ठा तां करोम्यत्र पुँजेषु दैवतः सह ॥ सप्ताचलेभ्यो नमः ॥ सप्ताचलानावाह-

तत्र प्रथमे सा त्रवीदिदम् ॥ १ ॥ ईशेनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ १॥ छुटुंवं रक्षयिष्यामि आवृद्ध वालकादिकम् ॥ 👸

( ? ) अग्रेरुत्तरतः येनां कर्त्रुं दक्षिणपादेन सप्तरारं परिक्रमुणं कारवतीति ॥ इरिङ्लादापरादयः ॥ कुमार्यो दक्षिणं पादं ग्रुदीत्वास्पाययती 🥇 गठर्गा

स्यन्ये ॥ विष्णुस्त्यानपत्तिति पद्यंत्रेष्ट्रायः केनसम्भे ॥ इतिक्रकः ॥ वामपादस्य नाक्षमणापिति रेणुदीसितः ॥ अन्येपां भाष्यकाराणां च यते विच्छुपदस्यानुंद्रमः ॥ त्रापं पादमयतो न कुर्पादिति ॥ सुवोधिन्याम् ॥

अस्ति नास्ति च संबुष्टादितीये सा व्रवीदिदय् ॥ २ ॥ ऊर्जेनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ २॥ भर्तृभक्तिस्तानित्रं सदैव भियभाषिणी ॥ भविष्यामि पदेचैव तृतीये सा व्रवीदिदम् ॥ ३ ॥ सयस्पोषाय नमः ॥ विष्णवेनमः ॥ है।। ३ ॥ आर्तेआर्ता भविष्यामि सुखदुःख विभागिनी ॥ तदाज्ञां पालयिष्यामि कन्या तर्वपदे व्रवीत ॥ ४ ॥ ्रीमायोभवाय नमः ॥ विष्णवेनमः ॥ ४ ॥ ऋतुकाले शुचिस्ताता ऋडिष्यामि त्वया सह ॥ नाहं परतरं वायां कत्या पंचपदे व्रवीत ॥ ५ ॥ पंचपशुभ्योनमः ॥ ५ ॥ इहाथ साक्षिणोविष्णु र्नच त्वां वंचिताम्यहम् ॥ उभयोः श्रीतिरत्यन्ता कन्या पष्ठपदे त्रवीत् ॥ ६ ॥ पडरायस्पोपायनमः ॥ विष्णवेनमः ॥ होमयज्ञादिकार्पेषु अवामि 🕺 🚉 च सहायिनी ॥ धर्मार्य कामकार्येषु कत्या सप्तपदे त्रवीत् ॥ ७ ॥ सलिम्यो नमः ॥ विष्णवेनमः ॥ ७ ॥ आचारात कन्याभाता वरपादांग्रहं महीत्वा ॥ अवतिष्ठेत् ॥ इति सप्तपदाक्रमणं ॥ पूर्वस्थापित मंगलक्रंभोदक-अर्थ-(१) ए प्रमाणे सातकाला भर्वापत्री पोताना जासनगर नेसन् केळलीकम्यानीमा बेरकन्यानी अंगुठो परुतनी जीहये तेने यदले कस्थाना भाइपासे अगुडो वरडोवेंडे, तथा हेने अंगुडोदवावणी तथा पाणीउंद्रावणीनी शितना रुपिया आपेडे तेया वापासेक अंगुडो पडावी कमें करावत्रं पछी शितना रुपीया महे कत्याना भारने आएवा ॥

🗞 वायनमः ॥ इति पंचोपचारेः संपूज्य ॥ वद्यः पश्यामीति हृयात् ॥ अथ वरः दक्षिणांसस्योपरि इस्तं नीत्वा 🖇 तस्याहृदयमालभते ॥ मयं तव चित्तवागम्यो नमः ॥ इति हृदयमालम्योत्ततो वश्रमुपवेश्य ॥ इत्यान नारात् ॥ नरःअनामिकात्रेण वभाशिरसि स्पृशेत् ॥ तस्याःसीमते वरः सिंदूरं ददाति ॥ वभूमृत्याप्य ॥ स्वदः तिणे दर्भोपरि गोष्वपुरुपेभ्यो नपः ॥ इति मंत्रेण वश्रमुपवित्र्य ॥ स्विष्टकृतं जुहुयात् ॥ अप्रये स्विष्टकृते नमः

(१) सुर्योत्रलोक्तनं दिवाविवाहे भवतीति रेणुकारिका हरिहती ॥ सुर्योवसेणस्यान्यथातुपपत्पाऽस्तिमि तेशुवं दर्शयती स्थानास्तिमत ग्रहणाच प्तद्भवानुवारिणां दिनेव विवाहो नरात्राविति गदापरः ॥ धुवमीक्षस्तेत्वरुपेषणा न भवतीति कर्तः ॥ धुवमीक्षस्त्रेति पेप इतिहरिहरगदापरी ॥ (?) जो धुनानी धुनाःपृथित्री धुनंतिभाषिदं जगत्। धुनासः पर्वतारूपे धुनासी पतिक्रले १यम् ॥ जो धुनगसि धुनन्त्यापदयापि धुनेपि-

वोच्ये मुर्यिपयं त्यादात् । बृहस्पतिर्षया पत्यानजानती सजीव सरदः शतम् ॥ ९ ॥

119011 अर्थ-( १ ) एसप्तरही थ्या प्रिः मंगलकट्यमाथी पाणीएट मंत्रसणी सरक्यानामाथापर अंटनुं. हवे दहाडानालगन होयतो सूर्यनादर्शन करावचा तथा

रात्रीनाहोयतो बट्याने धुवना दर्शन करावया. धुव देलाववानुं तालकी एटईन ठे के हेवपु अथवा वर नेम आ ध्रुव दर अने स्थिरठे नेबीरिते आपणे 💆

वेजजाए ए.जि.जाना विवायरणमां पतिवत्त्रीयमं वाळनमां स्थिर अने दृद धर्थ. १६ अमुच्य " आवदनीतमयाये पाष्टिविधनस्थानत पतितुं नाधवोळतुं नोहरेग नेपके तोर्दुनाम सितासमी अथवा चक्र वर्षी होच तो तेतुं नाम जिल्हामंग, अथवा चक्रवारंग, अथवा भगवान दासस्य इत्यादि बोलतुं नोह्ये. तेयन असी 🗳 💆 पर्ता नामाने कपूर, पोताई नाम प्रथमा विभक्त्यन्त मोटी मंत्रने पूरी बोलको जैनके यशोदाहं शिवशर्मणस्ते इत्यादि आ नामाये पण ( अमुच्य ) पदनी 🕹 तत्त्राये पतिन्ने ताम परयन्त विमत्त्रकटे बोल्युं अने 🤫 असी ?' ता मन्याये करूतुं प्रथमान्त नामओडी बोल्युं ! नोट्ये. नेमके हे स्वामिन् यद्दोदा ( अहम्) ूँ हुं (अनुष्य) पत्रवर्गीती के पद्मुष्यतो अर्थाम ( पतिकुछे ) तमाराङ्ख्या धुना निवाल नेवाहे आप ( धुनम् ) द्वनिधय करनार मासस्यिएति ( असि ) जों, तेम हुं पन तमारी हर अने स्थिपतनी पाउं हे बरानने ! मेम (बीं ) सूर्यनी काती अथवा विश्वत (धुवा ) सूर्य अववा पृथिल्यादि लेक्तामा 🕏 िर्भार-नेम (र्शियो ) भेताना सरक्तमा ( भुवा ) स्पिर् नेम इस्त आ ( विश्वम् ) सर्वनगत संसारभगात स्वरुवमा ( भुवम् ) स्थिरछे तपा नेम र (हमर्गाता ) आ पर्वता ( भुवसः ) पेताना स्थठमा स्थिरछे. तेम ( इकम् ) आ तुं मारी ( खो ) ( पतिद्वले ) माराखलमा ( भुवा ) सर्वदा स्वियराहे. ह ें (१) पड़ी बरे करपाना अवशा राभे हायमुद्दी तथा हुदये हायमुक्तां मेत्रभगतो. पड़ो वरे पोतानी चौथी आंगर्डलिट कस्पाना मायाने अडकी तेना सेपाना हैं में गुर नांन्युं, फेताथी तेना सीपायकी सुद्धि भावते, पड़ो सिक्षहत आहि आहुतीओंनी होन करवो, एने पूर्वविताह कहेंजे. १ हे वयू (वुं) तारा

💈 इदममये स्विष्टकृते नमम् ॥ इति पूर्वविवाहः ॥ अद्यत्यादि० कालापकर्प जन्य दोपपरिहारार्थं श्रीनु संख्याः १ (१) वध्याःसीपंते यरः सिंदूरं ददातीति प्रयोगस्ताको ॥ अनानिकारेण वर्शन्तिस अभिषंत्रण पित्यन्ते ॥ वतुर्ध्यकेषे चतुर्धेके इन्त्रेष्ट मिति गरं च रूडणा तरिनेव कसेति॥ १ ऑ गम बने ते हृदयं दथायि गम वित्त महाचित्तं ते अस्तु । मप बाचमेकमना खपस्व

🕉 मनापविष्टमा नियुनस्तु मयम् ।

कान् प्राजापत्यान् रजतप्रत्याम्रायद्वारा अर्धकृच्छ्रपरिमितद्वयेण अहमाचरिच्ये ॥ तेन प्राप्तकर्मणि अधिकारः 🕺 े ओं अन्नवारीन गणिना त्राण सूनेण (पृक्षिना ) कन्नामि सत्यग्रंन्यिना मनश्र हृदयं च ते ॥ १ ॥ ओं पदेव हृदयं तद तदम्नु े हुदूर्य तम बहिद ९ हरवम् यम तहस्तु हुदूर्य तम ॥ २ ॥ ओं अन्ने नागस्य पहित्र ९ सस्तेन वधामि त्वासी ॥ ३ ॥ (१) सुमङ्गरुशीर्य बहुर्यातम् समेत पश्यतः । सीभाग्यमस्य दत्वा यापास्तं विषरेतनः ॥ १ ॥ (हययम् ) अत काण, अने, आत्माने (सम ) मारा ( वित्तपतु ) चित्तने, अनुकूछ ( ते ) तार्ह ( चित्तं ) चित्त सर्वशः ( अन्तु ) थाओ ( सम ) मारी (वाचम् ) बाणीने, त् (एक मना ) एकात्र बित्त ( चुपल ) सेवनकर (प्रमापति ) प्रमात पालन करनार, परमेश्वर (त्वा ) तने ( महस्प् ) मारे मोटे ( नियुननत् ) नियुक्तकरे. हे बच्च, अथवा वर, जेम, अजनी सापे प्राण, अने प्राणनी सापे अल, तथा अल अने प्राणनी, अंतरिक्ष साथे संबंध हे, तेम (ते) तार्ह (हर्कम् ) बदव (च) अने (मनः) मन (च) अने के वित्त हत्यादि, तेने (सत्यवंशिना) सत्यतानी गांउ पडे (वहानि) बार्गु छु. हे बर, बा, हे खी ( धरेतट् ) ने आ ( तर् तारु हदयम् ) ( आत्मा अथवा अतः करण छे ) तत् ( ते ) मम ( मारा ) हृदयम् ( आत्मा अथवा र्शत वरणनी, हुत्य प्रिय ) असु ( थाओ अने ) मम ( मारी ) यदिदम ( जाआ ) हृदयम् ( आहमा, भाण अने मन छे, ते, ) (तारा तब हृदयम् ) आत्मा किंग्रेसी तुरुप, प्रिय ( अस्तु ) सदा रहो ( असी ) वरे मधुतं नाम बोलत्, हे यशोदे ने ( प्राणस्य ) प्राणतं परिण करतार ( पडार्विश) उनसम्हें तल ( अन्नम् ) अन्न है (तैन ) तेनडे (ला ) तेने ( बन्नामि ) इट प्रीति बडे बांधुं हुं. ( १ ) हे विद्वलनी (इयं बच्चा)आरपी ( सुकद्मकी.)

उत्तमनन्याण कारत्रगुणीर्था युक्त थाय तेम ( श्वाम् ) आने ( समेत ) वरो अने ( पश्यत ) जुवो एटले के ने रीते एने उत्तपसुखनी मात्रा थाय तेनी आनी उन्नतीक्रो ( अरपे ) आनेफाटे ( सीमाग्यम् ) उत्तम सौमाग्य (चत्वा)आपी ( अथ ) पत्री ( आस्ताम् ) तमे पेताने येर ( विपरेतन ) पाउर नान. १९२॥ । इदयं मम चिदद र इदयम् मून तदस्तु इदयं तत ॥ २ ॥ ओं असं माणस्य पद्वि र त्रास्तेन वद्रामि स्वासी ॥ २ ॥ (१) सुमङ्गळीरिय । पश्चिमम् संनत पत्रवत । सीभाग्यमस्य दत्वा यापास्तं निपरेतन ॥ १ ॥ ( हमयम् ) अंत.काण, अते, आस्माने ( मम ) मारा ( वित्तपन्तु ) वित्तने, अनुकूछ ( ते ) तार्ह ( वित्त ) वित्त सर्वेदा ( अरनु ) थाओ ( मन ) ह मही ( याचम् ) याणीने, तूं ( एक मना ) एकाप्र पिच ( जुपल ) सेवनकर ( प्रजापति ) प्रनातुं पालन करनीर, परमेश्वर ( त्या ) सने ( महान् ) 🕏 मारे माटे ( नियुननत् ) नियुक्तकरे. हे वपू, अपना बर, जेम, अवनी साथे प्राण, अने प्राणनी साथे अस, तथा अस अने प्राणनी, अंतरिक्ष साथे संबंध छे, तेव ( ते ) तार्र ( हृदयम् ) ध्दय ( च ) अने ( मनः ) मन ( च ) अने ने विच झ्रत्यादि, तेने ( सत्यमंथिता ) सत्यतानी गांउ वंड ( बशानि ) । ♦ बांधुं हुं. हे पर, बा, हे स्त्री ( यदेतद ) मे आ ( तब तारुं हृदयम् ) ( आत्मा अध्या अंतः करण हे ) तम् ( ते ) मम ( मारा ) हृदयम् ( आरमा 🕏 अवरा अंत करणती, तुक्य पिय ) अन्तु ( थाओ अने ) मन ( पारी ) यदियम ( अआ ) हृदयम् ( आत्मा, प्राण अने मन छे, ते, ) (तारा तद् इदयम् ) आतमा विगेरनी तुल्प, प्रिय ( अस्तु ) सदा रहे। ( असी ) वरे बधुत्तं नाम बोल्खं, हे पशीदे ने ( प्राणस्य ) प्राणतं बोलण करनार ( पडाँचरा) 💍 एकोसर्स तल ( अक्रम् ) अत्र हे ( तेन ) तेवहे ( ला ) तने ( सप्राप्ति ) इड ब्रीति बड़े बांधुं सुं. ( १ ) हे बिद्धनानी (इयं बग्नः)आरसी ( ग्रमहाडीः) उत्तमकरपाण कारक्ष्मुणोर्था युक्त थाय तैम ( इमाम् ) आने ( समेत ) करो अने ( पश्यत ) जुने एटटे के ने रीते एने उत्तमसुखनी मान्नी थाय तेना 🕏

अर्था उप्रतीहरों ( अर्थ ) आनेपारे ( सीभाग्यम् ) उत्तम सीमाग्य (दस्या)आपी ( जप ) पत्री ( ज्यास्ताम् ) समे वेताने घेर ( विघरेतन ) पाठा नारः 🕻

? ओं अद्ययदिन प्राणना प्राण मुनेश ( प्राप्तिना ) प्राप्ति सत्यव्रान्धिना पनश्च हृदयं च ते ॥ १ ॥ ओं यदेतव्हृदयं तव उदस्तु 🙎

॰क्ः कान् प्राजायत्यान् रजतप्रत्याम्रायद्वारा अर्थक्रच्छ्रयरिमितद्वयेण अहमाचरिष्ये ॥ तेन प्राप्तकर्मणि

चंद्राय प्रायश्चित्ताय॰ इदं चंद्राय॰ ११ ४ ।। गंधर्वाय प्रायश्चित्ताय॰ इदं गंधर्वाय॰ ॥ ५ ॥ ततो स्थालिपाकेन १ एकाहुतिः ॥ प्रजापतये॰ इदं प्रजापतये॰ ॥ १ ॥ आसां पढाहुतीनासुदकपात्रेत्पागः ॥ ततःस्थालीपाकेन १ स्विष्टसृते ॥ असये स्विष्टसृते॰ इदमसये स्विष्टसृते॰ ॥ ॥ प्रायो स्विष्टसृते॰ ॥ असये स्विष्टसृते॰ इदमसये स्विष्टसृते॰ ॥ ।। प्राप्तिपात्रे त्यागः ॥ आज्येन नवाहुतयः ॥ अमये ० अधिक्षात्मप्याने अधिक स्वाप्ति स्विष्टस्ति ॥ अधिक स्वाप्ति स्वापति 
र्थी कमें करीश-एमकरी गणसीतुं पंचोरचारी पूजनकरी अक्षिया <sup>चह</sup> करवाती तथे यतो तेती ठेकाणे छोट केवळ एकटो धपरायळे.ने ते सावामां विलक्षुल 🖔 अक्षते वश्री नेनायां दक्षामा हमडी तथा एकएकमा मद मध्या नर्था.याटे शास्त्रधमाणे प्रायन करवें। होय तो कंसारनी टेकाणे प्राय सोहये. पण ते न बने तो 🙎

गोलगापधा करें। तेतुं भराण कराववुं, ते अखुत्तमत्रे. यह थया पठी प्रायधित संवर्धानी आहुतीयो पंदर आपर्वा.

सिद्धिस्तु॥ अधेत्यादि० ममास्या भाषांयाः सोमगंधर्वाग्न्युपभुक्तदोष परिहास्द्वारा श्री परमेश्वरत्रीत्वर्थं विवाहे-कदेशमृतं चतुर्थीकमाहं करिष्ये ॥ तत्रादौ गणपतिस्मरणं करिष्ये ॥ अमी चर्र सपयित्वा प्रणीतोदकपात्रं प्रति-ग्राप्य अप्तिं नमस्कृत्य ॥ आज्येन पंचाहुत्तयो देयाः ॥ अभये प्रायश्चित्ताय नमः ॥ इदममये नमम् ॥ उदकपात्रे त्यागः ॥१ ॥ वायवे प्रायश्चित्ताय० इदं वायवे० ॥ २ ॥ स्वीय प्रायश्चित्ताय० इदं स्तीय०॥ ३ ॥ ,

```
अभिवरुणाभ्यां ॰ इदम्मि ।। ५ ॥ ॥ अमयेअयसे ॰ इदम्मये अयसे ॰ ॥ ६ ॥ वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वे
भ्यो देवेभ्यो मरुद्रयः स्वर्केभ्यश्चनमः ॥ इदं वरु० ॥ ७ ॥ वरुणायादित्यायादितये च० इदं वरुणाया० ॥ ८ ॥
प्रजापतये॰ इदं प्रजापतये॰ ॥ ९ ॥ ततःप्रोक्षणीपात्रस्थजलस्य प्राशनं ॥ संसवपाशनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥
अमी पवित्रप्रतिपत्तिः ॥ अर्थं कंसारभक्षणं ॥ ततःवधं स्थालीपाकं वरः प्राशयति ॥ कन्यामात्रा चतुर्वारं 🕺
(१) अभजायां तु बन्यायां न धंजीत कदाचन ॥ दैंगहेजस्य मुखं ह्या किमधेयनुश्लोधाति ॥ (१) ओं, इमां त्वमिन्द्र मीद्वः सुपुत्रां
सुभगां कुणु द्वास्यां पुत्रनाधेदी पतिमेकाद्वं कृषिस्वादा।ओं सन्नाही खन्नुहे भन सम्नाही भश्यो भन॥ननान्दीर सम्नाही भन सम्नाही आधिदेहस्
```

🛍 💃 इदमग्रये० ॥ १ ॥ वायवे० इदं वायवे० ॥ २ ॥ सूर्याय० इदं सू० ॥ ३ ॥ अभिवरुणाभ्यां० इदमाप्रि० ॥ ४ ॥ 🐉

(१) इक्ष्म प्रस्य अने स्रीयोने आज्ञा आऐके. के हे ( मीदव ) वीर्यतेचनकरनार ( रुद्र ) परमैश्वर्ययुक्त तुं स्वा वधूना स्वामिन् ( स्वम् ) तं है ( इसाम् ) आन्द्रने ( सुप्रताय् ) उत्तमपुत्रवाकी (सुपगाय् ) सुद्रासीमान्य भोगववात्राकी (कृणु) कर ( अस्यास् ) आ वधुमां ( दश ) दश ( पुनान् ) हे

. ९त्रोने ( आश्रीह ) उरक्तकर, अधिक नहीं जेने हैं स्त्री तपण अधिककामना नहींकर दराष्ट्रय अने ( एकादराम् ) अस्यासमा ( पतिम् ) पतिने प्राप्तपद्ध 💸 🕻

र् हंटोपे (रूपि ) कर मे आयी आगल्यमी सदानेत्यचित्रो अधिक छोम करतो तो तमारास्तानो हुए अल्पायु अने निर्दृद्ध यसे. अने तमे पण अल्पायु अने

रोगप्रस्तथद असी. हे बरानने दुं ( शहारे ) आरोपिता के ने तारो ससरी थायाने तेमा प्रीतिकर्ता (सम्राद्धा) प्रकाशमान चन्नवर्ती राजानी राणी समान पश्चमात

१ एकासनं चेकडीच्या मेकपाने च भोजनं । एकत्र मगलस्तान मेकबाइनरोहणं । कुर्रन् विवाहे एतानि भवेद्विमी न दोए भागिति॥ गार्ग्यः॥ विवाहे भाषेवा सह भोकनगढांगिरः ॥ मात्रा सहीपनयने विवाहे भाषेवा सह । अन्यत्र सहभुक्तिये त्यावित्यं माध्युयावरः इति ॥ अस्कते ॥ जैबी प्रवृत्त ( सव ) था ( श्वश्राम् ) मारीभाता के जे तारा सासुवायजे तेया प्रेमञ्का भइ तेनी आज्ञामा ( सत्रार्ज्ञ ) सारीरित प्रधानामान ( सव ) था ( ननान्त्रि ) मारी केन के तारी क्लन्दने तेमा ( सम्नाही प्रीतिवाडी अने( देवुडु )मारामाइ तारा दीयर तथा केटने तेमा पण प्रीतिवाडे प्रमाशमान ( अपि-भत ) या अर्थात् सर्वर्था अविरोध पूर्वक प्रांतिवाली था.\* हवे, कसार मक्षण कतावनु, तेमा, पेलप्यी, कन्यानी मात्रा, पारे भोड माधी आवी।,उत्तराभि मीडे बेही सारा उत्तम पत्रमा, कसर पीरसे, पर्क, तेपा, बालाड विगेरे छाले, पठी, प्रथम करे कस्पाने, प्राराच करावड़, तेमा, पेडे, कोडियेकी, चार चपरना नवी मंगी चार वसत संबद्ध ए ठेकाणे कान पकदवानी रिवाम है, पूर्व कन्याये वर्ती कान पकडी, चार बसत खबाइबु एडी नेउ जागे, पीतीना 🕺

परिवेषणं कार्यं परिवेषणानंतरं पूर्वं वसे वर्षं प्राशयति॥ प्राणेभ्योनमः ॥ १॥ अस्थिभ्यो०॥ २॥ मांसेभ्यो०॥३॥

हाथे, खाउं. तथा साहचे. बेउना हाथघोषाडवा तथा कसारसाधानी रीन सामा सामी भाषे, तेमा, बरने,में आपे, तेना करता,अधिक परवाला कन्यानालाने 🕺 आपे छे ए. केतार अक्षणनी विधि थया परी आहिंया मेतानी आवी सलोकारी रीत करे है. तेमा केटलाक विभास क्षाबरी, अन्यरेजन्य, एक एकना माता

थिता भारतने कहे छै ते क्रीक नपी. शाख्यी विरुद्ध छै. मादे में डेफाने, एकेके पोतानी प्रेम अने, अद रूएनची माद्री बावबावीड़े तेना रहेकी आहि 🕺 वसंतर्विङका इत्तमा मुकेटाजे ते बोटवांक तेमा पेहेटावरपाज कन्या एमशतुत्रमे १३ श्लोकपपापाजी मेतानांते चाठी करी एकेकरुपाँची बेउनपापे दक्षिणा 🍨

अत्तरी पत्री केळलेकस्यातोची रीतमात प्रमाणे रूपिया आपना छेत्रानीकरी छेत्रां-तथागोरेचेताना दापानारूपियाहेना तेनेत्रजासन-बंदासनकेहेर्ड तेमा बर्जागोरने 🕺

चिम् ॥ कृतस्य० ब्रह्मन् अये ते वरः भतिगृहातां ॥ पश्चिमे प्रणातात्वमाकः ॥ अत्रवश्वरवाः भावहानुत्राः पर्व हु। है। विवाः ॥ते च ॥ इस्त्रोकाः॥एत् वसंततिस्रका॥वरः ॥ छे धर्मपति नस्त्रं अरथां गजाण्वं अर्थाग अर्थं है। 🖁 बुजने मनधी प्रमाण्युं।तिथी सदा इदयमां शुध प्रेम धारी रक्षा करुं अरध अंग गणी हुं नारी।।१।।"कुन्या" ॥ 🕏 च्यां ज्यां जसो प्रभु त्यांहां तम साथआहुं छायारुपे अनुसरी पतिनी कहातुं।।हो दुःखके सुख जरी मनमानलातुं 🕏 सेचाविषे रहि सदा पति छण गार्ड ॥२ ॥ 🛛 व्हरः ॥ पाले छंडंब नहि क्वेश जस करे तूं बृद्धो तणां बचन नित्य शिरे 🖁 धरे तुं ॥ कर्तव्य तार्र मनमां समजे और तुं पाछं तदा मणयथी तुजने और हूं ॥३॥ क्रन्या ॥ पाछं कुहंब नहिं होह थरुं जराये सेना करुं वंडिलनी विधियी सदाये ॥ इच्छबुं मले नवमले रहुं हर्पमांये स्वामी तणी यह 👸 रहं मन नाणी काये॥ २ ॥ नरः ॥ जो तं रहे नित पतीत्रत पालनारी संसारकार्य अरखं तुं उठावनारी ॥ हवासनआप्तुवने कन्यानागारने मद्यासय आपनु-एवीचालंके. ब्रह्मासन हदासनहरीना शब्दीठे पण तेमचा हेकाणे बृद्धेपेल्यगाकरी सीवेकी जणायके,

स्वचेभ्यो० ॥ ४॥ इति मंत्रेण चतुर्वारं वर्ष प्राशयित्वा ॥ नेतरं कन्यावरं ॥ चतुर्वारं प्राशयित ॥ हस्तं प्रक्षाल्याः हिँ चम्य ॥ कृतस्य० ब्रह्मच् अये ते वरः भतिगृह्यतां ॥ पश्चिमे प्रणीताविमोकः ॥ अत्रवश्चवरयोः मतिह्यामुत्राः पट्र-हि

वाणी छहूथि तनताप संपावनारी पार्खं गणी अधिक पाणथी प्रीयनारीरापा। क्रन्या ॥ भक्ती कहं प्रभुगणी पति 🕏 हैं हुं तमारी स्वामीतर्णा चरणमां रहुं भावधारी॥वाणीवदी कड कदा नहीं हूमनारी भार्य सदा मधुर वाक्य विनोद 💈 कारी ॥६ ॥ 🛛 वरः॥ आज्ञाधरी शिरपरे सहुछखदेती संसारकार्य खलदुःख विभाग छेती ॥ एवी छलीन प्रमदा 🕺 🖟 परमुखी प्रीति पार्छ यस सन्जन केरि सिति ॥७॥ कन्या ॥ स्वामीतणां सुख विषे 🕫 पूर्ण सुखी थावो 🕌 🔋 कदी दुसी तमी थर्चुं हुंय हुःस्ती ॥ ए रीत नित्य छस दुःस विभागी थाऊं आज्ञा तमारी सघली 🕏 े शिरशे नटाई ॥ ८ ॥ वरः ॥ शास्त्रानुशासन जदा कहीं पालनारी थे धर्मपत्नी पतिना पद 🐉 🖔 सेवनारी ॥ संसारबारि निथिपार उतारनारी छे धन्यजन्म मुजजो मळी धर्मनारी ॥ ९ ॥ कुन्या ॥ 🤾 🖁 यह स्मानयी ऋतुथकी अतिशुद्धदेहे कीडा कर्ठ निजपति थकी नित्य गेहे ॥ चहु तथा मनथकी 🖔

🕯 न गण्रं, विजाने मानूं विजा प्ररूप भात पिता समाने ॥ १० ॥ वरः ॥हूंये नहीं ठग्रं तुने कदिकोइ रीते साक्षी 🕄

👸 कर्या जगपती अतिवाहुं विचे।। पाळीस अंग गणिने तुजनेहुं पीते ते धर्मपरनी समजे निजधर्म नित्ये ॥१९॥ 🕉

॥ कन्या ॥ वेली उठी पतिथकी ग्रहकार्य त्यागी यज्ञादि कार्य करवा थात्रं अर्घभागी ॥ धर्मार्थ काम 🕏 समये रहुं नित्य साथे सर्वस्वमेव अरखं निजनाय हाथे॥१४॥ वर् कन्या॥आ समपद्य रचना महिजेह भारखं 🕄 ते दंपती वचन सार गृहीज दाख्युं।। आयुष्य कीर्ति धन संतति शुद्ध आपे पापो समूल हरिशंकर भेग थापे ॥ 🐉 ॥ १५ ॥ प्रणीतोदकेन वर्धं मूर्धि अभिर्षिचति वरः ॥ मंत्रेण असिवायु सूर्यं चंद्र गंधर्व प्रजापतिन्यो नमः ॥ (१) अवाधारायतस् क्षियो पंगळं कुर्विरन् ॥ पतिप्रवान्तिता भन्यायतसः ग्रुपमा अपि ॥ सीभाग्यमस्यै दशुस्ता धंगळाचार पूर्वक 💸 मितिरेणुरीतिताः ॥ विवाहमग्रानयो र्शामःमपाण भिविश्वतेः ॥ अभिवाहनग्रीत्रस्य निस्यं हद्योपरीविनः ॥ पत्वारि तस्य वर्षते आयु विद्या यशो धर्छ ॥ इति पनुः ॥

अर्थ-चर्म महाने पूर्णपात्र आपि प्रणीतान्त पाणी दंपतीना पाधापा छाट्युं. तपार्क्यकरावनानी दक्षणा तपासूयसीआपी आधिर्वाद छेश-पटीवेटछाककु-

कै॰ हैं ॥ कन्या ॥ वाणी शरीर मनथी द्रगुना पतीने साक्षीकर्या वचनना कमलापतिने ॥साथे वसीस जगमां सुस्तः हैं ४० है थी सुप्रीते ना क्रेश थाय कदि वर्तिश पूर्वी रीते ॥ १२॥ वृष्ट्: ॥ संसास्कार्य सघलां दइने सुधारी थमार्थकाम् है विषये बसु सहायभारी ॥ आ लोकमां सुरलोक बताबनारी मुक्ति तदा सहज दंपतिनी थनारी ॥ १३ ॥ है यथा कुळाचारं कुर्यात् ।। ततो दंगती बहमध्ये गत्वा गणपत्यादिपुरःसरं उभयोःपित्रादीर प्रणम्य ।। इष्टजनैः 🖇 सह अंजीयाताम्।। ततीवरः ॥ शास्त्रोक्तश्चभकाले पित्रा दत्तां वश्चं मृहीत्वा।। याने उपविश्य ॥ भंगलवाराघोष-पुरःसर्संगरुगीतपठनपरेः प्रंथीजने राचार्यादि विभैः स्वस्तियाचेति वा सुमंगरु सूकान् पठन् परेश्च सहस्वगृहः द्धारे आगत्य वयाचारं कृत्वा गृहं प्रविशेत् ॥ इति श्रीजवानंदात्मज मूलशंकर शर्मणा विरचितायां विवाहकीम्-द्यां विवाहप्रयोगः समाप्तः ॥ लावारीकरवा.देमी मोर्गाणुं करेले,देनी रीत पेहेश्वरणं करतरकयो करनी माना आधी कन्यानेवांलेकिस साम्रसराना तरफार सर्गाना अपना रूपिया रिवानप्रमाणे आएँडे, 🙎 तथा भीमा समानहाला पण अतुक्रमे आकी तेनेअले-पर्शकस्या तएएलाआकी वरने चांठीकरी प्रथमध्यमाणे आहे. एथपापकीबेट वरकस्याये परिशो चारववतआहीती 🙎 प्रश्तिमा करकी एवो आउम्मान केरणकाची सिवासमीरबाड-श्रीमाको विवेरेकाणियाओपां तथ सोनापाठे, तेथवापाठी वे सीमध्यकी यरमातरकती विकासमानरकती

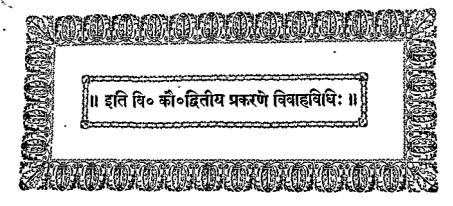
👌 आंव अने बातन्याने चांटो करी-भातकांडी परेहायेर्गळुकरी पोठानाहायजोडी कन्यानानमणाकायमितहे के ब्रह्मासारियीनुंस्वातण अनेर्द्धरपार्वेदीनुं सीधाग्य

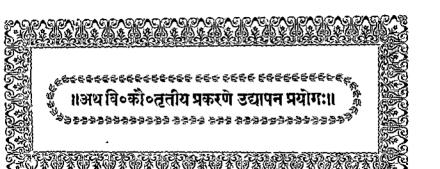
कृतस्य॰ ब्राह्मणेभ्यो यथोत्ताहां दक्षिणां दास्ये ॥ कृतस्य॰ यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजपिष्ये॥ कृतस्य॰ आ॰ हूँ चार्याय यथोत्ताहं दक्षिणां दास्ये ॥ कृतस्य॰ न्यूनातिरिक्तदोष प॰स्यसीं दक्षिणां॰॥ आशिषो मृहीत्वा अतःपरं हैं।

मनासे मारामाञ्चने चारपहत आकाहीवरने तथाकन्याने परसरमारावेजे तपागेष्ठन अग्राधा छंछपना हापकरो जनामरावेजे. पत्रे बरकन्या परोजागी यहां मोहकरी उदे.पत्नी वीतानवहाँकोने परेखामी, सनामंडपमा नेसनुं तथा भोजन करतुं तथा तेनदिवते वड वरवरत्वानाहोय तो सारो-बार तीत्थी मुहर्त- 🕈 नीइ बानते शानते जबु ( स्वीयारेनजापी) रीगी भंगले मृत्यु-बुधे विक्या शुक्रर-दानी अने सोमबार उत्तय कट्टेलारे, नती वसते रथमां पीताने हाते हाथे क्ष्माने बेबाडी चेरन्ड चेत्रानां बारणाना उमराभगाई। बान्टनर वेउनमे उमारेहेर्न आई वानीमाता आयोग्रधमप्रवाले वर्तनमाने पाँकेरे. तथा संबटनारी 🕹 कुँडेंड. तेरेंबर कार्य मार्गावरमां नायहे. ते बसते बस्ते बेनकरणादेहे, तथा तेर्नु दायुं आध्याची परमां नह गोत्रभणने बेहीवेबीएवारी पुनाकरावदी. पत्रा एक्सेके विनेते स्तर्ह प्रथमनमाणेकरी समाति कर्बा. मातानी थान्नत्थितो मातानी प्रमाकरी आन्त्यावी एक पानमंथी भेडनणाये, खादानीति 💠 पानी-रूपमाणे तेदिक्तना विधि करी राजांचे शवन करवा-देवे लग प्रज्ञा पत्री ज्वारेसालं सुदूर्व आये स्वारे वेबताओतं सरवापनकरवं नोहवे पण तेम न करवा-दंवा-भंगल 🕏 ग्रह-रमांथी जेनारआवेजेनोत्रात्सवारे वर, साप्तरिनायजे-त्यां वरकन्यालोडे,बानव्यांबेसी नायजे-नाथानावासरणमांबेजनगरपतारतियाधाराममाणेजालेजे-एने एके-पोर्हाये नाउं एम कहेंत्रे. तेनायापां कन्यानायामांगोवनभगाडी ल्हनह स्यांगोरपूषा करायेत्रे, प्रथमदिवननामप्रमाणेएकीवेकी कोरही मरायेत्रे, पत्री कन्याना हामर्व विरक्षेत्रेना द्योरोनारमञ्जाकर्योः तेमस्ताहाक्यो कन्याजेदे ने पावे पश्चिमकोके,तथा पायबाटका स्क्रोडावा विमर्गनकोके,पश्चिमायापरनाः त्यां स्पादिकराखीयं साथियोत्तादां तेनार एकवरो तेपांवरं भरि. तथा रू.। मुक्काराखीयरमुकी तेनार रेशमीककडी बांधी तेना पुत्रानणपतिहारिके करावेजे.

प्री उर्दनि महाभाष्ये,तथा जतानवते सरवाळा.ए, पत्रो नोतानेचेर व्हनायाँ, तथा वेतानेचेरपेटाधीचरणे संपोडतवर क्रथमप्रमाणेष्टजा हरियरमाव्हामायळे.तथा 🐉

हो । एसहहीते तेत्राय,पुढी अनुस्ये प्रणेष एफहर्यु-पदीचोरीयि तैप्रमणेक्टी बरसाडीकमाध्यसमाञ्चलको करयानी डोकसा चोचडीकरी नांसकी-पत्रीवरकच्या साथे 💍 अस्मानह योजनक पंचेपकारी मोस्टिंग राजनकार्यको सिक्स स्वापन साथे अस्मानह योजनक प्रणेपकारी मोरे प्रमानहार्यको सिक्स स्वापन स्व





की । श्रीमणेशाय नमः ॥ अय देह्छाद्धि प्रायश्चित्त प्रयोगः ॥ प्रातहृधाय ॥ वर्णाश्चमधर्मकर्माणि कृत्वा ॥ ह सवापहाराच् गृहात्वा ॥ नद्यादा ताय गत्वा ॥ कमभाग सराज्य ॥ वावविष त्यात्वा ॥ वात वात्वा वात्वा वात्वा वात्वा व ह तत्रासने उपविश्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ पात्रे शुद्धोदकमापूर्य ॥ देशकालादीच् स्मृत्वा ॥ हस्ते जलः है मादाय ॥ मम आत्मनः पुराणोक्त फलप्रान्पर्य करिष्यमाणकर्मणि अधिकारार्थ यथाशक्ति देहशुद्धिप्राय-श्रीणायाचे दहेत्स्व वर्जरिरेऽस्वि शतकं॥ यथा वनगती वन्दिः शुक्तर्द्र दहतीवनी।भाषायायस्त्या पापं शुक्तर्द्र नातसंत्रयः ॥ यवका इव ঙা

भिक्ष निज्यवं ॥ प्रत्यादारं प्रवेद्धोकान् योगेन पर्धं पर्दं ॥ नाभिन तत्पातकं क्रोके माणापामन शुरुपति ॥

सवीपहासन् गृहीला ॥ नदादौ तीर्थे गत्मा ॥ कर्मभूमि संशोध्य ॥ विधिवत् स्नात्मा ॥ घीते वाससी पश्चिमय

वर्म अर्थ काम अने सीक्ष ए चार प्रकारना सापनी छे.तेपा ने साधन कर्तुं होय तेपा प्रथम वारंत बुद्धिनी मरूर हे. कारण, शेय,माणेक होरा बीमेर पम अप कान जन श्वार ए जार असरणा सावना कर वाना न सावन कर हु हाव प्रधा त्रपन वरत सुम्बरण जरूर इन्सारण, जानुनावन हार पानी है स्ति क्या तेवनी साक्षीयायी निरुद्धवान कीमक्षेत्र वाना या त्री तेमन, सुनवीदि श्वतुओं पण उपनारी शिवाय संपूर्णताने पानती नथी वर्ध देंच पण पूर्वमा रोमीन जुट्य परिचन कराच्या पत्री पीतनु औरव आपेडे तेमन देंक रूपना आरंभे देह श्वति प्रयोग प्रथम करवानी जरूर है. माटे आ देह श्वित प्रयोग प्रथम करवानी जरूर है. माटे आ देह श्वित प्रयोग विश्वत सुनवी है जेने उपापनादि कामी करना है श्वीत प्रयोग विश्वत सुनवी है जेन उपापनादि कामी करना है

दिब्बंत जबहोमें द्विजोत्तमाः ॥ मतिग्रहणं साम्बंति एवकः साङ्केरिव ॥ तान्मतिग्रहजान्द्रोपान्त माणायागेद्विजोत्तमाः ॥ नाम्रबंतीह विद्वांसी नापुर्वेचानिवांनरात् ॥ त्यममुद्धापिधेतास्योनि वेदोपाजास्यस्तथा ॥ एकैकं सप्त राजेण पुनाति विधिवन् छतः ॥ भाणायागेदेहत्यापं धारणाः

शीत्रं तं प्राप्यसे शुभं ॥ २ ॥ यद्यागतोस्यसत्येन न तं शुप्यसि कर्हिनित् ॥ एवं तैः समनुज्ञातः सर्वं ब्रूयादः शेपतः ॥ ३ ॥ इति द्विजैः पृष्ठे मायश्चित्ती गोरूपयोः प्रत्येकं प्रत्याम्रायत्वेन यथाशक्ति पर्पतपुरतो निधाय ॥ ततः पर्पदं प्रदक्षिणीञ्चत्य इदयेन दूयमानो धरण्यां साष्टांगं प्रणमेत् ॥ ततः करिन्यमाण प्रायश्चित्ताङ्गत्वेने-सञ्चाहति सम्याना गायत्री विरसा सह ॥ विपारदायतपाणाः माणायापाः स उच्यते ॥ माणायायेन शुर्व्वति गायत्रीनयमन च ॥ नारायणा-सुस्मरणात् मुच्यते दुःमतिग्रहात् ॥ मतिग्रहात्मरं नास्ति धाक्षणस्य विनायनं ॥ नरयते अहावर्चस्यं नरकं च मपत्रते ॥ तेंगे समारमा उर्छ देह शुद्धिनो साहित्य छर नटी आदि दीये जबु त्या भई पुत्रननी नगा साफ करी त्याय निधिनत् करी। आसनगर नेसी आपमन प्रा माध्य वरी हाथमा पाणा रह अधुक कर्ष निमित्त देहजुद्धि प्रचीप कर्र हु-एपमाणे संकल्पकरी कर्ता वजगाने पोतानी अत करणपूर्वक करवानी सामणी

क्तावर्रा, हेरराते सभानाबाहाणो पुँउ है के तमी केमपुसीडो तथातमारे शुकरवुडे तथा शुंचाकाँडे, तेहफीने कहें।.एवातसामकी यममाने पीताकी सर्व हकींगत

वहीं, आमणोनी प्रदक्षिणावरी वाउरवा बाउरवीने प्रत्यक्ष अवना द्रश्यस्य सरहा करवी

श्चित्तकर्मे करिष्ये ॥ कर्ता चतुरस्त्रीनेकं वाऽध्यात्मविदं त्राह्मणं पर्शत्वेनोपविश्यासंजानः पर्शदं प्रदक्षिणीकृत्य ॥ ई . इदयेन दूरामानः साष्टांगं प्रणमेत् ॥ ततः सभ्याः प्रच्छति ॥ किं ते कार्यं बदासमाकं किं वा मृगयसे नर ॥ तत्त्व-तो बहि तत्सर्व सत्यं हि गतिरात्मनः ॥ १ ॥ अस्माकं चैव सर्वेषां सत्यमेव परं वलं ॥ यदि चेद्रक्षते सत्यं

प्रभतिअद्यदिनपर्यंतं द्वाताञ्चात कामाकाम सरुदसरुत्कायिकवाचिक मानसिक सांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्ट भुक्ताः मक्त पीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक ग्रन्तश्रपातक संकरीकरण मलिनीकरणापात्रीकरण जातिश्रंश-19611 का प्रकृषिपातकानां मध्ये संभावितानां महापातकव्यतिरिकानां पातकानां निरासार्थमद्वमहं कृत्वा प्रायश्चित्त-मुपदिशन्द भवंतः ॥ इत्युक्ता ब्राह्मणान्प्रार्थयेत् ॥ आवहास्तंवपर्यतं भवदशिमदं जगत् ॥ यस रक्ष पिशाचादि सदेवासरमात्रपम् ॥ १ ॥ सर्वधर्मविवेकारो गोप्तारः सकला दिजाः ॥ मम देहस्य संशाद्धिं कुर्वन्त

द्विजसत्तमाः ॥ २ ॥ मया कृतं महाघोरं यञ्ज्ञाताज्ञातिकेल्विपम् ॥ भसादः क्रियतां महां श्रभानुकां प्रयच्छत द्यापचाय चतुर उपनेत्य दिनात शुभान ॥ तेपा गनुह्रमा सर्व नायशिनग्रुपक्रयेत ॥ १ ॥ सर्वेकप्रेष्ठ सर्वेहा भाराणाःस्यः सवर्चेसः ॥ आचार्थ 🕏 श्रुवसंपन्न बैजार्व च कुटुंबिन ॥ २ ॥ आचारवंत पर्पिष्टं द्विजशुश्रुपणे रते ॥ युरपाहप विधिवत् देववरपूत्रपेय वं ॥ ३॥विधाय वैष्णुनं श्राद्धं 🕏 सांबहर्ष निकारम्या ॥ पेतुर्रधाद द्विनातिभ्यो दक्षिणां ४। स्वराक्तितः ॥ ४ ॥ अर्रुकुल ययाध्यस्या बुखार्रुकरणे दिनात् ॥ याचे दंबमणा-

दं गोवुपनिष्कयदृत्यं सभ्येभ्यो दातुमहमुत्स्जे ॥ नममेति दद्यात् ॥ ततोऽमुकगोत्रस्यामुकदासस्य मम जन्म-

पेन प्रापधितं यथोचित् ॥ ५ ॥ अर्थ-मोरे एकर्पट रायो तेनेदशणा अपनि तेनीपासे यमपानने के गाढ़ई, असुक मोलनो त्यापा आरंभी भारो अनुमहकरो त्या सुधान बहेदाहद.

॥ ३ ॥ पूज्येः कृतपवित्रोऽहं भवेयं द्विजसत्तमेः ॥ ४ ॥ एवं संप्रार्थ्य ॥ मामजुरूण्हन्तु भवन्तः ॥ इति 🐒 भणमेत् ॥ प्रशादिश्चे स्नापश्चित्तकर्ता तदाऽस्मच्छन्दस्थाने तन्नाम निर्दिशेत् ॥ ततस्तम्रत्याप्य तस्य शरीप्रः 🕄 व्यादि शक्तिस्त्रममध्यमादिपतांश्च विचार्य ॥ अस्मिन्यक्षेऽयं सशक्त इति निश्चित्य प्रस्तकवाचनपूर्वकं कथ-वेयुः ॥ अनुवादकस्याप्रे प्रत्यासायांश्च कलवेयुः ॥ अस्मिन्काले प्रायश्चित्ती चंदनपुष्पादिभिः पुस्तकपूजां 🕏 सम्बाह्यसदकपूजां विधाय ॥ निवंधपूजांगलेन यथाशक्तिद्रव्यं निधाय ॥ कृतांजलियुटो नम्नस्तिष्ठेत ॥ अन्त- 🕏 वादकाय च पापानुसारेण निष्करूपां यथाशक्तिदाक्षेणां दद्यात ॥ ततोऽन्तवादकोऽसकदासस्य तव जन्मप्रभृति 🔀 अद्य दिनं यावज्जाताज्ञात कामाकाम सकूदसकृत कायिकवाचिक मानसिक सांसार्गिक स्पृष्टास्पृष्ट भ्रक्ताभुक्त 🕏 पीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक एरलचुपातक संकरीकरण मलिनीकरणापात्रीकरण जातिश्रंशकर भ पान रुक्षणं ॥ किंग्द्रिद्रमपं पात्रं (कॅबिल्सात्रं तथीयरं ॥ आगमिय्यवि यत्सर्वि वस्पत्रं वार्यिप्यति ॥ व्रह्मचारी भवेत्यात्रं पात्रंवेवस्य 🖄 पारमः ॥ पात्राणामपिवस्पारं सुद्रान्नं यस्यकोदरे ॥ इति न्यास वसिष्ठश्च ॥ पश्वरंथ विपरी मुक्ते व्यापिनोपहतास्रये ॥ भर्तृत्वास्त्रे महाराज नत् 🕄 है देयःमतिग्रहः ॥ इति मदाभारते ।देवजानां गुरूणां च मावापितृ स्वयेद चार्रापणं देपं मम्तनेन नापुणं नोदितं कचित् ॥इति नंदिपुराणे ॥पापदः प्रि पापनामोति नरोज्यसमुणं सदा ॥ पुण्यदः पुण्यमामोति कताग्रेथ सहस्रवः ॥ इति चन्दिपुराणे ॥

वर्वं प्रणम्य पर्पदं विसूजेत ॥ अस्मिन्नहानि शक्तेनोपनासः कार्यः ॥ इतरेण हनिष्याशनं ॥ ततस्तस्मिनन्यः 🕺 स्मिन्बाऽहति रिक्तायां तिथी कृतमध्याहिकः सायाहे गंगादितीर्थे गत्वा ॥ स्वासनेउ॰आच॰अधे॰ितधी का॰ 🕏 🖁 व्यपगोत्रोत्पन्नस्यामुकदासस्य मग जन्मप्रभृति अद्य दिनं यावत् ज्ञाताज्ञात कामाकाम सक्रदसकृत् कायिकवाचिक 🕺 अन्यायोगमतं दुव्वं गृहित्वा यो क्षपंडितः ॥ धर्माभिकांक्षी यत्रते न धर्म फलमक्तुते ॥१॥ एववन्येथ बहुभिरन्यायो पार्मिते धेनैः ॥ आर- 🕃 भ्यंते क्रियापास्तु पिशाचा स्तर्भ्यतं ॥ इति स्कंदपुराणे ॥ देवदृत्यं मुख्येन्यं द्व्यं चंडेश्वरस्य च ॥ त्रित्रियं पतनं दछ दान संधनभरतणात् ॥ अवद्यस्य परस्थार्थे दानं यस्त ववन्छति ॥ सदाता नाकं पाति वस्यार्था स्तस्य तरमञ्जू ॥ परिभुक्तप्यकातं अपर्याप्तमसंस्कृतं ॥ यः भवन्छ- १ अर्थ-यनमाने मालकोर्न तथा गावनी प्रार्थना कर्स कर्मण पुस्तकपूननकरी पावना मनाणे अनुवादकने क्रियाआपीयी, अनुवादकसम्योना कहेवाप्रमाणे प्र

उपनासकरनो.

ते बोंके ते समयाने पोतानामोदायां बीज्द्रं, तथा ने कहे ते अंग्राकारकरतो पानी प्रणामकरी बाह्योजेन नगरकारकरी वीप्तर्यन करवं. शाफीहोयतो उ

१०९६० है कीर्णपातकानां मध्ये संभावितानां महापातकव्यतिरिक्तानां पातकानां क्षयोऽनेन पर्पदुपादिष्टेनासुकाव्यप्रायश्चिते । है इत्तारसकारपाष्ट्राय ( स्जतप्रत्पाष्ट्राय ) द्वारा प्राच्योदीचांगसहितनाचिरेण तव शुद्धिर्भविष्यति ॥ तेन त्वं दे १९९॥ है ऋतार्थे मविष्यसीति त्रिरुपादिशेत ॥ ततो निर्धोदतं प्रायश्चित्तयं ॥ भवदनुष्ठहः ॥ बादमित्यंगीकृत्य सन्मान 🗗 रांगसहितं ) देहश्रद्धप्रायश्चित्तं यथाशक्ति करिन्ये ॥ इति संऋत्यः ॥ आरूयस्य प्रायश्चित्तस्य वपनादिप्रवांगा- 🛭 👸 ित क्र॰ ग्रानिकानि च पापानि ब्रह्महत्या समानि च ।) केशानाश्रित्य तिष्ठीत तस्मात् केशान्यपाम्यहं ।। ९ ।। 🖇 🎒 इति मंत्रेण शिलाकक्षोपस्थवर्जं नलरोगाणि वोषयित्वा ॥ स्नात्वा ॥ स्नानाशक्त्री मंत्रस्नानम् ॥ ततःजिञ्हो- 🐰 ाते विवेभ्य स्तत्वभगवाताहते ॥ इति तैतिरिय समुतौ ॥ कम्या भग्या गृहे चैन देवं यहो ख्रियादिकं ॥ तदेकस्मै पदातव्यं न बहुभ्यः कथंच- 🥇 न ॥ इत्याचन्त्रपनः ॥ बहुम्यो न प्रदेपानि गी पूर्व शवने लियः॥ विभक्त दक्षिणा होते दावारं पावयंति हि ॥ नव्यंगां रोगिणी वंध्यां नक्रसां 🕹 भूतवरसको ॥ चवामनां शुक्यमां द्याद्विमाय गाम्नरः ॥ इति व्याससुचे ॥ दुःसं ददावि योन्यस्य ध्रुवं दुःसं स विद्वित ॥ तस्यान्नकस्याचे- ै रसं दातन्यं द्वःसर्भारूणा ॥ इति यमस्पती ॥ अथा मिनगृहिनुधर्माः ॥ अक्षाण्डपुराणे ॥ श्रुचिः पवित्रपाणिश्च गृण्हिया दुत्तरामुखः ॥ 🎖

अभिष्ठादेवर्तारपायन् मनसा विजिवेन्द्रियः छतोचरीयको नित्य मन्तर्भोडकरस्तथा ।१ दातुरिष्ट मभिष्यायन् अगुण्हीयादछोलुदः ॥ विश्वामित्रः॥ 🕏

🐉 अन्यर्भितम् पर्मेत स्तयावद्धशिशोद्धिनः ॥ स्मातः सम्यगुपस्पृत्य मृण्हीया त्ययतः शुन्तिः ॥

मानसिक सांसर्गिक स्पृष्टास्पृष्टासुक्तासुक्त पीतापीत सकलपातकातिपातकोपपातक यरलघुपातक संकरीकरण मिलिनीकरणापात्रीकरण जातिश्रंशकर भकीर्णपातकानां मध्ये संभावितानां पातकानां निरासार्थं ( करिष्यमाणाः ) सकततोद्यापनकर्मण्यपिकारसिद्धवर्थं ) ( श्रीप० पर्पद्रपदिष्टमसुकाष्ट्रपायश्चित्तमसुकप्रसान्नायद्वारा प्रवेतिः ।

## कर्म करिन्ये ॥ शक्त्या पंचोपचारे वी पोडशोपचारेः प्रजयत् ॥ अथ सत्येशस्थापनं ॥ खेतवस्रोपरि तंदुरुँ 🕏 रष्टद्रं कृत्वा तिसम् ईशानादिक्रमेण अष्टी शक्तीनां स्थापनं ॥ अष्टद्रसम्ये कर्णिकायां ताम्रमयकलशं है यथाविधि संस्थाप्य ।। कलशोपिर सुवर्णनिर्मितां विष्णोःभितमां शालग्रामं वा निधाय ।। भितमापक्षे अग्न्य-। त्तारणप्रविकां प्राणमतिष्ठां क्रयीत ॥ अद्येत्या॰ तिथी सम सर्वपातकनिवृत्यर्थं सत्येशस्थापन मतिष्ठाप्रजनमहं है मेवकृत्ये शामदेदे यपनं केस पूर्वकं ॥ अधिहोते च वीर्थ च वपनं उपशुप्रिकं ॥ ततः शीर्तिमिश्चं श्रीतीवकेन स्नानं इति स्वातांद्धासाद्रौ ॥ 🕹 आपस्तेरः ॥ आदेवासा स्त यः क्रयीत जपहोम मतिग्रहम् ॥ सर्व न्द्राक्षसं विद्यात यहिकीन् च यस्तुतं ॥ वहुभावनः ॥ कापाद्यनासा उहरते हैं।

हेसनपूर्वकं दंतान् संशोष्य ॥ द्वादशगण्ड्रपान् कृत्वा अस्मादीनि दशविधस्नानं विधाय ॥ स्नानांगतर्पणं 🖇 २००॥ 🖟 ऋता ॥ इस्ते जळमादाय देशकाळादीच् स्मृत्वा ॥ मम अस्मिन् करिष्यमाण कर्मण्यधिकासर्थं विष्णोःप्रजनाख्यं 🕏

जवहोत्तपतिग्रहान् ॥ वहचर्पतां च भवति हत्यकव्य स्वधादविः ॥ गालवः ॥ इस्तयथ्ये प्रवातीर्थ दक्षिणाप्रहणे च तु ॥ प्रचेताः ॥ दक्षिणार- 🞖

स्तमध्ये ब्राह्मणस्यादेवं विधे मात्रेवं सीर्थ मात्रेवन मतिष्ठण्डीयादिति गाउडे।। स्नावः सम्मग्रुपस्पृत्य वधानो भीतवाससी।। सपवित्र कार्येव मतिः अर्थ-एत्रीस्मनकरी पर्यत्ना नकापमाणे एकाव्य न्यव्य विगरेनी प्रावधिकनी सम्बन्धरावे ते न शक्ति होधतो तेना अभवि ने महाते तैस्थि कोह्यण

शतितप्रमाणे एक संकल्प करनी.

च्छ इस् तिष्ठ । रिविमण्ये परिविमण्येमाबाह्यामि स्था० १ पूर्वे ॥ सत्यभामां महाभागां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम् ॥ । । नकां स्वरं वधीयेतां सत्यामावाह्याप्यस्म ॥ २ ॥ सत्यभामे इ०सत्यभामयि०सत्यभामा मा० २ आग्नेयाम् ॥ १ १ थण्येत्व पर्धविद् ॥ ऑकार मुक्तन्य महो द्रविणं सक्तवादकं ॥ कृतीया रितिण स्थानिक कितियेत् ॥ इति मित्राहणाविधिः ॥ अय । १ व्याने व्याने स्वरं । १ व्याने विशेषः ॥ द्रव्याणा मध्यत्वां वैदर्धप्रपणात्ररः ॥ वात्र्ये । । क्रान्याद्या कारणार्थः भित्राहम् ॥ द्रव्यात् स्वरं । । स्वरं ॥ १ १ व्याने । । स्वरं । स्वरं । स्वरं । । स्वरं । । स्वरं 
किरिय्ये ॥ श्वेतवस्त्रोपरि तण्डलावते रष्टदलं कृत्वा ॥ ईशानादिष्यष्टशक्तीनां स्थापनम् ॥ अक्षतान्म् व्ऐशान्ये ॥ आबाहयामि देवेशी रुपिमणीं कृष्णवस्त्रभाम् ॥ गदापद्मसमाञ्चकां तां समावाहयाम्यदं ॥ १ ॥ रुपिमणि इहाग-

मित्रबुन्दामा॰ ॥ ६ ॥ वायव्याम् ॥ विष्णोर्भगवती भार्या सर्वविद्यविनाशिनी ॥ हब्यं ददामि देवेभ्यः कब्यं है पितृम्य एव च ॥ ७ ॥ लक्ष्मणे इ०लक्ष्मणायै० लक्ष्मणामा० ७ उत्तरे ॥ चारुहासूसमाञ्चक्ते चारुनेत्रसुरोाभिते ॥ 🖇 चारुकेशवती देवी ह्यागच्छ चारुहासिनि ॥ ८ ॥ चारुहासिनि इ॰चारुहरासिन्ये॰ चारुहासिनीमा॰ ॥ ८ ॥ मध्येकलशं संस्थाप्य तदुपरि मूर्ति निधाय ॥ इस्ते असताच मृहीत्वा ॥ ऊर्व्या शरिसमुद्रेसिन्सीतचंदे सक- 🕏 बरमं, पत्र इतान कीणमा संभन कहते पापरा वेनापर चोरान्त अधदल तेनाउपर ताबानी बच्चानुका तेनाउपर सत्येश विष्णुन तथा चारे बाजुये आउपर राणीनु स्थापसकरी प्रतीक्षा करावी 🐲 अष्टराक्ती सहित संखेशायनम एमगाणे कहीने. शोदशोषचार अथवा प्रनेपचारभी पुरावसमासकराये.

जाम्बूवर्ती महाभागां शुभागीं जननीं शुभाम्।।कृष्णेन संस्थितां देवीं राश्वद्गक्त्या सदाम्विकाम्।।जाम्बुवित इ० जा-

न संयुक्ता सर्वाभरणभृषिता ॥ मानवानां च देवानां महाभयविनाशिनी ॥ ६ ॥ मित्रवृन्दे इ० मित्रवृन्दायै० 🌯

पुत्रदां धनदां चेव कार्लिदीं शुभदां सदा ॥ कालिन्दि इ॰कालिन्द्ये॰कालिन्दिमा॰ ॥ ५ ॥ पश्चिमे भद्रासने- 🕌

म्बुवर्ये॰जाम्बुवर्तीमा॰॥३॥ दक्षिणे॥सत्यासत्ये समायुक्ते त्रैलोक्यजननी प्रसाधर्मार्थकामदां चैव सत्यामावाहः 🐉 ॰र॥ हु याम्बह्म् ॥ ४ ॥ सत्ये इ० सत्याये० सत्यामा० ४ नैर्ऋत्यां ॥ सत्याकृष्णेन संयुक्तां देवासुरविराजिताम् ॥

अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ पाद्यं॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ अर्ध्यं॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय 🄀 ||नमः ॥ आचमनीयं॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ शुद्धोदक स्नानं॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ ||\$ 🎇 वंश्वं॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः 🛭 बङ्घोपबीतं॰ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः 🛮 गुंघं॰ अष्टशक्तिसहित 👸 ्रीसत्येशाय नमः ॥ फुर्णं० अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ घूपं० अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ दीपं० 🏌 🖏 अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः नेवेद्यं ।। अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ।। तांबूळं > ।। अष्टशक्तिसहित सत्ये--तमोवर्ष इतपुर्व झान त्रेतापुर्व स्मृत ॥ द्वापरे नादर श्रोतको दमो दान दया कही ॥ १ ॥ दानेन भोगी भवती मेघाती सदसेनया ॥ अहिस्पा 🏌 च दीर्घाषु रीतिमादु मेकीपण ॥ २ ॥ येकीना च वकोयर्ष निवयो वन्त्रासिका ॥ दानमेठ गृहस्थाना शुक्ष्या वजनारिणा ॥ २ ॥ पुसदर्यसमायुक्त अर्थते 🎗

🎇 नरके नर ॥ श्रायते दानमेरके श्राम भूनेद्विने छन ॥ ६ ॥ आवास - शतल्यस्ट्रस्य प्राणेम्योरि गरीयस ॥ गिरोकेंव निसस्य टानमन्या विपत्तव ॥ ५ ॥ ६ 🕏

🎇 दान भोगोर्डेनाश ।स्ति स्रोभकतिगतयो विकस्य ॥ यो न वदाति च मुक्ते वस्य नृतीया मतिर्भवति ।। ६ ३१ इति कर्मपुराणे ॥

्रीर्णिके ।। तत्र त्वं सत्यया सार्वं सत्येश भव सिक्षयों १ सत्येश इ०सत्येशाय० सत्येशमा० १॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां हैं अभित्रावरुणनिर्मिता ॥ प्रतिष्ठां तां करोम्यत्र मंडले देवतेः सह ॥१ ॥अष्टशक्तिसहितसत्येशः सुप्रतिष्ठितो वस्दो है अभव ॥ अष्टशक्तिसहितसत्येशाय नयः ॥ आवाहनं समर्पयामि ॥ अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः ॥ आसनं०॥ ६ ्र शाय नमः॥ त्रदक्षिणां ।। अष्टशक्तिसहित सत्येशाय नमः॥ मंत्रपुष्पांजिं समर्पयामि॥ अनया भूजया अष्टश-हे क्तिसहित सत्येशः त्रीयतां ॥ त्रायश्चित्तांगं विष्णुश्राद्धम् ॥ विष्णो एतत्ते पाद्यं पादावनेजनं पादत्रक्षालनं हे इदमत्रचंदनपुष् ॥ स्वपादो करी प्रक्षाल्याचम्य विष्णुमंत्रेण दिग्येषः॥ अक्षतान्मृहीत्वा॥ नमस्ते देवदेवेश पुराण पुरुपोत्तम ॥ इदं श्राद्धं हपीकेश स्त्रत्वं सर्वतो दिशि॥९॥पूर्वे नारायणःपात्र वारिजाक्षस्त्र दक्षिणे॥प्रयुद्धः पश्चिमे 🞖 पात वासुदेव स्तथोत्तरे ॥ ऊर्ध्व गोवर्धनो रक्षेद्रधस्ताच त्रिविक्रमः ॥ २ ॥ आयान्तु विष्णवश्राद्धोपद्वाराणां प-|

वित्रतास्तु ॥ अद्योत्पा॰तियौ शायश्चित्तांगं वैष्णवश्चाद्धयहं करिष्ये॥ विष्णोः इदमासनय इदमत्र चंदनं प्रष्णं भूषं 🐉

दीपं यथादत्तं गंपादार्वनं विष्णवे नमः॥ इदं वो ज्योतिःवैष्णवश्राद्धस्यार्चनविधेःपरिप्रर्णतास्त ॥ आचम्य विष्णुः 🕏 श्रीतयेऽत्रिन्यो धिकान् खुम्मान्याह्मणान्यूजापूर्वकं भोजननिष्क्रयद्रव्यदानदारा अहमाचरामि ।। आमान्त्रं

दद्यात ॥ सप्रोक्षितादिकरणं नैष्णवश्राद्धप्रतिष्ठासिद्धचर्थं दक्षिणां निष्णवेनमः ॥ अद्य पूर्वोचस्तिवैष्णवश्राद्धस्य अर्थ-आउपदरार्णासहित सत्येवनं पूजनथवापुत्रा प्रापश्चित्तना अगमूत सक्रक्षवेदे वैष्णवश्रादकरुष, अहीवर होनवरवानी अहरके पण यदो जनी हेना

मुद्रके या जादाणने आवद् सुरुव्यक्रराने.

तिव सिक्षयो ॥ १ ॥ प्रनःप्रदक्षिणां ॥ अनेक जन्म संभूतं पातकं यन्मयाऽर्जितं ॥ तत्सर्वे नाशयत्पापं सत्येशः 🕄 तव सन्निधी ॥ २ ॥ नमस्कृत्य पुनःभदक्षिणां कृत्वा ॥ पापोहं पापकमीहं पापात्मा पापसंभवः ॥ त्राहि मां प्रण्डः 🕺 शिकात सर्व पापहरो हरिः॥ ३ ॥ यानिकानि च पापानि ब्रहाहत्या समानि च ॥ तानि तानि विनव्य-🕍 न्ति प्रदक्षिणा पदे पदे II ४ II प्रनःभदक्षिणां कृता II आमहास्तंत्रपर्यंतं भवद्रशामदं जगत II यक्ष**ाक्षि**री शाचादि सदेवासुरमाञ्चपम् ॥ सर्वधर्म विवेक्तारो गोत्रारः सकला दिजाः ॥ मम देहस्य |<del>इर्बन्तु द्विजसत्तमाः ॥ पुज्यैःकृतपवित्रोऽहं</del> भविष्याग्यनघस्तथा ॥ प्रसादःकियतां महां शुभा<u>त्र</u>न्नां प्रयच्छथ ॥ प्रसकृतं महाधेरं ज्ञाताज्ञातं च किल्विपम् ॥ जन्मतोऽचादिनं यावचस्मात्यापारप्रनाखः मामः॥ ४॥ द्विजाग्रे 🔯 अर्ध-बैज्जनश्राद्ध थया पत्री. जो प्रस्यक्ष गाय बाउरडो न होयतो यनमाने तेतु द्वन्य छेतु (-1) दोढ भागे। छेनानी संभराय बाछ ठे, पद्रा यनमाने ० क्या नार्डाकेर छह बार प्रस्ताणा सत्येज विज्युती वरबी, पदी सोपारीतस्थनक दशणास्त्र बाराणनी तथा गायनी प्रदराणाकर्त्वी तथातेमनी स्तुतीकरवी. हायमा नालांकेर तह बार प्रवस्ताम सत्येश विज्युत्त वरवी, वडी सोपारीतसम्बद दशणान्द्र माग्रणनी तथा गायनी प्रदराणाकरकी तथातेमनी स्तुतीकरकी.

पिस्वर्णतास्त्र ॥ ततः प्रायश्चित्ति मां वा सनास्त्रिकेरं गोर्गिधुनदृज्यं ग्रहीत्वा उत्थाय सत्येशस्य प्रदक्षिणां कृत्वा 🕏 स उपविष्टवासणानमस्कृत्य प्रार्थवेत् ॥ अपराधसहस्राणि रुसकोटिशतानि च ॥ नत्यंति तत्क्षणात्पापं सत्येश 🕄

**उल्सी तिल यवाक्ष्तान गृहीत्वा ॥ हेमादिं श्रृष्टायात ॥ स्वस्तिश्री समस्तजगद्वत्पत्ति स्थितिलय** कारणस्थान-∯ न्तवीर्यस्य रक्षाशिक्षाविचक्षणस्यादिनारायणस्य प्रणतपारिजातस्याचिन्त्यापरिमित शक्त्याप्रीयमाणस्य लीवमध्ये परिभ्रममाणाना मनेककोटिमहाएडानामेकतमे व्यक्तमहृदहंकार पृथिव्यप्तेजो बाध्वाकाशाद्यावरणे

वर्ष-प्रार्थना निगेरे थवारजंग हेवाद्राव्यवेग मणने गोहर तेनो अवकाश होय हो। सोहं, नारीयक, दर्भ, सुक्सी, तीक, यव,चोखा ए वरीयातुओ एहंने 💢

अर्थ-आर्थना विगेरे थवारांग हमाद्रांप्रयोग भगशा मार्क्ष तना व्यवस्था हाल तक साउक नात्रका नात्र स्थान कर स्थान कर स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

रावत्यशोकवती भोगवती सिद्धवती गान्धववती कांचनवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुण्यप्रीप्रतिष्टिते इन्द्राप्ति-यमनिर्मृद्धी वरुण बायुक्रवेरैशानादि दिक्पतिप्रतिष्ठिते लोकालोकाचल वलयिते लवणेश्वरस सुरासर्पि दिधिक्ष-रोदक युक्तसप्तार्णवपरिवृते जम्बुप्टक्ष शाल्मली क्रशक्रींच शाकपुष्कराख्य सप्तदीपयुते इन्द्रकांस्पताम्रगभस्ति नाग्-सींग्य गन्धर्व चारण भारतेति नवखण्डमण्डिते महेन्द्रमलय सह्यादि हिमन्द्रस विन्थ्यादिपारिपात्राहृय सप्तकुलप् र्वत निराजिते मातंग हिरण्यशंग मास्यवन्तः किष्किन्धिचत्रकुटादि पंचमहानगरसहिते हेमशेल मुभावल श्रेताचल शृंगावतास्ये महाशिलसमधिष्ठिते सुमेरु निपधादि श्रीकृट खातकृट अअकृट चित्रकृट हिम-विन्याचलादि सहिते हस्विषे किंपुरुपयोदिक्षिणतो नवसहस्रविस्तीणें मलयाचलादसरतः स्वर्णप्रस्थादारम्योन्द्रश्र-

राज्वेअभिगन्महोते ब्रह्माण्डलण्डे आधारशक्ति कूर्यानन्वोपरि प्रतिष्ठितस्यातल वितल स्रतल तलातल रसातल महातल पाताल सप्तपाताललोकस्पोपरीतने भूलोंक भूवलोंक स्वलोंक महलोंक जनलोकतपलोक सत्यलोक-स्याघोभागे चक्रबालशैल महावलय नागमध्यवर्तिनो महाकाल महाफणिराजशेपस्य सहस्रफणानां मणिमण्डल-मण्डिते ऐरावत एण्डरीक वामन इस्प्रदांअन एप्पदंत सार्वभीम सुमतिकाख्याष्ट दिग्दन्ति शुण्डोत्तामित्रते अम-

हिद्दिलावर्त क्रम्भद्राश्व कर्मण हिरण्मयकेल मालास्य नवसहस्र योजनविस्तीणं भरतातृण्डे चंद्रप्रस्य शुक्तिक आ-🏅 वन्तिक स्मणक पाञ्चजन्य सिंहल्रलंका अशोकवत्यलंकावनी सिद्धवती गान्धर्ववत्यादि प्रण्यप्रशिविराजिते नव-🕄 खण्डोपरिमण्डिते भूमण्डले भरतवर्षं भरतखण्डे कर्मभूगौ कुमास्कितनाम्नि क्षेत्रे जम्बूद्रीपे लंकाकुरुक्षेत्रादि समस्त भूमध्यरेखायाः पश्चिमदिरुमाने श्रीतपतीनर्मदयोः दक्षिणतटे ऐस्वारण्य दण्डकारण्य विन्ध्यारण्य नैमिपारण्य कुरुक्षेत्र गंगाकावेरी यसुना सरस्वत्यादिमहानदी सुण्यतीर्थं विलसिते अयोध्या मधुरामाया काशी काशी अव-

क्रपाञ्चजन्य सिंहरुरुक्षस्य नवभागात्मके महासरोरुहाकार पंचाशत्कोटि योजनविस्तीर्ण भारती किंप्ररूप

सरोवराकार अमरावती सेतुमाल लोहिताक्ष चकोर श्रीरेतलंकेलाशानामुपरि समभूमध्यरेखायाः पूर्वेदिरभागे 치 श्रीरोलपश्चिमदिरमागे कृष्णागोदावयाँक्तारेदेशे शालग्रामविश्वेश्वरादि सकलदेवतानां सन्निधी अस्य श्रीपज्जल 🕺 ॥२०५

न्तिका ॥ गयाद्वारावती ख्याता महासक्ति प्रदस्थले ॥ सगर नगर वत्सनगर क्रमेनगर स्वाम्यनगर महामान-🕍

निधि मध्यमध्यासितं भुजंग भोगपर्यंक शयनस्यादि नारायणस्य लक्ष्मीपतेर्नाभिमण्डलोत्धितस्य पद्माजस्य

सुन स्वारोचिपोत्तमतामस रेवतचाञ्चमास्यपण्यन्वन्तरेषु व्यतीतेषु सत्सु सप्तमेवैवस्वतमन्वन्तरे कृत त्रेता द्रापर ई ी किल्संजकानां चत्रणांखगानां मध्ये वर्तमानाष्ट्रविंशतितमे किल्युमे प्रथमचरणे गोदावर्याः उत्तरेभागे श्रीमन्प-विक्रमार्कात् श्रीमनुष शालीवाहनादा यथासंस्थागमे न चान्द्रसावनसौरादि मानपर्याप्ते शभवादिसंवत्सराणा मन्य तमे ज्याबहारिक संबत्तरे अमुकायने अमुकऋतो अमुकगासे अमुकपक्षे अमुकतिथी अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे 🕉 अमुकयोगे अमुककरणे अमुकगरिरियतेचेंद्रे अमुकगरिरियते श्रीसूर्ये अमुकगरिरियते देवरसे शेपेपु श्रहेपु ही 🗿 यथा यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्त्व एवंग्रण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतियाँ अस्मिन्महापुण्यकाले 🛚 दुस्तरे 🕺 संसारचंके नानाविश्वकर्मविपाक विचित्रे विविधादृष्ट विचित्रास चतुरशीति लक्षभेद्भिकास योनिष्ठ प्रत्येकं मने 🔏 का विद्यापरिश्रममाणस्य केनापि सुकृताविर्भाव विशेषेणेदानिं मनुष्यपोनीं दिजादिजन्मशासवतो ममानेकजन्मा- है भ्यासादे तजन्म प्रभृत्येतत्वणपर्यन्तं शत्यकोमारगौषन वार्षकेषु जाग्रत्यम सुपुरुयवस्थासु मनोवाकायेन्द्रिय 🕺

वित्राननस्य सकलजमत्रपृष्ट्वः परार्धदयजीविनो ब्रह्मणो दितीये परार्थे एकपंचाशत्तमे वर्षे प्रथममासै प्रथमपक्षे है अथम दिवसे अन्होदितीयेषामे तृतीये सुहुते स्थन्तस दिहात्रिशत कल्यानां मध्ये अष्टमे श्वेतवासहकल्पे स्वायं क्षे

प्रतिपद प्रश्रत्यनच्याया ध्यापनानग्नित्व पौरोहित्य देवालयासंरक्षणीकरण कृपी कर्म शिल्प विद्याभ्या- 🐒 सादि जीनतानां स्वर्णस्तेयसमानानां त्राहाणस्त्रीगमन विधवागमन शहस्त्रीगमन वेश्यागमन कन्यागमन साथा- 🕃 ॥१०० रणस्त्रीगमन वर्ष्वगमन प्रतिलोमजानु लोमजागमन स्वस्त्रीऋतादगमन पश्चयोनिगमन मनसाभिलाप परस्त्रीनिः 🐉

माचाराम च्छेदन विषमप्रयोगादि छन्दो निन्दाकरणाख्त्याकरणान्यायकरण धर्मणवित्तापहरणादि विमानरणारमो 🞖

🖁 त्कर्षे पर्यनेदा परापवादानृतभाषण पश्चितभेद प्रतिश्चताप्रदानादीनां प्रहाहत्यासमानानां पळाण्डू ळश्चन गर्जपदि 🎘

अञ्चण प्रिष्पणी मुखास्वादन क्षालनोदंक पान मुखनिमृतपान कपिलापयःपान यज्ञोपवीत परित्याम कूटसाक्षी 🦫

पदानादीनां मवपान समानानां पितृ स्वतृ मातस्वयुआतृभार्या तनया भगिन्याचार्यं तनया सेवन सिवभार्या 🐉 प्रशुजिता शरणागताथात्री साञ्ची वणींचमां त्यज्याद्य गम्पागमन जनितानां ग्रहदास्समानानां पश्चेसेवन 🥇 औरस्कारात्मस्त्रतिश्रुक्तिन्दा ब्राह्मणनिन्दा यतिनिन्दा परिनन्दा द्विजभेद पितृभेद स्त्रीयुरुपभेद स्थ्रुलसङ्गजीव हैं। 🎚 हिंसन क्रस्कर्मान्वित छञ्यकपिशुन चौरपासण्ड चाण्डाळशवास्थिस्पर्शन दिवामेश्रुन एकादशान स्तवकानगर्हि- 🛚 🕅 ताज्ञ पतिताज्ञ राजापिताञ्च मिश्चकाञ्च कांस्यपात्रभोजन वटाश्वरथाकं क्रम्भीतिन्दुकपत्र मोजन 🛮 ऋणानपाकरण 🕏 ्री पर्णविकय परभेदन गर्भपातन हिंसामैत्र विधान भ्रूणहत्या संकरीकरण मिलनीकरणापात्रीकरण जातिश्रेशकरणा-🎖 याज्ययाजन ब्राह्मणस्त्री बालगोपश्च कमिकिटादि जीववध मिध्याक्रमुक भक्षणासाक्षीभोजन तांबुलभक्षणाहः 🕻 🕺 खड्डारुटतीयपान देवग्ररुवाह्मणात्रेपादुकारोहण गोयान इषभयान महिषीयान गर्दभयानोष्ट्रयान ग्राह्मण यानान्त्य 🎒 जयानाजयान भृत्याभरण स्वयामत्याग गोत्रियत्यागदुरस्थनिमंत्रण विपाशाभेदनावन्दिताशीर्वोद हयविकय 🕏 🖁 साविकय गोविकय कन्याविकय दासीविकय राजभीतग्रह परहव्यापहरण शीचविरहित स्नानविरहितापोशानविर 🥇 र्विदित वैश्वदेव विरहित (श्रद्धश्चेत्वंभागिविरहित ) भोजनसहापत्य भोजन पतितसंभापण भोजनऋमुकपात्र हैं

्रीक्षण परम्नीस्पर्शन संभाषणागभ्यागमन अभस्याभक्षणाभोज्यभोजन असेव्यसेवनालेख लेहन अश्राव्यश्रवणाहिं | स्पिहिंसनअनोष्यनोषणापेयपेयअस्पृश्यस्पर्शन परममोद्धाटन देवत्राद्धणग्रसिच्छेदन भार्याविसर्जन मार्ठापेत्तिः ।

भोजन मार्जारोच्छिष्ट भोजन पतितपंक्तिभोजन परस्परस्परीभोजनेत्यादि स्वप्रेन्द्रियनिपाताद्यप्टमी चर्राद्रशी दिवा भोजन भाउवारपर्वदिन सत्रीभोजन गर्भिणीस्वस्त्रीमनोरथाकरण कारागृहनिवासामेध्यनिवास नदीरुंघन ससुद स्नानादीनां पापानां परिहासर्थं मम पित्रादि समस्तपितृणां स्वस्यच पुनरावृत्तिरहित साश्वत ब्रह्मलोक फल प्रा 02050 प्यर्थं मदंश्यानां दशप्रवेषां दशपरेशां नस्कादुत्तरणार्थं मासोपवासादि महाव्रतानां चलापुरुपादि महादानानां च कोटिशणित फलप्राप्यर्थ मेहिक सकलभोगप्राप्तये धर्मार्थकाममोक्षाणां सिप्यर्थं मम च वालखिल्यादि सप्तऋ-पिमंडल पर्यंतं सर्वेशश्यपकर्पसंभिते काले रुद्रलोकनिवाससिध्यर्थं महापातकव्यतिरिक्तानां पापानां निवर्द्दणार्थं मनसोदिष्टं देहश्द्वस्त्रायश्चित्तं सुवर्णतिबिष्कयमूतं मनसोदिष्टं द्रव्यं तेन भगवान् पापहा महाविष्णुःभी० अथ गंगादितीथं स्नानमहंकरिष्येस्नात्वा ॥इति हेमाद्रि प्रयोगः॥ अवेत्यादि० शुभपुण्यतिथी मम अनेकजन्म अर्थे-( १ ) गुरुरात्मवतां जास्ता राजा शास्ता दुरास्पनां । इह मध्यज्ञप्रपानां शास्ता वैनस्त्रतो ययः ॥ १ ॥ विहितस्पानताग्रानात् निदि ॥१०५ तस्य च संक्तात् । अनिशहारे द्वियामां नरः पतन गृच्छति ॥ २ ॥ इति कर्म निपाके ॥ अर्थ-रुपर प्रमाणनी देपादी प्रयोग करी स्नान करतु. तथा हायमा रायेकापत्रार्थी समयानना मोद्य आगळ मुकी नमस्कार करवा. अने बचीन प्रयोग मरानर करतो. ए हेमादि प्रयोग भग पठी. देह राष्ट्रि प्रयोग सामळवे, पापे अनेक मकारता छे. पण अहा थोडा जाणशास्त्रहा छे.

go b

णां सरुदभ्यासविषयानां ज्ञाताङ्गात कामाकाम स्पृष्टास्पृष्ट अक्ताभक्त पीतापीत अरुलघुपातकोपपातक तन्मध्ये 🖇 सिमावितपापानां नाशार्थं प्रायश्चित्तमहं याचियये॥असंख्यकळुपाः सन्ति॥तेषां मध्येकेचित स्पष्टतः वश्ये॥ वैद्यहा 🕏 |मद्यपः स्तेयी उस्तत्यमः तत्संसर्गी ॥ ५ ॥ गोवधः ब्रात्यया स्तेयं रुणानपिकया अनाहिताबिता अपण्यविकयः पितिदेनम् अतकाष्ययनाष्यापने पारदार्यं पारिवित्यं सर्धुष्यं छवणिकया स्त्रीश्रद्धविद्वसत्रवधः अशुष्कद्व-

|इहंजन्मनि जन्मतोऽद्यदिनंपावत् वालयोवन वार्धिकेषु जाग्रत्स्वप्रसुपुप्त्यवस्थासु वाङ्मनः कायिकृतानां बुद्धिपूर्वाः 🕺

गुरुणा यथ्यभिन्नेषो बेदनिंदा सदद्वभः ॥ ब्रह्मस्या सम्ब्रेष यपीतस्यचनावनं ॥ विषिष्यमसर्गं जैन्स सुस्तरें च वचोनृतं ॥ रअस्वला सुस्ता स्वादः सरापान समानिषदः ॥ अश्वरत्न गतुष्यसी सु धेनुहरणं तथा ॥ निसेषस्य च सर्व हि स्वर्णाप्तय संगितं ॥ सलीभार्ण क्रमारीष्ट स्वयो- 🔆 तिवंतरभातिषु ॥ समोकासु सुवसीषु गुवतरससमंदिदुः ॥पितुःस्वसारं बातुश्र मातुनानि स्तुपायपि ॥ बातःसपत्ति अगिनी आचार्यतनमां तथा 🔖 आधार्याणि दृष्टितरं गच्छंतु शह तस्पगः ॥ इति विधानपारिजाते ॥ मेनापी परहे पांचे मांसळवापी मनुष्यद करेला आवरणो यहाआवी तेना उत्त तिरकारधायके माटे पांचेअनुक्रमे धर्मशास्त्रीना प्रमाणोपी रुख्याके, तेमां 🕏

वण मीटा नाना समान बीगेरेकेटले ते जाता माधाणना सुराभी अवण करनाची तेतुं बराबर कानच्यु तेनंत्रसत तेनाची मुक्तच्यावर्णी जानचपुं नधी अने ै

वशासायपयोजभी स्वालगी ते ते वाचोधी मुक्तधवातुं नवी.

श्चतत्यागः तडागारामविकयः कन्याद्रूपणं परिवेदकयाजनं तस्यकन्याप्रदानं श्रारेन्यत्रकोटित्यं आत्मार्थपाकान् । भिक्तया महासीनिपेवनं व्रतस्त्रोपः स्वाध्यायावि स्रतानात्यागः वांघवत्यागः ॥ स्त्रियार्हिसयाचीपधेन जीवनं । हिंसकप्रवर्तनं । द्युतादिव्यसनं । आत्मविकयः । श्रद्धेष्यता । हीनसस्यं । हीनमोनि निरोचनं अनाश्रमित्वं 🎉 पगन्न प्रष्टता । असन्द्रास्त्राभिगमनं भार्यादिविकयः । असत्प्रतिग्रहः । निंदितान्नादनं । नटादिकर्मकरणं । हैं। भार्या त्यागः तत्र पागस्थ नृपंचेश्य वधः शरणागत वधः स्जस्वला गर्भिणित्रिगोत्र स्त्रीणां वधः हैं। अविज्ञात गुर्भस्य सहदश्च ग्ररुविषये मिथ्याभिशंसनं क्रोघो त्यादन मिथलेपोऽसकृन्मृत्यालीकनिर्वधश्च राजगामि पैशुन्यं । धरी महाद्वेषः नास्तिनयादेदनिंदा कशास्त्राध्ययनेन वितंडवादेन चार्यातवेदानां

मच्छेदनं निदितायोंपजीवनं नास्तिक्यं त्रतलोपः स्तिविक्यः धान्यपुष्पपशुस्तेयं अयाज्ययाजनं पितृमातृ- 🕌 व०३

नाशम् अभन्यभत्तर्णं अलेक्षालेतां अचोष्याचोषणं अलाद्यालादनं अशक्तीशय्यायांस्थितः औषधादीनां

भक्षणे मातृपित्युरुणां वचनस्याकरणं अप्रति कल वतादिकरणं सहशयनासन भोजन संपर्क करणे 🖓 ॥१०७

एकादशाहात्रभक्षणं नारायणक्रयाद्यात्र भक्षणं जातकर्माद्यत्रभक्षणं सीमंतीत्रयनात्रभक्षणं घृत रहितात्र।

🖫 पादमतापनं यह देव दिजामिसुस्त पाद प्रसारणं पितृ मातृज्येष्टश्रातरिष्ठर्वादीनां वचनाकरणं शरणागताप हरणं 🔅 🕯 पितित गीतादिश्रवणं देव त्राह्मण द्रव्य हरणं आतिथ्यवज्ञा चरण गो प्रपम ताम्र तिल जलसी दर्भादीनां पाद 💡 ्रीस्पर्शनं साधनां साध्वीनां व्यथा करणं गो विकय मनुष्य विकय कत्या विकय जलदधी दुम्य मधु घृत लवणा- 🐇 🦒 दिस्त विक्रय हेमस्जतादि घात विक्रय काष्ट्रगादि विक्रय दिवा मैथुनं विश्वासवात करणं रजस्वला गमनं 🛚 पतिन्न- 🕃 🎖 तायाः वलादग्रहणं मछपश्ची सेवनं चांडाली गमनं कन्यागमनं विधवागमनं सापत्न्यमाता भगिनी दृहिता छरुपत्नी 🎏 🕯 प्रजपत्नी गमनं वेश्यागमनं पस्त्रीगमनं पशुयोनिगमनं स्वदारा अकाले गमनं अंग्रत्यया योनि विदारणं 🎉 ्रीभित्रक्षीगमनं शरणांगत स्त्रीगमनं यजमानस्त्री स्वगोत्रस्त्री मात्रिपत्पत्त स्त्री गुमनं पुरुषपु गुद्रागमनं नग्नस्त्री 🕏 ुँ दर्शनं जलमध्ये सुखदर्शनं असंस्कृतभाषादि प्रवंधरचितकथा श्रवणपार्गं करणं च इद्ध एक स्त्री 💆 माता पिता स्वाशिश्त्रना अपालनं तर्जन्या दंतशोधनं विवाहितायाः प्रनर्विवाह करणं मातापितावाक्येन 🐉 🕄 स्वद्धा त्यागकरणं साघुसार्थ्वापु द्वेप करणं दंपत्योः त्रतिभंगकरणं माताशिक्ष्वोः वियोगकरणं गो- 🖇

भिक्षणं छुन्सितात्र भोजनं प्रायश्चितात्र भोजनं सूर्योदयास्तरमये भोजनं दीपरहितात्र भोजनं बन्हें। 🗹

वतायोः वियोगकाणं रुधुन गृंजन पराण्ड् निशिद्धकृष्मांबादीनां भक्षणं अनाथ विधवादीनां उरेरेन इन्यहरणं जैन्यशाला प्रवेशः यवनशाला प्रवेशः यतिशाला मद्यचांण्डाल म्लेच्छ हिनजाती गृह प्रवेशः अतिथि देव ४६ अरसणानां राषिच्छेदनं विद्यागर्व करणं शवास्थी म्लेच्छचांण्डाल दीनजातीस्परी अञ्चतस्तान 🕺 भोजनं विष्मुत्रादिस्परों करप्रक्षालनाकरणं अहपीहर्षकरणं अमेष्यवस्तुस्परों स्नानाकरणं अवाच्यावाच नं अशन्दाशब्द श्रवणं श्रामवन गृहतृणादि नानाविध जीवदाह करणं कठोरवावयेन करणं आत्मस्त्राति करणं हरिहरयोः विभेदगणनं अन्यतदेवनिंदा वेदस्मृतिवाह्मणपुराण तीर्थादिनिंदा श्कमारिक भारताज मयूर चाप कपोत कुकलास श्वान शृगाल नकुल सर्प द्वश्चिक स्कूर हरण शस्ट मार्जार 🕺 जातिश्रंत्र कराणित् ॥ विभवीदा करणं अनावेव भव लक्षुनादी प्राणंभित्रकोदिलं धुरिसेवहुनं एवानी जातिश्रंशकराणी ॥ सराश्रोपसूत्र

इस्त्यज्ञाविमीन महिपाणां अन्येपां च ब्राम्यारण्यपञ्जां वषाः संकरी करणानी ॥ निहितेभ्यो धनादानं वाणिक्यं शुद्रसेत्रा क्रसीदजीवनं असत्य भाषण वेतान्यपानिकरणानि ।। बहुकृपि कीटकयो कीलस्थलमयो हैत्या मधानुगत भोजन बहुक्लय पुष्प स्तेषं अपैयेमेतानिमलिनि करणानी ।। शवि मायश्रिचेंद्रग्रेलर मायश्रिचकरंत्रे स ॥

भक्षणं रजस्वला विवितात्र असंकल्पितात्र अमंत्रितात्र अभ्रष्टात्र अभ्रद्धात्र प्रज्यात्र पतितात्र भक्षणं स्वजनियत्र 🎉 दोह करणं च कृतप्रीत्वं परमर्म भाषणं अनृत भाषणं कृटसाक्षी भाषणं च सेत्तुमंग करणं देवालय वृत गृहयात्रा 🕏 देवदर्शन श्रामिवाह चार्वुर्वर्ण भंगकरणं धर्मन्याय त्राह्मण मानलंडनं च प्रतिमा खंडनं विध्यापवाद नडाम महाजलाशय बाटिका कूप वापी खंडनं च बालबत खंडनं द्युत कीडा बालकीडा जलमध्ये नग्नकीडा नग्नस्नान 🕏 नमशयन ताम्रपात्रे पयपानं पाखंड पेश्वनभूत मेत पिशाच सक्षम यशिष्यादि उत्मच उपासनं परवेभवेन व्यथा 🕺 करणं शास्त्रव्यतिरेकेण नतर्वेष वृषोत्सर्ग प्रायश्चितात्र भोजनं दारपाल सेवकादि अपालन कर्मोद्धाटन महावू-श्रादिछेदन सूश्मलता ग्रत्मोपिष छेदनं च निशिष्ट तिथी बारनक्षत्रयोगे मळस्नानकृत स्नानसंध्योपासनादि 🕺 कर्मरुत अनध्यायाध्ययन अध्यापनास्त करणं च वेदवित नैष्टिक अग्निहोत्री श्रीत्रस्मार्तादि कर्मवित तपस्ती ब्रह्म- 🕏

युक्त मत्कृण स्वेदज अंडज उद्धिज जरायुज नानाविध प्राणीनां हिंसाकरणं अस्नात भोजनं उच्छिष्ट भोजनं १ एकादरयादि कृत वृत्तिविध भोजनं पर्श्विपतात्र मोजनं थानमार्जासादि सुख स्परों भोजनं गणात्रं राणिकात्रं ३ कृष्णात्रं स्तिकात्रं वळात्कारात्रं अस्तेहात्रं एडदिष मिश्रितात्रं अनैवेद्यात्रं एकांस्थपात्रे भोजनं शिवनिर्मालय वि॰को॰ 🕍 बारी मस्करी निंदा करणं रजक चर्मकार नट वर्बर कैवर्तक भिरू येह म्लेच्छादीनां प्रतिग्रह करणं च कार्पास ऌवण- 🖏 प० ३ ै माप छोह पति ग्रहणं च देवप्रतिमा यहोपयीत छश स्त्राक्ष उस्ती माला विद्यासरस्वती प्रस्तक विक्रय वैद्विकय ै देव प्रजा ग्रहपुजा ब्युतक्रमण आत्महत्या बालहत्या स्नीहत्या अन्यत्जातिय हत्या करणंच चर्णचर्णप्रक्षालनं भाजवास असाक्षी तांब्र्लमकण् सर उध् रजस्वला च्तिकाः स्परीनं कार्णस त्व खवर्ण सेप्य ताम कांस्य भाजनात असाक्षा ताञ्चलम्बर्ग सर उद्ग राजस्य प्रतासन्य सामर राज प्रलादिहरणं स्नानरहित शाँचरहित । अस्ति ने अस्ति हो प्रताक देवसती वद्मपट मणिमाणिक्य माँकिक चामर राज प्रलादिहरणं स्नानरहित शाँचरहित । स्वति क्षेत्रपट मणिमाणिक्य माँकिक चामर राज प्रलादिए अन्नताम्ब्रुल सक् चंद- विकास क्षेत्रपट सामर क्षेत्रपट सामर प्रतास कार्य का ्रितामाध्यक्ष अभावास्याः । विश्वीतास्यास्य । विश्वीतास्य 
े णार्थं उपविष्ट भादाणाना मर्चा सीमायाश्चित्त प्रयोगः॥ सुवर्णं नालिकेर कुश तिल यवासतान् गृहीत्वा हेमादिमयोग प्रायश्चित विधिः ॥ अथु

क्षित्री स्वार्धिता वार्त वित्रोसज्ञादिलोपनात्।।स्वश्वश्रु अध्युरादिनां पादवं दन महेता।।१।।पाणिप्र हुए मारस्य स्वकर्म परिपालनम् ॥ इंदिपाभि रतिस्रीणां नानाजातिषु या भवेत् ॥२॥ कमीकीटादि दहनं पस्रति भेदादिकं तथा।।पतिश्रुश्चपणाभाव रतिभेदादिकं तथा ।। ३ ॥ स्पृष्टास्पृष्ट मनाचारं मनसा दोपकल्पितम ॥ नाः स्तिक्यं वा स्वधमेंपु परधमेंपु वा स्तिः ॥ ४ ॥ अपूज्यपूजनं पूज्य पूजनस्य व्यतिक्रमः ॥ जन्मतोद्यदिनं यावत् कायिक वाद्यनस्तथा ॥ ५ ॥ अबुद्धबुद्धिपूर्वाणां कृतानां खलुकर्मणां ॥ असक्दिपयाणां च ज्ञानतोऽज्ञा : नतोषि वा II ६ II अकार्यकरणायच अपेयापानतोषि वा II अभक्षाभक्षणचैव यन्मया पातकं कृतं II ग्ररुणां च : छन्ननांथ पातकानां तथेव च ॥ ७ ॥ उपपातक उक्तानां प्रायश्चितं करोम्यहम् ॥ पतिरेव उरुद्याणां देवतं पतिरेव ं च ॥८॥ पतिशुश्चपणं तस्मात् द्वीणांधर्म सनातनः ॥ रागान्वितापि दुष्टोपि पिशांचै श्रीसतोपि वा ॥ ९ ॥ दरि अर्थ-आ प्रमाणेनो पुरुषको देह धार्द्ध प्रायधितनो प्रयोग सामर्का हाथमा राखेली वस्तु भवगानना मोडा अरागळ सुकी नमस्कार करवो, जो स्त्री होय तो तेने पण पत्रभी देह शदि प्रयोग प्रकरनो संपद्धावी. की प्राथिश्वाद प्रयोग संपद्धाववी. तेमर पण सीनाम्यवती तथा विश्वपाना वे प्रकार है. तैमने ते प्रमाणे करा.

1188011

तथा !! कामास्त्रोपात भयाह्रोभाद च्छलतो भयतोपिवा ॥ १२ !। स्वमर्यादान्यतिक्रम्य परप्रंसोभि सेवनं ॥ 🕺 स्वाप्यनुतां विनायस ब्रतानां करणं तथा ॥ १३ ॥ अर्थकार्ये ममत्वं च कायकार्ये प्रागल्भता ॥ निकटस्थे सदापत्यो हरिद्रा इंकुमादिभिः ॥ १४ ॥ संस्काराकरणाचैव दूरस्थे करणात्तथा ॥ निर्रूजन 🕺 त्वं चना स्तीक्यं विचित्र करणात्तथा ॥ १५ ॥ आलस्यं च शुभेकार्ये निद्रा कलह मेवच ॥ भर्तृविदेपिणी 🕏

भ्यश्च सहसंवसनंतथा ॥१६ ॥ भोजनस्याप्रदानं च पद्धतिभेदा त्रधेव च ॥ छठवाह्मणभिक्षणामातिथ्या करणातः। था ॥ १७ ॥ दीनांघः कृपणानां च श्चधार्ताणां तथैव च ॥ अन्नदाने विद्दीनत्वं लोभेनान्त भाषणं ॥ १८ ॥ 🖫

मनो वाकाय कर्मभिः ॥ श्रश्रूपा करणंचैव पत्युसहा विलेपनं ॥ ११ ॥ वालयोवन वार्धिक्ये स्वातन्त्र्या करणं 🐉

भर्तसङ्गा विनायक स्ववंधुभ्यः प्रदापनं ।। भर्तसङ्गाव्यतिकस्य स्वेच्छया करणंतथा 🗓 १९ ॥ तपिते 🥍

श्चिषेतेपत्य र्जलात्रस्य च भक्षणं ॥ भर्तस्मोपिते तैला भ्यंग मुद्रर्तनं तथा ॥ २०॥ मण्डनानां च करणं परि-रिं ॥१२०

ैं धान खबाससः ॥ प्रसृहेषु गमनं समाजोत्सव दर्शनं ॥ २१ ॥ क्षेत्राद्यमाद्रनात्पत्यु सगते मुदितासती ॥ प्रत्यु-

गमना करणंतथा॥केशानां रक्षणं चैंव दिवार भोजनं तथा ॥ २७ ॥ पर्येड्डे शयनं चैव सब्द् ताम्बूल निसेक्नात् ॥ 🔆 शरीरपोपणं चैत्र शैरपाया मन्नभक्षणं ॥ २८ ॥ कलिंगादिनिशिद्धस्य दम्धानस्य च भोजनं ॥ पछाण्ड 🕏 लश्चनादीनां कृष्मांदस्य च भक्षणं ॥ २९ ॥ मस्रादी निषिद्धानां भक्षणं गर्भपातनं ॥ फलानां हरणंदेव ब्रह्म- 🔀 स्व इरणं तथा ॥ ३०॥ मर्तृच्नी भि स्तथामर्भे घातिनिभिस्तयैवच ॥ इलटाभिः सुरापानं रतिभिः सहभोजनं 🖇 ॥ ३१ ॥ सुर्गंध द्रव्य हरणं कस्तुरी कुंकुमादिकं ॥ तेल दुग्ध प्रतादीनां विक्रयो फलविकयः ॥ ३२ ॥ कन्या- 🕺 विकयणंचेव दास्यादिनां चिवकयः ॥ स्सानां विकयश्चेच मधु तकस्य विकयः ॥ १३ ॥ युका मत्कूण स- 🕏 र्पाणां हिंसनं प्राणिहिंसनम् ॥ दंपत्योप्रतिभेदश्च ऋटसाक्षि स्तर्थेक्च ॥-३४ ॥ विवाहे विद्यकरणं तडागादि 🐉

त्थानासमार्थेश्व सन्मानाकरणात्तथा॥ २२ ॥ तांबूल व्यंजनार्थेश्व पादसंबाहनादिभिः ॥ सुचाइवचनं चेव हैं राष्ट्रशप करणं तथा ॥ २३ ॥ तांबितायां क्रुधापत्य सेदनं प्रति ताडनं ॥ पतिवाक्य मनाहत्य प्रत्युक्ति करणं हैं तथा ॥ २४ ॥ भर्तुक्रथपनाद्रत्य पेरेषां ग्रणकिर्तनम् ॥ उत्सवादिशुवंश्वनां सुवने वसनं चिरं ॥ २५ ॥ रोहाषा है स्तवत्सायाः संपर्कारोदस्भाषणम् ॥ भर्तृपुर्वंव शयनं पश्चाहत्थापनं तथा ॥ २६ ॥ सृते च भर्तेरि सह बि॰को॰ ुँ प्रभेदनं ॥ वापी ऋपतडागेषु विषप्रतेषणं तथा ॥ ३५ ॥ ज्वाळनंषरवेश्यानां सपत्नीवाळघातकं ॥ मिथ्याप-🞼 विष् बादकरणं बालानां मारणं तथा ॥ ३६ ॥ गो बाह्मण देवानां व्रत्तिच्छेदन मेवच ॥ उद्यापन विहीनानां 🐉 #225H ब्रह्मानां करणं तथा ॥ ३७ ॥ सुवर्ण रोप्प रत्नानां स्तेयो विक्रयमेव च ॥ यतिर्निदा सती निंदा तपस्वीर निंदनं तथा ॥ ३८ ॥ पश्चनां हिंसतंचेव देव बाह्मण निंदनं ॥ शीचाचारविद्यीनत्वं प्राणीनां पींडनं तथा ॥

।। ३९ ॥ अपात्रेदानकरणं पात्रदेप स्तयेवच ।। श्रीमतानां श्वधार्तानां दासादीनां तथेव च ।। ४० ॥ 🕃

सकोधमन्नदूर्तं च क्रांटिलासेपसंखतं ॥ तीर्थपात्रा विह्यानतं अनास्तिक्य मनार्जवम् ॥ ४१ ॥ स्वपतिद्रेपकरण मात्मघातस्त्रवेवच ॥ स्रोप्त्यो शहतन्यं सक्त्रभोजन माचरेत् ॥ ४२ ॥ उत्थानात्वर्वं सत्थाय सदात्तद्धितमा-🖔 चरेव ॥ कोपनंकिहींचर्र्ड्यांत रुप्टेंद्र मुदिता भवेत ॥ ४३ ॥ दुःखिते बहुदुःखा च प्रोपिते मिलना. कृपा ॥

अयमेवपरोपमां नारीणां परिकीर्तितः ॥ ४४ ॥ एतद्धर्मन्यपायेन रजोग्रहा चयद्भवेत ॥ पातकं खमहचैव इह वा परजन्मिन ॥ ४५ ॥ मयाञ्चतानि घोसणि पापानि सुबहुन्यपि ॥ एतेपां श्वालनार्थाय प्रायश्चित्तमहं रूपे 👸 ॥११२।

॥ ४६ ॥ एतत्पापविश्वःयर्थं प्राजात्य त्रयंचरेत् ॥ इंद गोमिशुन द्रव्यं गंधपुष्पाद्यर्चितं सम्योपविष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यो

हममुकनामाहं निष्पापोभवेयमिति त्रिर्वाच्यं ॥ अहंनिष्पापो भृयासं अहं निष्पापो भृयासं अहंनिष्पापो भृयासं॥ ममदेह शुद्धि रस्तु मम देद शुद्धिरस्तु मम देह शुद्धिरस्तु ॥ अहं एतत् कर्म योग्यो भ्यासं अहं एतत् कर्म अर्थ-मोदाने बसगुक्तावी स्विज्ञा सुरपस्तिन । रपदाने शुभोनदान सुशुन्कांवर कांचना ॥ १ ११ निवर्तनारि भू दाने धरादयात् द्वि जातवे ॥ दर्ग रसोन देवेन निक्षदंत्रात्रिवनिते ॥ २ ॥ दशनान्वेव गोचपे दन्वापापैः । इति सुर्योदण संवाद्यंपे । एकभरेतन नरेतन क्षेत्रवादश्चिते न च । उपनासेन चेत्रायं पादकुच्छ उदाव्रताः । इति अभिस्पृतौ ॥ अर्थ-रक्षेनी प्रायक्षित प्रयोग पया पछी पुरुष अमाणे राखेळी हाममा बस्तु नीचे भगवान पासे मुक्टी नमस्कार करावा, तथा संकल्पकरची के वे मारी छाचित्रमाणे प्रायक्षित कर्यु तेमार्था मने असुक कर्म करना अधिकार धाजो, यही सभा दंदना दरिकप्रमाणे सेराजाक्षणीला परावमाली शुक्त. र् यस्पनिरेहेबु, हु प्रभवनानी थयो, मारोहेहबु,द्रथयोः हु आवर्षकरवायोग्यययो एम प्रमावत्तकेवाथी श्राह्मणीये वहेतु, उपस्प्रमाणे पत्र प्राह्मणीने नमस्त्रास्वरी, उदिच्याद्वविष्णुश्राद्व कर्त्तुं,

ऽहं संप्रदास्ये ॥ अरुरुष्ठपापानां विशोधनार्थं प्रायाश्वचिमहंयाचे ॥ याच्यतामिति बाह्यणोद्ययात् ॥ प्रजापत्य र्थं संकल्पः ॥ अद्यत्यादि । तिथा ममदेहशुष्यर्थेकरिष्य माणकर्मण्यधिकासर्थं यथासंख्याकान् प्राजापत्यान् र रजत प्रत्यामायदारा अहमाचरामि तेनकरिष्यमाणकर्मण्यधिकार सिद्धिरस्तु ॥ अनेन कृतप्रायश्चित्तेनासुकगोत्रो- श्रे

योग्यो भूयासं अहंएतत् कर्म योग्यो भ्यासं ॥ एवं यज नाच्छृते दिजाः ब्र्युः॥त्वं निष्पापो भूयाः त्वं निष्पापो 🕺 । त्वं एततकर्म योग्यो भव ।। त्वं एतत्कर्म योग्यो भव ॥ त्वं एतत् कर्म योग्यो भव ।। एवंबास्त्रयं द्विजमुखा च्छूत्वा सभोपनिष्ट ग्राह्माणानां पादाभिवंदनं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि॰ प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गानि करिष्येति 🕏 💈 संकल्य ॥ उत्तराङ्गा विष्णुश्रार्छ ॥ विष्णोएतत्तेपाद्यं पादावनेजनम् प्राक्षालनम् ॥ इदमत्र चंदनं च पुष्पम् ॥ ई ्ट्रं स्वरादों करी प्रसाव्याचम्य विष्णुमंत्रेणदि ग्वंघः ॥ अक्षताच् गृहीत्वा ॥ नमस्ते देवदेवेश पुराण पुरुषोत्तम ॥ ्रं इदं श्राद्धं हृपीकेशरसत्वं सर्वतो दिशि ॥ १॥ प्रवेंनाशयणः पातुवारिजाक्षरत्त दक्षिणे ॥ प्रद्यमः पश्चिमे १ पातु बाधुदेवस्तथात्तरे ॥ २ ॥ आयान्तु उत्तराङ्ग वैष्णवश्राद्धोपहासणां पंवित्रतास्तु ॥ अदेत्यादि० तिथी ४ भिवा सरा महार्गव मारायण महादि भिर्जक भागापत्य मत्याम्नायाः कथ्वेते । तच्च सर्व भायश्चित्तं शवस्यामुसारेण पदन्दं त्यन्तं सार्द्वाच्दं अन्यदा पर्परोतुमत । मानापत्यमत्याम्नापात्र मायभ्या पुत जपेन । मायभ्या तिल होन सहस्रेण । द्वादरा आक्रण भोजनेन तीर्थ योजन यात्रया पुत्र मोदानेत । स्वर्ण रूप्ययो निष्कं तदर्दे तदर्देन या द्वाविशत्यणेषी गोमूल्या नामश्रास्या दानेन शुष्ककेश्वस्य द्वादशस्नानेन द्विगुण-🙎 द्वादशामात्रदानार्दोचेकः माजापत्य इति ॥ निष्क ( मापा ४० ) तदसक्ती द्वात्रिश्चसाम्रपणाः कनिष्ठाः ॥

आमात्रंवा दद्यात सुप्रोक्षितादि करणं वैष्णवश्राद्धभतिष्ठासिध्यर्थं दक्षिणां विष्णवे॰ अरापुर्वोत्तरित उत्तरांगवैष्णः वथाळविषेः परिष्र्॰ इति उत्तरांग ॥ विष्णुश्राद्धम् ॥ उत्तरङ्गागोदान इन्यंगृहीत्वा अद्येत्पादि॰ तिथी प्रायश्चित्तस्योत्तराङ्गतयाविहितं गोदानप्रत्याम्रायत्वेन यथाशक्तिगोमृत्यनिष्कयद्भयं विष्णुरुपाय बाह्मणाय तुभ्य महं संप्रददे ॥ इत्युत्तरांङ्ग गोदानं ॥ आचम्य सत्येशस्य यथाशक्त्या प्रजनं करिण्येति संकल्य अष्टशक्तिसहित विकारोहं हिएमं च कार्पासं लवणं सथा । सप्तयाम्य क्षिति गीव एकेकं पावन समत ॥ इति गारुटे ॥ त्रिष्ट्यो पव गोधूसा, छुटा पाणा मियगवः । तिकाध सप्तवायोक्ता सप्तथान्य मुदाहुतं । इति देववानीये ॥

अर्थ-निव्यवसाद यथा पर्जा, उत्तराङ्क गोदान आप्तुं, ते प्रत्युश न होच वे तेत्रं मूल्य प्रक्तिवित्त्वेत्रु सथा अन्य गोमियुन एटले बाटरहा

वाजदी प्रत्यक्ष छेवा न होय ते) ९ टेकाले-।।भाने। लेकाने वालजे, तेटर सकल बरवो, तथा स्थापितसत्येश सुर्तित.

भागश्चित्तोत्तराङ्गा वैष्णव श्राद्धमहं करिष्ये ॥ विष्णवे इदमासनम् ॥ इदमञ्चंदनं पुष्पं धूपं दीपं यथादत्तं गंधाद्यर्चनं विष्णवेन० इदंवीज्योतिः वैष्णवश्राद्धस्यार्चनविधेः परिप्र० ११ आचम्य विष्णु शीतये त्रिम्पोधिकार् सुम्मान् ब्राह्मणाच् प्रजापूर्वकं भोजन निष्कय द्रव्य दान दारा अहमाचस्रामि ॥

्र्री शोधनं ॥ २ ॥ जन्मेरोगं च शोकं च यायं मे हरगोषय ॥ गोमयेन तु यःस्नात्वा आपाद तल मस्तके ॥ ३ ॥ 1188811 अथ पंचगव्य स्नानं ॥ एकत्रं कृता स्नानं ॥ गोमृत्रं गोमयं तीरं दथीसर्पिकुरोदकं ॥ सर्वेषाप विशुध्यर्थं पंचगव्यं उनात्तुमां ॥ ४ ॥ अथ गोरज स्नानं ॥ गवांक्षरेणनिर्श्रतं यद्रेणुगगनेगतं ॥ रजसातेन संलेपो महापातक नाशनं ॥ ५ ॥ अय धान्य स्नानं ॥ धान्यौपभीमनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतं ॥ तेन स्नानेन देवेश 💱 मम पापंच्यपोहलु ॥ ६ ॥ अथ फल स्नानं ॥ वनस्पति स्सोहिच्य फलपुष्पत्रतं सदा ॥ तेन स्नानेन देवेश दान मार्थमनं होमं ग्रोजनं देवतार्थनं ॥ मीट शहो न क्षत्रीत स्वाध्याय पितृ धर्यणं ॥ आसनास्ट पादस्तु आन्वोत्री अंपयोस्तया ॥ कृतायास्त् कियायभ भीट पाद स उच्यते ॥ इति आट्यायमः ॥ यज्ञके शुष्तवर्त्तेण स्थले चैकाद्रवाससा ॥ जपो होगस्तथादानं तत्सर्वे निष्मळं भवेत् शतिवन्दि पुराणे ॥ होपदेवार्चनाव्यास्तु क्रियास्याचमने तथा ॥ नैकवस्त प्रवर्तत द्विभवायनके जपे ॥ सञ्यादवा परिभए कार्यदेवा-धुनांबरः ॥ एकपद्धं त्रथाविषात् देविषत्रे च वर्तयेत् ॥ इति गौतमस्मृतौ ॥ दमीहेना तु पासंध्या पमदानं विनोदकं ॥ असंस्थातं च पानतं तत्सा वै निःमयोजनं ॥ अवेश्य मोन्नर्णकृत्वा आक्रम्य सोदकेनम् ॥ पाणिनास्तुष्टुा दानंद्यात्। इत्यापस्तेवः ॥ सर्वीण्युद्वपूर्वीणि दानानि पथाश्वति विदेत् ॥ वांपंदयाद्विभक्ते दानेविधितयं स्मृतः ॥ सक्तकोद्कहस्तव ददापीति तथानदेत् ॥ इति वाराहपुराणे ॥

वि॰कां॰ ही शुचिर्भवेत् ॥ १ ॥ अथ गोमयस्नानं ॥ अग्रमग्रश्चरंतिनां ओंपधीनां स्तंवने ॥ तातां वृपभपत्नीनां पवित्रं काय

🕺 पुष्पपुरुदं मम पापं व्यपोहृतु 🕧 ९ ११ अय गंगोदकस्नानं ।) विष्णुपादाग्रसंभूतां गंगे त्रिपथगामिनी ।। धर्म 🎎द्रव्येति विख्याता पापं मेहरजान्हवी इति गंगोदकस्नानं ॥ १० ॥ वैष्णवोपि भस्माऽभावेकुशोदकस्नानं ॥ ्री इसमूलेस्थितोत्रह्मा इसमध्येजनार्दनः ॥ इसात्रे शंकरोदेव स्तेननस्यन्तु पातर्क ॥ १ ॥ ततोश्रद्धोदकेन १ स्वात्मा ॥ इस्ते पृष्पाक्षतान् महीत्वा ॥ अपसाधसहस्राणि रुक्षकोटी शतानि च ॥ नस्यान्ति ततस्रणात्पापं 🎇 सत्येश तवप्रजनान ॥ २ ॥ सत्येशपंचवमत्रतं छभ्यासहजगत्पते ॥ वास्रदेवततः पूर्वे नृसिंहो दक्षिणेस्थितः 🞼 ॥ ३ ॥ कपिलः पश्चिमास्ये त वाराहञ्चोत्तरे स्थितः ॥ ऊर्ध्ववक्त्रेन्खतोङ्गेय एतद्वै ब्रह्मपंचमं ॥ 😮 ॥ सत्येशः

अंतर्गानुमर्ग कृत्वा सङ्कांनु तिळोदवं ॥ फळान्यपि च संभाप प्रद्यात् श्रद्धपान्विदः ॥ इतिगीतम स्पृतौ ॥ पात्रासाञ्चित्राने ॥ पत्रसाश्चर । इतिश्च जर्रमुमा विनिक्षिक्त्व ॥ विचते सागरस्यांको दानस्यांचे न विचते ॥ इति नास्त्रीयपुराणे ॥ दानकाळे तु संगासे पात्रे वा साक्षियो १ इति पर्वाचरम्या अन्यविनक्ते दत्त्वा दानं पात्रे विभीवते ॥ इति पर्वाचित्रमतात् ॥

्री फलज़तमनत्तकं ॥ ७ ॥ अथ औपधी स्नानं ॥ औपधी सर्व ब्रक्षाणां नृणयुत्म लतादुमाः ॥ दुर्वा सर्पप हें संयुक्ता सर्वे[पःघः पुनानु मां ॥ ८ ॥ अथ हिरुष्य स्नानं ॥ हिरुष्यगर्भ गर्भरथं हेमज विभावसोः ॥ अनंत हें

प्रयस्त्रिति करपादाने हु पुंखिपांगिति ॥ नादीपुले विवाहे च मिरितागद पूर्वने ॥ चामसंकितीपीद्विद्वान् अस्पन पिनुपूर्वके ॥

अर्थ-द्वापकारमुस्तान प्रयानि हुद जळके स्वान करम्, पठी फुछचीला हाथमा छद किर्णुस्त्येशानीवर्धना वर्रवी, प्रापंता करी भगनान्तर फुळ चहानी नमस्त्रार करवी, तथा मासण गोनननी सकरर वर्रवी, तथा मासणीने दशणा आपनाची सकरर करवी, तथा मासणी यी छेट्डी आगळी वर्ती वार सक्तत बहर जलकी, पर्व तेमा स्वानान्त्र प्रकार करवी, तथा मासणी स्वान स्वान कर्षण अपनान्त्र प्रकार करवी, तथा मासणी स्वान कर्षण कर्मान स्वान कर्षण कर्मान स्वान कर्मा सकर कर्मी भगनान्त्र प्रकार कर्मा सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध सम्बन्ध स्वान कर्मा स्वान स्व

अस्तिगर नेसन्, एप्रमाणे देहज्ञद्विषयोग समाप्त गयो,

्र पुष्टि च वर्षयत् ॥ २ ॥ आज्यंतेजसमुद्दिष्टं आज्यं पापहरं परं ॥ आज्येसराणामाहारोआज्येलोकाःशतिष्ठिताः ।। ३ ॥ इदं कांस्यपात्रं घतप्रसितं पंचसनसिंहतं स्प्रेंदैवतं छायादोपनिवारणार्थं आचार्यायाहं दास्ये ॥ आज्या भावे अशक्तो सूर्यावेक्षणं ॥ अद्यप्नवेंचिरत० भवतां त्राह्मणानां वचनात् श्रीतीर्यविष्णोः प्रसादात् प्रायश्चित्तविषे र्थं र्यन्युनातिरिक्तं तत्सर्वं परिवर्णतास्त्र ॥ अतः परंस्तात्वा ॥ विष्णवेनमो विष्णवेनमो विष्णवेनमः ॥ इति श्रीज-ुं यानंदात्मज मूलशंकरशर्मणा विरचितायां विवाह कोमुखां तृतीय मुखापनप्रकरणे देहश्रुद्धिप्रयोगः ॥ ु ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीरापापुरुषोत्तमान्यां नमः ॥ श्रीप्राहृपोत्तम वतोद्यापन विधिर्छिष्यते॥ 🕯 यथालाभोपहोरण मासे चास्मिन् मिलम्लुचे ॥ प्रवेनिह पातक्रयाय कृत्वा प्रवोन्हिका क्रियाः ॥१॥ गृहित्वा निय 🕉 में पश्चात वासुदेवें हृदि समरन् ॥ उपवासं स नक्तं वा एक भूक्तम्ब भामिनी ॥ यःकश्चि निश्चयं ऋता ैं पीतःस्यात कृष्णग्रधिका ॥ तीर्थे गत्वा स्नान विधिपूर्वक प्रायश्चीतं कत्वा ॥ गृहे आगत्य सर्वे उपहारान

ै शक्तिदक्षिणां दास्ये ॥ ततोमुखावल्रोकनं ॥ दिव्यन्तरिक्षभूमो वा यन्मे किल्विपमागतं ॥ तस्तर्वं आज्यसंस्प- ०००० ३ शित प्रणाश मुपगच्छतु ॥ १ ॥ अलक्ष्मीर्पबदौर्भाग्यं ममगात्रे व्यवस्थितं ॥ तस्तर्वेशामयेत्याज्यं लक्ष्मीय् ०००० वि॰को॰ है समिपे मृहिता ॥ आसने उपविश्य ॥ यजमानभाले तिलकं कत्या ॥ आचम्य ॥ प्राणानायम्य ॥ रिरासांवध्या है ॥ नियम मृहणामंत्रः ॥ इस्ते गंधाक्षत जल एष्य प्रगीपत्लानि सहिरण्यानि मृहीत्वा ॥ तत्र मंत्रः ॥

1175531

सदीपनीतिना भाव्यं सदाकद्वशिलेन च !! विश्वित्वोप्युपनीतिश्च यत् करोति न सत्कृतं ।। इति कात्पापनीतेक श्व ।। वस्मात् शिखावन्यना-

नन्तरं सर्व कर्षणा मुप्योगित्वं शतव्यं ॥ विष्णोधरपोदक म्रहणा नंतरं आसने उपविश्य ॥ शते पोविदार्चन चंद्रिकार्या ॥

ने मनुष्यने गुवानुरुपोत्तमदेवतं अथवा कोइपणदेवतं उद्यापन कर्तु होय तेणे पूर्वामक्रिया करवानी अवस्थकता छे तेरछ धया पडी

में देवत प्राचित्रक वणु होय तेनी सीया करवामा आर्थ हे. ाल धणा लोकोना अभिपाय मळवाथी अत्र राधापुरुयोत्तामने प्रधान मानी

देर्ग वतल्लु हे तेमा बुक्तातर मास आहे ते पेहेला हेमा नोवतो साहित्य तैपार करी जुरूपतिपराए जात काले उदा शोचादि निया

परवारी तीर्व जर स्वान करी तथा प्रात कुरवारवारीने आसकोने बोल्जना, तथा तेमनीपाते श्रीराधिकासहित प्ररुपोत्तनदेवत कल्या उपर

स्थापनकराग्यं तथा शास्त्रापन करतुं, तथा महिना सुधि में भने ते नियम छड़ पाठयो, हो तेमा करेला मतसुं उदारपन करतुंन नीइये

हणनी मंजरूप करती. पत्री तीर्थे नतु आक्राणने छर्ने, तथा त्या स्नाचितिये करि विधियन पायधिकप्रयोग करती, अधवा न वने ती घेर करती ( जदापनना 🔏 आरमने दिनसे करवानो बाल पढ़ी गयों है। पहले पेर आकी सरका उपहरिन वह देवने। महर विभेर कुंदर शोभावतक करिने तथा सरणानृत तुष्टशी रतेलक भारता

तेने मारे भवमा बहुन दारामार्था अनुरूकदारो प्रहणकरनो पत्रि ते शतमा जोहता साहित्यमा शेष आपेटी के तेना प्रमाणे अपना

राष्ट्रीयमाणे साहित्य एकत् कर्युं, क्षेत्र उवापनना अगले दिनसे सहयारे वेटा उदी वित्यक्रिया साळी परवर्ता, वाष्ट्रदेवपद्वाननु प्यान घरी नियमय-

आचयत-मधर्म थः दिवे दापः ऋग्वेदस्तेन कृष्यति ॥ यद्वितीयं यशुवेद तेन मीणाति भारत ॥ १ ॥ यत्त्वीयं सामवेदं तेन भीणाति पाडव भाषा वन्मनेदास्यं दसणांगुष्ट मुक्कदः ॥ अयर्ववेदं मीणाती तेन राजन संग्रयः ॥ २ ॥ गोविंदार्घन चेदिकायां ॥ 🖏 वर्रावे पाढळातर रातुं आसन पार्थराने वर्त्ताये बेसबुं पठा गोरे यममानने कपाळे पाड़ो करी, आचवन प्राप्यायम करावी यभमानना हाथमा पाणी चंदन 🞖 🕯 😎 पछ दक्षिका टेबाटवा तथा उपर छसेछे। मन नै।यमनो ते बोळानी पांकी दरामाणामा मुख्यु, पठि प्रकरण पेहेछाना २ पत्रपी शांतिपाठनो आरभ करीते 🞖 र्रे प्रयान सरस्य पर्यंत फरावना तेमा झाथमा पाणी छद चदन पुरुव दुसणा ग्रुकी बेर्ड्डके मारादरेकपाची दूरपया तथा पुत्रचीनादि प्रारपया तथा गोछोक बासीना 🕏 प्रयान मेळवरा बरेखा बतनु भथना बतचारण करवा उचापन वस छउ, ए सकल्प झाडाण बोंडेडे. तेन्त्रे अर्घेडे एथया पर्छ ऑगस्करूप करवा परेडे ते प्रकरण 🕏 े पेव्यना२ १त्रवी आरंभी प्रण्याहवाचनात प्रयोग करवो, पत्री सकलमा समप्रमाणे कर्म करते. हवे प्रवास कर्ममा अपभृत कर्म करते जोड्ये ते पुष्पाहवाचन 😵

त्या गंगाते वपावनायेत भाराणीये ते देवना स्थान यह सोपारी मुर्णतह सुकतु तेनापर आवे हनव्ही स्थापन करावनु, ए प्रयाणे ब्रह्मायी आरमी वैनायको वर्षत देवोत्त स्थापन करानु,

प्रतिप्रतिथि मारभ्य दर्शेचेव समापयेत्॥भासमेकं करिष्यामि त्रतं श्री प्ररुपोत्तम ॥ उपवासेन नक्तं वा एक अक्तं रू करिष्यति ॥ दीपदानादविछिन्नात् ग्रीयतां प्ररुपोत्तम ॥ स्नानं दानंजपं पूजां तर्पणं दिज भोजनं ॥ अस्मिनः

देशकालों संकीत्यं॰मम, आत्मनः, पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थ अस्माकं सक्रडंबानां सपरिवाराणां अशेष पापस्त्रपार्थ 🞏 १७॥ पुत्र पौत्रादि सक्षत्री प्राप्त्यर्थं मोलोक दक्षिण पार्श्वस्य वैकुंठ शिवपुर निवासपूर्वक गोलोकाधिप सधिकादि पुरुभोत्तम पादाञ्ज सेवा प्राप्त्यर्थं आचस्तिस्याचरिष्य माण वृतस्य संपूर्ण फलप्राप्तये यथा मिलीतोपचास्द्रव्यैः 🎉 यथाराक्ति पुरुषोत्तम मास इतोद्यापनारूयं कर्म करिष्ये ॥ अथ अंग संकल्पः ॥ तदद्वसूतं दिप्रक्षणं, 🎼 कलक्षासधनं, पंचमञ्चकरणं, गणपतिप्रजनं, गणेश गौर्यादि मात्काणां स्थापनं, सोकल्पेन विधिना वैश्वदेव प्रवंक सहिरण्य नांदीश्राद्धं अर्घदंदनं त्राह्मणवरणं, सांकत्पेन विधिना वरणश्राद्धं, कलशस्यापन प्रवंक स्वस्ति पुण्याहवाचनादीनि करिष्ये ।। इत्यंगसंकब्प क्रमेण कर्म समाप्य ।। पुनः साक्षत जलमादाय अद्यत्यादि० अ

्रिक्ष

न्मासे करिष्यामि तेन पापं व्यपोहतु ॥ इपुस्रश्चेत्पादि पहित्यः ॥ अथ प्रधान संकल्पः ॥ अदेत्यादिव 🖟 मार्वः

है स्मिन मंडले ब्रह्मादि देवानां स्थापन प्रतिष्ठा प्रजामहं करिष्ये ॥ वामहस्ते असतान् महीत्वा ॥ अथ् ब्रह्मा-दे दि देवता स्थापनं ॥ मंडलमध्ये ॥ प्होहि सर्वाधिपते छोन्द्र मदीय यहे पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्यधाता है

गिणेन सार्द्ध गृहाण पूजां भगव त्रमस्ते॥शासोम इहागच्छ इहतिष्ट सोमाय नमः सोमं आवाहयामि स्थापयामि ।।।।। ईशाने खण्डेन्द्री।।एत्रीहि यज्ञेश्वस्न सिश्चल कपाल सद्धांड भरावसार्ध्यम् ।। लोकेन यज्ञेश्वर् यज्ञसिष्यै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ।। ३ ॥ ईशान इहागच्छ इहतिष्ट ईशानायनमः ईशानं आवाहयामिस्था० ॥३॥ पूर्वे इन्द्रम्।। र् पहेरिह सर्वामसीख्रसाच्ये रभिष्डतो वज्रधरामरेश ॥ सविज्यमानो प्सरसांगणेन स्नाप्चरंनो भगवञ्रमस्ते ॥ २ ॥ इन्द इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः इन्द्रं आ०स्या० ॥ ४ ॥ आग्नेयां खण्डेन्द्री ॥ अग्निय ॥ एत्नोहि सर्वोमस्हब्य बाह सुनिवर्षीरे रभिताभि यप्तम्॥ तेजोवलैलांकगणेन सार्डः ममाध्वरं स्व नमोऽस्तुतेज्ये॥५॥अमे इहागच्छ इहु-तिष्ट ॥ अमये नमः अप्रिं आ॰ स्था॰ ॥ ५ ॥ दक्षिणे यमं ॥ एहोहि वैवस्वत धर्मसज सर्वामेरे रार्चित धर्ममूर्ते ॥ ्री श्रुभाशुभानंद श्रुनामधीश शिवाय नः पाहि मसं 🛮 नमस्ते ॥ ६ ॥ यम इहागच्छ इहतिष्ट ॥ यमाय नमः यम 🕏 आ० स्था॰ ॥ नेहत्यां खण्डेन्दो निर्ऋतिय ॥ एहोहि स्त्रो गणनायकत्वं विशाल वैताल पिशाच संघैः

स्यमित प्रभाव विशत्वमन्तः सततं शिवाय ।। १ ॥ ब्रह्म**न्द्राग**च्छ इह तिष्ट ब्रह्मणे नमः ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापमामि ॥ १ ॥ मंडलाहचरे सोमं ॥ एह्मेहि यद्योश्वर यद्वारक्षां विश्वत्स्व नक्षत्र गणेन सार्छं ॥ सर्वेायधिः पितु-

मुमाभ्यरं पाहि छमाधिनाय लोकेश्वरतं प्रणमामि नित्यं ॥ ७॥ निर्ऋते इहागच्छ इहतिष्ट ॥ निर्ऋतये नमः 🐉 🗝 ३ ॥२२८० है निर्ऋति मावाहयापि॰ स्था॰ ॥ ७ ॥ पश्चीमे वरुणं ॥ एहोहि यज्ञे ममस्सणाय यादोगणेः सार्घ मपामधीश ॥ 🐉 े झपाधिरुद् त्वमिहमभोमणि स्तप्रभा भास्तर पाशपाणे ॥ ८ ॥ वरुण इहागच्छ इहतिष्ट ॥ वरुणाय नमः वरुण 🕺 माबाह्यामि स्था० ॥ ८ ॥ वायव्यां खण्डेन्दी वायुं ॥, एहोहि यहे ममस्क्षणाय मृगाधिरुदः सहसिद्ध संघैः 🐉 प्राणाधिपो हत्यभुजः सहाय गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ९ ॥ वायो इहागच्छ इहतिष्ट वायवे नमः वायुमावाः हयामि स्था॰ ॥ ९ ॥ वायुसोमयोर्मभ्ये भद्रेअष्टवस्त्त ॥ एह्यहिवस्वीश महानिधीश सत्ताकरः सर्व सहस्रतेजाः ॥ धनस्वरुपो ममयञ्जपातुं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ १० भो अष्टवसवः इहागच्छत इहातिष्टत अष्टवसुभ्यो नमः 💸 अध्वसनावाहयामि स्था०॥ १०॥ सोमे शानयोर्मध्ये एकादश स्त्रान् ॥ एहोदि यहेश्वर भो खिश्दल कपाल लझङ्ग वरेण सार्द्ध ॥ लोकेन विश्वेश्वर यज्ञसिध्यै मृहाणपूजां भगवज्ञमस्तेः ॥ ११ ॥ एकादशस्द्राः इहागच्छत इहतिष्टत पुकादशस्त्रेम्यो नमः एकादशस्त्राना० ॥ ११ ॥ इशानेन्द्रयोगेन्ये भद्रे द्रादशादित्यान् ॥ एसोहि पद्मा-इहातप्टत एकादराख्यभ्या नमः एकादराज्यानाच ॥ १६ ॥ २६ ॥ १५ ॥ ५६ ॥ १५ ॥ १५ ॥ ४ ॥ द्वादरान ५५ ॥ १५ ॥ द्वादरान ५५ ॥ १५ ॥ द्वादरान ५५ ॥ १६ ॥ द्वादरान ५५ ॥ १६ ॥ द्वादरान ५५ ॥ १६ ॥ द्वादरान ५५ ॥

्रीअभिनो इहागच्छतम् इह तिष्टतम् ॥ अभिभ्या नमः अभिनौ आवाहयामि स्था० ॥ १३ ॥ अतियमयोर्मध्ये भेद्रेःसपेतृकान्विश्वाच देवाच ॥ एह्येहि सर्वामर सिद्धसार्थ्ये रभिष्टतो वज्रधरामरेश ॥ संवीज्यमानोप्सरसांगणेन ीरवाध्वरं नो भगवन्नमत्ते॥१८॥सपैनुकाः विश्वदेवाः इहाग्रन्छत् इहतिष्टतः सपैतुकविश्वरेपो देवेभ्यो० सपैतुकान् ीविश्वान देवानावाह्यामि स्था॰ ॥ १४ ॥ यम नैऋत्तयोर्मध्ये भद्रे सस्य यक्षान् ॥ एहे।हि स्क्षो गणनायकत्वं विशाल वैताल पिशाच संघैः ।। ममाध्वरंपाहिशिवाधिनाथ लोकेश्वरत्वं भगवन्नमस्ते ।। १५ ।। सप्तयक्षाः इहाग-च्छतः इहतिष्टतः ॥ सप्तयक्षेभ्यो नमः सप्तयक्षानाबाह्यामि स्था० ॥ १५ ॥ निर्ऋतिबरुणयोर्मध्ये भद्रे सर्पाच ॥ ्री एतेतसर्पाः शिवकंट भूपा लेकोपकासय अवं वहन्तः।।जिब्हाद्रयोपेत् सुखामदीयां गृङ्णीतपूजां सुखदां नमा वः ॥ १५॥ सर्पाः इद्दागच्छत इह तिष्टत ॥ सर्पेभ्यो नमः सर्पानावाहयामि स्था० ॥ १६ ॥ वरुणवायवीर्मस्य ्रीभद्रे गन्धर्वाप्तरात्र ॥ आवाहयेहं छरदेवसेच्याः स्वरुपतेजो मुखपदा भासः ॥ सर्वामरेशैः परिपूर्णकामाः प्रजां

्रीदित्याः इहागच्छतः इहतिष्टतः द्वादशादित्यभ्यो नमः द्वादशादित्यानावाहयामि स्था० ।। १२ ।। इन्द्राग्न्योर्मध्ये अभद्रे अभितो ॥ द्विसजो देवभिपजो कर्तव्यो देवसंखतो ।। तयो रोपथयः कार्यादिव्या दक्षिणहस्तयोः ॥ १३ ॥

मृहीतुं मम यत्र भूमी॥१७॥गन्धर्वापासाः इहागच्छत इहतिष्ठतः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नगः गन्धर्वापासाः आवाहया मि स्था॰ ॥ १७ ॥ ब्रह्मसोमयोर्भेच्ये बाणोपरिस्कंदं ॥ एहोहि देवेश्वरशं सुसूनो शिखिन्द्रगामिन्सुरसिद्ध 📳 🏅 संघैः ॥ संस्तृवमानात्मश्रुभायनित्यं गृहाण प्रजां भगवन्नमस्ते ॥ १८ ॥ स्कन्द इहागुच्छ इहतिष्ट स्कन्दाय नमः 🎼 स्यन्दमानाहयामि स्था० ॥ १८ ॥ तदुत्तरतः नन्दीश्वरं ॥ एहोहि देवेन्द्रपिनाकपाणे सण्डेन्दुमेरिल प्रियशुञ्ज 👺 🕏 वर्ण ॥ गोरीशयानेश्वर यक्षसिद्धे गृहाण प्रजां भगवत्रमस्ते ॥१९॥ नन्दीश्वर इहागच्छ इहतिष्ट नन्दीश्वराय नमः 📳 नन्दरियस्मावाहयामि स्था॰ ॥ १९ ॥ तहुत्तरतः ॥ श्रूलमहाकाली ॥ आयात मायात सुमा त्रियस्य त्रियोस्नाहिः नीन्द्रादिकसिळसेन्यो ॥ गृहणीतमेतां ममश्रलकाली पूजां सुसीपं छस्तं नमोवास् ॥२०॥ श्रूलमहाकाली <sup>इ</sup>हाग-च्छतं इहतिष्ठतम् ॥ श्रूलमहाकालाभ्यांनमः श्रूलमहाकाली आवाह्यामि स्थान। २०॥ बहोशानयोर्गध्ये चलीपु दबादि सप्तकान् ॥ एहोहि देवालयविश्वमूर्ते चर्छाल श्रीधर शंसुमान्य ॥ सुप्रस्तकाप्त सुवपात्रपाणे महाण् 👯 पूजां भगवञ्चमस्ते ॥ २१ ॥ दक्षादि सम्रकाः इहामच्छतः इहतिष्ठतः दक्षादिसम्रकेस्योनमः दक्षादिसमकानावाह 💸 ॥१ यामि स्था॰ ॥ २१ ॥ बहोन्द्रयोर्मध्ये वाप्यां (वाणोपरि ) दुर्गास् ॥ एहो हि दुर्गे दुरितौघनासिनि प्रचण्ड

िषनाथ ॥ सर्वामरैः प्रजितपादपद्म मुहाण प्रजां भगवन्नमस्ते ॥ २३ ॥ विष्णो इहागच्छ इहतिष्ठ विष्णवेनमः वि- 🞖 ष्णुमाबाह्यामि स्था॰ ॥ २३ ॥ ब्रह्माऽनन्योर्मध्ये बळीषु स्वधाम् ॥ सुखाय पितृन् कुळशुद्धिकर्तृन् स्वतीत्प-हैं लामानिहरकनेत्राच।।सुरक्त माल्याध्वरभुपितां श्रनमामि पिठे कुलवृद्धिहेतोः।।२४।।स्वये इहागच्छ इहातिष्ठ स्वचाये 🐉 नमः स्वधामाबाहयामि स्थानाश्या ब्रह्मयमयोर्मःये वाप्यां ( वाणोपरि ) स्टर्सुरोगौ ॥ आवाहयाम्यहंरोग मनेक 🖁 विथलतणम्।।नानालंकारसंयुक्तं रक्तस्यश्च विलोचनम् ॥२५॥ मृत्युरोगौ इहागच्छतम् इहतिष्टतम्।।मृत्युरोगाभ्यां० मृत्युरोगो आवाह्यामि स्था॰ ॥ २५ ॥ महानेईतयोर्मध्ये चछीषु ॥ गणपति ॥ एहोहि विप्रार्थिपते खेरेन्द्र 🐉 ब्रह्मादिदेवेराभेवन्यपाद।। गजास्य विद्यालय विश्वमृतें गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥२६॥ गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ गणपतये नमः गणपनिमावाह्यामि स्था० ॥ २६ ॥ ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये वाप्यां (बाणोपरि) अपः ॥ 🞖 एहोहि छोकेश्वर पाशपाणे यादे।गणिर्वन्दित पादपद्म ॥ पीठेत्रदेवेश मृहाण पूजां पाहित्वमस्मान भगवन-

देत्योघ विनाशकारिणी ॥ उमे महेशाद्धं शरीरथारिणी स्थिराभवतं मम यद्गकर्मणि ॥२२॥ दुर्गे इहागच्छ इहतिष्ठ हैं दुर्गाये नमः दुर्गामाबाहवामि स्था॰ ॥ २२॥ तदुत्ततः ॥ विष्णुं ॥ एहाहि नीलाम्बुदमेचकत्वं श्रीवत्सवक्षःकमला है वि॰को॰ हैं मस्ते ॥२७॥ आपः इहागच्छत इहतिष्ठत अद्भयो॰ अपः आवाहमामि स्था॰ ॥ २७ ॥ ब्रह्मवायवोर्मध्ये वहिष्ठ 🕍 प॰ ३ है ॥ मस्तः ॥ प्होहि यहेश समीरणतं समाधिरहे सहसिद्धसँघैः ॥ त्राणस्यरूपिनसुखतासहाय गृहाण पूर्जी ॥१२०॥ 🔖 भगवत्रमस्ते ॥२८॥ मस्तः इहागच्छत इहतिष्ठत ॥ मरुद्रयो० मरुतः आ०॥ २८॥ ब्रह्मणः पादमूले कार्णकाधः 🦣 पृथिवीम् ॥ पहोहि पातालचसचरेन्द्र नागांगना किंत्रर गीयमान ॥ यक्षोनगेन्द्रामरलोकसंघेर नन्तरक्षाध्वरः 🖓

मस्मदीयम् ॥२९ ॥ पृथिनी इहागच्छ इहतिष्ठ पृथिन्येनमः पृथिनीमावाहमामि स्था०॥ २९ ॥ तद्वत्तरतः गंगादि 🅍 नदीः ॥ एहोहि गंगे दुरितोघनाशिनि झपाधिरुदे उदकुम्भहस्ते ॥ श्री विष्णुपादाग्युजसंभवे तं पूर्जा गृहीर्ज 🕺 श्चभदे नगस्ते ॥ २० ॥ गंगादिनद्यः इहागच्छत इहतिष्ठत गंगादिनदीभ्योनमः गंगादिनदीः आवाहयामि स्था० 💸 ॥ ३० ॥ तहत्तरतः॥ सप्तसागराच ॥ एहोहि यादोगणवारिधीनां गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः ॥ विद्यार्थरे 🖔 न्द्राज्यस्मीयमान पाहि त्वमस्पान्भगवत्रमुस्ते॥३१॥ सप्तसागगःइहागच्छत इहतिष्ठत सप्तसागरेभ्योनमःसप्तसागर-

नाबाहयामि स्था० ॥ ३१ ॥ ततः कर्णिकोपरि ॥ मेरुं ॥ एहोहि कार्तस्वरूपसर्व भ्रभूतपते चन्द्रस्वी दथानः ॥ 🕺 ्रै नायाहयामि स्था० ॥ ३१ ॥ ततः काणकापार ॥ भरु ॥ एकाक नगतत्वरूपता ४२५०५ । १२००० ॥ २००० १ सर्वोपधिस्थान महेन्द्रमित्र लोकत्रयावास नमोस्तु तुभ्यम् ॥३२॥मेरो इहागच्छ इहतिष्ठ मेर वेनमः मेरुमा० ॥३२॥ १०००

वाह्यामि स्था॰ ॥ ३३ ॥ ईशान्यां त्रिश्रुलम् ॥ महायोगीन्द्र इस्तस्थ शंकरस्य प्रियंकरः ॥ त्रिश्रुलस्वमिद्यागच्छ 🕺 पुजेयं प्रतिगृहाताम् ॥३४॥ त्रिशूल इहागच्छ इहतिष्ट त्रिशूलायनमः त्रिशूलमावाहयामि स्था०॥३४॥ इन्द्रसमीपे ।।वज्रं।।तप्तकाञ्चनवर्णामं वज्रं वे शस्त्रनायकम्।। आवाहयामि यज्ञेस्मिन् गृहाणेमं नमोस्तुते ।।२५।। वज्र इहागच्छ इहछित वज्ञायनमः वज्रभावाहयामि स्थापयामि ॥२५॥अमिसमीपे शक्ति॥सर्व देत्यविनाशाय सर्वकामफलप्रदे॥ सर्वसत्वहितेशक्ते शांति यच्छ नमोस्तुते ॥३६॥ शक्ते इहागच्छ इहतिष्ठ शक्तयेनमः शक्तिमावाहयामि स्वा०॥३६॥ यमसमीपे दण्डम्॥ धर्मराजस्य इस्तस्य यमस्य च सदाप्रियः॥ दण्डाग्रथनमस्तेस्त्र सर्वसिद्धिप्रदोभव ॥३७॥ दण्ड इहागुच्छ इहतिष्ठदण्डायनमः दण्डमावाह्यामि स्थापयामि० ॥ २०॥ निर्ऋति समीपे खड्जम् ॥ नीलजीमूः तवर्णलं तीःणदंष्ट्र हशोदर॥ सङ्गराजनमस्त्रम्यं प्रजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३८॥ सङ्ग इहागच्छ इहतिष्ठ सङ्गायनमः हुँ सन्नमाबाह्यामि स्था॰ ॥ ३८॥ वरुण समीपे पाशम् ॥ देवासिवरुणास्त्रत्वं दैत्यवंश विदारणं ॥ पाशमां समरे रक्ष

ततः सोमादि संनिधी क्रमेण आयुधान्याबाहयेत् ॥ तद्यथा सोमसमीपे ॥ गदां ॥ निषिक्ता क्रमुदाक्षस्य नामा कैमोदकी गदा॥ शांतिदा स्मरणादेव तस्ये तुभ्यं नमोनमः॥ गदे इहागच्छ इहतिष्ट ॥३३॥ गदायेनमः गदामा- वि॰की॰ हैं रज्जुराज नमोस्तुते ॥ ३९ ॥ वाश इहागच्छ इहतिष्ठ पाशायनमः पाशमावाहयामि स्था॰ ॥ ३९ ॥ वाखुसमीपे हिंपा॰ ३ हैं अंकुरों ॥ गजप्रं परवीरप्रं परसुन्यापहारकम् ॥ गणेशस्य प्रियंनित्यमंकुशायनमोनमः ॥ १० ॥ अंकुश इहागच्छ हैं। सत्याय ब्रह्मणे मित तेजसे ॥ ४७॥ अत्रे इहागच्छ इहतिष्ठ अत्रयेनमः अत्रिमाबाह्यामि स्था०॥ ४७॥ वाय- 🔉 ब्याम् ॥ अरुन्धतीय् ॥ अरुन्धत्ये नमस्तुभ्यं सर्वसीस्य पदायिनि ॥ एहिमण्डलमध्येते नमः पूर्जा गृहाणमे ॥ 🏋 सक्ष्या अरुपती इहागच्छ इहतिष्ठ अरुपत्येनमः अरुपतीमाबाहयामि स्था० ॥ ४८ ॥ तदबाह्ये प्रचीदारम्ये 🖇 न्यादीच् ॥ पूर्वे ॥ ऐन्द्रीम् ॥ इन्द्राणीं गजर्कुमस्थां सहस्र नयनोज्वलाम् ॥ नमामि वरदां देवीं सर्व देवेनीम- 🛭 स्कृताम् ॥४९॥ ऐन्द्रि इहागच्छ इहतिष्ठ ऐन्द्रीनमः ॥ ऐन्द्रीमाचाहयामि स्था० ॥४९॥ आग्नेयाम् ॥ कीमारीम् ॥ 🕻 पहोहि कीमारिविधेहि शान्ति शक्तिं दधानेपिसदासिमध्ये ॥ स्कन्धाधिरुदे शिखिपुंगवाभ्यां मातः प्रसाद प्रः सृति प्रपच्छ।।५०।। कीमारि इंहागच्छ इहतिष्ठ कीमार्थेनमः कीमारीमावाहयामि स्था० ॥५०।। दक्षिणे बाह्यीम् ॥ 🗳

चर्छर्सी जगदार्ज हंसास्टांवरप्रदाम्।। सृष्टिरुपां महाभागां त्रह्माणीं तो नमान्यहम् ॥ ५१ ॥ त्राह्मि इह्यगच्छ 🖇

इहागच्छ इहतिष्ठ जमदमयेनमः जमदिममावाहयामि स्था॰ ॥ १५ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ वंसिष्ठम् ॥ नमस्तुभ्यं व सिष्ठाय कर्मकर्त्रमहासुने ॥ धर्मक्राय महते लोकानां हितकारिणे ॥४६॥वसिष्ठ इहागच्छ इहतिष्ठ वसिष्ठायनमः वसिष्ठमावाहयामि स्था॰ ॥ ४६ ॥ पश्चिमे ॥ अत्रि ॥ अत्रये तु नमस्तुभ्यं सर्वलोक हित्तैपिणे ॥ तपोरुपाय

त बसुन्यराम् ॥श्चभदां पीतवसनां वाराहीं तां नमान्यहम् ॥५२॥ वाराहि इहागच्छ इहतिष्ठ बाराहीनमः बाराहीमा- 🕍 તારવસા 🖟 वाह्यामि स्था० ॥ ५२ ॥ पश्चिमे चामुण्डाम् ॥ चामुण्डा मुण्डमथनां मुण्डमालोपशोभिताम् ॥ अङ्गङ्कहा 🐉 ससुदितां नमाभ्यातम विभूतये ॥ ५३ ॥ चासुण्डे इहागच्छ इहातिष्ठ चासुण्डायेनमः चासुण्डामावाहयामि स्था० ।। ५३ ॥ वायन्यां वैद्यावीम् ॥ शंखचक्रगदापद्म धारिणीं कृष्णरुपिणीम् ॥ स्थितिरुपां खगेन्द्रस्थां वैद्यावीं तां 🐉 नमाम्यहम् ॥५४॥ वैष्णवि इहागच्छ इहतिष्ठ वैष्णवैनमः वैष्णवीमावाहयामि स्था०॥५४॥उत्तरे ॥ माहेश्वरीम् ॥ 👸 माहेश्वरीं नमाप्यय सृष्टिसंहार कारिणीम्।।शपरुटां शुभां शुभां त्रिनेत्रांवरदां शिवाम् ॥५५॥ माहेश्वरि इहागुच्छ इहतिष्ठ माहेर्थ्येनमः माहेर्थ्यामावाहयामि स्था०॥ ५५॥ ईशाने ॥ वैनायकीय् ॥ चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च सर्वाभरणसृषिताम् ॥ आवाहयामि देवेशीं धुजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥५६॥ वैनायकि इहागच्छ इहतिष्ठ वैनायक्येनमः 👭 वैनायकीमावाहवामि स्था॰ ॥ ५६ ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ।। मंत्रः ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनि 🐉 ॥१९२॥ र्मिता ॥ प्रतिष्ठां वः करोम्यत्र मंडले देवतैः सह ॥ ब्रह्माद्यावाहितदेवाः सांगाः सपित्वाराः सुप्रतिष्ठिताः वस्दा

इहतिष्ठ ॥ ब्राह्येनमः ब्राह्मीमावाहयामि स्था॰ ॥ ५१ ॥ नैर्ऋत्याम् ॥ वाराह्मम् ॥ वाराहरूपिणीं देवीं देष्टोन्द्र-📳

्ट्रै ब्रह्माद्या॰ भदिक्षणां स॰ ब्रह्माद्या॰ पुष्पांजलीं स॰ ॥ अनेन प्रजनेन ब्रह्माद्याः भीर्यतां नमम ॥ स्वाग्रे थान्य ईं सर्शि कुर्यात ॥ तदुवरि रोप्यमयान्वा ताम्रमया न्यथाविधिनाकल्ड्यान्संस्थाप्य तेषु जलादिनि उक्तपदा-र्थादीनि विधिना निक्षिपेत् ॥ तद्यथा ॥ विश्वाधारासीती मंत्रेण भूमिं स्पृष्टा ॥ विश्वाधारासि धरणी शेपना गोपरि स्थिता ॥ उत्प्रताशिवग्रहेणकृष्णेन शतवाहुना ॥ भूभ्ये नमः ॥ हेमरोप्यादि मंत्रेण कुरुशस्थापनं ॥ अर्थ-उपर उदयामाणे महादिति आनाहन स्थापन थया पर्छ, नवला हाथमां चोला उद्देव प्रतिष्ठानी यत्र झाझण्यणे पर्छा यता स्थापन करेला

्र भवत त्रह्माद्यावाहितदेवेभ्योनमः आवाहनं समर्पयामि० ॥ ब्रह्माद्या॰आसनं स० ॥ ब्रह्माद्या०पादयोः । है पार्च स॰ ॥ ब्रह्माचा॰ हस्तवोः अर्घ्यं स॰ ब्रह्माचा॰ आचमनीयं स॰ ॥ ब्रह्माचा॰ स्नानं स॰ ब्रह्माचा॰ वर्छः ट्रैं स॰ महााचा॰ यज्ञोपवितं स॰ महााचा॰ चैदनं स॰ महााचा॰ अलंकरणार्थे अक्षतान् स॰ महााचा॰ पुष्पं स॰ हैं ब्रह्माद्या॰ पूर्व स॰ ब्रह्माद्या॰ दीवं स॰ ब्रह्माद्या॰ नेवेद्यं स॰ ब्रह्माद्या॰ तांबूलं स॰ साहुण्यार्थे दित्तिणां स॰

ट्ट देवताओवर चोता क्यावी केंद्रें ( प्रतिष्ट एटले शिवरहों. पत्री ब्रह्मायावाहित देवेच्योनमः एवी उद्द छड् पोंड्योपचारे अवना वेकोपचारे पूना करवी. ्ट्रे बसार्यातुं धूनन थया पूजा के कलशो लाव्या होय तेतुं तेना संत्रो मणी विभिन्न स्थापन करवुं.

देवेभ्यः इतिमंत्रेण सर्वोपधा चंदनं च प्रक्षिप्य ॥ देवेभ्यः प्रवृतोजाता देवेभ्यः स्त्रियुगं प्रस् ॥ शतं तन् च या 🕌 वश्र जीवनं जिवनाय च ॥ दुवें क्षमत इति मंत्रेण दुवें ॥ दुवें समृतसंपन्ने शतमुळे शतांड्ररे ॥ शतं पातकसंहर्त्री 🔯 शतमाञ्जन्य वर्डिनी ॥ विविधं पुण्पेति मैत्रेण पंचपछवाच् ॥ पुष्पं च ॥ अश्वत्योद्वंतर प्रक्ष न्यूतन्यग्रोघ पछवाः ॥ पंचर्मगा इति शेकाः सर्वेकर्मछ शोमनाः ॥ विविषं पुष्पसंजातं देवानां प्रीतिवर्द्धनं ॥ क्षितं यत्कार्यसंभृतं कलशे 💝 प्रक्षिपाम्यहम् ॥ धान्योपधीति मंत्रेण धान्यं ॥ धान्योपधी मनुष्याणां जीवनं परमं स्मृतं ॥ क्षितं यरकार्यसंसूतं 👸 कल्से प्रतिवाग्यहम् ॥ प्रगीफलेति मंत्रेण प्रगीफलं ॥ प्रगीफलमिदं दिव्यं पवित्रं पापनासनं ॥ प्रत्रपीत्रादि 🐩 फुळदं कळशे प्रक्षिपान्यहम् ॥ हिरण्यगर्भेति हिरण्यं ॥ हिरण्यगर्भ गर्भस्यं हेमदीजं विभावसीः ॥ अनंत पुण्य 🖔 ॥१२३॥ फळदमतः शांति प्रयच्छ मे ॥ अश्वस्थानादिति मंत्रेण सप्तम्वतिका निर्विपेत् ॥ अश्वस्थाना द्वल्मीका

🙉 🚓 🦿 हेमरीप्यादि संभूतं ताम्रजं सुष्टदं नवं ॥ कलशं धौतकल्मापे छिद्रवर्णं विवर्जितं ॥ सूत्रंकार्पासेति मंत्रेण रक्त 🕍 🗝 ३ सत्र वेष्टनं ॥ सूतंकापीश संभृतं त्रहणा निर्मितं अरा ॥ येनवद्धं जगरसर्वं वेष्टनं कलशस्य च ॥ जीवनं

॥१९२॥ है सर्वेति मंत्रेणजलप्रस्मं ॥ जीवनं सर्वजीवानां पावनं पवनात्मकं ॥ बीजं सर्वेतिभीनां च तज्जलं प्रस्यास्यहम् ॥ हि

कुरा विकास में विकास में महिला में में महिला में महिला में महिला में बिला में बिला में महिला में महिला महिला में महिला म 🕯 श्चिचतु र्ज्युह कुलशान् संस्थाप्य ॥ तहुपरि बोमनक्षं प्रसार्य तहुपरि यंत्रं निषाय ॥ ततः मंडलपरितः त्रिंशः ुंदिकंभान संस्थाप्य ॥ ततो मार्तिनां । आन्युत्तारणं कुर्यात् ॥ ततः स्वर्णभयी मूर्तीनां ताम्रपात्रे अर्थ-पूर्णराजपुर्वातुं कटकास्थापन थया पत्रि मेहलता बचवां प्रधानने कटका मुक्कों तथा बार दिकाए स्युह कलका गोठववा,तथा तेमना उपर रेकामी क 🙎 🙎 कहाओ पाधरवा, गर्जर संदर्कत चारे बाकुये ( ६० ) बीस घडाओ सुकस्य तथा हेकाउपर वक्ष सकता. प्रजी रावापुरुपोत्तमनी तथा चारव्युहनी तथा बीस 🕺 💲 भिना देक्ताओती सुरहीओ एक पात्रमां मुक्स क्षेत्रा तेनाउपर पायतुं दुध दहिं थी। छाण सुतर तथा दर्भ विगेरे सुकी अम्बुसारण पूरेक प्राणप्रतिस्र करवी। 🝳 र्रें। तेयां पहेंछा संकल्प करने के ध्रमुक दोने। दुरकरमा प्राणमतिष्ठा करूं. छउं पत्री सुर्वीपर पाणीनीचार पाट्याकरी। बाह्यलभनेत्यां सुनी पत्री माह्यणभा

हायमां ते पात्र आपी तेनीलासे माणप्रतिष्ठा करावधी प्राणप्रतिष्ठा थया पर्जा स्नानकरावंत.

त्तंगमा इदात् ॥ राजद्वारा च गो गोष्ठा न्मृदमानीय निर्धिपेत् ॥ कनकं छल्शिरोति मंत्रेण पंचरतं वा सुवर्णं है वा यथाशक्ति राज्यं निश्चिपेत् ॥ कनकं छल्शिरं नीळं पद्मसगंच मोक्तिकं ॥ एतानि पंचरत्नानी कळशे प्रक्षिपान म्यहम् ॥ पिश्चानं सर्वेति मंत्रेण धान्यसहित पूर्णपात्रं ॥ पिश्चानं सर्व वस्तुनां सर्व कायार्थ साधनं ॥ संपूर्ण ळार्कवर्णा भवतः सलकरी प्राणशक्तिःपरानः ॥ इति संत्रेणाग्न्यतारणं ॥ ततः प्राणपतिष्ठां क्रयात ॥ अस्यश्री

बि॰को॰ हु स्थापनं कृत्या ॥ अन्युत्तारण पूर्वकप्राणप्रतिष्ठां क्वर्यात् ॥ अद्येत्यादि॰ आसांमूर्ती नां अंग प्रत्यंग सन्धिसम् हैं। ॥१२४॥ है त्यत्रं कुद्दालकादिटेकाव्यतपत्रितं संयोग जनित दोप परिहासर्थं अम्ब्युत्तारण पूर्वेकं बाह्मणदारा प्राणपतिष्ठां कः है।

प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य बह्या विष्णु महेश्वसन्द्रययः ऋग्यज्ञः सामानि छंदांसि जगत्सृष्टिकारिणीः प्राणशक्ति देंबता ॥ अं शीजं न्हीं शिक्तः कों किलकं आसां मूर्तिनां प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥ मूर्तिनु हस्तं नियाय ॥ पटेत्॥ आं इं कें में मं सं हं छै सं हंसः सोहं ॥ आसो मूर्तीनां प्राणा हह प्राणाः ॥ पुनः आं न्हीं कीं ये रं छं हं सं से से सं से हं छै से हंसः सोहं ॥ आसो मूर्तीनां प्राणा हह प्राणाः ॥ पुनः आं न्हीं कीं ये रं छं

र्व शं पं सं हं ळं क्षं हंसः सोहं ॥ आसां मूर्तीनां जीव इह स्थितः ॥ पुनः आं ऱ्हीं को यं रं लं वं शं पं सं हं ळं सं हंसः सोहं ॥ आसां मूर्तीनां सर्वेन्द्रियाणि वाङ्भनस्तक्त्वश्चःश्रोत्रजिह्ना प्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहे

मध्ये ॥ आसनेनमः ॥ अंतरासनेनमः ॥ परमासनेनमः॥द्वानासनेनमः ॥ अग्रिमंडळायनमः ॥ सोममंडळाय नमः ॥ संसत्तायनमः ॥ संज्ञसेनमः ॥ तंतमसेनमः ॥ सर्वशंक्तिकमलासनायनमः ॥ संडकाद्यावाहित देवताः छप्रतिष्टताः वरदाः भवतः ॥ भंडुकाद्यावाहीतानाम् स्त्रभोपहोर्त्वा पंचोपचारैः प्रजनं शपुन हेस्ते अक्षतान् गृहीत्वा पत्री ते मुनियो तेमना स्थानोपर मुकाबीदेवी पत्री प्रचान देवनी पत्र कावी पीठपर मुकवी तथा तेमना परिवार देवताओली स्थापन कार्युः तेनाउपर पोक्षा वधाच्या करवा. पढी मंडुकादीर्स पुमन भया पढी वधावकाश क्षांना देवदासहित राधापुरुपोत्तमनुं तेपनी नमाडपर स्थापन करसुं.

वागत्य सुतं विरं तिष्ठन्तु नमः ॥ गर्भाधानादि षोडरा संस्कार्यसध्यर्थं शोडपप्रणवान्नतिं करिष्ये ॥ ही इति : पोडशवारं उच्चेरत् ॥ अनेन पोडशसंस्कासःसंपद्यंताम् तत् ॥मृर्ति पात्रं कलशोपरिस्थापद्दत्वा ॥ परिवार देवतानाः वाहंभेत् ॥ हस्ते अक्षतान् गृहीत्वा ॥ मृंद्धकायनमः ॥ कालाभिख्यायनमः ॥ आपारशक्येनमः ॥ कूर्पा-यनमः ॥ अनंतायनमः ॥ मूलप्रकृत्येनमः ॥ पृथिज्येनमः ॥ श्वेताद्वीपायनमः ॥ कल्पवृक्षायनमः ॥ रत्नमण्डपायनमः ॥ सिंहासनायनमः ॥ इति मध्ये ॥ भागादि दिश्च ॥ धर्मायनमः ॥ ज्ञानायनमः ॥ वैराग्याय तमः ॥ ऐश्वर्यानमः ॥ आग्नेयादिकोषेषु ॥ अधर्मायनमः ॥ अज्ञानायनमः॥अवैराग्यायनमः॥अनैश्वर्यायनमः॥

श्चतुर्दिश्च ॥ कलशेषु ॥ वृवें ॥ बाखदेवायनमः वास्रदेवमानाह्यामि स्था० ॥ दक्षिणे दलधरायनमः हलधरमा- 🔓 वाह्यामि स्था॰ पश्चिमे ॥ प्रज्ञम्नायनमः प्रद्रान्नमावाह्यामि स्था॰ ॥उत्तरे ॥अनिरुद्धायनमः अनिरुद्धमावाहयामि स्था॰ ॥ ततःत्रिशत कुंभोपरि सुर्ति वा नालिकेरं, निधाय ॥तहुपरि प्रवीदि कमेण देवानावाहयेत ॥ जिल्लान वेनमः जिष्णुमा॰ ॥ १ ॥ विष्णवेनमः विष्णुमा॰ ॥ २ ॥ महाविष्णुने नमः महाविष्णुमा॰ ॥ ३ ॥ हर्ग्येनमः 💡 हरिमा॰ ॥ ४ ॥ कृष्णायनमः कृष्णमा॰ ॥ ५ ॥ अधोक्षजायनमः अधोक्षजमा॰ ॥ ६ ॥ केशवायनमः केशवमा॰ 🐉 ॥ ७॥ माधवायनमः माधवमा० ॥ ८ ॥ रामायनमः राममा० ॥ ९ ॥ अच्छतायनमः अच्छतमा० ॥ १० ॥ इ प्रक्षोत्तमायनमः प्रक्षोत्तममा०॥ ११ ॥ गोविंदायनमः गोविंदमा०॥ १२ ॥ वामनायनमः वामनायल ॥ १२ ॥ हूँ श्रीशायनमः श्रीशमाणाश्रभाश्रीकण्यायनमः श्रीकण्डमाणाश्रभाविश्वसाक्षिणेनमःविश्वसाक्षिणमाणाश्रह्मानासयः 🎇 णायनमः नासयणमा०॥१९॥भाष्ठारिपवेनमःमञ्जरिप्रमा०॥१८॥अनिरुद्धायनमःअनिरुद्धमा॥१९॥त्रिविकमायनमः 💱 त्रिविकममा० ॥२०॥ वासुदेवायनमःवासुदेवमर०॥२१॥जगचोनचेनमः॥जगचोनिमा०॥१२॥शेषतत्वगतायनमः

🔭 🦥 🛮 सध्ये 📗 राधिका सहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ राधिकासहित पुरुषोत्तममाबाहयामि स्था॰ ॥ तत् 🧗

आवाह्य ॥ प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रा वरुण निर्मिता ॥ प्रतिष्ठां तां करोम्यत्र मंडले देवतेंः सह ॥ श्रीराधिकाः 🦸 सहित पुरुपोत्तमाद्यावाहित देवाः सुपतिष्ठिताः वरदाःभवतः ॥ प्रतिष्ठान्ते इदमंत्रचंदनं च पुष्पं ॥ श्रीसाधि- 🕺 कासहित पुरुषोत्तमाद्यावाहितदेवेभ्यो नमः ॥ गंधसमर्पयामि ॥ पुष्पं० धूपं० दीपं० नेवेद्यं ॥ पंचोपचारैः वा यथाशक्ति प्रजनं कृता ॥ प्रवृद्धता बाह्मणाश्रद्धकप्प विष्णुसहस्रनाम पुरुषोत्तमसहस्रनामभिः जपंचकुर्युः ॥ ततो शोहशोपचारे प्रजनगरभेत् ॥ इस्ते पुणं गृहीत्वा ॥ ध्यायेत् ॥ श्रीवरस वक्षसं शांतं नीडोत्पर्छ 🖇 ९ प्रमाणे नवानुं स्थापन भया पत्र तेमना प्रतिष्ठा करी पेळापी पंचीपचारवडे पूजा करवी पत्री पाठकरनारा तथा जपकरनाराभीने ते तेमनुं बाह सीप्यं,

वृत्री भगशानना ध्यावधी आरंभी राक्षेपवार अथवा अनकादा प्रमाणे पुत्रानी आरंभ करकी, तथा प्रथम पणवानने ध्यान करी। अवाहनीयचार वर्री संवस्पी

आसन आपर्य.

ै शेपतल्पगतमा॰ ॥ २२ ॥ संकर्षणायनमः संकर्षणमा॰ ॥ २८ ॥ प्रद्युम्नायनमः प्रद्युम्नमा॰ ॥ २५ ॥ देत्याः ० ै रपेनमः देत्यारिमा॰ ॥ २६ ॥ विश्वतोम्रखायनमः विश्वतोम्रखमा॰ ॥ २७ ॥ जनार्दनायनमः जनार्दनमा॰ ० । २८ ॥ घराधारायनमः धराधारमा॰ ॥ २९ ॥ श्रीधरायनमः श्रीधरमा॰ ॥ २० ॥ एवंदेवाच कंभोपरि १ किकीर 💲 दरुच्छवी॥ त्रिभंगरहरितं ध्यायेत् सराधा पुरुपोत्तमम् ॥१॥ अन्तरुपोतिसनन्तरत्नरचिते सिंहासने संस्थितम्॥ वंसी 🖔 प्र०३ हैं नाद विमोहिते रजवप रन्दावनेसंदरं ॥ प्यायेद्राधिकया सक्तोस्त्रभमर्णि प्रस्रोतितोरस्थलं राजद्रत्निकीटकः uर२६॥ 🖇 ण्डलभ्रं भत्यम्पीताम्बरम् ॥ आगच्छदेव देवेश श्रीकृष्ण पुरुपोत्तम् ॥ सभयासहितश्चात्र गृहाण प्रजनं मम॥ 🐉 विष्णोस्यकीयसदनात सहसिंधुप्रत्याः सार्धगणेः सरगणेः परितस्त्रुयन्हिः ॥ आवाहयामि हदिप्रजयितं 🖔 प्रभोत्वां तद्विश्वनाथ करुणा वरुणालपेंदी ॥ श्रीसाधिकासहित प्ररुपोत्तमा यनमः ॥ आवाहनोपचारार्थे अक्षतान् 🕃 समर्पयामि ॥ आसनं ॥ माणिक्य मौक्तिक द्यविद्रमपत्रपुष्पेईरिन्द्र नीलमणिमेदककेतु स्तैः ॥ आधार शक्ति 🕏 कमलासन कूर्ममृते दिव्यासनं विरचितं च गृहाण विष्णो ॥ नानास्त्नसमायुक्तं कार्तस्वर विभूषीतम् ॥ आसनं 🔮 देवदेवेश गृहाण पुरुषोत्तम ॥ श्रीराधिकासाहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ आसने अक्षतान् समर्पयामि ॥ हस्तेजरु- 🐉 र्थं मादाय मासोत्तमेमासे॰ श्रीपुरुपोत्तम् प्रजन कर्मीधिकासर्थं तिलक छलशी धारण प्रवेक शंखघण्टा प्रजनं च 🐉 करिब्ये ॥ तत्रादौ तिलक्षधारणविधिः ॥ तिलक्षधारणार्थं यथोक्त मृतिकामादाय ॥ वामहस्ते गृहीत्वा ॥ 🐉 🛮 🖰 १९२६॥ हैं तस्योपरि जलं निक्षिपेत ॥ श्री किरीट केयुरहार मकरकुण्डल चक्रशंख गदापद्म हस्तपीतांवरघर श्रीवत्सांकित हैं

्रीनमः ॥ वामपार्थे वामनायनमः ॥ वामवाहो श्रीषरायनमः ॥ कंघरे हपीकेशायनमः ॥ पृष्ठे पद्मनाभायनमः ॥ 🏅 कृय्यां दामोदरायनमः ॥ एवंकृत्वा हस्तो प्रशाल्य ॥ तत्तोयं वासुदेवाय नमः ॥ इति भंत्रेण मुन्ति निक्षिपेत ॥ ুঁ। इति तिलक धारणं ॥ अथ माला धारणं ॥ मालां ग्रहीत्वा ॥ पात्रे निषाय ॥ तद्वपरि देवं आवाहयेत् ॥ हैं हस्ते अक्षतान गृहीत्वा ॥ प्रतिष्ठां क्वर्पात् ॥ सर्वशक्ति स्वरूपिणी सिद्धिदात्री इहागन्छ इहतिष्ठ ॥ प्रजयेत ॥ 河 अनुपरिका कुमदोक्ता मध्यमायुक्तरी भनेतु ॥ अंगुष्ठः पुष्टिदः मोक्तस्तर्जनी मोक्तसार्थम ॥ इति पात्रे ॥ श्रीगंगे वेंकटादी च श्रीकृषे द्वारके र शिभ ॥ मयाने नारसिंहारी बाराहे तुन्तरीयने ॥ पृहीत्वा मृचिकां भक्त्या विष्णुपादकरेः सह ॥ धृत्वा पुण्डाणि योगेषु विष्णुसायुज्य मामुचाव् ॥ इति पायोचरावण्टे ॥ ग्राणं शांतिकतं मोक्तं रक्त वश्यकतं तथा ॥ श्रीकतं पीतिपत्यादुः भेत मोलमदं ग्रामम् ॥ आरभ्यानाभिका-पूर्वं क्रव्यटान्तं क्रिकेन्युद्य ॥ नासिकायात्रयो भागा नासामूकं भवसते ॥ समारभ्य क्षृत्रोफ्ट्रव्यन्तराखं मकल्पयेत् ॥ दर्शायुकममाणन्तु जनमो-

वसस्यलः श्रीभृमीसहित स्वात्मज्योतिर्दिप्तिकसय सहस्रादित्यतेजसे नमोनमः ॥ नारायणायइत्यभिमंत्र्यः ॥ जलन श्रीशायिने नमः ॥ इतिजलं निक्षिप्य ॥ मधुरिपवे नमः ॥ इति संमर्ख नमो भगवते वाखुदेवाय नमः ॥ इति भिमंत्रण द्वादरास्थानेषु धारपेत् ॥ यथा ॥ ललांटे केशनायनमः ॥ उदरे नारायणायनमः॥ वस्रस्थले माधवाय ई∥नमः ॥ कंउकूपके गोविन्दायनमः ॥ दक्षिणकुक्षी विष्णवेनमः ॥ वाही मधुस्दनायनमः ॥ कंघरे त्रिविकमाय

1९२७॥ 🖇 आरोर्ग्य शोकशमनं कुरु मे माधवीपये ॥ अभिष्ट फर्लिसर्जि च सदादेहि हिपिपेये ॥ देवेस्त्वं निर्मितापूर्व 🚉 निर्वितासि सनीर्थरेर ।। इति मालां संप्रार्थ्य ।। न्हीं सिद्धिदायिन्ये नमः ॥ इति मंत्रेण हस्ते गृहीत्वा ॥ महा माले महामाये सर्वेशकि स्वरूपिणी । चतुर्वर्ग स्विय न्यस्तरतस्मा नमे सिद्धिदा भव।।-ही नमो-भगवते वासुदेवायनमः ॥ इतिमंत्रेण केठे धारचेत इति माला धारण विधिः ॥ अथ शंखघंटा पूजनं ॥ स्वसमुन्यते ॥ ननागुळं मध्यमं स्याद्षशंगुळवदः वरं ॥ एतैरंगुळिभेदेस्तु कारवेन्न नलीः स्पृग्नेत् ॥ नासादिकेग्रपर्येतं अर्थ्वपुण्हं सुर्वाभनं ॥ क्ये जिद्रसमायुक्तं महियाद्धरिसंहित्स् ॥ याक्पाश्वेरियते। बस्सा दक्षिणे तु सदर्शनावः ॥ कथे विर्णु विज्ञानीयात् तस्मान्मध्ये न छेपयेत् ॥ अस्तातो थः क्रिया कुर्योदशुचिः पापसंयुदः ॥ गोपीचंदनसंपर्कात् पूतो भगति बत्सणात् ॥ अशुनिर्वाप्यसधारो महापापं सपापरंत् ॥ हाबिरेव अवेकित्यपूर्ण्यपुण्डांकियो नरः ॥ धात्रीफळ्ळता माठा हेळसीकाष्ट्रसंभवा ॥ इत्यते यस्य देह मु स व भागवती नरः ॥ 🔯 अर्थ – हरे भागातेंनी पुत्रम् करवा योग्य थवा विलक्त तुल्शीमाला भारण करवा तेची संस्कानकी पुत्रन करी कहेले स्पान भारता करवा. नाले ए प्रकारनी प्रश्न मालानी विश्व अवापकी भागानी विश्व अवापकी 
केक्कै॰ ईं याये च तुरुसीमालां रामां कमललोचनां ॥ प्रसन्नां पद्मवदनां नराभय चतुर्श्वजां ॥ भगवत्प्रसादिकाये नमः ॥ अविव र् दे हित मंत्रेण यथाराक्त्या प्रजयेत ॥ प्रजान्ते संप्रार्थ्यं धारयेत ॥ सीभाग्यं संतर्ति देहि धनं धान्यं चमे सदा ॥ ३॥

संहंसं पंशी वं लंदें ये में भे वे फें पे ने घं दें थे ते णे दें डे ठं ठं जे झे जे छे चे हे घं में खे के आ ओं ओं एं एं हं हं ऋँ फं कं हं ईं आं जः ॥ ततः हीं शिरसेस्वाहा ॥ इति मंत्रेण शंबं जलेन प्रखेत ॥ ततो मंबिन्हि-मंडलाय दशकलामने नमः इति मंत्रेण शंसाधार त्रिपादिकायां गंधादिना प्रजयेत ।। ततः अंअर्कमंडलाय द्वादशकलारमने नमः ॥ इति शंखप्रजा ॥ ततः ॥ हीं सोममंडल्प्य पोडशकलारमने नमः ॥ इति जले पुष्पादि 🕺 ्रे क्षिपत् ॥ ततः हीं गंगेच यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्भदे सिंधुकावेरि जलेस्मिन्सिंत्रिर्धि कुरु ॥ इत्यनेनाङ्गशमु- 🖇 ये कंठरुपतुन्त्रसीनरिज्ञासमास्त्र ये वा लखारुपरेक लसदुर्ज पुण्डाः ॥ ये चाहुपूलपारीचिन्हितसंखचकास्ते वैष्णवा सुवनमाशु पविवर्षाते ॥ अजगपि चिन्हेरीकेतं यस्य विष्णोः परमपुरुपनास्नां कीर्पनं यस्य वापि ॥ ऋजुनसमि पुंहं मस्तके यस्य कंठं सरिसनगणिगात्था यस्य

स्तस्य वामभागे पुरस्तात् ज्यसं त्रिकोणं मण्डलमुख्डिस्य ।। तरिमन्मंडले हीं आधारशक्त्यै नमः ॥ इति मंत्रेण शंखाधारत्रिपादिकाः स्थापयेत् ॥ ततः ॥ हीं अस्त्रायफद् इतिमंत्रेण क्षालितं हीं आधार शक्तेये हैं। नमः ॥ इत्यनेन त्रिपादिकोपरि शंखं स्थापयेत् ॥ ततः हीं हृदयाय नमः ॥ इत्यनेन शंखमध्ये गंभपुष्पादि तिषेत् ॥ ततो दतिणहस्तेन शंखं स्पृष्टा ॥ उपुरक्रांतैमीत्कावरे न्यांसं क्र्यांत् ॥ यथा

विश्वी , ह्या सूर्यमंडला त्रिथमावाह्य ॥ ततो निजहत्वद्मात्परमात्मानं इहागच्छेत्यावाह्य ॥ ततः ही शिलाये वीपडिति 🐉 🗝 २ े गालिनीसुद्रा प्रदर्शयेत ॥ ततस्तज्जलं हीं नेत्राम्यां वोपडित्यनेन वीक्षयेत ॥ ततः ही कवचाय हुं इतिअवसंदन 🐉 ॥१९८॥ है मुद्रयावयुंउयेत् ॥ ततः पर्डगन्यासं क्रयात् ॥ वशा ॥ क्ली हृदयाय नमः ॥ कृष्णाय शिरसे स्वाहा ॥ गोविन्दाय शिखाँये बोपट् ॥ गोपीजनाय कवचाय हुं ॥ वहुभाय नेत्रत्रयाय बोपट् ॥ स्वाहा अस्त्रायफह् ॥ इति स्व स्व संप्रदायात्र 🕍 है सारेण ज्ञातन्यम् ॥ ततः न्हीं अस्त्राय फद्ध ॥ इति दिग्वंधनं कृत्वा ॥ तदनैतरं शंखे पुष्पादिदत्वा ॥ धेतुसुद्रां है प्रदर्शकृषेन जलं स्पृष्टाऽमृतवीजं सप्रणवं द्वादश वाराच् जपेत ।। यथा ।। =हीं ठं ।। ततः सोममंडलाय पोडशकलात्मने नमः ॥ इति प्रनर्गधाः दिनार्चयेत् ॥ तत श्रकसदया सम्यक् रक्षित्वा ॥ ततो मत्त्यमुदया आच्छादयेत् ॥ ततः शंखं संस्पृशन् ॥ कू-ै चेंन तन्नालं स्पृष्टा ॥ मूलमंत्रमप्टशो जपेत ॥ ऱ्हीं नमोनारायणाय ॥ जलमायत्री यथा ॥ ऱ्हीं जलर्विवाय विद्यहे 🕌 भीनपुरुषाय धीमही ॥ तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥ ततः प्रोक्षणीपात्रे किंचित क्षिपेत् ॥ शेषेण शंखजलेन सर्व- । ॥१ २८ प्रजोपकरणानि निजरारीरं च वास्त्रयं मूलमंत्रेण प्रोक्षयेत् ॥ ततो गायजीमंत्रं पठीत्वा शंखमुदां प्रदर्शयेत् ॥

्री यथा ॥ हीं पांचजन्यायविद्यहे पावमानाय धीमहि॥त तत्रः शंखः प्रचोदयात्॥ इति गायत्री ॥ शंखस्थदेवताये नमः॥ इतिमत्रेण शुद्धोदकः संस्नाप्य प्रजयेत ॥ शंखस्थदेवतायै नमः ॥ मधं स० ॥ पुष्पं० भूपं० दीपं हैं नैवेद्यं समर्पवामि ॥ पुष्पं गृहीत्वा प्रार्थपेत् ॥ शंखादी चंद्रदेवत्वं क्रक्ती वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चेव अग्रे ांगा सरस्वती ॥ त्रेलोक्ये यानि तीर्थानि बाखुदेवस्य चाज्ञया ॥ शंखे तिष्ठन्ति विश्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रश्चजेत् ॥ त्वं 🖡 ु प्रा सागरोत्पन्नो विष्णुना विद्यतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोस्तु ते ॥ शंखस्थदेवताभ्यो नमः ॥ 🕏 🔋 प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारं स॰ ॥ अनया प्रजया शंखस्थदेवताः शीयंतां नमम ॥ अथ घंटा पूजनं ॥ घंटास्थित- 🐉 हैं गरुहाय नमः॥आवाहयामि॥यथावकारोन यथाराक्त्या पूज्येत्॥प्रजान्ते हस्ते धत्वा नार्दं कुर्याते ॥सामध्यनिशरीर- 🐉 🚉 स्त्रं वाहनं परमेष्टिनः॥विषपापहरोनित्यमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ आगमार्थन्तदेवानां गमनार्थेतु सक्षसास् ॥ घण्टानादं 🏅 🟅 शकुर्वीत तस्माद्धण्टां प्रप्रजयेत्॥ इति मंत्रेण प्रार्थयेत् ॥ अनेन प्रजनेन घण्टास्थितगरुडः प्रीयतां ॥ इति शंखघण्टा- 💈 र्वं पूजनं ॥ अध न्यासः ॥ यजमानः स्वरासिरे न्यासान् क्रयीत् ॥ केशवायनमः वामकरे ॥ नारायणायनमः 🕏 दक्षिणकरे ॥ माथवायनमः वामपादे ॥ गोविंदायनमः दक्षिणपादे ॥ विष्णवेनमः वामजानुनि ॥ र्

👸 नारायणाऱ्यांनमः पादयोः ॥ विशास्त्रक्षिकेशवाभ्यांनमः जान्वोः ॥ सुनंदासँकर्पणाभ्यांनमः उवोः ॥ रुक्मिणीः माधवाभ्यांनमः कटयोः ॥ वैष्णव्यच्युताभ्यांनमः नाभौ ॥ नारायणीगोविदाभ्यांनमः हृदि ॥ मित्रविंदाहृषी-केशाभ्यानमः केंद्रे ।। पद्मातित्रिविक्रमाभ्यानमः इस्तयोः ॥ नार्गसेहिन्दसिंहाभ्यानमः बाह्वोः ॥ सत्यावासः देवाभ्यांनमः मुखे ॥ कालिंदीजनार्दनाभ्यांनमः नासिकयोः ॥ कमलावामनाभ्यांनमः अक्ष्णोः ॥ सत्याश्रीकः 🖓 ॥१२९। क्याभ्यांनमः छराटे ॥ जांड्यतीश्रीधराभ्यांनमः मुध्ति ॥ रुक्षमण्<sup>र</sup>ऽधोक्षजाभ्यांनमः शिखायां ॥ वाराद्दीपदा-

॥१२९॥ 🖟 संकर्पणायनमः दक्षिणवाहुमूले ॥ वासुदेवायनमः सुत्ते ॥ प्रद्यम्नायनमः नेत्रयोः ॥ अनिरुद्धायनमः नासि- 💸 कायां ॥ उसगायनमः ललारे ॥ सर्वकामदायनमः शिलायां ॥ सहस्रशीर्थायनमः सर्वांगे ॥ अथ पंचाङ्ग-

िन्यासः ॥ दामोदरायनमः इदि ॥ अधोक्षजायनमः शिरसि ॥ नृसिंहायनमः शिखायाम् ॥ अच्छतायनमः 🐉 कवचे ॥ जनार्दनायनमः अस्त्रायफद् ॥ इति वंचांगन्यासः ॥ अथ महापातकहरन्यासः ॥ रुक्षीः 🐉

दायनमः दक्षिणवाहकूपेरे ॥ १२ ॥ वामनायनमः दक्षिणवाहमणिवंधे ॥ १३ ॥ श्रीशायनमः दक्षिणवाहंग्रः लीमुले ॥ १८ ॥ श्रीकण्यायनमः दक्षिणवाह्नं धत्यात्रे ॥ १५ ॥ विश्वसाक्षिणेनमः हृदि ॥ १६ ॥ नारायणाय ३ नमः वागपादमुरुं ॥ १७॥ मधुस्पिवे नमः वागजानुनि ॥ १८॥ अनिरुद्धायनमः वागपादांग्रहिमूरुं ॥ १९॥ 🖇 त्रिविकमायनमः वामपादांग्रत्यत्रे ॥ २० ॥ वासुदेवायनमः दक्षिणपादम्ले ॥ २१ ॥ जगद्योनयेनमः दक्षिणजा- 🐉 जुनि ॥ २२ ॥ शेपतत्यगतायनमः दक्षिणपादांखिलमेले ॥ २३ ॥ संकर्षणायनमः दक्षिणपादांखल्यमे ॥ २४ ॥ अथेकादशन्यासः ॥ प्रद्युप्रायनमः शिखायां ॥ १ ॥ दैत्यारवे नमः मुखदृत्ते ॥ २ ॥ विश्वतोमुखायनमः 🕏 कक्कदि ॥ ३ ॥ जनार्दनायनमः चित्रुके ॥ ४ ॥ धराधारायनमः हृदयादिवामांसे ॥ ५ ॥ श्रीधरायनमः हृदया- 🕺

नाभाभ्यां नमः सर्वांगे॥ अथ अंग्रांगान्यासः ॥ जिष्णवेनमः शिरसि ॥ १ ॥ विष्णवेनमः वामनेत्रे ॥ २ ॥ इष्णायनमः वामभ्रोत्रे ॥ ४ ॥ अथोक्षजायनमः दक्षिणश्रोत्रे ॥ ४ ॥ महाविष्ण- ४ वेनमः वामबाहुमूले ॥ ६ ॥ केशवायनमः वामकूर्षरे ॥ ७ ॥ माधवायनमः वाममणिवेषे ॥ ८ ॥ शामायनमः ४ वामायुक्तिमूले ॥ ९ ॥ अच्युतायनमः वामायुक्त्ये ॥ ९० ॥ पुरुषोत्तमायनमः दक्षिणबाहुमूले ॥ १ ॥ अ

दिदक्षिणांशे ॥ ६ ॥ प्रतनामाणहर्श्वनमः नाभौ ॥ ७॥ यशोदास्तनन्थपायनमः गुह्ये ॥ ८ ॥ मारिचघातिने नमः . छदे ॥ ८॥ हस्तप्रशालनम् ॥९॥ वकारयेनमः कटगादिवामपादातम् ॥ इत्रारिपियायनमः कटगादिदक्षिणपा दांत ॥११ ॥ इतिएकादशन्यासः॥अथ करन्यासः॥ अंग्रष्टयोः वासुदेवायनमः॥ तजन्योः अनिरुद्धायनमः 🆠 मध्यमयोः ॥ संकर्पणायनमः ॥ अनामिकयोः ॥ प्रद्यमायनमः कनिष्ठिकयोः हर्पाकेशायनमः ॥ कस्तलकस्पृष्ठयोः 💸 पुरुषोत्तमायनमः॥ इतिदेहन्यासः॥ अथ देवन्यासः॥ देवान्स्पृष्ट्वा इस्तेव्वलसिदलंग्रहित्वा केशनायनमः देव स्यवामकरे ॥ नारायनमः देवस्यदक्षिणकरे ॥ माधवायनमः देवस्यवामपादे ॥ गोविंदायनमः देवस्यदक्षिणपादे ॥ विष्णवेनमः देवस्यवामजानुनि ॥ मधुस्द्दनायनमः देवस्यदक्षिणजानुनि ॥ त्रिविकमायनमः देवस्यवामकट्यां ॥ देवस्य दक्षिणकटवाँ ॥ श्रीवरायनमः देवस्यनामा ॥ इपीकेशायनमः देवस्यहृद्ये ॥ पद्म 🕄 देवस्यकंठे ॥ दामोदशयनमः देवस्यवामबाहम्छे ॥ संकर्पणायनमः देवस्यदक्षिणबाहः अर्थ-एवंसीते तिलक हुल्मी माला शस पत्रा विमेरेन पूनन स्थापन भयापत्रि पोताना शसीरनी शुद्धि धनाने उत्तर रुसेला न्यासी कर्या. एउले मैत्राते यनमाने पीताना दरीरे फहेंडे टेडाणे हाथ अरकाडका, तथा पेताना दरिएना न्यासो थया पठी, हायबा तुरुशा अथना प्रण सह भगवानने अरकार्डा तेयने इसिरे, ते ते स्थानना देवताओन प्रान्त्य थवा तेमनान्यासो करवा.

उस्मायनमः देवस्यस्रहाटे ॥ सर्वकामदायनमः देवस्यशिखायां ॥ सहस्रशीर्षायनमः देवस्यसर्वांगे 🕏 पाद्यं ॥ कान्तेन्द्रकान्तमणिमंडितकंडनालं श्रीकांतकाचनकमंडलुकर्णपूरं ॥ दूर्वादलोत्पलसुगंधिमथामलं 🕺 सपादोदकं मुस्रीयोः पदयोर्ग्रहाण ।। गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाहृतं ॥ तोयमेतत सुखस्पर्शं पाद्यार्थं 🕏 प्रतिमृह्यताम् ॥ श्रीराधिकासहितपुरुषोत्तमायनमः पादयोः पाद्यं स॰ ॥ अर्ध्यं ॥ सिद्धार्थगंथकुसुमाक्षतः 🕺 प्रगहुर्वातोषेरलं तिलयवैरभिष्रज्यपात्रम् ॥ आधारमूर्धनि सर्मार्धतमुक्तमैत्रैरच्यं गृहाण जगदीश दयाईदष्टे ॥ 🖇 नंदगोपगृहे जाता गोपिकानंदहेतवे ॥ गृहाणार्थं मया दत्तं राधया सहितो होः॥ श्रीराधिकासाहितपुरुपोत्तमा- 🖔 यनमः हस्तयोः अर्घ्यं स॰ ॥ आचमनीयं ॥ कंकोलकुङ्गलदलाकुशलेलविंगा जातीपलामलसुगंधि 🕏 खतं सुरारे ॥ मंत्रेण मंत्रितमिदं कलधौतद्रव्यामाचम्यतासुचितमाचमनीयमम्भः ॥ गंगाजलसमानीतं 🕺 स्वर्णकरुशे स्थितम् आचम्यतां इषिकेश पुराण पुरुषोत्तम् ॥ श्रीराधिकासहितपुरुषोत्तमायनमः ॥ आ- 🖇 चमनीयं स॰ ॥ मधुपर्कः ॥ मिश्रंदधी इतमध् स्थितकांस्यपात्रे पूर्णे सुगंधिसल्लिरेभिमंत्रपूर्वं ॥ हस्तं स्वहः

मूले ॥ बाह्यदेवायनमः देवस्यमुखे ॥ प्रद्यमायनमः देवस्यनेत्रयोः अनिरुद्धायनमः देवस्यनासिकायां ॥

र्दं यार्पितमनेक्यणाभिवास पंचाप्टतस्रापनमेतद्वरीक्ररूव ॥ पयो दापे घृतं गव्यं माक्षिकं शर्कस तथा ॥ गृहा-श्रीमानि द्वयाणि राधिकानंददायक ॥ श्रीसायिकासहितपुरुपोत्तमायनमः ॥ पंचाप्टतस्तानं स० ॥ पृथक् श्रीमानि द्वयाणि राधिकानंददायक ॥ श्रीसायिकासाहितपुरुपो दिव्यामृताधिकस्तं परिकामदं च ॥ स्वर्धेन्तुनं श्रीमानिकाम श्रीमानिकाम ॥ दिव्योपधीद्वयस्य नवनीतपूर्णं दिव्यामृताधिकस्तं परिकामदं च ॥ स्वर्धेन्तुनं श्रीमानिकामि । प्योददामि । प्रयोददामि । प्रयोद्यामि । प्रयोददामि । प्रयोददामि । प्रयोददामि । प्रयोद्यामि । श्रीसायिकासहित । प्रयोद्यामि । प्यामि । प्रयोद्यामि 
वि॰कोः क्रे स्तकमलांजलिमा मया ते दर्च गृहाण मधुपर्कीममं सुरारे।।दाधि श्रीद्रं वृतं शुद्धं कपिलायाः सुराधि चत्।।सुस्वादु 🎏 मुं सारे सारे मधुपर्कं गृहाण् मे ॥ श्रीराधिकासहित-पुरुपोत्तमायनमः॥ मधुप्कं सुरु।। पंचासूतं एकीकृत्य

॥१२१॥ है। स्नापयेव ॥ आनंदनिद्धन निरंजन देवदेव श्रीविश्वनाथ करुणाकर दीनवन्यो ॥ अवत्या मन्

असतान् सः ।। प्रतस्नानं ।। तेजोमयेन तपनद्यतिपावितेन गन्येन सर्वविधिना परमंत्रितेन ।। वन्ही श्चतेन रसाव्रतेन भौगास्त्रेन विधिना च व्रतेन स्नानं ॥ नयनीतससुत्यन्नं सर्वसंतोषकारकम् ॥ यज्ञांग देवताहेतो इतस्तानार्थ मर्पितम् ॥ श्रीराधिकासहित प्ररुषोत्तमायनमः ॥ इतस्तानं स० ॥ घृतस्त्रानान्ते वरुणस्त्रानं स॰ वरुणस्त्रानान्ते आचमनीयं स॰ सकलप्रजार्थे, अक्षतान् स॰ ॥ मधुस्नानं॥ लता रससंभवान्त मीधुर्य मिष्टमचतं प्रतिसुबदिव्यं ॥ माणिक्यपात्र समप्रस्ति भक्तिपूर्व मंगीकरूप मधुदेव महावरिष्ठं ॥ प्रष्पसार समुद्धतं - माक्षिकरानितं चयतं ॥ सर्वेद्धरिकरं देव मधुस्ना नार्थं मर्पितम् ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ मेधुस्नानं स० मधुस्नानान्ते वरुणस्नानं स० वरुणस्ना है नान्ते आचमनीयं स॰ सकलपूजार्थे अक्षताच् स॰ ॥ शर्कगस्नानं ॥ पूर्णेन्द्रसागर समुद्रवयासिनिम्ना मुक्ताफल-वर्षा रोतेदरेवनावते दरेक उपनारी करका नोहये. पग तेनी आवनाका न मळवाथी केवळ दुघ चहावी ने बलत वाणी तथा एक बलत आनमनीर्स मळ तथा

सफळा उपचारने लीचे चंदन, मुख्य, बहाया नयम्कार करवा, एम रुशि छे. ए प्रमाणे, हुच, दहीं, बीह, मध, खाड शुक्काळवी स्नान कराबी रंत्रीपकारची

पयसस्तु समुद्भुतम् हिमादि द्रव्य योगतः ॥ द्रप्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्मताम् श्री सिकासहित है पुरुषोत्तमायनमः ॥ दिवस्तानं स० ॥ दिवस्तानान्ते चरुणस्तानां० वरुणस्तानान्ते आचमनीयं० सकलव्रजाधे द्रै

पते संगविलेपनार्थं !! चंपकाशोक वक्कला भालती मोगरादिभिः !! वासितं स्निम्धताहेतो स्तैलं च प्रतिगृह्यः ताम् ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ अभ्यंगस्तानं स॰ आचमनीयं स॰ ॥ शुद्धोदक स्नानं॥ दिव्यहुमे न्यन समिद्धहुताशनक्षेः शुद्धोदकेः सुविमलैश्च समुद्धतेश्वः ॥ गोविन्दनाथ निधिनाथ यथासुलेन स्नानं विधेहिंं। विधिना विधिनत् मदिष्टं ॥ गंगाजल समं शीतं नदीतीर्थं सुसंभवं ॥ स्नानं दत्तं मयाकृष्ण गृहातां नदनंदन ॥🞉 श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ शुद्धोदक स्नानं स० ॥ शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं० ॥ देवं पात्राः पुरुत करहें पंचेपचार पुरुत थया रही. भगवानना परथी पुष्पळ् माथेहकी नाके हुंपी खाना हाफ्ताएक यजपाने केकहें, पर्जा भारा पात्रमां पार्णापरी तेथीं 🕏 बंदन, पुण्य, बीमेरे नाली. शंसवती पार्णानी धारा भगवानना उपर करती सथा फेटा बमादवी तथा पुरुष सुक्तनी पाट ११ बखत अथवा अभिवेकना 💸

॥१६२॥ 🛭 शर्केसस्तानं स॰ ॥ शर्केसस्तानान्ते वरुणस्तानं स० वरुणस्तानान्ते आचमनीयं० ॥ सकलपूजार्थे अक्षतान्स०

अभ्यंगस्नानं व सुगंपवेलं तिलजं मनोहां सुवासितं नंपक जाति पंकजिः ।। अन्येश्व कालोद्वयपुष्पसंयुतं लक्षी-

🖁 प्ररुपोत्तमः शीयतां ॥ उत्तरे निर्मारयं विसुज्य ॥ अनः पूज्रयेत ॥ अभिषेकं कुर्यात् ॥ अभिषेकार्थं पात्रे 🖇 जल गंध पुष्प दुम्धादीनि क्षिपेत तेन देवस्योपरि अविच्छित्रांधारां पातयेत् 间 ब्राह्मणाः अभिपेकमंत्राः पटेयुः ॥ जितं ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन ॥ नमस्तेस्त्रहृपीकेश महापुरुष पूर्वज ॥ १ ॥ नमो हिरण्यग र्भाय प्रथानाव्यक्त रूपिणे ॥ ही ( नमो ) भगवते वासुदेवाय शुद्धन्नान विभाविने ॥ २ ॥ देवानां दानवानां च सामान्यमभिंदेवतम् ॥ सर्वदा चरणदंदं व्रजामि शरणं तच ॥३ ॥ एकस्त्वमसि स्त्रेकस्य स्रष्टा संहास्क सीरस्तानेन सामान्यं दक्षा पिछानभोजनम् ॥ इतेन स्नापमेद्यो यां नरी सम पुरं त्रजेत् ॥ स्नानं शर्कस्पा यस्तु कार्ययो समीपरि ॥ स राजा जायते क्रोके पुनस्कारिहरागतः ॥ जाम्बू शंस करे भूत्वा मेंत्रे रेतेस्त वैष्णदेः ॥ इति हरिभक्तिविकासे स्कान्देच ॥ यस्त

बादयर्वे पण्टा नैनतेपिक्षिचिरताम् ॥ पूपे नीराजने स्नाने पूजाकाळे विकेपने ॥ मृहे यसिन-मनेदितस्य धण्टानागारिसंयुता ॥ सर्पाणां न भयं तत्र मागिबियुत्समुक्षयम् ॥ इति विष्णुपानके डामरतंभोत्तेथ ॥

्रन्तरे कृत्वा पंचोपचारैः प्रजयेत ।! श्रीराधिकासहित प्ररूपोत्तमाय नमः गंधं स॰ ॥ श्रीराधिकासहित प्ररूपोत्तनः ई माय नमः ॥ पुण्यं स॰ श्रीराधिकासहितपुरुपोत्तमाय नमः ॥ भूपं स॰ ॥ श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमाय नमः ई ई दीपं स॰ ॥ श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमाय नमः ॥ नैबेर्द्ध स॰ ॥ अनेन पंचोपचारप्रजनेन श्रीराधिकासहित ई

हैं में प्राप्य निस्त्रन्ति मनीिष्णः ॥ ४॥ न ते हर्षन् चाकारी नाष्ट्रथानि न चास्पदम् ॥ तथापि पुरुषाकारी भक्ता र् 🞼 स्तथा। अभ्यक्षश्चात्रपन्ता च ग्रणमाया स्माइतः ॥शा ससार साग्र घारमनन्त क्षशभाजनम् ॥ त्वानप पर १२३॥ है नो सं प्रकाशसे ॥ ६॥ नैविकिथित्यरोक्षेते प्रत्यक्षोऽपि न कस्युचित ॥ नैविकिनिद्रसिद्धते नचसिद्धोऽसि कस्य 🏅 चित् ॥ ७ ॥ कार्याणां कारणं पूर्व वचसां वाच्यमुत्तमम् ॥ योगानां परमां सिद्धि परमं ते पदं विदुः ॥ ८ ॥ 🖫 अहं भीतोऽस्मि देवैश संसारेस्मिन्मयावहे ॥ पाहि मां पुण्डरीकाक्ष नजाने शरणं परं ॥ ९ ॥ कालेज्यपि च है सर्वेषु सर्वावस्थास चाच्छत ॥ शरीरीप गतीचापि वर्तते मे महद्रयम् ॥ १० ॥ त्वत्पाद कुमलादन्यत्र मे जन्मा 🐉 🐉 न्तोप्चिप ॥ निमित्तं क्रशलस्यास्ति थेनगच्छामि सद्गति ॥ ११ ॥ विज्ञानं चिददं प्राप्तं यदिदं झान मार्जितस् ॥ 🕺 जुन्मान्तरेषि मेदेव माभृतस्य परिक्षयः॥ १२ ॥ दुर्गताविष्जातायां त्वद्गतो ये मनोरथः॥ यदिनाशं न र् विदेत तावतास्मिकृतीसदा ॥ १३ ॥ नकाम कलुपं चित्तं मम ते पादयोः स्थितम् ॥ कामयद्वैष्णवत्वतः सर्व जन्म 🖔 सु केवलम् ॥१४॥ सर्वेषु देशकालेषु सर्वावस्थासु चान्युत्॥ किंकरोऽस्मि इपिकेश सूमो भूगोस्मि किङ्करः ॥१५॥ 🖏 सु केवलम् ॥१४॥ सर्वेषु देशकालेषु सर्वावस्थासु चाच्युत् ॥।ककराऽस्म क्षुभकरा च्या च्या द्वारा ।। ३६ ॥ पुरुपस्य हरेः ही केवलम् ॥१४॥ सर्वेषु देशकालेषु सर्वावस्थासु चाय्युत् ।। इक्पस्य हरेः हिंदी सुन्यस्तुत्या स्तुत्वा देयं दिने दिने ॥ किकरोऽस्मीति चात्मानं देवायेव न्यवेदयन् ॥ ३६ ॥ पुरुपस्य हरेः हरीवं सुन्यस्तुत्या स्तुत्वा देयं दिने दिने ॥ किकरोऽस्मीति चात्मानं देवायेव न्यवेदयन् ॥ १६ ॥ पुरुपस्य हरे। सूक्तं स्वर्ग्यं धन्यं यशस्त्रतं ॥ आत्मद्भानमिदं पुण्यं योगःयानमिदं परम् ॥ फलाहारो जपेत्रित्यं पश्यन्नात्मानमा

केवलमेवसूक्तं नारायणस्य चरणावभिवंद्यं वंद्यो ॥ पाठेन तेन परमेण सनातनस्य स्थानं जरामरण वर्जितमेत विष्णोः ॥ हविषामो जले पुष्पे ध्यानिन हृदये हरिम् ॥ यजन्तिसुरयोनित्यं जपेच रविमण्डले ॥ विल्यपत्रं शमीप-त्रं पत्रंभृंगारकस्य च।।मालती कुशपद्धं च सद्यस्तुष्टिं करं हरेः ।। यत्रोपपद्यते किंचित् त्वंध्याये मनसेवत्त।।संपद्यते प्रसादान देवदेवस्य चिक्रणः ॥ पत्रेश्च प्रष्पेश्च फुळेश्च तोये स्कीतलब्धेश्च सदैव सत्स् ॥ भनत्येकलभ्ये पुरुषे प्रराणे मुक्त्ये किमर्थं क्रियते नयत्नः ॥ इत्येवमुक्तः पुरुपस्य विष्णो रचीविधिर्विष्णुकुमार नाग्ना ॥ मुक्त्यैक मार्गे प्रतिवोधनाय दृष्ट्रविधानं त्विहनारदेक्ति ॥ नमोस्वनंताय सहस्र मूर्तेय सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥ सह-सनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगवारिणे नमः ॥ अभिषेकानंतरं द्युद्धोदक स्नानं ॥ गंगासिथु सर-स्वती च यसुना गोदावरी नर्भदा कावेरी सस्य महेन्द्रतनया चर्मण्डवती वेदिका ॥ क्षिपा वेत्रवती महासुरनदी ख्याताग्रथागृंहकी प्रणी प्रणीजले समुद्रसहिता कुर्यात्सदा मेगलम् ॥ नानातिर्वादारूतं च तोय मुब्णं मया

त्मिन ॥ फलान्य सुक्तोपवसेन्मासमिद्धश्च वर्तयेत् ॥ अरण्ये निवसेन्नित्यं जपन्निममृपि र्सुनिः ॥ रूपिमन्निप वर्णकाले स्नायाद्रस्त समहितः ॥ इति महार्णवोक्त पुरुपस्क्तम् ॥ स्वयः सदासवित्मण्डलमस्यवर्ती नारायणः सरसिजासन् सन्निविष्टः ॥ केयुरवान्मकरकृण्डलवान्किरीटि हारी हिरण्प यवपुर्धतरांखचकः ॥ एतज्ञयः पटति विश्ती कृतं ॥ स्नानार्थं च प्रयुच्छाम् स्वीकृत्व दूयानी्घ्रे ॥ श्रीगार्थिकासिंहत पुरुपोत्तमायनमः शुद्धोदक स्नानं सम र् पैयामि ॥ वर्त्र ॥ सोवर्णतन्तु रचितानि विचित्रतानि स्थ्माणि देव तपन द्यति सन्निभानि ॥ दि-अरुष्ट्रा है ज्यानि नाथ विधिनाथ मयार्पितानि नानांवराणि परिघेहि सुखं विधेहि <u>।</u> तसकांचन वरणामं पट्टोरणं मृहुलं शुभं ॥ युग्मबस्रं गृहाणेदं परिधारय माधव ॥ श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ वर्षं स॰ ॥ यज्ञोपवीतं ॥ ॐ कारतत्वमयतत्तु परीतमीशं ब्रह्मात्मभिः स्त्रिष्टणितं विहितं सवित्र्या ॥ यज्ञो-हैं पबीत मीभुमंत्रित मात्मशक्त्या देवाधिदेव विधिवत कुरुनाथकंटे॥ दामोदर नमस्तेस्त त्राहिमां भव सागरात्॥ ैं मद्मसूत्रं सोत्तरीयं महाण पुरुषोत्तम् ॥ श्रीराधिका सहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ यज्ञोपवीतं स० ॥ यज्ञोपवीता 💡 💈 न्ते अचमनं ॥ अलंकारः ॥ माणिस्य मौक्तिक सुविद्वम पुष्पसम हीरेन्द्र नील मणिमेदक केतु रर्नेः ॥ नाना- 🥉 प्रकार सुश्रुभा भरणानि देव भक्त्या समर्पित तबो परि प्रेमुसकं ॥ सुकुर्ट स्वर्ण घटितं जिंडतं नव सत्नकेः ॥ 🖫

पिच्छ छच्छ समायुक्तं गृह्मण पुरुषोत्तम ॥ श्रीसाधिका सहित पुरुषोत्तमाय नमः अलंकासन् स० ॥ कुंकुमे । अर्थ-अभीवेकन चराना भंजीयी अभीवेक करी बक्काना उपचारी भगतानि करी शुद्ध नक्क्यों स्नान करावी बद्धभी छुठी वन्न पेहेरावी तेमना ॥२१ स्वानके नेसाहवा, तथा यथा शकी, ने वरेला मंत्रे, ते, पेहेरावया, ते कांश्च से से मुनानी माळा तथा छुठशीनीमाळा पेहरावया, तथा मनीह पेरावर्डे.

🖁 हि विष्णो गंध ग्रहाण सकलेषु सुगन्य बन्धो ॥ श्रीखण्डं चंदनं दिन्यं गन्धाहवं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुर-🏌 ै श्रेष्ठ चंदनं प्रति गृहाताम् ॥ श्रीराधिका सहित प्रकृषोत्तमाय नमः गर्न्थ स० ॥ अक्षतान् ॥ स्काक्षता गंध ैं विमिश्रिताश्च एलाट पट्टे तिलको परिश्च।। गृहाण देवेश जगन्निवास लक्ष्मीपते स्वीक्टर भालमागे ।। असताश्च ूँ। इस्श्रेष्ठाः क्षंक्रमाक्ता सुरोभिताः ॥ मयानिवेदिता भक्त्या गृहाण पुरुषोत्तम ॥ श्रीसधिका सहित पुरुषोत्तमाय 🎉 ई नमः अक्षतान् स॰ ॥ पुष्पं ॥ मंदार् कल्पतरुजाति समुद्रतेश्च मछीजपा वक्कर चंपक - पारिजातिः ॥ 🕻 लक्ष्मीपते गोक्रुळनाथ भक्त्या चुलसीदलै विंरचयामि तवाङ्गशोभां ॥ माल्यादिनि धुगन्धीनि 🛮 माल्स्यादिनींवै 🕻 ै भभो ।। मयाइताति प्रजार्थे पुष्पाणि प्रति गृह्यताम् ॥ श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमाम् नमः ॥ पुष्पाणि स० ॥ 🕄 ा अथाङ्गपूजा ॥ हस्ते गृन्यपात्रं गृहीत्वा ॥ दक्षिणेन मर्चयत् ॥ नंदात्मजायनमः पादौ प्रजयामि० ॥

यशोदास्तर्नेधयायनमः ग्रल्को प्र॰ केशिसदनायनमः जानुनी प्र॰ भूभारोत्तास्कायनमः जीवे प्र॰ अनन्तायनमः 🖇

🕯 चंदनं च ॥ सामाद मोदनवना निल्रशुष्टुगंथ कर्ष्ट्र छंकम छरंगम ताम्बराव्यं ॥ पुण्गोत्करार्चित समुहासितं 🞉

कर्टि प्र॰ विष्णुरूप ध्येनमः मेहं प्र॰ दृश्चनायनमः नाभि प्र॰ अनिरुद्धायनमः दृद्यं प्र॰ श्रीकण्ठायनमः कण्टं हुँ कुंकुमागरुभीराण्डकदेवेंपैपविगृहं ॥ भारिषेद्धे सहोपासे करपकोटि वसे दिवि ॥ र ॥

1188511

यनमः ॥ दक्षिणे चकायनमः ॥ पश्चिमे गदायेनमः ॥ उत्तरे पदायनमः ॥ वुष्पाण्यादाय ॥ अभिष्ट सिद्धि मेदेहि शरणागत वत्सल ॥ भनत्या समूर्पये तुम्यं गृहाण 🕃 ुँ प्रमेश्वर ॥ प्रथमावरणार्चन देवेभ्योनमः सर्वेषचारार्थे गृन्धं पुष्पं स॰ प्रवेदलास्त्रादक्षिण्येन ॥ पुनःअक्षतान् 🕉 गृहीत्वा ॥ रुक्सिण्येनमः ॥ सत्वभागायेनमः ॥ नामिकायेनमः ॥ कार्लियेनमः ॥ मित्रवृन्दायेनमः ॥ रुक्ष्मणाये 🖇

नमः ॥ जाम्ब्रवत्यैनमः ॥ मुशिलिकायैनमः ॥ अंजली पुष्पाण्यादाय ॥ अभिष्टसि॰ द्वितियावरणार्चेनदेवेभ्यो 🖟 नमः सर्वेषचारार्थे गन्धं स॰ ॥ दलाग्रे ॥ पुनः अक्षताम् गृहीत्वा ॥ वासुदेवाय नमः ॥ देववये नमः ॥ नंद- 🕺 गोपत्येनमः ॥ यशोदायेनमः ॥ ब्लभद्राय नमः ॥ सुभद्रायेनमः ॥ गोपेभ्यो नमः ॥ गोपिकाभ्योनमः

अंजली पुष्पाण्यादाय ॥ अभिष्टसिद्धिः ॥ तृतीयावरणार्चनदेवेभ्योनमः सर्वोपचारार्थे गन्यं पुष्पं स॰ ॥ पूर्वे

ए प्रयाणे मगवान पोताने स्थाने, शिरामेखा नोहने सच्छे अंगे चंदन करी कपाछे तिलक कुंकुमनो करी तैनापर छाल चोला चोडी प्रप्प घडानना.

ष्डायनमः ॥ विश्वसाक्षिणेनमः ॥ नासयणायनमः ॥ मधुरिपवेनमः ॥ अनिरुद्धायनमः ॥ त्रिविकमाय नमः ॥ जगद्योनयेनमः ॥ शेषतस्यगायनमः ॥ संकर्षणायनमः ॥ प्रद्युमायनमः ॥ देखार्येनमः ॥ विश्वतीः मणिकांचनपुष्पाणि तथा मुक्ताममानि च ॥ तुल्लसीपनदानस्य कलांनाहीन्त बोडवीम् ॥ १ ॥ तुल्लसीयंनरीथियेः क्रयीद्वे मम पूत्रनं ॥ सर्गर्भस्यमृहान्यायान्मृक्तिमावि भवेशसः ॥ २ ॥ अर्थ-पटी मगरानना आसा अंगनी पूना करना हात्रा हाथमां चंदनची वाडको छह माम्हण कहे ते,ते,स्थानपर चंदन चडाबतुं, ते, थया पटी घोला छह भगवादना जोटे आवेख देवताओ. तेमनुं पूनन कर्त्व, तेमां एक परिवार बयोके तेने बंदनपुष्पख्य मञ्जमणी चहाबी करिया बीचाने बोालासहादका, एने आवरण एना उद्देउ, ते भयापठा भगवानकी कोबासनामधी पूनावरकी तथा तुछशी (१०००) लावेश होय तेने सारापात्रमां सुकी तेनाउपर पाणीआंटी पंचीपचारपा

पुमारती संदर्भ कर्ता भगवानने चडक्को ते प्रमाणे तुल्सी चडाव्यापुढी पुष्पनी माळा तथा बटाक्सीक अलील गलाल सींधूर चडाक्के.

्र इन्द्रायनमः ॥ आग्नेयां अग्नयेनमः ॥ दक्षिणे यमायनमः ॥ निरुत्यां निऋतयेनमः ॥ पश्चिमे वरुणाय इनमः॥ बायव्यां वायवेनमः ॥ उत्तरे सोमायनमः॥ ईशान्यां ईशानायनमः ॥ ऊर्ध्वं ब्रह्मणेनमः ॥ अधः अनेतायनमः ॥ अंजलो दुष्पाण्यादाय अभिष्टसि०॥ चतुर्थावरणार्चनेदेवेभ्यो नमः सर्वेापचासर्थे गंधंदुष्पंस० विश्वायनमः॥ विष्णवेनमः॥ महाविष्णवेनमः॥ गोविंदायनमः॥ वामनायनमः ॥ श्रीशायनमः॥ श्रीकः

ध्रम्भायनमः ॥ श्रीधरायनमः ॥ अभिष्ट सि॰ ॥ अंजलोपुष्पाण्यादाय र्पचमावरणार्चनदेवेभ्योनमः ॥ सर्वोपचरार्थे गर्न्यं पुष्पं स० ॥ पूर्वे वज्ञायनमः ॥ शक्तवेनमः ॥ दण्डायनमः॥ खड्डायनमः ॥ पाशायनमः ॥ अंकुशायनमः ॥ गदायेनमः ॥ त्रिश्चलायनमः ॥ चऋायनमः ॥ पद्मायनमः ॥ अभिष्ट सि॰ अंजली पुष्पाण्यादाय ।। पष्टाध्यरणार्चन देवेभ्यो नमः ॥ सर्वोपचारार्थे गंधं पुष्पं स॰ ॥ केशबादि चलुर्विशति नामभिः प्रजयेत् ॥ ततो यथावकाशं सहस्रनामभिः तलशीदलैः प्रजयेत् ॥ सीभाग्य

अविल्रग्रलालं भवश्वेतरक्तं वर्णविभासं वसनाय शोभम् ॥ स्तौ वसन्ते शियदेवतुभ्यं गृहाणपूजां हरिलक्षिविद्यं।। साभाग्य दापकं ॥ अविरेनार्चितो देव श्रीयतां परमेश्वर ॥ श्रीराधिका-सहित प्रश्नोत्तमाय नमः ॥ श्वेतचूर्णं स० ॥ रक्तचूर्णं ॥ ग्रह्मानं रक्तवर्णामं सर्वसंतीप

ख्ळालेनार्चितोदेव प्रीयवां परमेश्वर ॥ श्रीसधिकासहितपुरुपोत्तमायः नमः रक्तचर्णं स० ॥ सिन्दूरं कल्पितं दिच्यं ंंंं धर्षं दर्शानं यदि चेत करोति मासे सहे में अतिवल्लभे च ॥ इदापि कामानतिदर्लभानपि वर्ळ च पुष्टि सुतदारभक्तिम् ॥ १ ॥ .

५-इध- गोठ-१ साव-५-तत्त्वरा-१ इत्डे-१ नदामाति~१ दिशानित-४ कर्प्रा-१ सम-१ ग्रुग्गुल-ए दत्त मीजो अंक प्रमाणे मानवर र्

एस में करीने धूप बरवी, एने दशाय धूप केहे है अंतराने ॥

्रैं दीर्प स॰ ॥ नैवेशं ॥आज्येनयुक्तं रसपद्रयुतं च लेहां च पेयं मधुरं मनोज्ञं ॥ ब्रहाण नैवेश जनार्दनाच्युत श्रिया-सह स्थावरस्थाणवे नमः ॥ श्रीराधिकासहितपुरुषोत्तमाय नमः ॥ नैवेद्यं स० ॥ गायत्र्या संप्रो-ध्य ।। धेन्याऽस्त्रती कृत्य ॥ ग्राससुद्रां प्रदर्श्य ॥ यथा ॥ श्राणायनमः ॥ अपानाय नमः ॥ समानायनमः ॥ उदानायनमः ॥ ज्यानायनमः ॥ अमृतोपस्तरणसि नमः ॥ नैवेद्यांते प्रवीपोशनं ॥ दर्शयद्भासमुद्राः तु मकुङ्गोत्पक संनिभाम् ॥ भाणादिमुद्राहस्तेन दक्षिणेन तु दर्शयत् ॥ १ ॥ कमदीपिकायाम् ॥ कनिप्रानामिके अंगुन्यो स्तांगुष्ठ सूर्व्या चेत् स्पृशेचदा आद्या श्रुत्रा स्याद् ॥ माणाय नमः ॥ वर्तनीयध्यमेचेर्तगुष्ठ मृत्नी स्पृशेचदा द्विरीया ॥ अपानाय नमः ॥ एवं अनामिका मध्यमे चेत्स्पृत्तेचदा तृतीमा ॥ व्यानायनयः ॥ अनामिका तर्जनी मध्यमाधेत स्पृत्तेचदा चतुर्थी ॥ उदानायनमः ॥ ता अनामिका-

है सर्भनी मध्यमाः कनिष्ठा सहितायेव स्पृत्रेचदा पंचवीसपानायनमः ॥ इति भारद पंच रात्रे ॥

सिन्दृरं नागसंभवम् ॥सिन्दृरेणार्चितोदेव प्रीयतां परमेश्वर ॥ श्रीराधिकासहित प्रकृषोत्तमाय नमः ॥ सिन्दृरं स० ॥ धूपं ॥ वृत्तेनयुक्तं परमं रमेश खुगन्धितं चंदन दारुकार्योः ॥ गृहाणदामोद्दर विश्वकाय धूपं मनोहारि दशांग- धुक्तं ॥ श्रीराधिकासहित प्रकृषोत्तमाय नमः धूपं स० ॥ दीपं ॥ वृत्तोक्तवर्तेत्रयनिर्मितं श्रुमं चंद्रज्वलं कांचन पात्रदीपितं ॥ बाह्यंतराज्ञानतमोषहारकं लक्ष्मीपते दीपमित्रितं कुरु ॥ श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमाय नमः ॥

पोत्तमायनमः ॥ मध्ये पानीयं स॰ ॥ उत्तरापोशनं ॥ श्रीराधिका स॰ पुरुषोत्तमाय नमः ॥ उत्तरापोशनं स॰ ॥

नेवेच शेपात् किंपित् इश्वान्यां मन्हादादि वैष्णवार्थ मिक्षिपेत् तत् क्षेपं सर्वेभ्यो मदापयेत् ॥ नैवेचं तुरुग्नी पिश्रं इत्या कोटि विनाश्चनं ॥ इति श्रीदर्नाये च भाचार दर्जे ॥

भिटार भिगेरे मुद्दी तेनारर दुलक्षीपत्रमुक्ती नैदेशनी संकल्प करतो, से अध्यापणी गायक्षीमानधी ते थाक्रीपर पाणीलांटी उत्तीहाथ आंसे अरकाही नमणेहाने 🖔

मगवानने विविद्य नमाडमा, तेमा बेहेत्व आसमन आपी म-पमा पाणी मुकी उत्तर आसमन आपी हायवेश्वर्डा पाननी बीडी उर्वगादीमूकी आपकी

संदत, पूज मगवानने चहावीदेवा.

पटं। धूर पात्रनों घूप सर्वासळगावी भगवानने बतावर्गा, तथा दीवारूरी तेमते दीवातं पूरनकरतुं तथा एक सारापात्रमां नानामकराना टावेछ। मेवा

र्वं गंगादितीर्थाम्बलवंगेवासितं सुधाकरः श्रीधवलं करेऽर्पितं ॥ प्रभाकरश्चाचमनं पवित्रितं ग्रहाण लक्ष्मी स्म-णार्पितं त्रभो ॥ श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ पूर्वापोशनं स० ॥ मध्येपानीयं ॥ शीतर्लं मधुस्मुत्तमोत्तम म् वासितं बहुविधैः सुर्गिधिभिः ॥ स्वीक्ररूच करुणानिधेत्रभो गांग मंसु कमलालयासह ॥ श्रीराधिकासहित पुरु

तथा पान सोपारी मुकी तेनापर यजाराकी दक्षणा मुक्तवा, दक्षणा मुक्तवानुं कारण ओधुंनधारे थयछुं पूर्णधाय तेनजे एमपाणे थयापजी अर्था आपवानी बाल्जे. कर अही नमावता समातिये आकृता योग्यारे हवे वित रामोपनारिनियत्त चट्न. युन्य, हायमा लह, मनवामनी मानसीक उपनारिनेट पुनाकरी

जातीफलेन्द्र मृगनाभि सुगंधीयुक्तं एलालवंग खिरारुण पूर्ण चर्णं ॥ तांबुल वीटिकमनेकरसंखरेश संकेल्पितं स्वददनांबुरुहे गृहाण ।। श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ फलताम्बुलादियुक् बिटिकां स० ॥ दक्षिणां ॥ न्यू-नातिरिक्त परिप्रजन प्रतिकामः कामःभदाय कमलापतये प्रियाय ॥ नाधाय सर्वजगतां सर्वदिताय मदार्पण भगवते त समर्पयामि ॥ श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तमायनमः ॥ दक्षिणां स० ॥ उर्द्य आरात्रिकं ॥ रीप्यमया दिपात्रेस्वतिकं कृत्वा ॥ दीपान्तश्रज्वाल्य ॥ दिपस्थदेवताभ्यो नमः ॥ गृंधपुष्पं स० ॥ ज्यदेव जयदेव जय संधाजाने त्वदपरमिष्यं समस्हरमनसापिनजाने ॥ जयदेव जयदेव जयश्री त्रिष्ठणातीत ॥ जयअधिमासाधीश सहराधापुरुपोत्तम मां तारवजगदीश ॥ जय० ॥ सधावर पुरुपोत्तम सुरलीचरत्यामं निवासनिजगोलोक मोक्षपरे भामं ॥ वर्जाकुश कमलञ्चल लांखन शुभचरणे नपुर रत्नजडीत्र वहु कांचन भरणे ॥ जय० ॥ १ ॥ पीतांबर १ कर्पुरेणतु यः कुर्यात् भवत्या वैव समा व्रतः ॥ आराभिकं दिज श्रेष्ट मिबेकेन्माक्ष्यतकम् ॥ १ ॥ विराजनं तु यः पश्येत सहोयासे समाव्रतः॥ 🔏 सञ्जन्म भविद्विमा ड्येन्से च पर्स एउं ॥ २ ॥

अन्रतोषिधानमसि नमः ॥ श्रीराधिका॰ हस्त॰ मुख प्रक्षालनार्थे जलं स॰॥ श्रीराधिकास॰ करोदर्तनार्थे गंधं स॰ एलालवंगा कमकेःसमेतं कप्रत्यक् तांबलिपर्ण आख्यं॥ तांबलमाओग सखायविष्णो ग्रहाणपीत्या भगवजमस्ते॥ वि॰को॰ 🖟 अति संदर् शोभित कटिमागे कटिमेखला सहिकंकिणि स्तजिबत् समे ॥ वशस्थल वहुदीपक् तदुपरि भृष्ठवरणे 🎉 🗝 🤻 कीस्तु म मिणवनमाला रुक्ष्मी मिणरमणे ॥ जय॰ ॥ २ ॥ हास्योपेतं वदनं विवाधरयुगुरुं नेत्रे कजल भाले 💸 टा। दें कस्तरी तिलकं ॥ अलकाविल बहुरीजत मुक्टे शिलिपुच्छं काने छंडल मुक्ता फलसह मणिगुच्छं ॥ जय॰ ॥ ॥ ३ ॥ तिल्कुसुमोपमनाशं पंकज दलनयने सप्तस्वर संवादित सुस्लीवरवदने ॥ केंद्रे सुकाहार स्तमया भरणे वक्षस्थल श्री सेवित वहुबाहुरमणे ॥ जय० ॥ १ ॥ चंपक मय वपुभाले केकम ब्रिहि राजे सर्वांगे मणिभूपण रक्तांवर छाजे ॥ वंद्रवदन गजगापिनि कोकिल स्वरगाजे राथा रूपमनोहर अमर खुवति। लाजे ॥ जय॰ ॥ ५ ॥ एवं बुग्रलस्वरूपं राधा सह दिशुजं ध्यानं आरतिसमये कृत्वा हरिदिभुजं ॥ भवत्या करोति दास नीरांजन दारे अपनाशन भवमोचन तास्य भवपारं ॥ जय॰ ॥ ६ ॥ स्मरण निरांजन समये नारायण विष्णो राघापति पुरुषोत्तम वामन प्रभुजिष्णो ॥ श्रीराधारुष्ण स्वरुपं ममहदये वसितं किंकरनागर नुमानि श्री चरणे व सितं ॥ जय० ॥ ७ ॥ शाखेन्दी व्यस्यामं त्रिभंगललिताकृतिम् ॥ नीराजयापि देवेशं राधया सहितं हिस्स् ॥ १ ॥ समस्त चक्र चुकेश खुतोदेव नवात्मक ॥ आराज्यिकोमदं खुभ्यं गृहाण देवेशं राध्या सहितं हरिस् ॥ १ ॥ समस्त चक्र चक्रशं छतिद्वं नवात्मकः। जाराज्ञम्भवदं छन्य पृष्टान्याज्ञा मद्तुग्रह् ॥ १ ॥ अंतस्तेजो बहिस्तेजो एकीकृत्य मितप्रभा ॥ त्रिपादिवं सविभाग्य क्रुळे दीपं निवेदयेत्॥॥

धिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ प्रदक्षिणां स० ॥ मंत्रपुष्णांज्ञलां ॥ **अं**ज्ञल्हो पुष्पा**ण्यारायः ॥** तबचरण- 🐉 सरोजे मन्मथश्रंचरीको भ्रमत सत्तर्माशे प्रेमभक्त्यासरोजे ॥ भुवन विभव भोगात्तापशांत्वीपथाय हट- 🖁 सुपरिपनमां देहि भक्तिं च दास्यं ॥ १ ॥ भवजल्रिघ निमन्न श्चित्तमीनोमदीयो भवति सततमरिम न्घोर संसार वाले कत्या त पानीयं श्वामितं केववोपरि ॥ सक्षियौ वसते विष्णोः कर्लातं शीर सागरे ॥ ? ॥ मंगळार्य माहाराज जीराजनिमयं हरे: ॥ सर्ग्राण नगन्नाय कृष्णचंद्र नपोस्तते ॥ २ ॥ इति हरि भक्ति विलासे ॥ हवे दरेह देवनी इन्ही आरती करना जोड़ये छे. ते पण कर्मुरुक्षजयंथी जोड़ये तेयतीनर्धा पण करना योग्य छे. माटे एक उत्तम पाजना सार्थायोकादी कि अथवा चोला सुनो तेनास कपूर सळागावी सुकतु, तथा ते वात्रखर देवनेनोवा बासणी तेनेमाटे ते वसते देवनागुणी भाव छे. जेनाधा ठाकोर्नी प्रसन्न 🗸

🐫 भाग छे, आरबी मरमानी विवि (४) मा अगार्श (२) नाथा मासे (१) मीडा आगळ (७) सक्के वरिरे ए प्रमाणे आस्तीना आद्य उतारी. नीचे मुक्ती.

मंगलं भगवाव्।। श्रीसिषकासिहत पुरुषोत्तमाय नमः।। नीराजनं स०।। जलेन श्रदक्षिणी कृत्य ।। पुष्पं गृहीत्वा ।। देवोपरी निक्षिपेत ॥ आत्मनाभिवंदनम् ॥ इस्तप्रतालनम् ॥ श्रदक्षिणां ॥ नश्यन्तु पापानि च ये कृतानि जन्मान्तरे ग्ररूलग्रन्थथ वेहजन्मनी ॥ प्रदक्षिणेनेव तु माम् समुद्धर योगीश प्र्रणकृपया शुभवा िषपण्यात् ॥ रक्ष रक्ष जगनाथ रक्षजैलोक्य रसक ॥ भक्तानुग्रहकतीत्वं प्रदक्षिणां ग्रहाणमे ॥ श्रीस्-

🎼 कूवे ! विषयमति विनर्ध सृष्टि संहार रूप मपनयतवभक्ति देहि पादार्गवेदे ॥ २ ॥ तव निज जन सार्थ संगमो मे 🖫 🖛 २ मदीरा भवत्वविषयवंथ च्छेदने तीक्ष्ण खड्गः ॥ तव चरण सरोजे स्थानदाने कहेतु र्जनुषि जनुषि भक्ति देहि वादार्सवेदे ॥ ३ ॥ बार्लनीलांबुजाभ मतिरायक्षेवरं स्मेखश्चांबुजं तं ब्रह्मेशानं तथ्मैंः कतिकतिदिवसेः स्तूयमानं 🕄 💲 वरं यत् ॥ च्यानात्साच्यं रुपिंद्रै मुंनिगणमनुर्जेः सिद्ध संघे स्साध्यं योगीदाणामर्चित्य मतिशयमनुरुं साक्षि रुपं। मजेऽहम् ॥ ४ ॥ यह्नेश्वसय देवाय तथा यह्नोद्भवाय च ॥ यह्नानां पतये नाथ गोविदाय नमोनमः ॥ ५ ॥ जितं- १० 🖞 ते पुणीकाक्ष नमस्ते विश्वभावने ति० श्री राधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ मंत्रपुष्णांजर्लि स० ॥ स्तुतिपाटः ॥ 🖏 भूषादी यस्यनाभि विवदस्रपीनल श्रंद्रस्यींच नेत्रे कर्णावासाशिसेद्यी सुवमपिदहर्नी यस्यवास्ते यमविधः ॥ अत

भृपाद्दी यस्यना।भ ।वयद् स्थानल श्वद्रस्थान चन्न पत्नावासातास्याचा स्वरापावस्था । जलं न येषां तुस्त्रसी विभिन्नं एजीते विश्वयाद्वात् ।। वतु चराद्वत्वात् ।। येतु वयवात दिने मान् कर्मणश्च न पित्रति ते स्रांताः ॥ जलं न येषां तुस्त्रसी विभिन्नं प्रांति विश्वयाद्वात् ।। वत्याद्वत्वं पीत्या विश्वयाद्वात् पीत्याद्वे प्रांति व्यत्वित्वं प्रांति अपित्वं ह्यतेन गात्रं स्थेन्द्रते धर्म विश्वयात्मा आस्त्रः स्थेन स्थाना प्रांति अभ्या व्याप्ति स्थाने अभ्या व्याप्ति स्थाना प्रांति स्थाना प्रांति अभ्या व्याप्ति स्थाना प्रांति स्थाना प्रांति स्थाना प्रांति अभ्या व्याप्ति स्थाना प्रांति अभ्याप्ति स्थाना प्रांति अभ्याप्ति स्थाना प्रांति अभ्याप्ति स्थाना प्रांति अभ्याप्ति स्थाना प्रांति अभ्यापति स्थाना स्थाना स्थाना स्थाना प्रांति अभ्यापति स्थाना स्थ

्रे ग्रहेंने करवानी चाल छे.

्रैं वें होंसाश्रीसिषकासहित पुरुषोत्तमायनमः॥स्त्रुतिपांड स०॥विह्येषार्घः ॥न।लिकेरं॥ श्रीफलं श्रीपदं प्रोक्तं श्री-🕯 पथाद शुचि क्षंक्रया ॥ यथाचापति संमोहात् ब्रह्महर्यां सर्विदति ॥ पादीदकं विवेक्षित्यं नैवेद्यं मक्षये द्वरेः ॥ शेवंद मस्तके भाय इति वेदानु 🕺 🐉 चासनं ॥ चाळप्राम शिलाबेव मपित्वा यस्तु मस्तके ॥ मशेषणं मञ्जर्थीत झढाहास निमयते ॥ शाळप्राम शिलातोयं पिनेद्दाम फरेणातु ॥ अज्ञाना देंदवं मोक्तं ज्ञानादर्दं समापरेत ।। विष्णोः पादोदकं पीत्वा कोटि जन्मायनाञ्चनं ॥ तदेवाष्ट्र गुणं पापं भूमी विंदु निषातनात् ॥ आयसे च तथा कांस्ये कांग्रे वाळांजुके तथा ॥ वधृत्य पादसिक्छं मधतुत्वं विनिर्दिशेत् ॥ श्रीविष्णोः पादसिक्ष्णं करे कृत्वा सुखे सिपेत् ॥ बसी, छत्र, वाबुका, बिनणो, आरसी, बामर, बिगेरे होय ते उपचारी करवानांजे, प्वीरीते ध्यापाठि समयाद्यसर स्तृतीकरी यथावाकि जपकरवे। तथा विनो सक्तरकरी विशेषार्त आरवा तथा त्राहणाधीनवनो सक्तरप करवी सूचर्सानी सक्तरकरी जासणपूनन भयापत्री जानहणीए आशोरीद आपवा, करेनु कर्म

्रीस्थं यस्य विश्वं ह्यर नर खगगो भोगि गंधवेंदैर्त्ये श्चित्रं रं रम्यतेतं त्रिशुवनवपुर्व विष्णुमीशं नमामि ॥ १ ॥ ्रीविश्वेश्वसय विश्वाय तथा विश्वोद्धवायच ॥ विश्वस्य पत्तये तुभ्यं गोविन्दाय नमोनमः ॥ २ ॥ ्रीयंदे कृष्णग्रणातीतं गोविंदमेकमक्षरं ।। नविंदे निरदस्यामं कन्दर्प सुंदरं हारें ।। ३ ॥ गृंदावन वनाभ्यन्तं 🖁 रासमंब्ल संस्थितम्।।लसत्तपीत पर्ट सोम्यं त्रिभंग ललिता कृति।।४।।ससेश्वरं ससवासं रासोलास समूलकं।।दिशुजं 🗿 ैं||सुरलीहस्तं श्री वरसंकीर्तिमञ्खतं॥५॥नौमी नव घनश्यामं पीतवास समञ्जुतम्॥श्रीवत्सभासितोरस्कं राधिकासहि-

विश्वार १ पूर्व सुसवर्धनम् ॥ श्रीफलार्च प्रदानेन प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ श्रीसधिकासहित पुरुषोत्तमायनमः ॥ विशेषार्घ 🐉 प्र स॰ ॥ १ ॥ फर्छ गृहीला ॥ देवदेव नमस्तुभ्यं पुराण पुरुपोत्तम ॥ गृहाणार्घ्यं मयादत्तं राथयासहितो हरे ॥

पुरुषोत्तमः प्रीयतो ॥ कृतस्य कर्मणः सांगता सिष्पर्थं आचार्यादीन् अवेत्हि भोजियष्पे ॥ पुनर्जेल मादाय ॥ अद्त्वा पिनवे स्रेवं रीरवे नरके वसेत् ॥ अद्रखा विष्यस्से नादिभ्य इति ॥ ब्रहणमंत्रः ॥ अकाल पृत्यु इननं सर्वव्यापि विनाशनं ॥ विष्णोः पादोदकं पीत्ना शिरसा धारपाम्यहं ॥ इति हेपाद्री मानवीये ॥ या मूलेन चरमोदकं पीत्ना नैनेयादिकं देवस्य भरत्या विभन्य दस्या ॥ साप-मपि भुवत्वा सुरेवन विदरेत् ॥ इति गोविंदार्चन चंद्रिकायां ॥

भगवानने अर्थण करतुं तथा मध्याननु चरणामृत पेटार्था नागीतूं होयतो छेतु तथाराधी थमवानना समरण पूर्वक गीत वार्नित पुरसर व्यक्तीत करकी, एटछुं 👫 🛚 🖰 ११४८

प्रथम दिवसनुहत्त्व संपूर्णपर्वं, पत्री बीने दिवसे सवारे पोतानुं नित्यकर्म परवारी पेतान्याआसगर आबी बेसचुं, तथा स्थापितदेवीनुं वधाशान्ति पूनन करावुं, ते

🟅 तिलकं कत्वा अनेन यथाद्वानेन यथावकाश प्रजन कृतेन साधिकासहित पुरुषोत्तमाद्यावाहित देवताः प्रीयंतां ॥ राक्तिश्चेत ॥ गीतशास्त्र पुराणकथा श्रवणादिना सत्रिनिनयेत ॥ इति पुर्वादिवस कृत्यं ॥ दितीयेन्हि पातरु 💡 त्थाय ॥ नित्यवतस्नात्वा ॥ नित्यकर्म समाप्य ॥ स्वासनै उपविश्य ॥ पूर्व स्थापित गणपत्यादिदेवतानां है सनत्या पुजनं समाप्य स्थंडिल समीपे गत्वा उपविश्य ॥ आचम्य प्राणानायम्य ॥ अद्यत्यादि० कृतोद्यापनाङ्गभृतं 💸 प्रवासको केन अथवा स्पेडिल्यामें जर संकल्पकरको तेना बेदसके, एक तो स्थापनकोला देवीनेन दश्चांस आवतो अथवा समहसंकल्पकारों होयतो तेमनो जे व वस्था होय तेपमाणे तेपने होम करकोरोहये. हवे तेयह तेम विभान करवेते, मोटोपल छेवोहोयतो पेहेला प्रकरणना १४ पत्रथी प्रधानपूर्वक है

ै कितस्य॰ गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भ्यसी दास्ये ॥ आशिर्वादः ॥ स्वस्तियाचा॰ ॥ अग्निरिव श्रुचिर्भव आदित्याइव 🕺 ्रे तिजो भव ॥ विष्णुरिव श्रीमान भव बह्याप्रराखर्भव आयुर्भव ॥ १ ॥ इमेश्रिये पदाहरते सुगंधे वसस्थले पुण्य 🖁 ैं सजायमानैः ।। प्रमोदमानै रिभमन्यमानैः पुत्रैः पैत्रिवर्धतां दीर्घमायुः ।। २ ।। सभगे वरुषं वंश्वो भागमीपर्धि ्र प्रविधा ॥ आकल्याणि तन्त्वा श्रंभमाने रिपंपुत्रान्सततंदीर्घमायुः ॥ २ ॥ देवस्यगेहे सुनयो वसन्ति देवानां 🕺 कनयः पार्धिवासः ॥ देवा इदंगे समनस्यमानौ दिवि देवा वसवो दीर्घमायुः ॥ ३॥ मंत्रार्था॰ इत्याशिर्वादः ॥ 🕺

विश्ति होमं करिन्ये। तत्रादो निर्विप्रता सिन्यर्थं गणपति स्मरण प्रवेक मण्निस्थापनं करिन्ये ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ 🐉 प० ३ सुमुखर्थेकदंतश्च कपिलो गज कर्णकः ॥ लंबोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ ५मकेलुर्गणाध्यतो भाळचंद्रो 🖔 ॥१४१॥ र् गजाननः ॥ ( कृतव्रताङ्गमृतं ब्रह्मस सहितसुक्त इवनं करिष्ये ) ॥ तदङ्गमृत मद्यान्हि विहित प्रथम प्रकरण स्थित गणपति प्रजनादारभ्य श्रहहोमान्तं प्रवृदत् ऋत्वा।।आचार्यः जलं गृहीत्वा ।। यजमानान्त्रवया पंच भू संस्कारपूर्वक अनिपतिष्ठां करिन्ये ॥ दभैः परिसमुद्य त्रिवारं ॥ गोमयेनउपलिप्य त्रिवारं ॥

आत्माभिमुखर्मार्गे संस्थाप्य ॥ दक्षिणतो ब्रह्मासनं ॥ उत्तरतः प्रणितासनं ॥ यावतः कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव ॥ बह्यानुद्भातः उत्तरे प्रणीता प्रणयनं ॥ वामकरेण प्रणीतां संगृह्य ॥ दक्षिणकरेण जलं प्रपूर्व ॥ भूमो 🕏 निधाय ॥ आलम्य उत्तरतोग्नेः स्थापनं ॥ शहैः प्रदक्षिणमत्रेः परिस्तरणं ॥ प्रस्तात दक्षिणतः पश्चात् उत्तरतश्चा। अनंतं चोपदीतं च दीप दुर्वा हुवाजनः ॥ अन्रतिष्ठा सदाकार्या मित्रिष्ठा हानिदा भवेत् ॥ १ ॥ इति गोविदार्चन चंद्रिकार्या ॥ अर्नतं चोपवीतं च दीप दुर्च दुवाशनः ॥ अप्रतिष्ठा सदाकार्यो प्रविष्ठा हानिद्। भवेत् ॥ १ ॥ इति गारिदाचन चादकार्या ॥ विष्णुस्ति कार्याते अप्रतिष्ठा निहेन छत् सपात करवो, यजपाने आदयन प्राणायानवर्ता जळल्द केहेत्रे. उत्तहोमकरुंज्यं, पर्जा गणपानित्यरणकरी पंसप्तिरंकारकरी

ु इसेनउ हिल्य त्रिवारं ॥ अनामिकांग्रहेनउभूत्य त्रिवारं ॥ उदकेनाभ्युष्य त्रिवारं ॥ अभिमुपसमाधाय ॥

र्जेहरानं ॥ प्रणीतोदकेन प्रोतणीनां प्रोत्तणं ॥ आज्यस्थालिं प्रोक्षयामि॥ चरुस्थालिं प्रो०॥संमार्जन कुशान् प्रेर०॥ जपयमनकुरानि मो० ॥ समिधः मो० ॥ खुर्च भो० ॥ आज्यं मो० ॥ तण्ड्लान मो०॥ पूर्णपात्रं मो०॥ प्रणीताग्न्योमेध्ये प्रोक्षणीनां निधानं।।आज्य स्थात्यामाज्य निर्वापः।।चरुस्थात्यां तण्डलप्रक्षेपः।। तस्यित्रःमक्षारुनं ।। प्रणीतोदकमार्षिच्य।।दक्षिणतः आज्याधिश्रयणं॥मध्ये चरोरधिश्रयणं॥गृहीतोत्सुकेन पर्यग्निकरणं॥अर्धे श्रिते चरोः सुवृषतपनं॥संगार्जनकुरीः सुवस्य संगार्जनं॥अंग्रेखा।मूर्रेर्मूलं॥गृगतोदकेनाम्युक्षणं॥पुनःप्रतपनं॥देशोनिधानं ॥ अंफ यसेविनी वंध्यां प्रसुधाभ्यो न गोभयं ॥ जीर्णायार्थेव लेपार्थ माहरेवतु बाहिवं ॥ इति रेणुकारिकायां ॥ अभी स्पापनकरी प्रशाही करें। हेवी तथा आग्रसादी आहति आणी. यजमानसते स्यामसकरूप नतावणो, प्रथानहोमनी आहुति (१००००) है भागवी जोर्स, ते न बने तो (१०००) अथवा (१००) तेना प्रमाणे तेना देवताओंथी (१८) अथवा (८) अथवा एक अटकमें है

एवंत्रिः ॥ पात्राऽसादनं ॥ पवित्रकेदनादर्भाक्षयः ॥ पवित्रे दे त्रोक्षणीपात्रं ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्थाली ॥ संमाजनकृशाः पंच ॥ उपयमनकुशाः सप्त ॥ समिष स्तितः ॥ स्रवः ॥ स्रवं ॥ आज्यं ॥ तण्डलाः पूर्णपात्रं ॥ अनामिकांग्रहेन द्रयोखं हेदयेव ॥ दिग्राहां ॥ त्रिणि श्चित् ॥ त्रोक्षणीपात्रे त्रणितोदकमापिंज्य ॥ उत्पवनं

आज्योद्धासनं ॥ चरोरुद्धासनं ॥ पवित्राभ्यासुत्पवनं ॥ आज्यावेक्षणं ॥ अपद्रव्य निरसनं ॥ प्रोक्षिण्याः प्रत्युत्प-वर्त ॥ उपयमनकश् ग्रहणं ॥ तिष्ठत् समिथोम्याश्याय ॥ श्रीक्षण्युद्कः शेषणः सपवित्रहस्तेन अहेः पर्युक्षणं ॥ े पवित्रयोः प्रणीतासु निधानं !। दक्षिणं जान्वाच्य ॥ ब्रह्मन्वारूथः सुवेण जुहुयात् ॥ प्रजापतये नमः ॥ इदं० ॥ 🕏 े इंद्राय नमः ॥ इदं०॥ अत्रये नमः ॥ इदं०॥ सोमाय नमः ॥ इदं०॥ वरदनामानमप्रिमावाहयामि ॥ वरद नान्ने वैश्वानराय नमः॥ गंधं स॰ वृष्पं॰ धूपं॰ दीर्प॰ नैवेद्यं॰ अनया पूजवा अग्निः प्रीयतां॥त्याग संकल्पः॥ <sup>°</sup> इदं संपादितं समित्ररुतिराज्यादि हविद्रेञ्यं या या यक्षमाण देवतास्ताभ्यः ताभ्यः मया परित्यक्तुं नमम ॥ यथा<sup>.</sup> ै दैवतमस्त ॥ अथ प्रधानहोमः ॥ समित्तिलान्यवरुणा वा पायसेन जुहुयात् ॥ ( ईा भगवते वासुदेवाय मुद्रामी तु पचेदशं छीकिके वापि नित्यशः ॥ यस्मित्रमी पचेदशं तरिमन्द्रीमी विधीयते ॥ इति मनुक्तेः ॥ विहानेश्वरा परार्के मेघावि

धयो व्येव भाहः ॥

हेबी, प्रधाननी (१०० न्यहनी (२८) ने परिवार देवतानी (१) तथा ब्रम्हादिनी पण (१) एवीरीते ते ते कोटीना प्रत्येक देवने उद्देशीन समजनु,

े तथा ओसुं क्योरेपसुं होय तो पण परिपूर्णभंश क्याइतानी होमनण पूर्वनी आहुतीना प्रमाणे करवो,

प्णवे॰ ।। ३ ।। हरवे॰ ।।श। कृष्णाय॰ ॥ ५ ।। अशोक्षजाय॰ ॥ ६ ।। केशवाय॰ ॥ ७ ।। माथवाय॰ ॥ ८ ॥ समाय॰ ॥ ९ ॥ अन्युताय॰ १० ॥ पुरुषोत्तमाय॰ ॥ ११ ॥ गोविन्दाय॰ ॥१२॥ वामनाय॰ ॥१३॥ श्रीशाय॰ 🕺 ॥१४॥ श्रीकण्यायः ॥१५॥ विश्वसाक्षिणेः ॥ १६ ॥ नारायणायः ॥ १७ ॥ मधुरिपवेः ॥१८॥ अनिरुद्धायः । ॥ १९ ॥ त्रिविकमाय॰ ॥ २० ॥ वासुदेवाय॰ ॥ २१ ॥ जगद्योनये० ॥ २२ ॥ शेपतल्पगताय० ॥ २३ ॥ 🖟 संकर्पणायः ॥ २४ ॥ प्रह्मम्नायः ॥ २५ ॥ दैत्यास्येः ॥ २६ ॥ विश्वतोमुखायः ॥२७॥ जनार्दनायः।।१८॥ 🕏 धराधाराय॰ ॥ २९ ॥ श्रीधराय॰ ॥ ३० ॥ एताः परिवास्त्वताः ॥ मंडकादि देवताः ॥ मंडकाय॰ ॥ १ ॥ मूलः अन दान भागवतोक्त. मंहुकादि परिचार देवतानां स्थापनं स्वीकृतं ॥

नमः इति ) अयुतं वा सहस्रतंस्यया जुहुयात् ॥ अथवा हीं श्रीराधिकासहित पुरुषोत्तमाय नमः ॥ इति सर्वे क्षेत्र समण्य मंत्रणोक्तसंस्यया होमं समाप्य ॥ ततो परिवासदिदेवात् एकेकामाज्याहुतिं दश्चात् ॥ चतुर्व्यूहदे- हे वात् अष्टार्विशति संस्थया ॥ वातुदेवायनमः ॥ २८ ॥ १ ॥ हल्लप्राय नमः॥ २८ ॥ १ ॥ महावि- हि

कि॰की॰ । १ ।। आधारसक्त्ये॰ ॥ ३ ॥ इमीय॰ ॥ ३ ॥ अनंताय॰ ॥ ५ ॥ वसहाय॰ ॥ ६ ॥ पृथिव्ये॰ ३ प्रश्निक्ति। ।। ।। अधारसक्ति। ।। ।। मणिदीपाय॰॥९॥विंतामणित्रहाय॰॥१०॥स्मशानाय॰॥११॥ पारिजाताय॰॥१२॥ द ॥१४३॥ 🖟 सनवेदिकार्ये०॥ १३ ॥ सनसिंहासनाय०॥१४॥ धर्माय॰ ॥ १५॥ ज्ञानाय॰ ॥ १६ ॥ वैराज्याय॰ ॥ १७ ॥ 🐉 ऐश्वर्यायः ॥ १८ ॥ अधर्मायः ॥ १९ ॥ अवैराग्यायः ॥ २० ॥ अनेश्वर्यायः ॥ २१ ॥ आनंदकंदायः ।। २१ संविज्ञालाय ० ॥ २३ ॥ सर्वतत्वात्मकपद्माय ० ॥ २४ ॥ प्रकृतिमयपत्रे ० ॥ २५ ॥ विकारमयकेसरेभ्यो ० ॥ २६ ॥ ुँ। पंचारादर्ण वीजाब्य कर्णिकाये०॥ २७॥ अं द्वादशकलातमने सूर्यमंडलाय० ॥ २८॥ चं पोडशकलातमनेचंद्र 🕺 मुंडलाय॰ ॥ २९ ॥ मंदशकलात्मने वन्हिमंडलायनमः ॥ ३०॥ सं सत्वाय॰ ॥३१॥ रं रजसे॰ ॥३२॥ तं तमसे॰ हैं। ।। ३३ ॥ आं आत्मने० ॥ ३४ ॥ अं अंतरात्मने० ॥ ३५ ॥ पं परमात्मने० ॥ ३६ ॥ -हीं ज्ञानात्मने० ॥ ३७ ॥ एताः मंडुकादिदेवताः ॥ त्रह्मादि देवताः ॥ त्रह्मणेनमः ॥ १ ॥ सोमायनमः ॥ २ ॥ ईशानस्य० ॥ ३ ॥ इंद्राय । । ४ ॥ अमये ० ॥ ५ ॥ यमाय ० ॥ ६ ॥ निर्ऋतये ० ॥ ७ ॥ वरुणाय ० ॥ ६ ॥ वायवे ० ॥ ९ ॥ अष्टव द्वार्थाः ॥ १०॥ एकादश स्ट्रेम्योः ॥ ११ ॥ द्वादशादित्येभ्योः ॥ १२ ॥ अश्विभ्याः ॥ १३ ॥ विश्वेभ्यो दे

हैं मिरवे० ॥ २२ ॥ मदायै० ॥ २४ ॥ त्रिशूलाय० ॥ २५ ॥ वजाय० ॥ १६ ॥ शक्र्ये० ॥ २७ ॥ दंडाय० ॥ १ ॥ अस्त्राजाय०॥ १२ ॥ मरद्राजाय०॥ १२ ॥ मरद्राजाय०॥ १२ ॥ मरद्राजाय०॥ १२ ॥ मरद्राजाय०॥ १२ ॥ विश्वामित्राय० ॥ १४ ॥ कर्यपाय० ॥ १५॥ जमद्रग्नये० ॥ १५॥ विश्वाम् । १५०॥ अत्रये० ॥ १८ ॥ अर्ध्यत्ये० १ १८ ॥ अर्ध्यत्ये० १ १८ ॥ अर्ध्यत्ये० ॥ १५ ॥ व्याह्मये० ॥ १५ ॥ वास्त्रवे० ॥ १३ ॥ वास्त्रवे० ॥ १४ ॥ वास्त्रवेण वास्त्रवेष्ये० ॥ १४ ॥ वास्त्रवेष्ये० ॥ १५ ॥ वास्त्रवेषये० ॥ अग्ने वास्त्रवेषये नमः ॥ १८॥ होमं समान् १

🕯 👊 ॥ कृतस्य कर्मणः सांगतासित्र्यर्थं स्थापितदेवतानां मृडाग्नेश्चोत्तर पूजनं करिप्ये ॥ इति संकल्प पूजपेत् ॥ 🕏

्रै विभ्यो ।। १४ ।। सप्तयक्षेम्यो ।। १५ ॥ नवज्रलनागेभ्यो ।। १६ ॥ गंधर्वाप्सतेभ्यां ।। १७ ॥ स्कंदाय ० ६ १ ॥ १८ ॥ नंदीश्वराय ।। १९ ॥ श्रूल्यय ।। २०॥ महाकालाय ।। ११ ॥ दक्षादि सप्तगणेभ्यो ।। १२ ॥ ६ इर्गोपे ।। २६ ॥ विष्णवे ।। २४ ॥ स्वयंपे ।। २५ ॥ चत्रुरोगाभ्यां ।। २६ ॥ गणपत्ये ।। २७ ॥ अङ्गयो ० ६ १ ॥ २८ ॥ मरुद्रयो ॥ २९॥ प्रथिवे ॥ १०॥ गंगादिनदीन्यो ।। ३१ ॥ सप्तमागरेम्यो ॥ १२ ॥ १ बि॰को॰ ि मुद्दारनथे नमः ॥ गंधं पुष्पं भूगं दीपं नेवेचं समर्पयामि ॥ (त्तो अहादीनां स्थापनं कृतं चेत तेपां उत्तर पूजनं र्हे श्लिकार्थं ॥ ) ततो गणपत्मादि स्थापित देवतानां यथा शक्त्या पंचीपचारैः पूजनं क्रयात् ॥ स्विष्टकृद्धीमः ॥ अ ॥१४४॥ है स्तर्वे स्विष्टकृते नमः ॥ इदमन्त्रवे स्विष्टकृते नमम ॥ ततो नवाहृतयः ॥ अन्त्ये इदम्पन्ये नम्म ॥ ९॥ है वायवे नमः ॥ इदं वायवे० ॥ २ ॥ स्योव० इदं स्याव० ॥ ३ ॥ अग्निनवरुणाभ्यां० इदम्बिनवरुणाभ्यां ॥ ४ ॥ 🥇 🎖 अग्निवरुणाञ्यां व्हदम्मिनवरुणाभ्यां नमम् ॥ ५॥ अग्नये अयसे नमः ॥ इदमग्नये अयसे नमम् ॥ ६॥ वरुः 🕏

| आणाप सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्रयः स्वकंभ्यो नमः ॥इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो 🕏 🐉 मरुद्रयः स्वकॅन्यश्च नमम ॥ ७ ॥ वरुणायादित्यायादितवे च नमः ॥ इदं वरुणायादित्यायादितवे च नमम्॥८॥ 🐉 🗽 प्रजापत्तये नगः॥ इदं प्रजापत्तये नमम् ॥ ९॥ अथं विख्यानं ॥ इन्द्रादी दश दिक्पालेभ्यः साँगेभ्यः सपरिवारे 🦠 अर्थे-होमप्यापाठि मृहाप्रिना पूनन पूर्वक स्थापित देवातुं उत्तर पूनन करावा. स्विष्टश्रद्धोव करी नवाङ्गीतयो आफ्वा, तथा इन्ह्रादी वदादिवपालीतु स्छी 🟅

पूरुवी पूर्णोद्वृति होमन्तरवर्षे, छिषमं पुरुभरीने तेनाउपर नालिकरमुकीने नेदेवत प्रधानत्वहोय तेनामन्नी भणी ( नीततपुण्डरीकाक्षभणी ) ने नालीकर है

हैं हिमनु परे पूर्णहित करेंट, ते पयाची बीज एकसोपारी छर सुबामरी छतल्द तेनावरमुको (मगोस्वनंतायभर्णा०) होमनुं पत्री इशाने स्टक्छरा-पारी

ह्याय आशी. केटना इशानकाणायाथी प्रसन्दर यममाननाकपाळे वर्षी पूर्ज सूनामाणा मुकाबी क्षुशाबी सपास वर्षी तथा सकाने पूर्णियात्र आपदे, तेमी 👰

प्रहाराणां कवचं भववारणं ।। एवं देवोपघातानां शांतिर्भवति वारुणं ।। यजमानस्य रुळाटादिपु कृत्वा ।। संकरपः।। 🖇 आधाराबादि पूर्णाहृतिपर्यंतं येन येन मंत्रेण हतं यावत् यावत् संस्थाकंद्रव्यं यस्यै यस्यै देवतायै यावन्त्यो यावन्त्याः 🏋 इतयः सा सा देवता शीयतां ॥ संस्वत्रशसनं ॥ पवित्राभ्यां मार्जनं ॥ अम्री प्रतिपत्तिः ॥ महाणे पूर्णपात्रदानं 🖇 रुतस्य॰ बहात् इदं तुभ्यमहं संप्रददे ॥ प्रणिताविमोकः ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ अजासंतानवाहन ॥ यत्र ब्रह्माद् 📝

(मणरा। मेर४ पोला तेर्ड पूर्णमात्र केनायर ) तेने बदले यममानना श्रद्धाप्रमाणे भुकाची अधायर्रे, एप्रमाणेनी सबळी विधि पयावर्रे अतिविसर्गन करावनुः 💸 वैमा पानुसोक्तर्रा पुनदाकरी होमवानो बाल्डे १ण मत्रधीन करतुं नेद्याते थवापत्रि पुनाकरनारना सासीपी चाह्ये एटले बल विगरे आपवानी में बाल होयाते

क्रामी करीपी पूर्वमा स्थापन करेता देवपासे नइ पाटसापर पेसवु.

भ्यः सायुर्धेभ्यः सराक्तिकेभ्यः ॥ इमं यथोपनीतं वर्लि समर्पयामि॥भो इंद्रादिदशदिक्यालाः दिशं रक्षत वर्लि भक्षत 🐉 मां सकुडंबं रक्षत ॥ मम गृहे आयुःकर्तारः प्रष्टिकर्तारः चष्टिकर्तारः निर्विच्नकर्तारः वस्दाः भवत ॥ अनेन वलिदानेन 🕺 इंद्रादि दशदिक्पालाः श्रीवंतां नमम ॥ कृतस्य कर्मणःसांगता सिष्यर्थं पूर्णाहृतिहोमं करिव्ये॥ सूर्ची घृतेन प्ररयित्या 🖇 खुबोपरि निधाय ॥ शकादयस्तुतिभिर्वा विष्णुमंत्रैः पूर्णाहतिहोमं क्वयीत् ॥ ततो ईशानात् भस्म गृहीत्वा॥ यथाशस्त्र 🕺

🗣 की 🎳 यो देवा स्तत्र गच्छ हुताशनः।। यान्तु देवगणाः सर्वे प्रजामादाय मामकीम्।।इष्टकामसमृष्यर्थे पुनरागमनाय च ॥ 🦠

सामतासिन्यर्थं ताम्रपात्रं तिलप्रसित्ं स्द्रदेवतं मृथपुष्पाद्याचितं शास्त्रोक्त पुण्यफलपासये आचार्याय दास्ये ॥ कृत-

अप्रिं विसृज्य ॥ यथाचारं रुखा ॥ प्रणमेत् ॥ देवतानां समीपे गता गंघादिभिः प्रज्ञयित्वा ॥ आरात्रिकं है ॥१४५॥ मंत्रपुष्पांजिंहं स्तुतिपाठं बाह्यणपूजनं आचार्यादीनां दित्रणाप्रदानं तिलयात्रादिदानसंकर्णं रुखा।।इतस्य कर्मणः है

स्य॰ इदं कांस्पपात्रं छतप्रसितं स्पेदेवत्यं स्पेलोकफलप्राप्त्यथं शास्त्रो० आ० ।। कृतस्प॰इदं ताग्रपात्रं जलप्रसितं ्र वरुणदेवतं शास्त्रो॰ आ॰ ॥ इतस्य॰ उमामहेश्वरवद्याणि गंधपुष्पाद्यचितानि शास्त्रो॰ आ॰ ॥ अनया रीत्या ॥

क्रिक्यान ताल्रवन बरलवान, छानदी, मुवर्ण, पुरावक, अन्त,र्कुम मालवुडा श्रद्धाण्यवीयोरे दानीनी सकल्प क्रीने प्रत्यक्ष होय तो आपया. ने प्रत्यक्ष न होय-

🐉 पदं गोदानं ॥ शैरमादीनि दत्वा ॥ तिलकमाशीर्वादः॥ स्वस्तियाचा०॥ मंडलदानं कुर्यात् ॥ इदं सर्वतोभद्र- 🙎 र्थं वार्य नार्यापरकर साहत यजमानापस्करसहत ग्यपुष्पाद्यचितं श्रीराधिकासहित पुरुपोत्तन पदपाप्तये आचा र्थं वाय दास्ये ॥ दानसांगतासिष्पर्यं दक्षिणां दास्ये ॥ अद्येत्यादि० मया यथाशक्ति यथामिळितोपचारद्रव्येः श्रीरा अर्थ-स्थापितदेशेद प्रवेणको प्रतस्का प्रकारिका स्थापित

प्रदीयते॥ त्रपश्चिशदप्रपांश्च शर्कमपृतसंयुतान् ॥ स दक्षिणान्यहं तुम्यं कांस्यपात्रे निधाय च॥ दास्ये जनार्दनप्री- 🖇 रेंपे गृहाणतं द्विजोत्तम् ॥ मलमासस्तु मासानां मिलनः पापसंभवः ॥ तत्पापस्य विशुद्धवर्षं वायनं संप्रदाम्यहे ॥ 🕺 अप्रि होत्रे क्यः सत्यं बेदानों वेव पाळने ॥ आतित्यं वेषदेवय इष्ट मित्यभिषीयते ॥ १ ॥ वापीकूपतहामाहि हेवता मंदिराणि च ॥ अप्र मदान मारामाः पूर्व मित्यभिषीयते ॥ इति अप्रि स्मृतौ ॥ ४५ ॥

धिकासहित पुरुषोत्तम पूजनास्येन कर्मणा श्रीगोलोकस्थित श्रीगधापुरुषोत्तमः श्रीयतां ॥ अथ पूपवायन- 🕺 दान प्रयोगः ॥ वृतहिरूपसहिताच् त्रपश्चिसदप्रपान्कांस्पपात्रे निधाय दद्यात् ॥अथ प्रयोगः ॥अद्येत्या ॰ मलः मासवृत सांगतासिष्यर्थं श्रीलक्ष्मीजनार्दनश्रीत्पर्यमप्रपवायनदानं करिष्ये ॥ तदंगभृतां ब्राह्मणप्रजां कः ॥ नमोसवः नंता॰ १ श्रीजनार्दनरूपिणे ब्राह्मणाय इदमासनं ॥ पाद्यं अर्घ्यं ॥ आचमनं ॥ गंधाःपान्त्वित्यादि ब्राह्मणं 🖇 संप्रुच्य ॥ वायनं हस्ते गृ० तत्र मंत्रः ॥ अधिमासे तु संप्राप्ते श्री जनार्दनत्तुष्ट्ये ॥ नस्कोत्तारणार्थीय मया दानं

तो तेने निष्यपटः दानसंस्थ वाची,९५ आवार्वने काप करावया बद्ध एकगाय तथा विष्यय आक्षो लक्षाने एक गोषो तथा तेनो निष्यप आक्षो तथा ग्रंड- 🐉

इनो उपरास्पेर संस्था वर्तीन आपन्न, एप्रमाणे आपन्नं शास्त्रसंपताने. पत्र करेंकुं धर्म गोखोदतासां मणवानने अर्थणकरत्नं. वर्शणीवाळा बाह्मणीने दक्षणा 🕏

वि॰को॰ हैं इदं त्रविक्रिशासंस्यकाप्रपवायनदानं कांस्युपात्रस्थितं सदक्षिणाच्रतताञ्चलसहितं सदस्वेष्टितं तुभ्यमहं संपददे ॥ 🐉 म०३ ॥रे४६॥ 🐉 प्रतिग्रहा॰ । प्रतिग्रण्हामि । यस्य स्मृ॰ ॥१॥ अनेन वायनदानेन श्रीजनार्दनः भी० ॥ कृतस्य मलमास॰ महान् 🧯 ्रे अयं ते वर प्र॰ इति प्रणेपात्रदानं ॥ कृतस्य॰ आचार्यादीनां वस्त्र तांब्र्ळ दक्षिणादिभिः प्रजनमित्यप्रदि इष्टजनैः ।हैं। ै सह भुजीतेत्यंतं पूर्ववत् ॥ क्रंभसंकल्पे विशेषः ॥ कृतस्य० इमान् त्रयिक्षशत्संख्याकान् ( त्रिंशतसंख्याकान्वा ) 🐉 कंभाव पकान्तप्रस्तिन्यस्रताञ्चरुदक्षिणादिसहितान् सोभाग्य वस्र सहितां त्रयिद्धशुति वा (त्रिंशत्) वंशपात्रीसहि- 😓 ्रीतान् नानागोत्रेभ्यो नाना नामभ्यः सपत्नीकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य विभज्य यथाकारु दास्ये ॥ इति विशेषः॥ 🕺 विज्विपिक्षानि कमीणि सफलानि भवंति दि ॥ अनिर्पितानि कमीणि भस्मनीत्र हुतं इदिः ॥ नित्य निर्पित्तकं काम्पे ववान्यनमिक्षसायनम् ॥

्रिं हिच्छो: समर्पितं सर्वे सात्तिर्क फछदं भवेत् ॥

हैं है ते परिपूर्व पर्यु, एम पूजार्था लासणोवे नेहेंद्र परिपूर्ण पद्म पूजी एक कालानाधानमा आलपूद्ध मुक्ती वीजु पात्र उसर्वाकी तेने सुतर्थक बाबी ते लेनार क्षकण्ड पुगन करीने आगई एने ब्रह्माइयुत करेंगे, ए निधि करने होय तो नरीने पही, यमनानने तिरक कार, आहारीन आपने यसमाने प्राप्तदश्ह

क्षेत्र आह्वी, तथा ब्राह्मणभोत्रन भूयतीनी संकलकरवी. तथा तुलशीपनल्द समामागी ब्राह्मणोने मृत्यु के अहे। ब्राह्मणों माराध्रहामकरेयी ने में कर्म आ कर्स

ुंतिदिजाः द्वयुः ॥ इति त्रिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञिकयादिषु ॥ न्यूनं संपूर्णतां याति सद्यो ्रिवंद तमच्युतं ॥ प्रमादात्क्रवेतां कर्म प्रच्यवेताश्वरेषु यत् ॥ स्मरणादेव तदिष्णोः संपूर्ण स्यादितिः श्चातिः ॥ स्थानपर्भ उटी पोतामा बढिकोने अभिक्रमकरी पोतानाकार्यभारमां प्रवेश करतो. आ प्रमाण सावारण रीतो दरेक इसनोमा बालती छस्तिके. ने बधी है सातीमा पर्वा जोहर है ते छताहै. इता वाजाओंनी झातचा बचारे अपना ओडाचो, ने चाछ होच, तेणे पोत पेताता रिनानी प्रमाणे करी हेचु. आ मय, वर्म शास्त्रापे, तथा रुरी साथ सर्श्य थयो हो. इति श्रीनयानदात्पनमूखशकरशर्मणा विरोचिताया विशहकीमुदा तृतीय प्रकरणा। विशहकीमुदी समाप्ति 🕏 मगम्स ॥ शुर्म भनत् ॥ स. १९१६ आषाद्युद १५ शके १८६१. विष्णवेनमो विष्णवेनमो विष्णवेनमः ॥

PARKANAN KUNCHENEN ANAN AN

्रीअन्यत्सर्वं पूर्वेवत् ॥ यथा शक्तिद्रवयादिकेन यस्त्रतं कर्म तत्कालहीनं भक्तिहीनं श्रद्धाहीतं ब्राह्मणानां वचनात् है इस्थापितदेवताप्रसादाच सर्वं परिप्रणेमस्तु ॥ भो ब्राह्मणाः सर्वंपरिप्रणेमस्त्विति भवेतो ब्रुवन्तु ॥ अस्तु परिप्रणीम-

ंभिः शकरणेर्युका सेपा वैवाहकोसुदी ॥ वालानां तिमिरं हन्याहद्यानमोदं श्रियाधिकम् ॥२॥

 त्र मूळशंकरशमणी विरचितायां विवाहकोमुद्यां तृतीर्यं उद्यापनमकरणम् ॥ समाप्तोऽवं प्रंथः ॥

t सर्व प्रकारना हक प्रंथकर्चाय स्वाधीन राख्या छे। ओजा मूल्ट्रशंकर जयानंद, देसाई पोळ, सुरत.

ात सामवेद कौधुमीशाखाध्यायी सूर्यनगर वास्तव्य श्रीमाली दिज जयानंदात्मज

## आ पुस्तको नीचेने ठेकाणे मळशे-

रेखियाह कौमुदी:--जेमां उप मकरणो छे,पथम प्रकरणमां ग्रह्मांति अयोग,बीजा मकरणमां विवाहविधि तथा त्रीजामां पुरुषोत्तम मासनुं प्रतो-

व्यापन, जेमां सपळो विधि आपवायी विधिने नहि जाणनारा पण करावी शके एस छे. कि. रु. ११। ट. -।-

यास्त्री वेध्यभाई भवानीशंकर, सुरत-आपली रान, संस्कृत पादशाळा.

ओजा मूळशंकर जयानंद.

२ मुरधाकणा—पुरुषेत्तम मासर्मा ने क्याहुं माहारम्य यशुं व गणायके तथा ते हुत सूची छपायकी 🕝 होवाची शुद्ध गुजराती साथे

३ सतीसिमंतिनी-आयां पारिभक्ति केवी उत्तम प्रकारनी छे हेर्नु अञ्चत चरित्र आपवामां आर्थ्यु छे.,आ पुरुवक युजरावी राग रामणी

ओजा मुख्येकर जयानंद, सुरत-देसाई वोळ.

४ साठी--अमां छत्रमापे इस्तपेछापकती वसते दंपतीतुं जोद्धं कुचळ रहेवायां आधीर्वादात्मक श्लोक आपवायां आव्या छे.की.०१ट. ।०॥

हाल्यां बहार पादवायां आधा छे. कि. -- ट. --

बार्ड छे सथा ते सीओ नाहीने हमेशां वांचे छे० 🌎 कि. 🛶 ाना

ज्योतिर्विद रणछोदकारू काशीराम, बडोदस, अडाणीया, पितांत्ररपोळ. स. स. इरिकाई सोयनाथ, सुरत⊸हरियस.

युक्तसेखर-ज्येष्टाराम छट्टंदर्गा, काळकादेवी, तेखवाडी पासे, ग्रुंपर्दः रा. रा. इछाराम ग्रुरजराय देसाईवी गुजराबी मेस, कोट-ग्रुंबई.

## ्र<sub>हर्षस्</sub>रुद्धस्टर्ह्हरूहरूहरूहरूहरूहरूहरूहरूहरूहरूहरू ।। इति विवाहकोमुदी सृमाप्ता ॥ <sup>अ</sup>अभ्रेत्रेक्ष्ट्रेक्टर्क्डर्क्डर्क्डर्क्ट्र